आखर बेल

शिक्षा विभाग राजस्थान के सृजनशील रचनाकारों
की राजस्थानी रचनाओं का संकलन

शिक्षा विभाग
राजस्थान के लिए

■

दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी
152 चौड़ा रास्ता जयपुर
द्वारा प्रकाशित

आखर बेल
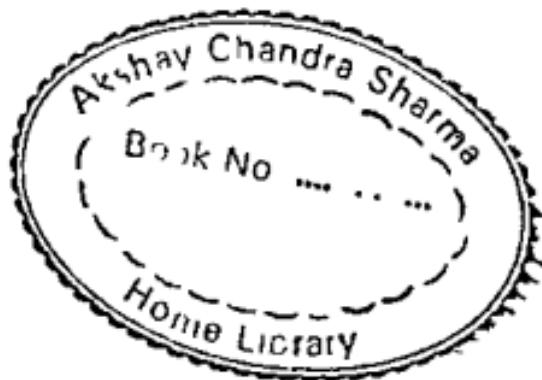
संपादक : ओंकार श्री

आखर बेल

◇ प्रकाशक
शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए
दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी
152, चौड़ा रास्ता, जयपुर 302 003
दूरभाष 72455/74087

◇ मूल्य :
37.35

◇ संस्करण :
शिक्षक दिवस 1992

◇ आवरण :
पारस भंसाली

◇ लेजर कम्पोजिंग :
अमरज्योति कम्प्यूटर्स
त्रिपोलिया बाजार जयपुर

◇ मुद्रक : एस एन प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

आमुख

रचना का जगत वास्तविक जगत का अग होते हुए भी इससे पृथक, निराला और समानान्तर होता है । रचना मे अनुभव का एक नया ससार सामने आता है और उन क्षणों को अद्वितीय वना देता है जिनमे रचना हो रही होती है । शव्दो की इस काया मे रक्त, रस माँस और अस्थियाँ सव शव्दो मे ही समाई रहती है । शव्द से इतर कुछ न होकर भी वहुत कुछ होता है इनमे यानी परिवेश, परिस्थितियो और समय के वदलाव के साथ अर्थ की गहरी, अनसोची और नई से नई परते खुलने की सभावना वरावर वनी रहती हैं । जव लेखक की रचनात्मक सवेदना पाठक को भी उसी स्तर पर झकझोरने लगे और सवेदना के स्तर पर दोनो एकमेक हो जाएँ तो समझा जाना चाहिए कि रचना अपनी अर्थवत्ता को सिद्ध कर रही है ।

रचना के नाम पर लिखी जाने वाली सैकड़ो हजारो 'रचनाओं' मे से विरली ही समय की कसौटी पर खरी उतरती हैं । शेप या तो शव्दो की कसरत भर वनी रहती है या किसी अमर कृति के लिए उर्वरा जमीन तैयार करने मे खाद वनकर रह जाती है । अमर होने के लिए किसी कृति को समर्थ रचनाकार की साधना, उसकी अनुभूति की गहराई और प्रामाणिकता, प्रस्तुति का कौशल और सवेदनात्मक आवेगो की पकड़ से जुड़ा होना आवश्यक है । इसीलिए कहते हे कि रचना के क्षण विरले भी होते है और निराले भी ।

राजस्थान के सृजनशील शिक्षक साहित्यकार इन विरले और निराले क्षणो की पकड़ करने का प्रयास करते रहे है । इनमे से कुछेक शव्द शिल्पी एवम् कृतिकार ऐसे है जिन्हे देशव्यापी प्रतिष्ठा मिली है । इन लोगो ने शिक्षा विभाग के भी गौरव को वढ़ाया है । हमारे लिए रचना का यह ससार एक परम्परा है – आज से नही, सन् 1967 से, जव हमने इस परिक्रमा को शुरू किया था ।

पूरे पच्चीस वर्षों की यानी एक चौथाई शताव्दी की साधना हमारे साथ है । इसे रजत-जयन्ती की सज्ञा से विभूपित करे, न करे – यह वेमानी है लेकिन इतना सत्य अवश्य है कि पूरे देश के शिक्षा विभागो मे केवल राजस्थान का शिक्षा विभाग ही इस प्रकार के अनुष्ठान को चला रहा है । देश भर के चर्चित साहित्यकारो, समीक्षको और राजनेताओं ने इस तथ्य को स्वीकार किया है – उनकी यह मान्यता ही हमारी असली ताकत है ।

रचना की इस अविरल श्रृखला मे अव तक कुल 123 पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है और इस वर्ष की 6 पुस्तको को मिलाकर यह सख्या 129 तक पहुच

जाएगी। सख्या के गौरव से कही अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इन पुस्तको का सम्पादन देश के सुप्रसिद्ध, चर्चित और सर्वमान्य साहित्यकार करते रहे है। शिक्षा विभाग उन सबके प्रति आभारी है। इस वर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तको के नाम इस प्रकार है

1 रेतघड़ी (कविता सकलन)	स मगलेश डबराल
2 रातो जगी कथाएँ (कहानी सकलन)	स पद्मा सचदेव
3 प्रतिभा के पख (हिन्दी विविधा)	स क्षेमचद्र 'सुमन
4 आखर वेल (राजस्थानी विविधा)	स ओंकार श्री
5 शिक्षा समस्याएँ तथा सभावनाएं (शिक्षा साहित्य)	स राजेन्द्र पाल सिह
6 बादल और पतग (बाल साहित्य)	स राजेन्द्र उपाध्याय

इस वर्ष हमने एक नया निर्णय लिया है। शिक्षक हो अथवा कर्मचारी - शिक्षा विभाग की कार्मिक सरचना मे दोना का हाथ है अत इस वर्ष के सकलनो मे आपको सृजनशील शिक्षका और कर्मचारियो दोनो की रचनाओं का लाभ मिलेगा।

मुझे एक बात अपने रचनाकारो से कहनी है। यह सही है कि लब्ध प्रतिष्ठ सम्पादको न कुछ रचनाओं अथवा रचना अशो की सराहना की है तो कई जगह कमियाँ भी बताई है। सराहना जहाँ हम सुख देती है, वहाँ कमियाँ सुधार के अवसर प्रदान करती है। साहित्य की रचना करना भी एक शिक्षा कर्म है। साहित्य और शिक्षा को अलग थलग नही किया जा सकता। दोनो का काम लोकमानस को परिष्कृत और सस्कारित करना है। दोनो सत्य पथ के सहभागी है। दोनो एक ऐसा इसान गढ़ना चाहते है जो इन्सानियत की सही और सार्थक पहचान दे सके।

जिन लोगो की रचनाओं का इन सकलना मे समावेश है, मै उन्हे बधाई देता हू। जिनकी रचनाएँ नही छप पाई हैं, उनसे मेरा आग्रह है कि रचनाधारा से लगातार जुड़े रहे लेखनी के पैनेपन को बनाये रखे और आगामी वर्ष के सकलनो के लिए अपनी श्रेष्ठतम और नवीनतम रचनाएँ दे। मै इस वर्ष के सम्पादको और प्रकाशक बधुओं का हृदय से आभारी हू जिन्होंने कम समय मे उत्कृष्ट सम्पादन एवम् प्रकाशन द्वारा विभाग के इस अनुष्ठान को सफल बनाने मे सहयोग दिया है।

शिक्षक दिवस 1992

निदेशक,
प्राथमिक एव माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

बानगी

तीखै तेवर री तपास...... !

लिजलिजै अर चिपचिपै लेखण रा दिन लदग्या । भासा है एक औजार । औजार मागै सुधार । देस-दुनिया री जूनी लोक भासावा रै कडूमै मे नुवै पलटाव री वेग अणथम है । सास्कृतिक अर भावात्मक सरूप सू जन भासा राजस्थानी री पैठ जठै कदीमी है बठै ही इणरै रचनालोक मे नुवी फुरणा, चेतना अर धारदार सोच री जातरा रा पग सधियोड़ा तो है पण गति धीमी है ।

इण धीमी गति रै लखाव मनै राजस्थान री प्राथमिक-माध्यमिक शालावा रै पूर्व-अपूर्व शिक्षक लेखका री चार सौ नैड़ी रचनावा री कपड़ छाण करतै हुयौ । आ गति वेगवान नी हुया लेखण सारू लेखण' री रागौपीटौ तो सरतौ जासी पण उपलब्धि रचनात्मक धरातल पर की हाथ नी लागैला ।

रचनाधरमी गति उतै ताई वेगवती नी हुय सकसी जित्तै ताई रचनाकार आपरै अधपढ़ पण सू मुक्त नी होसी । अनपढ़ सू अधपढ़ भूडौ । लागै है शिक्षक रचनाकार इतिहास, सस्कृति, विज्ञान, कला, पुरातत्व अर पर्यावरण-मूळक ग्रथा अर सस्थाना रै अध्ययन अर विश्लेषण सारू माय सू सजग नी है । माय रौ चेतौ हुवै तो किणी दूरातरी ढाणी री स्कूल मे भणावा वाळौ शिक्षक कठै रौ कठैई पूग जावै । शिक्षका री हयूकी रचनावा भण्या गुण्या मै शैक्षिक अधपढ़ पण री जिकी बात उठाई है उण बाबत बहस री गुजाइस है ।

भासा सू आपा रौ बरताव किसीक है ? फूहड़ कै शालीन ? राजस्थानी री विविध विधावा पूठी जिकी रचनावा म्हारी भणत मे आई है उण सू औ सखरौ सवाल उभर नै सामै आयौ । उत्तरी पश्चिमी राजस्थान रा मारवाड़ी लेखका री हरैक रचना भापायी सरचना, मूळभूत व्याकरणगत सहिता अर शुद्धता सू परवार लागी शिक्षक लेखका रै दायरै मे । उदाहरण माथै उतरया वेजा विस्तार बधसी । सपादन रै दौर मे रचनावा रौ अतुलित सस्कार ही रचनाकारा अर पाठका सामै आवै, आ ही बात ओपती रैसी । म्हूँ राजस्थानी री एकरूपता री गपड़चौथ मे नी पड़बौ चावू । जरूरत है समरूपता री । जिकी भासा मे आप रचाव करौ उणारी मूळ प्रकृति सू तो रूबरू होणौ ही पड़सी । बोला' कई अर लिखा कई ? आ वात तो चालण री कोनी। वोला काळ अर लिखा 'काल', बोला 'जीवण' अर लिखा 'जीवन' पण

क्यू ? 'वाजे' नै 'वाजे' अर 'कुत्ती' नी 'कुतो' क्यू लिखा ? 'औकारात' प्रयोगप्रकृति है राजस्थानी क्रियावा रै अत मे।

आ दो च्यार मूळाऊ वाता नै ध्यान मे राख्या सू भासा साफ-सुथरी मजी-तपी सातरी लागसी। 'ऊँ कै', 'वू कै', 'कूई', 'ईंया', 'न्यावसी', आद सबदा सू निजात पाया ही सरसी।

भासा वा ही सबखी बजै जिकी आम आदमी रै समझ मे आ जावै, भगज मे बैठे। रचनाकार जद सरजकीय सरूप मे किणी सबद री व्यवहार करै तो वो 'भदेस' सू बचै, शालीनता नै आदरै।

शिक्षक लेखक भाया ! लिखणी तो अतिम प्रक्रिया मे आवै। दिनरात चालै चिन्तन। सैलग रचीजती रेवै रचना दिमाग मे। एक वेग, एक धक्को, एक दुद वधती सधती रेवै मायौमाय। इण भाव भोमका पूठै जिकी रचना ऊसरै बा रचना नुई जमीन तोड़ै, नुवै जमीर रा पग सजीरा करै। सुख-सुविधा भोगी 'ड्राइग रूम कल्चर' री जिन्दगी आप जीवौ नी। आ जिन्दगी सुपगी कठै ? आज तो आप लोगा सू समाज आ अपेक्षा करै कै आप इसी रचना रचौ कै जिण बूतै आम आदमी आपरी सस्कृति रै स्वस्थ सरूप सू जुड़ैनै ज्ञान विग्यान री वळ पड़ती सरजाम नै तकनोलोजी री लाभ उठावै नै अगेजै।

जिसौ बो सौ विसौ ही ऊगसी। नुवी पीढी रै निरमाण री वागडौर आपरै हाथ है। इक्कीसवी सदी तो ढ़ूकती सामी निजरै आय रयी है। सवारसी सस्कृति नै तारसी आपानै विग्यान। सस्कृति अर विग्यान री तालमेळ साधण री काम कलमकारा अर कलाकारा री है।

मारवाड़ी ढूढाड़ी हाड़ौती, मेवाड़ी, वागड़ी नै मेवाती राजस्थानी भासा रा अे सागोपाग सरूप। राजस्थानी ग्रथा अर पत्रिकावा रै सपादन रै लम्बै अनुभव रै आधार पर म्हू एक नतीजै पर पूग्यौ हूँ कै जिकै क्षेत्र मे उणरौ खास बोल-वतळाव हुवै उणरै भाषायी ढाचै सू छेड़ छाड़ करयै विना भी सपादन करया जा सकै है। नीतर भावनावा आहत हुवै। राजस्थानी भासा रै सँग सरूपा मे जिकी आतरिक एकठ है, जिकी भावात्मक स्थिति है उणरी रिछपाळ होणी जरूरी है। ओ ही सूत्र सामनै राख नै मै इये सकलन मे पूरी सावचेती बरती है।

सबदकोस अर व्याकरण रा पोथा सामनै राखर कोई रचना को रचीजै नी। *भासा तो बणै लोक रै पाण। लोक परवार रचनाकार कठै ? रचनाकार सबद द्रष्टा* भी हुवै अर स्रष्टा भी। सास्कृतिक अर लौकिक व्यवहार मे जिका सबद सरवाळै चालै उणा री प्रचलन लेखण मे होणौ लाजमी है। 'तत्सम' सबदा नै तोड़मरोड़'र आपा राजस्थानी भासा री मान वधा नी सका सस्कृति नै 'सैसकिरती', प्रकृति नै 'पिरकरती', सस्कार नै 'सैसकार'- लिखणी गैर वाजबी है।

भापा पूठै जिकी अवखाया इण सकलन रै सपादन मे आई उण सू एक बात और पुख्ता हुई कै बाकी भोयरी भासा रै कारणै आछी सू आछी रचना री मिट्टी पलीद हुय जावै।

समूचै राजस्थान री समूची राजस्थानी आ वात व्यापक दायरै री है। डूँगरपुर सू डूँगरगढ अर झुझुनू सू झालरापाटण ताई रै भू भाग री विविध रूप रूपा राजस्थानी री जनाधार भी सतेज हुसी तो धारदार लेखण सू। जनमन मे, आमजन री भलाई सारू चेतना भी बपरासी तो नुवै सोच सू जुड्या रचनाकार ही। वदळाव तो आया ही सरै। सैसू लूठी अर वड़ी महताऊ वात है – दीठ रै दायरै री। दायरो वड़ी, तौ दीठ जरूर फळै।

निबन्ध, नाटक, कहाणी, रेखाचित्र, लघुकथा, व्यग्य, यात्रा, सस्मरण जीवनी अर काव्यगत विधावा री वहुआयामी छिन अर छटा सूधी 84 रचनाकारा री पगत मे वयोवृद्ध महोपाध्याय नानूराम सस्कर्ता सू लेर राम सुगम ताई री पीढी रचना-मेळ इयै सकलन मे है।

'कटेन्ट' रै काटै राजस्थानी रचनावा री सरूप अर स्तर इण सकलन मे, अत भारतीय भासावा री कटजोड़ मे कमजोर नी है, आ वात मै नेचापाण केय सकू हू।

सवेदना अर सचेतना दोना पखा पूठै 'लेख'- सीगै मे 'ओ धरती मा' मे तारा दीक्षित री पीड़, 'राजस्थान री लुप्त होवती सास्कृतिक परम्परा' रचना मे जेठनाथ गोस्वामी री चिन्ता अर चिन्तन री भावभूमि, 'बुराया नै बूरौ' मे मूळदान देपावत री सामाजिक जागरण री हूँस, 'धीरा री देवळी' मे रूपसिह राठौड़ री धरती सोच, रामनिवास सोनी री लोकचावी गीत 'मुरलौ' मे उणारै हियै रै हुलास रा सातरा रग! रग है नानूराम सस्कर्ता अर दशरथ कुमार शर्मा रै अरोगै आहार अर योग वरगा सातरा लेखा नै। राजस्थानी निवन्धा रै दायरै मे तीखै तेवर री तपास है जिको तो है ही ।

नाटक विधा राजस्थानी मे घणी वेगवान कोनी पण इण सकलन मे जयत निर्वाण रै वलिदान, कु राजकुमारी रै 'आख्या खुलगी' अर जगदीश नागर रै 'घोड़ली' एकाकिया मे सवाद सरल, भाव सधीरा, भासा मध्यम, सुर सरवरा नै कथ्यगत सरूप धारदार तो कोनी पण नाट्यधर्मिता नै आगे वधावण मे जरूर प्रभावी सिद्ध हुसी।

कथा क्षेत्र राजस्थानी री इण सकलन मे विचार, चिन्तन और वोध मवेदन पूठै सिरैकार है। काव्य विधा सू आगै। रामस्वरूप परेश री 'जिनगाणी रौ जूझार', जितेन्द्र शकर वजाड़ री 'अकार्डियन', करणीदान वारहठ री 'औलाद', जानकीनारायण श्रीमाली री 'विझू', रामपाल सिह पुरोहित री 'मुळक' अर माधव

नागदा री 'उजास री उडीक' कथावा इण विधा-खड री प्रतिनिधि रचनावा मे गिणी-जण जोग है । कथा वा असरदार अर दमदार हुवै जिकी घर-आगण री बात नै देस-दुनियागत विचार व्यवहार री वेदना, चेतना अर उमावकारी प्रेरणा सू जोड़ै । ढाणी री पीड़ अर महानगर री भीड़ सू पाठक सवेदित हुवै बिना रेवै इण सकलन री कहाणिया भण्या गुण्या बाद ।

राजू कवाड़ी (भ ला व्यास), त्याग मूरती (ओमदत्त जोशी), चादा भुवा (ओमप्रकाश तवर) रा रेखाचित्रा री भावलोक मरमीली अर चुटीली लागसी, पाठका नै एक ताजगी देसी ।

अरुणा पटेल री (मा), छाजूलाल जागिड़ (जीवणदान), भरतसिह ओला 'भरत' (वखत री मोल), मीठालाल खत्री (सपनी) अर पृथ्वीराज गुप्ता (एक हीज विरादरी रा) लघुकथावा री रचना ससार भी सोवणी लागै सैंठो पण नही ।

त्रिलोक गोयल (माचा रा मजनू) अर श्रीमाली श्रीवल्लभ घोस (खीर री सवड़कौ), श्याम सुन्दर भारती (किम् आश्चर्यम्) री व्यग्य रचनावा हास्य री लास्य अर सवेग सम्प्रेषण सूधी भाषा री आतरिक लय सू पूरी जची ।

यात्रा सस्मरण मे रामकुमार औझा री सफरनामी चडीगढ़ री अर चन्द्रदान चारण री जीवनी विधा री भारत रा अमर शहीद श्री रामप्रसाद बिस्मिल रचनावा सू सकलन नै विविध विधायी व्यक्तित्व मिल्यौ है अर आ विधावा रै लेखन री मथर गति माथै सोचवा री सोच भी साथै साथै जाग्यी है ।

काव्य खड मे अनुभूति अर अभिव्यक्ति वेदना अर चेतना, भाव अर अभाव, शब्द अर लय, सघर्ष अर सतुलन समान फुरणा अर मूळ सास्कृतिक धकेल आद री न्यारी न्यारी स्थितिया अर परिस्थितिया रा चितराम उकेरण वाळी सखरी सावठी कवितावा रै चाळीसै मे बुलाकीदास बावरा (हिवड़ै रा देवळ) री जन पीड़ा, मो सदीक रै *गीत जाग सकै तो जाग*, *अखिलेश्वर रै गीत 'ओळू', महावीर जोशी अर* कुन्दन सिह सजल समेत दयाराम महरिया रा दूहा सोरठा री सास्कृतिक ऊरमा अर वासुदेव चतुर्वेदी री अणजाणी' कविता रचनावा नै प्रतिनिधि भाणण री मन करै ।

जोत वठै जगाऔ जठै अधारी है । शिक्षक लिखारा री पगत राजस्थानी लेखन मे सैंसू लूठी है इण पगत नै जगाया ही जन भासा री गौरव जागसी ।

ठीक है नित तो जामै ही कोनी नुवा लेखक । शिक्षा विभागीय राजस्थानी सकलना मे मानी कै सागी टावका नाम हर बार हाजर रेवै । पण नुवै लेखका री निछतरी तो है ही कोनी । इणी सकलन मे कैयी बाया अर भाया रा नाव साव नुवा अर रचना पूठै ताजा तरीन है ।

राजस्थानी रा शिक्षक लेखका नै शिक्षा निदेशालय प्रकाशन रौ मच देय नै एक युगातरी पहल करी है । अवै जिकौ घणी तपसी वो ही आगै वधसी ।

समै आपरी भासा रो है। वदळाव सारू रचनाकार बद्धमूळ परपरावा सू बारै आवै।

सवद री जातरा जगत बधावै उणमे नुवै सू नुवौ अरथ भरै। ताजी, धारदार, खुरदरी ही सही पण प्रयोगाऊ सबद-सस्कार अगीकारै राजस्थान रौ शिक्षक लेखक तो सीखै तेवर री तपास पूरी होवै। सळदार अर सीली गीली भासा सू काम चालवा को कोनी।

'आखर बेल' बधै। दिन दिन सवायी। राजस्थानी सकलन- 92 रै सपादन रौ ओ काम किया सध्यौ ? - निर्णायक पाठक। आत्मीय भाव सू शिक्षा विभाग रै प्रति आभार। नीतर शिक्षक लेखका सू किया सधतौ ओ साक्षात्कार ?

–बागीनाडा रोड,
सुखानी कुज के सामने, बीकानेर

"राजस्थानी राजस्थान की भाषा है। समूचे राजपूताने, मध्य भारत के पश्चिमी भागो मध्यप्रदेश, सिंध और पंजाब के आस-पास के टुकड़ो मे यह बोली जाती है।"

—डा. जार्ज ए. ग्रियर्सन

"राजस्थानी भाषा इण्डोआर्यन उपभाषाओं का ग्रुप है जो कि एक ओर पश्चिमी हिन्दी मे मिल जाती है व दूसरी ओर गुजराती व सिन्धी से और लगभग समूचे राजस्थान और उससे लगे हुए मध्य भारत के भाग मे प्रचलित है।"

—एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका

विगत

लेख

नाटक

कहाणी

रेखाचित्र

लघुकथा

व्यंग्य

यात्रा-संस्मरण

जीवनी

काव्य

❑

लेख

ओ धरती मां !

नारा दीक्षित

धरती समान सैणगत री सगती किण मे है ? आखी सृष्टि नै सारा रस, धातुवा रतन, खान खदान, अन्न, रूख, वेलॉ, जगळ, बाग, तड़ाग, बावड़िया, पाणी, वायरौ पछिया नै जिनावरा री सग बगसवा वाळी आ ही धरती है । आ जियाजूण री मावड़ी ! इण जामण कई नी दियौ आपरा टाबरिया नै ? सकळ दीन दुनिया मे आ जो काई है, ओ सो काई इणी रो दियौ थको है । इण वसुधाराणी-जग धिरियाणी किणी सू कई मागियौ ? सो कई निछावर करियौ इयै धरती आपरी चराचर सन्ताना सारू । इयै सरीखी दातार मा औरू कुण हुसी ?

धण री चोटा सैयी तो इण धरती । कुदाळा री मार खायी तो इण हीज । बारूदा रा वार सैया तो इण हीज । इयै बदळै मे कई दियौ आपानै सजळ निरमळ नीर ! सोनै चादी रा खजाना । हीरा-जवाराता रा भडार इणीज अरपिया आपा नै ।

ओ दयामणी दातार धरती मा ! थारा पूत थारी दोहन करता कद थमसी ? आपरौ काळजो फाड़नै फसला फळावणी मानखै री पालणहार – धीरज थारौ धन थारौ धरम । तू सता, शहीदा, सुभटवीरा, धीरा - गभीरा रिसिया, मुनिया, राज राजे सरया भगता कविया, आगम निगम पूरा सिद्धा, आचार्यां, परमहसा री मा–तनै सौ सौ वार नमन ।

तू उगळै तेल, ढिग्ग लगावै कोयला रा । आरै पाण ससार रा कळ कारखाना, हवा पाणी रा जहाजा अर रेला मोटरा तेज वाहना टेक -ट्रक ट्रेक्टरा ताई पूगै थारी ऊर्जा ।

थारा रूप अनेक । चरित्र चितराम अनेक । तू दुरगा - सुरसत - पद्मवारी मा है तो तू । थारी गोद म समायी ही नी थारी धीवड़ी – जानकी – हजारू हजार वरस पैला । अगनमार्खी साव माची सिद्ध हुयनै तनै चेतै है नी, हजारू हजार वीरागनावा

मतीरा चीरै अर उण पुळ री चानणी मे कुण अमी भरवावै । इणी शरद पूनम री चानणी रात मे किणनै याद रैयगी है सूई पिरोवण री होड ! सालिया री आडिया नी तो छोस्या जाणै, अर नी अंग्रेजी पढ्या बीद राजा उथळी ई देय सकै। सासू रा गीत गवावण रा कोड ऊभा होयग्या । पैलै हळोतियै जद चार ऊमरा गऊ अर नेम धरम रा छोड़णा नी चावै तो साखा ई नीवत जैड़ी बरकत पाकण मे आवै । आखातीज रै औड़े-जोड़ै कठै सुणीजै टावरा री घूघरा बाध ऊमरा काढ़ती टोळ्या !

टी वी रै वद डिब्बै मिनखा नै घर किवाड़ा मे बन्द कर दिया तो पछै पाड़ोसी पाड़ोसी री खैर ठा पड़ै तो पूछै ! नी रया जम्मा अर नी रया जागण । रात सारी फिल्मा री वी सी आर ' लाग जासी पण प्रभू री पिछाण बतावणिया रागी भजनिया नै कुण बुलावै ? किणनै मतलब है के गरुड़ पुराण काई है अर रतजोगो क्यू दिरीजै ? किणनै याद रयी बच्छ बारसा – गऊ महातम री गिनरत कुण करै । उपवास छोड़ो – खाली पेट रया भमळ वधै डाक्टर री सलाह सू वैसी मादा पड़ै । क्यू तो काती-वैसाख न्हावणा अर क्यू एक टेम खावणा ! उघाड़ै माथै सासरै नी जावणा री तो अबै फकत बाता ई रैयगी है ।

वावड़्या गाव री कचरौ नाख नाख नै बूराय दीनी । पुरखा रै पुरषारय नै राखण रो काई काम ! नारायण तो नर री लीला देख न्हाय छूटी, पछै क्यू बड़ पीपळ रा पूजण पाळणा ! रूखा री जड़ा तकात खोद नै वेचण सू जद रोटी मिळ जावै तो दिन पूरै री मजूरी क्यू करणी ! बच्चा जद अस्पताल मे हुवै तो जच्चा रा गीत क्यू उगेरणा अर सीखणा ! अबै कोई नुवी मा हालरियौ नी जाणै । समदर हिलोळण री वडेरा री रीत आयै वरस गाव तळाव री माटी खोद नै समाज सेवा नै समझण री बात ही भाई कानी सू वैन रा लाड कोड तो इण मौकै नै महताऊ बणावण सारू राखीजिया । नारी रूपाळी दीसणी चाईजै – मोट्यार टारडा रौ काई ? फिलम वाळा ई नायिका नै तो बोर चूनडी पैराय देसी पण नायक पेट बुशर्ट मे राजस्थ री गीत गासी । वीरा रौ हेज अर राखड़ी रौ कोड सावण रा हींडा अर तीजणिया रा गीत नी तो कोई सीखण री हूस राखै अर नी गळगळै कण्ठा सू गाईजता सुणीजै – आयौ म्हारौ जामण जायौ वीर चूनर लायौ रेसमी जी ।

कवडाळै गोरवदा सू लड़ाझूम ऊँठा पे जाना री तो बात ई गयी पण विसराइजग्या कमायै अर ढोल थाप ग जाझा गीत – किणी मोट्यार रै मूडै झेडर कै रायचद रा लोकगीत सुणण मे नी आसी । गोगा नम री दूध टाळ खीर खावणी अबै वस री बात नी रयी – कारण सुभट है – अंग्रेजी तारीखा तो हियै रची-बसी पण तिथ अर तीज तिवार री कनखळ याद राखणी दोरी । जे पछै गोगा नम री खीर बणायली तो डेरी पे दूध पुगावण री नागा हो जासी । आपा आपणा तीज तिवार ई री राड़ आगे छोड़ नाख्या – वाह रे बदळाव !

गाव रै गोरवै के नाडी री पाळ वीर जूझारा री छतरिया धुड़ण सागे ई वा री कीरत री याद रा ऐलाण माटी मिलण लागग्या है – याद राखण सारू देखण मे आवै पूपाड़ करती मोटरा रै विचाळै नुवा ऊभा किया सर्कल ।

राजस्थान री सास्कृतिक ओळखाण री ऐ सीरा विसारया आपणी अस्मिता अर पिछाण नै मटियामेट करण जिसी वात हुवैला । कोई गावठी आदमी पढ़ लिख नै शहर मे नौकरी पाय जद हाऊसिग वोर्ड मे मकान वणाय आपरी भावी पीढ़ी नै मम्मी डैडी सू ई वतळावणी पसन्द कर तो लेसी पण कोई तो धरती सू हेत अर ओळखाण राखणियै जे पूछ लियी "ठे'टू कठैरा ।" तो पछै सस्कृति री सोरम वताया विना थारी जड़ हरी रैय जासी काई ? वात विचारण जोग है ।

बुरायां नै बूरौ

मूळदान देपावत

मिनख एक सामाजिक प्राणी है। उण आपरी बुद्धि रे पाण कुटुम्ब अर समाज बणाय मानव सम्बन्धा रे मुजब रीति रिवाज बणाया। समाज री मानतावा, रूढ़िया अर परम्परावा रै पालण सारू जात-पात, कुटुम्ब-कबीला, व्यवस्था अर जरूरत माफिक रीतपात चालू हुई अर वखत रै साथै उणमे बदळाव भी आवण ढूको। कोरी लकीर री फकीर बण्या नी सरै। गाव करै ज्यू गैली नै भी करणी पड़ै। चोखी बाता रै साथे कुरीता भी घर कर लीनौ। सैकडू बरसा सू चालती परिपाटी दोरी छूटै तौ ई बुराया सू तो टाळी लेणौ ही समझदारी है। बाळ विवाह, पर्दा प्रथा, विधवा दुर्दशा, औसर प्रथा, नातौ, छुआछूत जैड़ी घणी ही कुरीतिया री उदेवण समाज रै लाग री है।

इणरै मूळ मे वर्ण व्यवस्था पर जातिप्रथा री प्रभाव सापरतेक लखावै। न्यारी न्यारी जातिया रा कर्म, धर्म अर रीत रिवाज न्यारा न्यारा थरपीज्या। छुआछूत भारतीय समाज व्यवस्था माथै कलक है। मिनख मिनख मे इतरो भेदभाव। एकै कानी तो उपदेश दिरीजै कै काम रौ काई हळकौ, काम री काई शरम ? अर दूजै कानी हळका काम करणवाळी जातिया नीची वाजै, वारी बस्ती अलायदी बसै। वारै हाथ रो खाणौपीणौ तो घणी अळगी बात, वानै पाणी भी ऊपर सू पाईजै। भेळौ हुया गगाजळ रा छाटा लिरीजै। वै भगवान रा दरसण नी कर सकै। आ प्रथा कुण चलाई ? मिनख ही तो। नीतर राम तो शबरी रै ऐंठोड़ा बोरिया खाधा, भाव रै भूखै सावरियै केळा रा छूतका खा लीना अर जगत रै भलै सारू महादेव हळाहळ पी लीनौ। पछै औ भेदभाव क्यू ? सबा रौ खून एक सरीखौ, सब उण परमात्मा री सतान, मिनख मिनख सब एक है। कोई नै जलम रै सजोग सू आछौ वातावरण मिळग्यौ वौ सोरो सुखी, कोई नै जलम सू आखी ऊमर पचणो पाती आयौ। पण इणसू काई ? बडौ तो बड़ा काम किया होसी। देख लो, वाल्मीकि, कबीर, रैदास, नामदेव रा लोग गुण गावै अर रावण, कस, हिरणाकुश घणाई राजा हा नी, वानै कोई पूछै ? इण वास्तै पापी सू नही, पाप सू घृणा करौ। भेदभाव मत राखौ,

छुआछूत घोर अपराध है। राज अर समाज दोनू इण बात नै समझैला, शिक्षा री जोत जगैला, ज्ञान री चानणौ फैलेला जद ही औ अधारौ भागैला अर भेदभाव, छुआछूत जड़ामूळ सू मिटैला।

शिक्षा रे प्रसार सू भेदभाव तो की मिटती दीसै पण दहेज प्रथा जैड़ी कुरीति रा पग पसरता लागै। मुहौ, टीकौ, दहेज मागता औळज ही नी आवै। इण डाकी दायजै सू किया पार पावा ! कन्यावा री भणाई पढ़ाई सू की आकस जरूर लागौ है। जे शिक्षा अर समाज रै प्रभाव सू कियाई अन्तर्जातीय व्याव सरू होवै तो स्यात पापी कटै। जाग्रति री जरूरत है, कोई अवढ़ी काम नी है। देख लौ आज सतीप्रथा अर बहु विवाह प्रथा उठगी क नी, पर्दा प्रथा भी मौळी पड़ी है, पछै आ दूजी बीमारया रो लपचेड़ी क्यू ?

आजकाले नशौ करणी फैशन बणग्यो है। नशै सू सौ कोस अळगी रैवण वाळी जाता भी दारू दरवेड़ा, नशा पता करण लागी। शराब री चलण तो पूरै देश मे फैलग्यौ। अरे भाई, नशा करै ज्यारा घर देख लौ, की तो नसीहत लौ, नशौ किसी चोखी बात है।

नशा काढ़ लीनी नशा, नशा किया सब नास।
नशा नाखिया नरक मे (तौ ई) अड़ी नशा मे आस॥

आपणै आयूणै राजस्थान मे अमल तमाखू री अणूती चलण। मरणै परणै किलोबध अमल लागै। थोड़ा दिना पैली छापै मे पढी कै सीमाई इलाका मे चुनावी उम्मीदवारा री मनवारा मनवारा मे कोई कूटळ अमल उपड़ जासी। बतावौ, अबै उणनै कुण रोकै ? दारू री माण-मनवार भळै न्यारी, खास खास मेहमाना नै। नशौ तो च्यारूमेर फिरग्यौ। यूनिवर्सिटी री युवा पीढ़ी हैरोइन, चरस, गाजा, मादक द्रव्य, मैड्रेक्स अर दूजी गोळ्या खा गैळीज्योड़ी रै। बीयर पीवणौ अर फटफटिया माथै फिरणी पईसा वाळा रो शगल। जनाना सिगरेटा भळै बापरगी बतावै। अबै कठै जावा ? किसै खाडै मे बड़ा ? देखादेखी साजै शौक, छीजै काया, बधै रोग। मी बापड़ी गरीब। गरीब नै कठैई गत नी है।

गावा मे अजै एक खोटी कुप्रथा चालै है – औसर, मौसर, नुक्तौ। टावरा रो मूडौ ऊजळौ करण मे घर धो'र धोळौ कर नाखै। चीणी तो गाळौ हीज, नीतर मैंणी लागैला। हरिद्वार जाय गगाड़ा तो करणा ही है। माईत खेजड़ी माथै कितराक दिन बैठा रै। भेळी ही जीवत खर्च कर भूड उतारौ। कठैई कठैई पेड़ौ चाढ़ खलक मुलक नै जीमाइजै, सातू मिठाइया अर बध बध'र जीमण करीजै। जीवता भलाई भरपेट रावड़ी मत पावौ पण मरया अरळ परळ करनी जरूरी, लोग काई कैवै ? इण तरै एक दिन रौ माल आखी ऊमर री कचूमर काढ़ नाखै।

एक भळै मोटी कुप्रथा बाळविवाह भारतवर्ष रा घणकरा प्राता मे कमोवेश रूप मे निगै आवै पण राजस्थान में इणरौ चलण की ज्यादा ही है। टावरा रा **बेगा पीळा**

हाथ करण री चिंता माईता रै लागी रै । बेटी परायी धन, बेटी अकूरड़ी धन – धोरो वधै ज्यू वधै । वेगी धोरियै चाढ़ आपरै धणिया नै सूप निरवाळा हुवी । इया बेटी रा बाप बेटावाळा नै सोरा नी बैठण दै, रोजीना थळ्या भागै । भाईसैण भी *कैवण लागै कै जावै जैड़ा दिन आवै नहीं । चोखा गिनायत, टावर देखभाळ झट* सनमन कर लेणी । दादा-दादी भी खयावळ करै – सासा रा किसा विसवासा, पाका पानड़ा हा, अवै झाझरकौ है, पोतै री वीनणी देखला तो मरया मुखातर पावा । वैन भाणजा सब कोड करै । कारू-करमी जलमै जद सू आस करण नै ढूकै । टावरिया रै भी कोड लागी रै – 'व्याव वीनणी विलखू म्है तो कद परणासी बावलियी, सगळा साथी परण्या म्है तो रैयौ कवारी टावरियौ ।' इण तरै व्याव री वाता चालती रै, पडळी मोलाइजै अर गठजोड़ा री गाठा घुळती रै । गीत गाईजवो करै — कोयलड़ी सिध चाली, अर केसरिया लाडौ जीवती रै । सालोसाल हजारू चवरया मडै, वीन वीनणी रा रमतिया रमीजै । आखातीज रै अणबूझ सावै गाव गाव ढाणी-ढाणी औ खेल खेलीजै । करसण करणवाळी अर शिक्षा मे पिछड़ी जाता मे इणरो चलण की ज्यादा ही है । दूजी जाता म भी है अवस ।

इणरा केई कारण है । धार्मिक मानतावावाळै रूढ़ीवादी परिवारा मे कन्यादान रो वडी महातम मानीजै । कन्या रै रजस्वला हुया सू पैली परणावणी माईत रौ धरम, पछै पाप री भागी । इण धरम भीरू लोगा रे कारण बालविवाह प्रथा चालू है । केई जाता मे औसर माथै व्याव करणौ भी पुन्न मानै, वारै दिना माथै व्याव मडै । नैना मोटा टावरा नै परणावौ अर सोग खतम । गाव गावतरौ, आणौ टाणौ, काम काज करण मे खुला । खरच माथै जात विरादरी भेळी होवै, सो एकै पाणी मीठा कर नाखौ ।

वाळ विवाह रा आर्थिक कारण भी है । आपणौ देश कृषिप्रधान देश है, कडूमै रै भेळप री परपरा है । खेती करणवाळी अर खेती रै काम सू जुड़ी जातिया रै काम मे हाथ वटावणवाळा जित्ता ज्यादा लोग हुसी वित्तोई ज्यादा लाभ । इण वास्तै व्याव वेगी कर देवै, टावर आपरी घर साभ लेवै । सामाजिक रूप सू पिछड़ी जातिया मे रीत अर अट्टी सट्टी चालै, वॉरै टावरा नै थाळी मे वैठाय फेरा दिरावै ।

वाळ विवाह रा सामाजिक कारण भी कम नी है । मा बाप नै टावरा नै वेगा परणावणै रो कोड लाग्यौ रै । वूढ़ा वडेरा नै पड़पोतै रौ मूडो देख सोनै री सीढ़ी सुरग चढण रो *चाव लाग्यो रै । वीनणी आया सासू रै काम मे सारी लागै ।* वीकानेर मे च्यार वरसा सू सामूहिक सावौ आवै, व्यावरी तजवीज कर ली, नी जणा पछै गई च्यार वरसा री । इण भात भी छोटा टावरा नै अळूझाय नाखै । पण अवै वा वात नी है, फरक आवण लागौ है ।

समाज मे वाळ विवाह रौ चलण है, पण अवै इणनै चोखी वात नी मानै । लोग अवै ध्यान देवण लाग्या है । जिका टावर जाणै ही नी कै व्याव काई है वै

खिलौणा खातर लड़ण लागै । नींद मे ऊघता टावर रोवै – अवार नी खाऊ फेरा, वाटकियै मे मेल दी, दिनगैं खा लेसू । बतावो औ काई ब्याव ! अर कैड़ो ब्याव ? आगै इणरो काई रूप वणैला ! की ठा पड़ै ! पूरी ऊमर आगै पड़ी है । काल नै, ना करै नारायण, की हुय जावै तो का मे वड़ी ! पछै औ काचा मूत क्यू पलेटी ? वाळपणै मे जो रामजी रूसज्या तो आखी उमर रडापौ भुगती । का नातौ का नारगी। आगै कूवो अर लारै खाड ।

आज रै इण भौतिकवादी युग मे वेवा जीवण री हालत कितरी दयनीय अर दर्दनाक है । चूड़ी फूटग्यी उणरा तो भाग ही फूटग्या । इण कुटळ जमानै रै विपाक्त वातावरण मे वाळ वेवा रौ तो जीणौ अर मरणौ मुसकल । आ तो अवै कल्पना ही कूड़ी है कै रामनाम रै आसरै चरखौ कात जमारौ काट लेसी । अरे ! उणरै भी की आशावा, अभिलाषावा, उमगा हैती हैला ? वानै मार समाज रा मोसा उठती आगळूया अर खोटी मीट नै माथौ नीचो कर कीकर झेलती हैला ? वात अनुभूति री है । वावाजी तापौ हो, वद्या जी जाणै है । इणारी दुर्दशा अर इणारै पग वारै गया समाज री दुर्दशा सू वचावण रो जावतौ करणौ जरूरी है । शिक्षित समाज नै वाळ विधवावा रै पुनर्विवाह रै वारै मे विचार करणौ अर कदम उठावणौ ही पड़ैला। समाज री एड़ी नाजोगी मर्यादावा तो तूटणी ही चाहीजै । आधुनिक विचारवाळा युवक युवतियाँ नै इण समस्या सू पार पावण री चेष्टा करनी है । विचला अर निचलै वर्ग रा लोगा मे थेटू नाताप्रथा चालै । पति मरिया देवर री चूड़ी पैहरणी, फाटूयोड़ै माथै कारी लगावणी कोई अजोगी वात नी मानै । नियोग प्रथा भी पैला चालती । अरे वड़ा आदम्या, थे लुगाई चल्या पछै वारै दिन नीठ ऊडीकौ, झट ब्याव कर लेवौ तो था मर्‌या लुगाई ब्याव करै तो इतरी दोराई क्यू ? धीगाणै समाज री विसगतिया, दोपा रा भागी क्यू वणौ ? रोग री जड़ तो वाळ विवाह है ।

वाळ विवाह रै कारण केई वेमेळ ब्याव भी रचीजै । लड़का लड़की रै ऊमर मे 15 20 बरसा रो फरक मिळै । एक रै माझळरात अर एक रै पीळौ वादळ, वळध ऊठ वाळी गाथौ कीकर निभै ! इण बेमेळ ब्यावा रै कारण समाज मे कुकरम फैलै, मानसिक बिगाड़ पैदा हुवै । फेरू रूढ़िवादिता, अंधविश्वास रै कारण भूत पलीत, डाकणसारी, झाड़ा जतर, डोराडाडा रै नाम धूर्त पाखण्डी लोगा रे चक्कर मे रोग अर रगड़ी वधै । सताजोग साइणा टावरा रे ब्याव रौ जोड़ो भी वणै तो पछै समझ पड़ता ही पेट मे टावर पड़ै, लारै कोकळ ऊछरै । वानै पाळै किया अर छोड'र जावै कठै ! जवानी मे वूढ़ापौ वताय दै । तदुरुस्ती गमावौ अर तगी भुगतौ । पण अवै वात लोगा रै समझ आवण ढूकी है अर दिनोंदिन वाळविवाह रो चलण कम हुवण लाग्यो है ।

इण कुप्रथावा माथै आकस लगावण मे सवसू सजोरो उपाय है - शिक्षा । जद लोग शिक्षित हो समझण लागसी तो कुरीता मतै ही मिट जासी । देख ली **जिकी**

जाता में कुरीता, बाळविवाह आम बात है, उणरा पढ़िया लिखिया परिवारा मे आ प्रथा बद है। वै जाणै कै आपरै पगा माथै खड़ी हुया ही ब्याव करणो। राज घणीई प्रचार करै, समझावै कै बाळ विवाह, अशिक्षा, कुप्रथावा, घणी औलाद सू ही दो दस आना आगै रैवे। आ बात रेडियो, टेलीविजन, नाटका रे मार्फत लोगा नै समझाइजै। सरकारी कानून बणियोड़ा है। लड़का लड़की रै ब्याव री ऊमर बाध राखी है। 18 बरसा सू पैली लड़की री शादी नी कर सकौ। इणरौ उल्लघन अपराध है, दण्डनीय है। पण जरूरत तो इण कानून नै जाणण री अर कानून री पृष्ठभूमि नै समझण री है अर बाळ विवाह रे नुकसाण सू वाकिफ हुवण री है। सो आ बात गिण र गाठ बाध लैणी है कै बाळविवाह बुरी प्रथा है। टाबरा रा बाळविवाह नी कर, वानै अच्छी शिक्षा दिरावौ, पालण पोषण करौ आगै बधावौ अर ब्याव री औस्था आया लाडाकोडा ब्याव करौ। ध्यान राखणौ कै बाळविवाह अपराध है अर इण सू व्यक्ति, परिवार अर समाज नुकसाण भुगतै। बाळविवाह बद करौ, छोटो परिवार राखौ, सुखी रौ, अर देश रौ निर्माण करौ।

❐

धीरां री देवळी

रूपसिंघ राठौड़

थोथा घणा बाजै घणा । ओछी पोटी रा मिनख घणी उछळ-कूद करै । सैर में सवा सेर नीं मावै । वारै हिवडै माय आवै "म्हानै घड़गी जिकी वाड़ मे वड़गी।" वानै आखौ आभौ टोपसी ज्यू निजर आवै । वै की आगो पीछो नी सौचै । वै खुदो-खुद नै ई घणा तीसमारखा समझै । वारी सोचण समझण री खिमता घणी माड़ी होवै। वानैं तिरती डूवती नी लखावै । दूजा नैं कम अकल रा भोदू समझै । खुद नैं घणा स्याणा नै पूचवान जतावै ।

दूजोड़ा सौक्यू जाणता वूझता समय-थायरियै री ओट होयनै वारी हा मे हा मिलावै नै कूड़ा हूकारा भरै । भायला नैं इत्ता ऊचा चढ़ाय दे कै पाछा उतरणा ओखा होज्या । पैल्या थानैं कोई नी हटकारै, नी कोई चोखी सल्ला-सूत दे । वैंया दे भी काई ओगणगारा कीणी री सुणै जद नी ।

आजकाल घणो कपूतो टेम । पाटड़ै सू पड़ता देर नी लागै कै लोग अचूभो करता दीसै कै कद राड हुयगी । पण फेरू भी आख नी खुलै । चेतो नी सामळै । दूजा रा खाधा माथै बन्दूक मेलनै सिकार करणिया मोत । हळदी लागै नैं फिटकड़ी कै रग आवै चोखो । करै कोई, भरै कोई, अर मरै तो कोई । आरो घालणिया घणा। लाय-अलीतै माय बाडियै कुतियै री काई दाझै ? भलै मिनखा री स्यान री गारी हो जावै । वै पूठ फेरनै चमगूगा आपरो गेलौ नापै । बानै कोई दूजी वैठ्यो करणियो नी दीसै । मन मार'र रै जावणो पड़ै ।

टेम-टेम री भैर । आजकालै इण मात भतीली दुनिया माय अै कुचमाद्या रा कोयळा घणा बळै । आठ घाल्या साठ मिळै कै काट्या कूवी भरै । जे कठै, कदे-कदास कोई भलै काम धाम री साजत बैठती दीसै तो अै कुपेड़ी बीच माय आय कूद'र टाग अड़ाय, घाव मे घोचो कर नाखैं । आछो तो कीकर करै । आरो जळम ही कुघड़ी हुवै । आरो काम तो वास गुवाड़ी नै गाव सैर माय पटभेळी करण को ई हुवै। पूत रा पग तो पालणै सूता ई दीसै । इणरो अणूतो

दरसण ई लड़ाई भिड़ाई कराणो रै आग लगावणो हुवै । अे लोगा री लासा माथै आपरी रोटी सेकता निजर आवै । आरी मट मुरदाई रो कांई कैवणो । अै हद दरजै रा ओछा मिनख हुवै ।

आरा भात भात रा काम नै भात भात रा नाम । मैणत-मजूरी रै नाम पर अै फळी नैं फोड़ै । आखै दिन रात फैताळ मचावै । नित नूवो साग भरै । आरो ओ कांई व्योपार ? एक नै बसावै दूजै नै उजाड़ै । इणरी आळ पताळ री कांई नाको। साप रा पगल्या अळाय ईज जाणै । लेन-देन रै नाम पर अे माथै ओक माडै । रीता मरीज जावै पण नीचै सू लीक करणिया रो कांई भरीजै । अै दूजा नै वारा मूठी तीन लप समझै नै खुदनै घणा चतर सुजाण जाणै । आनै ओ वेरो नी कै जे आभो फाटग्यो तो कारी नी लागैला । ओजोन पड़त रो ब्लेक होल आपू-आप अयाई चोड़ो होर्‌यो है ।

ओळमा रै भोळावण रा दिन लदग्या-मगरै ढलग्या । साच कैवता माय मारै । लोगा री जीभ नै पाळो मारग्यो। साप सूघग्यो । लोगा रू'रखी री नीति अपणाय ली। माथो देख'र टीको काढ़ण लागा । कोई भी पाछो नी झाकै कै ओ कांई सागी है ? "हूँ कांई करू, म्हारै वस री वात नी ' आ भावना डोल डुवाती दीसै । धोळै दोपारा कत्री काट्या कित्ता दिन सौरो । चू ई नी करण रो ओ पुन परताप है कै आज चौफेर हत्या, बाळण-जाळण, धक्का मुक्की दगा फसाद रै आगजणी रो ताडव हो तो दीसै । वदळै री भावना भड़कै अर जोड़ तोड़ सू नित नूवो साग रची जावै ।

सोचण री वात आ इज है कै सैंग लोग वाग इण स्थिति सू निजात पावण सारू मिल'र भरसक कोसिस करै जिण सू साप इज मर जावै अर लाठी भी नी टूटै । पूरो फळक सवरै सामनै । किंणीनै मरण नै फुरसत नी पण टेम काढ़'र सोचणो पड़ैला, समझणो पड़ैला । ओ बखत सोवण - खोवण रो नी, जागण-जगावण रो है। निजर आसमान सू हटाय र धरती पर लगावणी पड़ैला, नी तो आ पगा तळळी लाव कुवै मे जाता जेज नी लागै । मारग भूलिया भटकणिया नै समझावणा पड़ैला कै धीरा चालो रै– "धीरा री देवळी-ताता रा घाव ।"

□

लोकचावौ गीत 'मुरलौ'

रामनिवास सोनी

विश्व साहित्य मे राजस्थानी लोकगीत आपरी निकेवळी ओप, उजास अर समवेदणसीलता सू परखीजै । समै समै पर अठैरा साहितकारा नै कवीसरा री वाणी समाज रै। अवखाया, हरख-उमाव अर सुख-दुख री परतख तसवीर उकेरी, जकी जुगा ताई धुधळी कोनी हुय सकै । यूलो करीव-करीव सारा ई रसा में चारण जुग रा कविया वाणी रा अणमोळा चितराम माड्या पण सिणगार-वीरता, भगती अर वैराग को पख सदीव सू घणो सरावण जोग रैयौ ।

यू तो राजस्थानी लोकगीता माय 'पणिहारी केसरिया वालम', 'घूमर' 'लहरियो', काजळियो, 'गणगौर', 'लूर' आद आपरी खासियत राखै । कुरजा रो गीत तो इण धरती रो प्रतिनिधि गीत वजै । गुरुदेव रवीन्द्र इण धरती रा गीता नै घणा सराया अर आपणी सस्कृति रा अणमोळ खजाना बताया । आपणै परिवार तिंवार रा गीत घणी मान-मरजाद री थरपणा करै । "भवर म्हानै खेलण दो गणगौर" गीत शिव पारवती सू अखड सुहाग री कामना करै । कुरजा मे परदेसी प्रीतम सू मिलणै री तड़प विजोग री स्थायी भाव वण जावै । इण गीत री कल्पना कालीदास रा मेघदूत सू करी जाय सकै । "पाखा पर लिखदू ओळमा चाचा पर सात सिलाम, सनेसो म्हारै पिव नै पुचा दीज्यौ ए -कुरजा म्हारी धरम री वैण, म्हारो भवर मिला दीजो ए ।" साहित रा महारथी करुण रस नै ई रसा रौ सरताज मानै । विरहण री आपरै पीव सू मिलणै री अनूठी तड़पन इण आस भरया गीत नै घणी ऊचाई ताई पुगायो ।

राजस्थानी लोकगीता मे घणी जगा नणद भौजाई रा रूसणा मनावणा अर चुभता सरावता वोल निजरा आवै । भौजाई री ओ केवणो कितरो ऊडो अरथ देवै के नणद पाड़ोसण मत राखजै । आपरी सासरै जावती वेटी ने इण भोळापण रे लारै वदळै री तो भावना कदेई कोनी रेई पण आपरै पीहर री याद रौ ईसको अर घर री माळकण सू दव'र चालण रा औपता भाव सरावण जोग वण्या । आपणै इण साहित मे 'मुरलो' गीत आपरी न्यारी निकेवळी ठसक अर ओपमा राखै । इण गीत री कथा

मुजब नणद भौजाया ताळाब सू पाणी लेवा जावतै उणानै मुरलो (मोरियो) चपारी अेक डाळी पर बैठो निजर आयौ । इण मोरिये रै सरूप री तुलना नणद आपरै वीरा सू करै अर मोरिये री सुदरता बेसी बतावती भावज री सुदरता कम आंकै । पूरो गीत इण तरै है

चादा थारी चानणिया सी रात जी तारा छाई रातजी
कोई नणद भौजाया पाणी ने नीसरी ।
चुगल्यो भेल्यो सरवरिये री पाळ जी कोई नणद भौजाया
फिर फिर भावज देख्यो छ बागजी
कोई दातण तोड्यो जी काची केळ रो ।
रगड़ मसल धण धोया छ पावजी
कोई रगड़ बत्तीसी काढ़ी ऊजळी ॥
मुरलो वैठ्यो चपेळी री डाळजी
कोई गौरी रै मुखड़े पर मुरलो रीझग्यो
देखोजी बाईसा इण मुरले रो रूपजी
कोई थाका तो वीराजी सू दोय तिल आगला
जाओ ए भावज इण मुरला रे लारजी
कोई म्हाका तो वीराजी नै दोय परणायद्या
ल्यावोजी बाईसा दोय अर च्यारजी
कोई म्हाके तो सरीसी कुल मे कोई ना
देखो जी वीराजी इण भावज री बातजी
कोई थासू तो सरायो वन रो मोरियो
मारूजी दीनी मा वैना री गाळजी
कोई गोरी के मुखड़े पर भारी थापकी ॥

नणद भाभी रा बोल इण गीत मे घणा सरावण जोग । मोरिये रै फूटरापी मिनख सू बेसी बतावणी अर उणरी पाछो तोड़ देणी अठै घणो ओपती लागै । आप-आप री जग्या सारा ईं सुदर हुवै पण राजस्थानी रो मोरियो आज राष्ट्रीय पाखी है उणरो महत्व मिनख री सुदरता सू सदीव वैसी । ओ गीत राजस्थानी साहित रो घणो सरावण जोग गीत है ।

भारत री अरोगी आहार : केवळ फळ

नानूराम सस्कर्ता

आखा वैद्य डॉक्टर अर विज्ञानी शीर्ष विद्वान एक राय सू अलापै केवै कै चोखै शरीर री चावना राखणै वाळा नै सही आहार सेवन करणी चावै। आहार प्राण पाळक, बळदायक, डील डौल री धणी तथा मौज-मजै, सुहणी शोभ-ओप, धीरज अर पाचन आग री प्रबळ रुखाळी है। आहार ही जिनगाणी धारै, जिकी बात सुश्रुत बतावै–

आहार प्रीणन सद्यो बल कृद्देह धारक ।
आयुस्तेज सनुत्साहस्मृत्योजोऽग्नि विवर्धन ॥

"आहार (भोजन) तिरपत करणी वाळो, तत्काल ताकत देवाळ, डीलधारक, आरबळ ओज, उछाव, याददाश्त अर जठराग्नि नै बढोतरी करणै वाळो होवै।" भाव मिश्र भळे लिखै कै –"आहार सू काया पोखीजै, चेतणा, ऊमर, बळ, सुरगो डील, अडूड़ी उमग, धीरज अर अचल अनोखो विकसाव होवै।"

भूख लागै आहार नी करणै सू डील टूटै, थकेलो आवै अर भूख मिट तो जावै, पण आळस बेवारी वधै, ऑख्या जळै अर आदमी ताकतहीण तथा धातुक्षीण ज्यू आपनै जाणणै लागै। वै री भोजन पचाणै वाळी कळा कमजोर हो ज्यावै। हिड़दो उकळ उठै, आतड़या अै री-बैरी हो जावै, कब्ज रा कड़ी-कूटा जड़ीजै अर आदमी आकळ-व्याकळ होय'र ऊँघणै लागै। पण हिवड़ो तातो तपै, काठो पड़ै जद फळ सजळ दवा री काम काढै। इसड़ै समै-अवसर सारू फकत फळा रो फायदो दत्तो लेवणो जाणीजै। आ बात छाती ठोक'र बताणी पड़ै कै – जदी खाणै सागै सदीव फळा रो थोड़ो वौवार करतो रैवै तो बो आदमी कदमकाळ ही बेमार नी वणै। अर मादो हो ही जावै तो जादक थोड़ी सी अड़चल भुगतणै रै लारोलार तुरत निरोगी हो ज्यावै। कारण–फळ प्राणी नै कुदरती औखद अरपै। जे फळा रै भेळ दूध अर माखण गटका लियो जावै तो भळै भोतेरो लाभ मिल सकै। शरीर वणै, तेज तणै अर भूख डील रै वधेपै खातर घेरा घालवो करै। फळ रै खरूदै मिनख माथै बूढापो वेगो सो हाथ नी घालै।

मालिक री महती महर सू ई मिनखा वास्तै फळ फूल, साग पात अर धान चून जिसड़ा वधका आहार वण्या है, जका मे फळ फूल तो आखा पदारथा मे सिरै सुख स्वस्थ मानीजै । फळ री लूठी वात आ है कै वै सगळा जीव जतवा नै मोफत मिलणै जोग जिनस हुवै । पछी गिगणा चढ उडै – पण फळ फूल खाणै रा पूरा हकदार है । पशु जगळ मे चरै फिरै तो फळ खावणै मे सैसू आगै सफळता पा ही जावै । आ वात सही तौर सू मानणी पड़ै कै फळ रै समान जीव मात्र रौ सायरौ आहार ससार मे दूजो नही । साच माच फळ, जीव धारणिया सारू एक सजीवण अचूकौ आहार है। मितव्ययी मिनख नै दवा-औखदा री ठौड़ फळा नै लेणा-अपणाणा, आछा ही नी घणा आछा रैवै । खास-खास गुणी फळा रा नावा बोलू ।

आम – वेजोड़ वधको मीठो, सुख वळ दाता स्वादीलो गीलो, मनभावण-मनरजण होवै । इयै रा आम्र, रसाल, पिक प्यारो, फळश्रेष्ठ, आमो, वसतदूत, नृपचावो इत्याद मोकळा नावा है । काचो आम कैरी वाजै पण पाका आम कलमी, लगड़ा, मालदह, सरोली, सिरसा, दसहरी सैनाणा माण ओळखीजै । इणा सू घणी भात रा व्यजन वणै ।

कटहळ – कटहळ रौ रस ताकतवर पण फळ लूठौ मोटौ हुवै । यो गूलर री तरा पेड़ री पेड़ी फोड़ नै नीकळै । फळ हरियै रग रौ अर ऊपर कवळा काँटा । पण तोल मे वीस कीलो अर पौण मीटर ताई लावौ हो सकै ।

केळो – केळो स्वर्ग रौ फळ कहीजै । यो मीठौ, सुवाद नरम अर वळ प्रभावी अर खून विकार, दाह, घाव, क्षय अर वाय-वादी नै नसावै । पण आँख्या रै रोग अर प्रमेह नै परिया राखै । दिन मे एक दो वार खा लेणौ चावै ।

नारेळ – काचै नारेळ रौ जळ सरवगुणी ठडौ मनरजण वीर्य वधाणौ, हळकौ, मधुर, तिस अर पित नै मिटावै । नारेळ मगळ कामा में काम लेइजै । चिटकी चढै, घिरत घुळै ।

अनरस – वूर रै वूजै जिसड़ो दरसे पण उवै रौ रस सरव रसा सू अगवो ।

दाख, अगूर अर किशमिस – वळ, वीर्य वधावै, पित कफ रा रोग काटै अर पकवान व्यजना मे रळाई जावै ।

खजूर, खुमाणी, वादाम – क्षय रोग, कोठै री वादी, उळटी दस्त, ताव भूख तिस, खासी, दमादि रोग काटै ।

सेव – वनासपति – हळकी मीठी ताकत देवाळ, त्रिदोष नासण होवै ।

तरवूज-गरमी रौ फळ, नदी-दरियावा री कच्छारा मे हुवै, पण वैरी जोड़ मतीरौ मिष्ठ गिरी मुजव सरदी रौ फळ, म्हारै भडाण क्षेत्र रै खोडाळै, काकड़वाळै जिसा

धोराळा गावा कनकर खजै, उपजै निपजै । अठै खरबूजा, काचर-काकड़िया ही होवै। पण खीरा री जात दूजी दिपै ।

देश मे भळे ही नारगी, जामुन, बोर, टमाटर, सिंघोड़ा, फालसा, सहतूत, अनार, मूगफली, अखरोट, विजौरा, नीम्बू, इमली इत्याद अनेकू फळ होवै, पण मूगफळी तो बूटै (पौधै) रै जड़ा मे लागै ।

फळा मे इन्द्रिय जलाव री जोड़ गुण वळ हुवै जिको आदमी रै गुरदा री गदो मैलो निसार नाखै । मिनख रै गुरदा री बेमारी वास्तै यथा जोग फळ खाणै सू घणी जीसोरी होवै । तरबूज, सतरी अर मतीरी ही इयै दोरप खातर आछा फळ कहीजै । फळा रा रस गुरदा री खाली सफाई नही करै -- दूख पाव री सारो रिणकौ टसकौ मेट'र रोगी नै खुश कर देवै । सेव, सतरा, वनासपति, अनार, सैतूत, केळा आदमी नै अजीर्ण सू उबारै । पण सैसू वत्ता गुण अजीर, अगूर, खजूर, किशमिश अर खुमाणी खाणै सू लाभै मिलै । केळै अर मळाई रो मेळ मिनख री पीरूष तत्त पाळै ।

जदी कोई आदमी रै हिड़दै मैं गरमी उपड़ खड़ै अर वै रा काम धीमा पड़ जावै तो हिड़दै रै कार सचालण नै तेज करणै वेग दिन मे दो वार फळ देवणा घणा जरूरी जाण चोखा हुवै । फळा मे जकौ लूण अर खाटी हुवै वो हिवड़ै रै कामा नै एक तरा सू चालू करै । हिड़दौ फळा री चीणी नै ऊपरीं चीणी री बजाय वेगी हजम कर लेवै । वेमार रै डील मे किणी कारण सू जे लोही री काठ आ ज्यावै तो बा फळा रै खाणै सू जावक अळगी न्हाठ ज्यावै अर नित नूवो लोही वापरतो रैवै । केळै मे यो लाभ वत्तेरो लाधै । बाळका रै डील मे जे लोही री काठ पड़ ज्यावै तो वैं रौ खास औखद फळा री बीवार करणी जाणीजै । डील री पाछी आब-ओप फळ खाणै सू अर सतरै मौसमी रै चाव वर्ताव आछी होवै । इया सू लोही रो जैरीलोपणी जातो रै अर खरूदा रौ रग-रूप चिलकण लाग ज्यावै । मूढै माथै फुणस्या-झुर्र्यां जावक नी ऊपड़ै, पाणी पळकै पसरै ।

मिनख रै डील मे वात वादी सू एक प्रकार री ओपरी लूठापौ आवड़ै । यो वा मिनखा मे इधको उपजै कै वै अळसा मळसा करता वेकार वैठा पेटल जिनगाणी वितावै । उदर वधै, हाथ-पग फूलै अर रोगी बणै । इसड़ा लोगा नै नूवो वळ उपजावण खातर रोटी री जागा फळ खाणा बताणा पड़ै । रोजीना दानै नारगी अर नीम्बू रै रस रा दो एक गिलास पी लेवणा चहीजै, जिकै सू मोटापो बाठा पग देतो जातो रै । कमजोरी रै कारण सू उवारण सारू पाका ताजा अगूर, सेव, वनासपति, केळा अर अजीर भेळा माखण मळाई चोखा वताइजै । पण अणामीत रा सैंग सारै नही ।

पेटूगी-अतिसार रै रोग्या नै ही फळ माड़ा नी फळापै । खैण धाँसी आळा रोग्या रै फेफड़ै में फळा रो आहार अचूक रामवाण रो काम करै ।

विया तो फळ आखा पाका ही गुणकारी हुवै, पण वील (वेल) काचो ही घणौ गुणदायी बतायीजै। वील, हरड़ै अर दाख सूका फळ परम लाभसार, पण दूसरा सैंग रसदार थका वत्ते गुण गिणीजै। फळ अर वारा गोटा मे एक जिसड़ा गुण गळ्या रळ्या मिलै। पण मैलै कचरै री कोझी अकूरड़ी ऊपर विकस'र ऊगै-लागै तथा जैरीला कीड़ा रो गमायोड़ी अर गळ्योड़ी हुवै अथवा कुरुत री ठडी-तातौ कर परो'र छोड्योड़ी बेमेळो फळ कदे'नी खाणौ चायै। आ वात भावप्रकाश रै पाचवै प्रकरण मे इण भात बतायोड़ी है –

'अकालज कुभूमिज पाकातीत न भक्षयेत।' ॥ १३७ ॥

छेकड़ चाणक्य नीति री एक सूक्ति सारू लेख री समापन करू कै –"भुक्त वृथा नो रुचि न पथ्य।" अर्थात जको आहार न आछौ लागै अर न पथ्यकारी हुवै वो खाणो जावक फिजूल जाणौ। फळाहार हितकारी वीवार कहीजै–

सजीवण बूटी जड़ी, पियूष पान अथाह।
ईमी रस रजण मधुर, फळाहार वा! वाह॥

❐

योग

दशरथकुमार शर्मा

तंदुरुस्ती अर सुन्दरता रै वास्तै करियौ गयो इकजाई उपाय नै ही योग कहवै है। कसरत मे सारौ ध्यान मास पेश्या पै रहवै है। जदकै योग मे घणै आसतै आसतै लयात्मक तरीका सू अगा मे विना हलचल कै योग री क्रिया पूरी होवै। मिनख वित्तो ही जवान है जित्तौ वीकी रीढ़खम्ब लचकदार है। योग काया, मस्तक अर आतमा सबनै फायदौ पुगावै। योग सू अत श्रावी-तत्र अर परिवहन-तत्र सबनै लाभ पूगै।

सादी भोजन आपा नै जीवन री ताकत देवै जदकै गरिठ भोजन आपारी देह सू ताकत खीच लेवै। ई वास्ते आपा जित्तौ थोड़ी भोजन कराला, उत्ती ही ५ ती रैवैली। माथा सूणी पग उपर कर लेवा सू, आसण मे जिकौ भाग हिरदा रै उपरा होवै है, वो भाग हिरदा रै नीचे आ जाया करै है, ई कारण सू शीर्पासन सू सारा शरीर पै अचम्भो पैदा करणवाळौ प्रभाव पड़ै।

जोड़ा री दरद दूर करण रै वास्तै योग सबसू वढ़िया उपाय है। वीड़ी तम्वाखू री शरीर ने कोई जरूरत कोनी। धूम्रपान री आदत रौ सम्वन्ध तन्त्रिका-तत्र सू होवै। योग सू तन्त्रिका-तत्र मजवूत वणै। ई वास्ते वीड़ी तम्वाकू री जरूरत कोनी पड़ै। सार री वात आ है कै योग सू जीवन सगती वधिया करै है अर नुकसाण देवावाळी आदता कम हुवै है। ई कारण सू योग हर मिनख नै चाहे वो किणी ऊमर या धधा वाळो अथवा वीरो स्वास्थ्य कस्यो भी होवै सगळा खातर योग फायदैमद होवै।

❑

नाटक

बळिदान

जयन्त निर्वाण

[ठौड़– घनघोर जंगळ । दो मोटियार आजादी रा दीवाना आपस मे वातौचीतौ कर रैया है ।]

विजय क्यू भी समझ मे नी आवै । महात्मा गाधी कैवै है– सत्य, अहिंसा रै सस्तर सू अग्रेजा नै हरा देस्या । आनै भारत छोड़ र जाणौ ई पड़सी। पण म्हारै आ वात समझ मे नी आवै । काल ई पूरै जुलूस नै गोळिया सू भूण दीयी। लुगाई टावर कित्ता मरग्या । किस्यौ अग्रेजा रौ दिल वदळीजसी । वै तो आपानै कायर समझ राख्या है। लोग भारत माता री जै वोलै । जुलूस काढ़ै, अर गोळिया सू भुणीज'र मर ज्यावै ।

अजीत तेरो कैणौ बिल्कुल ठीक है । भला आ कोई वात हुई । कीड़ै-मकौड़ै री जिंया भारत मा रा वेटा गाधी रै इसारै पर मरता जा रैया है । म्हारी समझ मे ईंट री जवाव पत्थर सू दिया विना आ वादर-मुखा री अक्ल ठिकाणै कोनी आवै ।

विजय म्हारी भी आ ई राय है । आनै सवक सिखाणै वास्तै आपानै भी वरावरी मे माड़ धाड़ मचाणी चाइजै । जद आरी मैम, टावर अर अफसर मरसी जद ई ठा पड़सी कै मरणै री मजौ कै है ।

अजीत तू ठीक कैवै है । मनै गाधी जी रौ रास्तौ विलकुल आछौ कोनी लागै । अरे भाया, साप सिर पर अर वूटी पहाड़ पर । कद अग्रेजा रौ दिल वदळसी ? वै के इत्ता भोळा है कै मेवै रै रूख नै मतै ई छोड'र भाग जास्यी । राजगुरू, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद वाळौ रास्तौ ई ठीक लागै। आनै मारो । अशाति पैदा करो । अग्रेजी राज रौ पायौ हिला दूयो। चाहै काळा हो चाहै गोरा, जका आपानै गुलाम वणाया राखणौ चावै, वानै मौत रै घाट उतार घौ ।

विजय अरे बात तो ठीक है । म्हारौ भी ओ ई विचार है । पण ई देस मे एक बीमारी हुवै तो इलाज हुवै, अठै तो के पत्ती कित्ती बीमारिया है ।

अजीत अरे इत्ती ई कोनी । अै नाव रा राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा। अंग्रेजा रै पगा री रेत चाट र भोग विलास री जीवण अपणा राख्यौ है। कैवै है– म्है क्षत्री हा – राजा हा । सै सू ऊँचा हा । अै आपा कनै सू तो खम्मा अन्नदाता कहावै अर आप अंग्रेजा नै मुजरौ करणै मे उणा री जूत्या उठाणै मे आपरौ गौरव समझै । जिकौ रियासता मे देस भगती री बात करै, बीरी इस्यी दुरदसा करै कै जम का दूत भी काप ज्यावै । आनै बिलकुल भी होस कोनी ।

विजय कोनी भाया, तू साची कैवै है । ई देस री दुरभाग सदा ई रैयी है । हिन्दू-मुसलमान सिख-जैन-पारसी आरी आपस मे सिर फोड़ी कराय र, लोगा नै न्यारा-न्यारा बाट राख्या है । पता कोनी किस्यौ धरम - किस्यौ सम्प्रदाय मोक्ष मे ले ज्यासी ?

अजीत देख बात अठै तक कोनी । आपा भी जात पात अर छूआछूत रै पजै नीचै सिसक रैया हा । चाहै आपानै कोई मार देवै । बैन-बेट्या री लाज लूट लेवै, पण म्है ऊँचा – थै नीचा कैय र आपस मे सिर फोड़ी करता रैवा।

विजय आ बात तेरी सोळह आना सही है । पण सगळी समस्यावा सू एकै सागै तो बाथेड़ी करीजै कोनी । अै तो आपणी घरेलू समस्यावा है । आ सू आपा पछै मलटस्या पैली आ भूता नै भगाणा जरूरी है ।

अजीत चन्द्रमोहन ओज्यू ताई कोनी आयौ । आज बी दुसटी अफसर री दफ्तर उड़ाणै री बात ही । बड़ौ बेईमान है । बेकसूर लोगा री सभा ऊपर घोड़ा दौड़ा दिया । मेरै मन मे बदळौ लेणै री भाव जोर पकड़ रैयौ है।

(चन्द्रमोहन आवै)

चन्द्रमोहन सारी योज्ना तैयार है । अबै आपणै अड्डै चालौ । बठै केई साथी उडीक रैया है । हा ,चालौ । (सगळा बठै सू चल्या जावै ।)

दूजौ दरसाव

(जगा पहाड़ री गुफा मे आपरै अड्डै मे कैई देस भगत बातचीत कर रैया है।)

विजय भौत बढ़िया रैयी । पूरौ को पूरौ दफ्तर साफ हुग्यौ । इत्ता दुस्ट तो पापै पुनै लाग्या । अबै काल लाट साब री दौरो कलकत्ते कानी हुसी।

अजीत हा, हुसी पण गाड्या च्यार छूटसी । बो दुस्ट किसी गाड़ी अर डिब्बै मे हुसी ? ई री भी तो खुर खोज हुणी चाइजै ।

विजय तू चिन्ता मत कर । आ बात दामोदर मालूम करणे वास्तै गयोड़ो है । वो काळवेलियै रै भेस मे टेसण पर ई चक्कर लगा रैयो है । साप रौ खेल दिखाय'र लोगा नै रिझाय रैयौ है ।

अजीत हूँ दामोदर बड़ो हुसियार है । आपणी मडली ठीक है ।

विजय अरे के बात है ? देखी, उतराद कानी आ धूड़ किया उड़ै है ? तेरै कनै दूरबीण है नी ? निगै कर ।

अजीत करली भाया निगै, दै बादर मुखा आपानै दूढता आवै । लागै है कै किणी मा रै कपूत बेटै भेद खोल्यौ है । (थोड़ी देर रुक'र) अरे - इस्या कुल कलकी कपूत बेटा भाया रै नी जामता तो आ दसा क्यू हुती । अठै तो घणा ई गद्दार पळै है । थोड़े सै लालच मे आप'र देस रै वास्तै लगाणै वास्तै (सारू) त्यार बैठ्या है ।

विजय अबै चुप हुज्याओ । घोड़ा अठीनै ई आ रैया है ।

अजीत सावधान ! बदूका उठाल्यो । बारूद भरल्यो । मोर्चां रै ओलै हुज्याओ । (खड़खड़ाहट बदूका री आवाज सुणाई पड़ै । ईनै सू सगळा गोळ्या चलावै । दोनू कानी गोळ्या री गाज हुवै । एक गोरो घायल हुय'र नीचै गिरै ।)

एक गोरो ओह ! कैसा आदमी है । मार डाला रै अरे भागो वो आया ।

दूजो गोरो ठहरो थोमस, घबराओ मत । एक एक को भून देंगे । ओह पुअर इडियन्स ।

विजय चलाओ गोळी मारो साळा नै । (अचाणचूकै एक गोळी वीरै सीनै पर लागै ।) जै भारत माता ! (कैवतो थको म' ज्यावै । शष साथी अग्रेजा पर बरस पड़ै ।)

अजीत भागो बड़ो खतरो है । (सगळा भाग ज्यावै)

चन्द्रमोहन विजय देस री आजादी रै खातर बलिदान हुग्यो । बा गोळी उण रै नी लागी है । आपा सगळा रै काळजै पर लागी है ।

दामोदर हाय साथी ! विजय तू चल्यो गयो । तू तेरो फरज पूरो करग्यो पण म्हैं तनै ओ पतियारो दिरावा हा कै तेरो बदळो म्हा लेस्या । आ दुस्टा नै सात समदरा पार भेज'र ई दम लेस्या ।

सगळा साथी धरती रै बेटै नै धरती नै सूप द्यो । आगै री योजना बणाओ। अबै अठै रहणो ठीक कोनी । क्यू कै आ जगा अब खतरै सू खाली नी है। चालो अठै सू ।

(सगळा चल्या जावै ।)

❑

आंख्या खुलगी

•

राजकुमारी

पात्र परिचय – किसनाराम – एक निरक्षर किसान
दद्दा – किसनाराम री पिता
मोडकी – किसनाराम री वेटी (उम्र लगभग 11 वर्ष)
किसनाराम री घरवाळी, मास्टरजी अर कमली।

दद्दा (खासते थकै) किसना ओ किसना

किसनाराम (तेजी सू मौय बड़तो) कै को वापू ? हूँ आग्यो, किसनो।

दद्दा म्हारा हाण थाकग्या वेटा। ना जाणे कद ऊपरली बुलावौ आ जावै। पण मन माय बस एक मशा है।

किसनाराम वापू। थे वेखटके आपणी वात केवौ। माइत री आज्ञा मानणी तो टावरा रो करतव है। केवो काई ईछ्या है ?

दद्दा वेटा। आख्या वद करणै सू पैला मोडकी रा हाथ पीळा करणै रो पुन बटोरणो चाऊँ हूँ।

किसना ल्यो वापू। थे तो म्हारे मन री वात कर दीवी। मै तो छोरो ठावो कर राख्यो हूँ। केवो जद व्याव माड देवा।

दद्दा तो फेर शुभ काम मे देरी किण वात री ? वात पक्की कर लेवो।

किसना (पुकारते हुए) मोडकी री माँ सुणे है। हूँ सेठा कनै की रिपिया उधार लेवण ने जाऊँ हूँ, थारी सोने री हसली गिरवी राखणी पड़ैगी। झट सू ल्या दे (की याद करती थकौ) अरे, मोडकी इनै आ फिरती आछी कोनी लागै, घर रो काम-काज सिखावौ। जा हेलो मार। (किसनो रूपयो लेयनै वयीर हुवै)

किसना लेवो दद्दा सेठ सू पूरा पाच सौ रिपिया लायो हूँ। सेठ बडो ही दयालु है, बोल्यौ, छोरी रै व्याव रो मामलो है, मूजी पणौ ना करी,

जरूत व्है तो फेर ले ज्यायी । ऊपर वाळे री किरपा है । (मोडकी माय वड़ै ।)

मोडकी अरे वापू !! इत्ता रिपिया कठै स्यू ल्याया ? ल्याओ मैं गिणू । (झपट्टा मारती गिणै) सौ दो सौ चार सौ । पूरा चार सौ रिपिया है । वापू ई रिपिया स्यू म्हनै एक सलेट ल्या दो, मैं स्कूल ज्याणो चाऊ हू।

किसना (गुस्से से) कै वोली, फेर वोली तो !! चल परीया हट !! ई छोरी री जुवान तो कतरणी ज्या चालण लागगी है । स्कूल ज्यासी ? घर से वार पग धर्‌यो तो तोड़'र राख दयूँ ला । चोखी तरीया समझ लेयी । (थोड़ी देर रुक कर) अर, तनै कै ठा, रिपिया चार सौ है, के पाँच सौ ? तने गिणना किया आवे ?

मोडकी मै मै वा कमली स्यू गिणती सीखी । वा स्कूल जावै है । मैं ठीक कैयू वापू, ए रिपिया चार सौ ही है ।

किसना आ छोरी तो म्हारो माथौ खराव कर देसी । सेठ वापड़ो काई झूठ वोलै । मुनीम जी खनै चोखी तर्‌या गिणा अर रोकड़ा दिया है । पूरा पाच सौ है । अर, आ विती सी छोरड़ी कैवे, रिपिया च्यार सौ ही है। अवके जवान खोली तो (थाप दिखावै, मास्टर आवै)

मास्टर क्या वात है किसनाराम जी ? क्यो गरम हो रया हो वच्ची माथै, कोई नुकसान कर दियौ कई ?

किसना कोई वात कोनी मास्टर जी । मोडकी रो व्याव कर रह्यो हूँ । इवके मिगसर मे ।

मास्टर इत्ती जल्दी व्याव ? वाळ विवाह करणौ तो कानूनन अपराध है ।

किसना कानून धानून म्है काई जाणा हा ? कुळ री रीत निभाणो ही सारा सै वड़ो कानून है ।

पत्नी *(घूंघट टेढ़ौ करती) मास्टरजी ने पूछ तो ल्यौ, रिपिया कित्ता है ?*

किसना (रीसा वळती घरवाली सूं) थारो भी माथो फिरग्यो दीखै । (फेर मास्टर सें) वताओ मास्टरजी, ए रिपिया कित्ता है ?

मास्टर सौ तीन सौ चार सौ । चार सौ रूपया है । कठै सू लाया हो ? फसल वेची है ?

किसना (उतावळे पण सें) चोखी तर्‌या गिणौ मास्टर जी ।

मास्टर अरे भाई, अै तो चार सौ ही है ।

किसना (दु:खी होतो हुऔ) पण मास्टरजी, सेठ जी तो केयो पूरा पाच सौ रिपिया है । अगूठो तो पाच सौ माथे ही लगवायो । (सिर पकड़ लेवै) अरे ऊपर वाळा, ओ काई हो रह्यो है ? इत्तो बड़ो धोखो ? नही, मानणी कोनी आवै ।

मास्टरजी ठीक है, मानण मे साचाई आ वात नी आवै । ठोठी लोगा नै सैही लोग ठगै । कमली रुपिया नी गिणती तो ? धोखो खावणो ही पड़तो। किती बार थे जिन्दगी मे इयान ठगीज्या हो ? अब मोडकी नै पाठशाला भेजस्यौ क नी ?

किसना जरूर भेजस्यू मोडकी नै स्कूल, मास्टरजी । ब्याव भी दो साल ठहरनै करसू । अबै म्हारी आख्या खुलगी मास्टरजी ।

❑

घोड़लो

जगदीश चन्द्र नागर

जागा तेजाजी रो भाव आणे रो थान । थान माथे माटा री दो छोटी सिलावा एक रे माथे तेजाजी रो चेरो खुदियोड़ो है दूजी सिला माथे जीभ लपलपातो एक काळमदार स्याँप मडियोड़ो है । तेजाजी री सूरत माथे माळीपानो लागीयोड़ो है । मूरत रे साव सामी एक-दो धूपेड़ा भाड़ो देणे ताई थोड़ाक मोरपख नारेळ गुळ अर एक वजनदार चींपियो पड़ियो है । भाव लेणे सारू घोड़लो गोड़ियाँ-ढाळ नै तेजाजी री सूरत रे पागती एक फाटियोड़ो बिछावणो बिछाय नै बैठ्यो है । पाच सात जात्री जिण माय दो चार लुगाया भी है आप रै दुख दरद रै न्याव सारू थान माथे ई बैठा है । वणा री निजरा घोड़ळा सामी जमियोड़ी है । सब जात्री भाव आणे री बाट देख रह्या है । भाव लेणे सारू घोड़लो खुद ही तेजाजी रे सामी ज्योत लेय रह्यो है । ज्योत रे पागती घी रो दीवी जूप रह्यो है । काँसी री थाळी अर् ढोल बाज रह्यो है । ज्योत आवताँ ई घोड़ळो तेजाजी री मूरत रे सामी पड़ियो चींमटो उठायने आपरे मारणीं सरू करै भाव आयो देख ने सब जात्री चुप चाप होय जावै । घोड़ळो थोड़ी देर ताई हाका हूक करै अर् जोर-जोर री गरदन हिलावै ।

एक जात्री पधारो म्हारा जामी आओ अन्दाता थाँकी ही बाट देख रह्या हा ।

दूजो जात्री (आदमी) माथा ऊपर सू आपरो पोतियो उतार ने घोड़ळा रै धोक देवतो थको जै हो माराज घणी खम्मा कँवरा आप पधारियाँ सारी सोभा होसी ।

घोड़लो (चुप होवतो थको) हाँ भाई जातरू लोगा म्हूँ थाँकी सब वाता सुण मेळी हूँ क थे इण दुनियाँ माये घणो अन्याय कर रह्या हो। म्हूँ आज थाने ठिकाणे लगाय ने रेस्यूँ।

पेलो जात्री (आदमी) अन्दाता इतरो कोप मती करो म्हे आपरी हाजरी माये हाजर हाँ अर् हाजर रेस्याँ आप हुकम फरमाओ।

घोड़लो अय बूझ थने काँई बूझणो है ?

पेलो जात्री थे तो अन्तरजामी हो अन्दाता घट घट री जाणो हो म्हूँ आपने काँई वताऊँ ?

घोड़लो तो सुण। थारा बेटा री बहू घासतेल नाक ने बळगी अर वणरी हाळत घणी खराब है जीण्सू तूँ आयो है।

पेलो जात्री हाँ, म्हारा जामी। आपरो केवणो वाजब है।

घोड़लो (जात्री माये रीस करतो थको अर् चीमटो दिखावतो थको) थारे तूळी ळगाऊँ लोभीड़ा तूँ थारे बेटा री बहू नै रोज डायज्या सारू तग करै ओ किया घर रो न्याव रे। चाल भाग अठेसूँ म्हूँ थारो न्याव नीं करूँ।

पेलो जात्री (डर ने हाथ जोड़तो थको) आपरो केवणो ठीक है, म्हारा जामी पण इण वार तो आप ने म्हारी लाज राखणी ई पड़सी म्हूँ आसा लेय ने आयो हूँ। अबके ठीक हूया पछै म्हूँ वणनें डायज्या सारू कदेई तग नी करूँ।

घोड़लो (जात्री ने समझावतो थको) देख भाई, तूँ व्याव स्यादी जेड़ा सुभ कामा ने सौदो समझे है। डायज्या री आ रीत एक सामाजिक बुराई है। उणसूँ तूँ वरवाद हो जासी। डायज्यो लेणो अर देणो दोई गुना है। इण वार तो म्हूँ थारा बेटा री बहू ने वचाय लेस्यूँ ने थारी लाज राख लेस्यूँ पण इण रे वाद तूँ वणने डायज्या सारू तग करी है तो म्हूँ थारा कुटम ने झटको वताय देस्यूँ।

पेलो जात्री इण वार तो डूबता ने वचाओ अन्दाता पछै म्हूँ डायज्या रो नाम भी नी लेऊँ।

घोड़लो (फेरूँ हूक हूक कर ने चीमटा री खावतो थको) हाँ भाई, दूजा जात्री आवो।

दूजो जात्री माराज म्हूँ म्हारा घर री लुगाई रो ने म्हारी जीवताँई मुकती करणी चाँऊ हूँ म्हने हुकम फरमावो।

घोड़ळो (रीस माँये गरजतो थको)कुँण है रे तूँ आयो है जीवताँई नुकतो करण वाळो उतर म्हारी थान ऊपर सूँ । नहीं तो म्हारी रीस खराब है । दुनियाँ माँये केई मिनखा रे पागती तो ओढण पेरणे सारू कपड़ा ने दो टेम खाणे सारू धान कोनी ने ओ बापड़ो धणी लुगाया रो जीवताई नुकतो कर ने सुरग जासी तूँ कदेई सुरग देखियो रे केड़ो क् है ले चाल म्हने भी सुरग दिखा ।

दूजो जात्री अन्दाता आपणा समाज रा केई रीति रेवाज ऐड़ा है जिणाँने आपा टाळ नी सकाँ ।

घोड़ळो (फेरूँ गरजतो थको) समाज पड़ियो छूला माँये ने तूँ भी वणरे साथ पड़ज्या पण म्हूँ तो थने जीवता थका ने मरिया पछै भी नुकतो करणै रो हुकम नी देऊँ । आज टेम घणो बदळियो है इण सारू आपरी परिस्थितियाँ ने देखे ने चाळणो जरूरी है। म्हारो लोगा ने आ ई हुकम है के जीवता ने मरिया पछै वाखो नुकतो या मिरतुभोज रे नाँव खरच करणो एक सामाजिक बुराई है । थाने इणने मिटावणी चावै – घर घर जाय ने उणरे विपरीत जागरण री ज्योत जगावणी चावै नी तो थे कदेई ऊँचा नी आवोला ओ म्हारो सराप है ।

दूजो जात्री आछो बापजी धणी खम्मा अन्दाता आपरो हुकम सिर माथे ।

घोड़ळो (तीजा जात्री ने बूझतो थको) हाँ भाई थारे काँई दूक पाच है ।

तीजो जात्री बापजी म्हूँ पर जातरो हूँ इण गाँव रा लोग म्हारे सागे घणो दुरभाव राखे म्हने अकेळो देख ने सतावणो चावै । म्हू काँई उपाव करूँ ?

घोड़ळो (आँखियाँ फाड़ ने जोर सूँ हूँ हूँ करतो थको) काँई कियो रे म्हारा भाई थारे साथ घणो दुरभाव राखे ?

तीजो जात्री हाँ हुकम ।

घोड़ळो (पास पड़िया चीमटा सू आपरे सरीर **माये लगातार जोरदार** मारतो थको ने रीस खावतो थको) **थे क्यूँ म्हनें कायो** करो हो आजरी इण पढ़ियोड़ी **दुनियाँ माँये कुण हिन्दु** अर् कुण मुसळमान । आपा सब एक भगवान री औलाद हाँ । राम भी वोई ने रेमान भी वोई है । फेरूँ थे क्यूँ भेदभाव राखो क्यूँ थारा दूजी जाता हाळा भाया सूँ

दुरभाव करो हो.........इणं-लड़ाई माँयें थानें केड़ी मोज मिळै है.........वा भी बतायदो ।

चौथो जात्री : नहीं म्हारां जामीं । हरेक आदमी चाहे वो कोई भी जात सूँ मेळ खाती हुवै.........आपणों भाई है.........आपणी तरें वो भी इणं देस रो नागरिक है ।

घोड़ळो : तो जावो आज सूं ई थे ओ नेम लेवो के थे झगड़ो नीं करोला.........भाई चारा सूँ रेवोला ने.... . ..जो नीं रह्या तो म्हारे पागती दूजो उपाव भी है.........जिणसूँ थे तुरतां-तुरत लाईणं माथे आ जास्यो (पाँचवो जात्री ने बतळावतो थको) हाँ भाई, थारे काँई न्याव कराणों है ? जळ्दी बोळ ।

पाँचवों जात्री चापजी इंण गाँव रा ऊँची जाता हाळा म्हने कुआ माथे पाणीं नी भरवा देवे.........नें.........नी भगवान रा मिन्दरा माँय जावण देवै.........गाँव री गळियाँ माँये सूँ निकळूँ जणे कोई तो केवे इणसूं दूर रेवो.....नें कोई केवे...... ..इणनें गाँव सूँ बारे काडो ।

घोड़लो : (फेर रीस करतो थको) अठै री जनता तो जानवरां सूँ गई बीती है.........दुनियाँ आकासां मांये घर बणाणें री सोच री है.........नें अे धरती माथे भी लड़ता-मरता नीं धापे । थै ओ छुआछूत रो भेदभाव कणें छोड़स्यो रे.........।

एक जात्री . हाँ.........अन्दाता..... ...आपरो केवणो साँचो है ।

घोड़ळो : तो जाओ.........याँनें थे आदमी समझोला तो थाणें गाँव माँयें सुख-सान्ति रेसी.........खूब बरसात होसी.... ....घणों धान होसी.........पणं यांनै पूरो मान देवणों पड़सी । (दूजा जात्री कानि देखतो थको).........तूँ तो इणं थांन माथे आज नुँचोई निजर आवै.........थारे काँई बूझणों है ?

जात्री : अन्दाता, म्हूँ गरीबी सूँ घणो तंग आयग्यो.........म्हारे पागती जमीं.........जायदाद काँई कोनिं.........पिरवार रो गुजर-बसर करणें तांई कोई उपाव बतावो ?

घोड़ळो : तूँ तो साव भोळो ई दीखे रे.........सरकार री तरफ सूँ गरीब लोगां ने इतरी जमीं-जायदाद मिळे क.........काँई बताऊँ.........आज इणीं गाँव माँयें एस.डी.ओ. सा'ब पधारेला.........तूँ एक दरकास लिख नें थारी गरीबी री गाथा बणां नें सुणांइजे.........थनें जरुर जमीं मिळसी.........पण झूँठ मत बोळजे.........नही तो दुख पावेला ।

जात्री आछो अन्तरजामी आप कवो ज्यूँ ई करस्यूँ।

घोड़ळो (सब जात्रियाँ कानि देखतो थको) ये सब न्याव करवाय लियो के और कोई बाकी रह्यो है ? (सब चुप रैवै) अरे म्हारो मूँडो काँई देखो काँई तो केवो ?

एक जात्री सब जात्री आपरा मन री वाता केय दी अन्दाता।

घोड़ळो तो म्हूँ म्हारे ठिकाण जायै रह्यो हूँ एक वगत फेरूँ केय दयूँ म्हारा हुकम री पूरी पाळणा होणी चावै नी तो थे बरबाद हो जास्यो ओ म्हारो सराप है।

(धीरे धीरे घोड़ळा रो भाव उतर जावे काँसी री थाळी ने ढोल भी वाजतो-वाजतो धीमो पड जावे भाव बन्द हुवतो जाण ने सब जात्री आप-आप रे घरा जावे।

(पड़दो गिरै)

कहाणी

जिनगाणी रौ जूझार

रामस्वरूप परेश

नींना नाना बादळा रै आभा माय पसरवा सू सुरजी की मादो पड़ग्यो हो। मैं तावड़ा री तिड़की सू डरपीजेड़ो भेळपूड़ी हाळा री दुकान रा पाटिया मौंथै बैठ्यो। दूर ताणी पसरेड़ा अणथाग समदर माय उठती ल्हैरा नै जोय रैयो, छिया होवण सू मन हुयो क चोपाटी री बाळू माटी माथे आवती नै जावती झाला ने नेड़ा सू जोवू। मैं उठनै आली माटी री सीळाई रो आणद लेवतो कुरसी माथै जाय बैठू।

महानगर री भीड भाड़ हाळी जिनगाणी माय एक दीतवार इज इस्यौ मिळै जिण माय मसीनी जिनगाणी सू चिन्योक टळ'र की सोचबा विचारबा री मौकी मिळे। मै ल्हैरा सू आली हुयेडी माटी माथै काठळ काठळ आगै वधू। ऊठ घोडा माथै सैळ करवाळा सैलानी रैड्या माथै सख र सीप्यारा ख्याल खिलारा री दुकाना कठै ई डोलर हीडा माथे हीडता टावर टोळी भात भात रा दरसावा री एक दिखावणी लाग मेली।

एक मिनख ऊठ री मूरी पकड्या म्हारै कनोकर नीसर्यो। उण माथै बैठ्या सैलान्यारा हाव भाव सू लखावै क बै पैली पोत ऊठ माथै चढ्या है। म्हारी निजर उण माथे सू सरक नै ऊठ री मूरी पकड़वाळा रै माथे तिसळयावै। मनै लागै मैं उण मिनख नै सूळ पिछाणू। बो आली माटी माय कच कच करतो आगै बध ज्यावै। मैं भी उणरै लारै लारै वधू। मै आ भी जाणू हू क ऊठ री सैळ करवा वाळो काठळ छोड र कठे जासी ? पाछो अठीकर इज तो आसी पण मन नी मानै। मैं उणनै पाछो वाचड़ती जेज कैवू मै तनै यार कठे पैली भी देख्यो है।

बो एकर म्हारै कानी उड़ती सी निजर राळ नै कैवै-देख्यो व्हैलो, सैल करणी है तो पाच रिपिया लागसी अर दोय चक्कर लगवास्यू अर बो खातावळी सू आगै वध जावै। मनै लागै स्यात मै इण नै पैली कदै नी देख्यो व्हैलो। उणिगारा सू देस मरयो

है मै एक कुरसी माथै बैठनै माथा पर जोर राळू । सोचता सोचता दोय साल पैली री वाता आख्या सामी रील-सी चालवा लाग ज्यावै । मन कैवै ओ रुघवीर इज तो है पण रुघवीर रा पग तो सफा खारज हुयेडा हा । उण सू फिरयो इज दोरो जातो अर ओ मिनख तो खातावळी सू चालै । इयाकला विचार म्हारा पतियारा नै पोचो कर नाख्यो । रुघवीर रै होवण अर नी होवण री दोगा । चीथी माय मै लारला दोय साल पैली रा पगोतिया उतरवा लाग ज्यावू ।

रुघवीर जदै अस्पताळ माय भरती हुयो तदै उणरै पगा माथै सोई आ मेली ही। मनै सूल याद है वो आतो इज आपरा कुड़ता पजामा नै सामट'र मेल दीना अर अस्पताळ रा गाभा पैर लीना । आखो दिन विना योल्या चाल्या एक डायरी माय मूडो दिया की भणतो रैतो । आखा नोकरा नै नाव लेले'र बुलातो । म्हारै कनै एक पडतजी री खाट ही । एक दिन मै उणानै रुघवीर सारू पूछयो । वै कैयो –ओ गठिया वाव री मादगी सू दुखी है । ओ लारली साल भी आ दिना अठै इज भरती हो । ओ अठे सैसू सैदो है ।

दूजै दिन भाग फाट्या पेली इज एक नर्स उणनै जगाय नै कैयो-लै काडो पीलै। वो कैयो- मेल दे ले लेस्यू अर चिनीक ताळ माय काडा रो गिलास मोरी रै बारै ऊधो कर दीनो । मै कई वर उणनै काडो ढोळता देख्यो । मै सोचतो- ओ दुवाई नी लैवै, सूळ किया होसी ? एक दिन पडतजी नै भी सैन करनै रुघवीर री करतूत दिखाई वै कैयो–ओ पैली भी इयाई दवाया बगा देतो अर रोट्या वाट वाळा सू घणी रोट्या लेवण सारू राड़ करतो । जदा इज तो इणा नै अस्पताळ सू काड इज दियौ हो ।

एक दिन मै रुघवीर री खाट कनै जाय नै कैयो–रुघवीर, तू आखौ दिन आधी रात ताणी काई भणतो रैवै ? वो मनै खाट माथै बैठाय नै वा डायरी मनै पकड़ा दी। उण माय गजला लिखेडी ही । अै गजला तू लिखै है के ? मै बूझू । वो इणरा उथळा माय कैयो–कसीक लागी ? उण दिन पछै रोजीना रात नै वो म्हारी खाट माथै बैठनै गजला सुणातो । मोरी रै नीचै कर आखो दिन ट्रेन आती जाती रैती । तरड़ तरड़ मेह बरसतो रैंवतो, पण वो डायरी माय मूडो लुकोया सूतो रैवतो ।

मै विचारा रा विमाण सू नीचै उतरू । कुरसी छोड नै रुघवीर री हेर - दूढ माय च्यारूं मेर आख्या फाडू । दुवाई नी लेवाळा रुघवीर रा पग सूल क्यासू हुया अर हू भी गया तो वो गजला लिख वाळो रुघवीर ओ ऊठ हाकवाळो रुघवीर किया बण्यो ? अै कई तीखा सवाल म्हारा पगा नै आगै नी वधवा देवै, पण दोय म्हीना री पिछाण कम योड़ी इज हुवै । मन कैवै–ओईज तो रुघवीर है । मै फेर उणने हेरवा नै

।

वो दोय ग्रायका सू पीसा ले'र गोज्या माय घाल रियो हो । मैं उणरा काधा माथै हाथ मेल नै कैवू –रुघवीर, तू मनै पिछाणै नी ? वो मनै ऊपर सू नीचे ताणी जोय नै कैवे–पण तू म्हारो नाव किया जाणै ? नाव ? मैं केवू– नाम इज काई मैं थारी गजला भी जाणू । चरणी रोड हाळा अस्पताळ माय दोय म्हीना रो साथ भी भूलग्यो । वो ऊठ नै ऊभो करनै म्हारो हाथ पकड़नै एकानी लेग्यो । दुकाना लारै एक मोरी रै ऊठ नै बाध र मनै एक कुरसी माथै बैठावतो कैवे –तू आ सोचतो व्हैलो क म्हारी टागा किया सूल हुई ?

हा ! मैं केवू ।

पण म्हारै गठिया वाव ही इज कद ?

म्हारै मूडा सू 'हैं?' निसर्‌यो । इजरज सू चोड़ा हुयेड़ा नैणा सू वो म्हारा भाव समझ ज्यावै । कैवे– इण माय की इजरज नी, मिनख रो धरम है जिनगाणी रा जुध नै जीतणो । मछली जतरी इमानदारी सू मछली वणी रैवै वतरै लूठी मछल्या उणानै खावती रैवै, पण जद वा इज छिपकली रो खोळियो पैर ले तो कोई उणारै हाथ नी लगावै ।

मनै लागी हालात उणानै जिनगाणी रा जुध नै जीतवा सारू कई हथियार दे'र जूझार वणा दियो । पण रुघवीर, मैं कैवू–गठिया सू खारज हुयेड़ा पग, कवि अर अवै आ ऊठवाळी की समझ नी आवै ।

वो चिन्योक मुळक नै कैवे–ओ महानगर भी ई समदर दाई डूगो है । तू काई जाणै ऊठ वाळी म्हारो असली धधो है ? ऊठ रो मालिक नौकरी करै । सौ रिपिया रोजीना माथै मैं ऊठवाळी करू सौ रिपिया किरायो वाकी म्हारी कमाई ।

वम्बई री विरखा माय म्हारो धधो चौपट हो ज्यावै । उण जेज सैलानी भोत थोड़ा आवै अर जका आवै उणसू म्हारो ऊठ रो भाडो इज नी वावड़ै । रोट्या री समस्या नाव पूछवा लाग ज्यावै । उण जेज म्हारै स्यामी गठिया रो रोगी वणर अस्पताळ माय भरती रै अलावा कोई चारो नी रैवै । विरखा रा दोय तीन म्हीना मैं अस्पताळ माय इज काढू । तू जाणै वठे रोटी पाणी नौकर चाकर सै मुफ्त मिळै । रोग रो वेरी किणी नै पड़ै ईज नी । विरखा री रुत वीती'र मैं अस्पताळ छोड्यो । इण रै पछै मुफत मे खायेड़ी रोट्या रो प्राश्चित ईमानदार वण'र करू । मैं तीन म्हीना मैं इज कई अठै सगळा न्यारा न्यारा हथियारा सू न्यारा न्यारा रुपा माय इण जुध नै जिनगाणी रा जुध नै खारिज टागा सू लड़ू अर नौ म्हीना ऊटवाळ वण'र । अर एक लड़ै ।

मनै लागी रुघवीर आज रै आखै मिनखा रो साचळो रूप है जको जिनगाणी सै घवरा'र भाजै नी, धोखा सू वैईमानी सू मिणत मजूरी अर इमानदारी जिस्या दोगला रूप धारनै लड़ै । अठै सै जूझार है, कोई हार नी मानै । काळी काया नै

धोळा कपड़ा पैरा'र लड़ै तो कोई मछली छिपकली बण'र, कोई रुघवीर दाई गठिया री रोगी बण'र जिनगाणी सू जूझै तो कोई ऊठवाळ बण'र मैणत रा हथियारा सू लड़ै ।

स्यात आज रुघवीर आपरै दोगला जीवन री कई पड़ता उघाड़ देवणो चावै हो। मैं उणरा चैरा नै जोवू । उण माथै कोई खास भाव नी हो । न उण माथै मैणत मजूरी सू पेट भरवा रो हरख हो । अस्पताळ माय झूठो रोगी बण'र रैवण रो उणनै पछतावौ नी हो । अै सगळी बाता उण सारू डूयाकली ही जिया नित की समदर री झाल माटी आली कर दे अर विनीक ताळ माय फेर सूक ज्यावै । वो दुकाना कानी जोयो, उण रो ऊठ मूरी तुडा'र आगानै बधतो दीस्यो । वो उतावळी सू बठीनै भाज्यौ । मै उणरी टागा री उतावळी'र दमखम नै फाटी फाटी आख्या सू जोवतो रैवू ।

❑

अक़ार्डियन

जितेन्द्र शकर बजाड़

वो आपरी जूनी पुराणी, टूट्यौ, फूट्यौ सगळोई सामान लेय'र पाछौ आपणा दूढा हूया थका घर मे आयग्यौ। महीनै पन्द्रह दिन सू सूनै पड्या घर मे धूळ धमासो जमग्यौ हौ। सामान नै बारणै ई मेल र टूट्यौड़ी बुवारी सू घर नै झाड़बा लागग्यौ। कोई पन्दह-बीस दिन पैली ई तो बड़को आपरी लडवण रे सागै उण रै कन्नै आय'र आधे दिन ताँई हाथा-जोड़ी करी ही जद् पछै वो वाँ रै सागै अपणै हाथा वणायी नुवा घर मा वारै भेळै रहवौ मजूर कर्यौ हौ। उण नै उण टेम वारै भेळे रैवण री हामी भरती वेळा जतरी फिकर आपणी नी ही उण सू दूणी सोच छोटक्या गै हौ, जिण नै बीरी मायड़ छ महीनै रौ छोड़'र रामजी रै घरै चल दी ही। छोटक्या नै आज ताई पाळता पोसता उणनै याद कोनी आवै कै वो कदेई छोटक्यारी सामै थप्पड़ ई वायी होवै, पण जद सू बड़का री लडवण आवा-जावा लागी ही वौ छोटक्या नै नित पातरै ई आसूडा ढळकावती अर डूसक्या लेवती ई आपरी आख्या सू देखतौ रैवै है। अर इणीज छोटक्यारी खातर ईज वो आपरै जमारै भर री कमाई सू वण्यो आपरो घर, घर काई नुवै फेशन रो फ्लेट बड़का नै सौंप र छ महीनै पैली ईणीज दूढै घर मे आयौ हौ। अबार पन्द्रह बीस दिन पैली ई एक परभाते वो उठ'र चाय वणावतौ हौ अर छोटक्यौ बारौ बुवारी काढ़ै हो कै बड़कौ अर उणरी लाडी आय'र वारै सागै ई रहवण री खुशामद कीधी ही। पैला तो वो वा दोन्यू री बात माथै ध्यान कोनी दियो हो, पण जद बड़कौ अर लाडी दिन रै ग्यारै बज्या ताँई पाछै ई लाग्या रह्या अर मौहल्ला रा दो चार ओळखाण वाळा ई आयग्या तो उण नै इण दूढा रै पाछो ताळौ लगावणौ पड़्यौ हौ।

आज पाछौ आय'र पाछी बुवारी चलावणी पड़सी इण बात री उण नै पन्द्रह-बीस दिन पैली ठा कोनी लागै ही।

वी डाडे-बळिडै जम्या धूळ धुमासा नै झाटक्यो, भीता न झाटकी, चूल्हा चौका नै ऊजळा करनै वो वारणै सू सामान लाय र घर मे जमावण लाग्यौ। सै सू पैली उण नै याद आई सुरसती माता री तस्वीर, एक हाथ माय वीणा अर धोळा हस माथै

विराजी थकी । कदेई इण तस्वीर रै आगै बैठनै वो आपणी अकार्डियन बजावती हौ। अकार्डियन बजावा को उणरौ शौक अस्यौ रग लायो कै ओळ्यू-दोळ्यू री किणी ई आर्केस्ट्रा मडली मे उण जस्यो कोई अकार्डियन बजावणियौ कोनी हौ । अर जद कदी जिण आर्केस्ट्रा मण्डली रै सागै उण रै अकार्डियन बजावण रो सौदो हुव जावती, वा मण्डळी ई आपणा विज्ञापन, परचार पर्चा मे उण री नाव खास अकार्डियन बजावण वाळा री ठौड़ छपावणै सू कोनी चूकती ।

जद कदै ई उण री मन होवती तो वौ आपणा इण बाजा नै आपणै इण जूनै घर रै बारै ऊभौ होय'र बजावतौ । बजावतो काई, अकार्डियन री धूकणी रे सागै वो ई ईया झोला खावतो हो जाणै कोई मतवाळो हाथी आपरी सूण्ड अर कान हिलावती थकी झूमै है । इण टेम वो अकार्डियन रै लार सुध-बुध भलाई विसर जातौ पण सुर तो उणरी आगळ्या माय ई बण्या थका हा । गळियारै रा आता-जाता मिनख गम जावै हा उण रा सुरा री गळिया रै बीच । गमता तो एड़ा गमता कै वो ई जद आपरी बाजी ढाब'र हौंक लगावतौ किणी रै नौंवरी, जद ठा पड़ती लोगा ने क हीरा भाई रो अकार्डियन बन्द हुयग्यौ है । नाव तो उणरो हीरालाल हो पण गावणै-बजावणै रै शौक मे जमता रमता वो आपरै नाव री लार ''गधर्व'' लगावण लाग्यौ हो । हीरा भाई ने गळियारै वाळा तो हीरौ गधरप केवता अर रोळा करता क इण नै तो गाया भेस्या रै चौपड़ीजै है ओ वोई गधरप है । पण साचाई वो तो उणरै इलाके री एक अलबेलो गधर्व ई हो ।

तसवीरा टाकता टाकता उणरै हाथ आई एक बीजी तसवीर । तसवीर काई एक जमानै री ओळ्यू, याद उघाड़तो फोटू हो वो । उणरी जोड़ायत रूपल अर वो, वाँ दोना री गोद माय बेठ्यौ थकौ बड़की अर छोटक्यौ । उणरी घरवाळी अर उणरी निजरा रा सूरज, चाद, उणरा गादी सम्हाळबा वाळा राम लिछमण, उणरी बश-बेल रा फूलड़ा देख'र उण नै रूपल ई याद आयगी । पण आज नी तो रूपल है अर नी उण रा देख्या सुपना रा राम लिछमणा मे राम रौ रूप । राम री पिछाण हुगी है अर लछमण नै परखवा की टेम हाल कोनी आई है । सुपना कदै साचा हुवै कदै ई नी हुवै पण सुपनै रै राजकुवँरा री नौंव ई वो वाँ दिना राम लछमण राख दियौ हौ अर आज नैई ई वैई नाव चालै है ।

''दद्दा, बाहर कोई आपको पूछ रहा है''- मोरा माळै स्कूल रा बस्ता ने गूणती जिया लादृया घर मे बड़तौ थकौ लछमण बोल्यौ । वौ पाछौ फिरियो, लछमण स्कूल सू आयग्यौ हौ । चश्मे ने ऊँचो करता थका वो बोल्यौ- ''कौन हो सकता है ?'' ''कोई अनजान है । मैं नहीं जानता आप ही देख लो ।''- बस्ता नै उतारता थका लछमण बोल्यौ अर घर मै गयो परौ । वो बारै आय'र देख्यो ।

''आओ साहब, आओ ।'' दो अणजाण मोट्यारा नै घर रै सामै ऊभा देख र आवकार दियो । वै दोन्यू उण नै हाथ जोड़'र मुळकता थका पूछ्यो- ''हमें

हीरालाल जी गधर्व से ." "हाजिर हुकम, मुझ गरीब को ही हीरा कहते है" वो वा दोना नै गुवाड़ी माय बुला'र वारै खाट पसारतो थकी जवाब दियो ।

"हम लोग बेगूँ से आये है, वहा हमारी एक सगीत समिति है"

"जी हुकम" वो गरदन हिलावण लाग्यो ।

"हम लोग आपका नाम सुन कर आये है" वै बोल्या ।

"यह आपकी जर्रा नवाजी है, हुजूर मेरे लायक सेवा ?" वो वारी बात सुण'र नमतो थको बोली माय मुळकतो सकुचावतो पड़ूतर दियो ।

"आपको हमारे एक समारोह मे अकार्डियन बजाना है ।" वाँ रै मूण्डै सू अकार्डियन बजावणै री निमत्रण सुण'र वीरै मन री वात होठा ताँई आवण री बजाय उणरा पीर पीर सू उबकणे लागगी । वाँरी वात उणने अचाणचक एक'र फेरूँ वोई मदगाळो, मदमातो, अकार्डियन सू कामण जगावती हीरालाल गधर्व बणा दियो ।

"अरे लक्ष्मण चल इधर, कन्हैये की थड़ी से दो गोल्डन लेके आ, चल जल्दी, और सुन" वो फुर्ती सू बोल्यो– "देख बगल वाले बल्लू से मेरे नाइन्टी, किमाम वाला मीठा पत्ता लाना मत भूलना साथ मे ।" वाँरै कानी झाकता थका ई उण नै आ पूछणै री याद कोनी आई कै वे दोनू चाय भी पीवै है कै कोनी पीवै । उण ने तो बस ओहीज याद रह्यो क कोई उणनै अकार्डियन बजावण नै ले जावैला ।

उणनै अकार्डियन बजावणै रो मौको घणा दिना पाछै आज कोई देवण आयो हो । वो अकार्डियन, जिण रे सुरा माय वधी थकी आई ही रूपल कदैई उणरै जमारै माय जवानी रा सुर भरवा नै । रूपल रै आया पाछै वो अकार्डियन बजावतो अर रूपल गावै ही उण री लार ।

रूपल री गावणो अर उणरो अकार्डियन बजावणो उणरी निजरा रै सामै जीवतो हुग्यो । एक'र वानै याद आयो कै उणरा हाथा सू बणाया नुवा घर रो नाव ई "अकार्डियन" मण्डायो है उण रै फाटक माथै । उणरी बड़को तो घर रो नाव ई अकार्डियन अर ओ नाव राखणै वाळो ई बड़को, पण उण नै इण अकार्डियन माय म्हीने पन्द्रह दिन सू वेसी रहणै री कदैई मौको कोनी मिल्यो, स्यात उणरा भाग मे कोनी लिख्यो ही अबै अकार्डियन ।

लछमण चाय ल्यायो हो । चाय री चुस्कियाँ रै सागै वारी वात आगै चाली अर सौदो-सवा दो सौ रुपया माथै जायर तै हुयग्यो । अगाऊ रकम इक्यावन ई वो हाथ माय झेल'र कुर्ते री बगळ वाळी जेब माय घाल लिया ।

"अरे साहब ! ठहरिये भी, मै अभी तैयार होकर आपके साथ ही चलता हूँ।" वै दोनू चालवा लाग्या तो वानै बिठावतो थका वो काधै रा तौलिया ने हाथ माय लेय'र पाणी भर्योड़ी बाल्टी कनै जाय'र हाथ पाव रगड़वा लागग्यो । वे दोनू बैठा-बैठा उणनै देखै हा ।

"बेटा लिछमण, जरा छनू के यहाँ से मेरे कुर्ते-पायजामे के इस्त्री तो करवा ला" हाथ पग धोयाँ पाछै मून्डो धोवती वो बोल्यो । दो तीन कुल्ला फेक्या अर एक जूनी-पुराणी ब्रुश लेयर टूटी चप्पला नै रगड़वो शुरू हुयग्यो । उणरी उड़ती नजर कदैई वा दोना रै कानी तो कदैई आपणा बड़का रा प्लेट री कानी न्हाखतौ रह्यो । वै दोनू स्यात नुवा आयोजक हा अर बारी इण तरह री बातचीत करवा रो पैलो इज मौको हो सो वे उणरी तैयारी अर फुर्ती नै निरखण लागग्या हा ।

लछमण इस्तरी करवा'र कुर्ता पायजामा नै लायो अर उणरै सामनै तार माथै टाग दिया । बोई कपड़ा रै हेटै पोलिश करी थकी चप्पला रख दीनी अर एक चप्पल माथै धर दियो कागद माय लपेट्योडो नाइन्टी क्रिमाम वाळौ मीठौ पत्तो ।

"बाबू जी कित्ती बजी है ?" बो त्यार हुवतै थकै पूछ्यो ।

'साढे पाच ।' एक जणै घड़ी देख'र बतायो ।

'अरे लछमण ! जरा देख तो बड़का आया कि नही" –वै थोड़ी ऊँची हाक दीनी ।

"क्यो ? क्या अभी बड़के के धक्के से जी नही भरा है क्या ? या बड़ी दुल्हन की गालियो से ही भूख बुझती है तुम्हारी ?" उणरी बात सुण'र गळी मे जावतो थको हसन चाचो दब'र बोल्यो । वा दोना कानी देख'र वो ओरू काई पूछतो इण सू पैली हीरा भाई बोल्यो– "बाबूजी एक प्रोग्राम मे मुझे अकार्डियन बजाने ले जा रहे हैं मगर", हीरा भाई थोड़ी नमळी पड़ग्यो आगे बोलतो-बोलतो, वो वा दोना कानी टेढौ देख्यो अर हसन खा चाचा सू केवण लाग्यो– "मगर अब मैं तो अकार्डियन बजा सकता नही, मेरी जगह सोच रहा हूँ कि बड़का ही चला जाए, क्यो !"

"ऐसी क्या जरूरत है उसे भिजाने की ? जब तू नही जा सकता तो न सही" हसन खा थोड़ी नाराजगी अर तेजी बतावतो गवाड़ी माय ओगग्यो हो ।

"मगर सौदा तय हो चुका है चाचा तो अब उसे ", हीरा भाई अपराधी रै जिया निजरा नीची कर लीनी ।

'क्यो किया तूने सौदा पक्का ? हसन चाचौ नमळो नी पड़्यौ । वो बेसी ताण खायग्यो ।

"ये लोग मेरे नाम से आये हैं उम्मीद लगाकर" हीरा भाई गिड़ गिड़ातौ निगै आयो इण बार । वै दोनू अतरी देर ताँई बारी बात सुणता-सुणता सगळी बात समझग्या हा । वे दोन्यू ऊभा हुयग्या । हीरा भाई वाने देखताई बारी नाराजगी नै भाप लीनी । हसन चाचा एक'र वा दोन्यू कानी देख्यो अर फेर हीरा भाई कानी देख'र बोल्यो–"हूँ ! ये तेरा नाम सुन कर उम्मीद से आये हैं और वह तेरे नाम से नफरत करता है मगर तू है कि उसके लिए "

"आप नही चल सकते तो हमे बिठाया क्यो ?" हसन चाचा री बात-पूरी होवणै सूं पैली वा दोना मे से एक बोल्यौ । उणरी आवाज गरम ही । हीरा भाई ने खेलौ बिगड़तो लाग्यो ।

"हुकम, वो मेरा बेटा है, मुझसे अच्छा बजाता है ।" वो हाथ जोड़तो थको बोल्यो ।

"और वही तुझे धक्के भी मारता है अपनी बीवी के साथ मिलकर ।" हसन चाचा फेर बोल्यो । हसन चाची आगै केवण लाग्यौ ।

"वो बाप को बाप और भाई को भाई समझने को तैयार नही ।"

वै दोनू उण री बात सुण'र तैश मे आयग्या ।

"आपने हम से धोखा क्यो किया ? हम आपका विश्वास लेकर आये थे ।' एक बोल्यौ । दूसरो उठ'र बारै आयग्यौ ।

"बाबूजी, वह मुझे बाप और लिछमण को भाई समझे न समझे, मुझे तो उसे अपना बेटा कहना ही पड़ेगा न ।" इण बार हीरा भाई री आवाज रोवणी-सी हुगी ही । उण री बूढ़ी आख्या माय तळाया भरगी ही । वो वा दोना नै हाथ जोड़'र पगा माय झुरग्या । अकार्डियन रा सुर उण टेम उदास धुन बजावै हा ।

❒

नौकरी

पुष्पलता कश्यप

अविनाश नै आपरै वेली सुरेश रो कागद मिळ्यौ । नेकचारी पछै वो लिख्यो है–

अवार नियोजन कार्यालय सू थारी जिकौ 'इन्टरव्यू कार्ड' आयो, म्है उण नै उणी दिन थनै रिडॉयरेक्ट कर दियो हो, मिळ्यो हुवैला । अेक्सचेज ऑफिस मे 13 तारीख नै सवेरै साढ़ी दस बज्या बुलाया है । थू आय रैयो है नी ? किस्मत आजमाइस री अेक मौको भळै मिळैला, आस करू कै इण बार थू अवस कामयाब हुवैला

थारो भायलो

सुरेश

सुरेश ठीक ई लिख्यौ हो, योग्यता नै कुण ई नी बुझै किस्मत आजमाइस हुवै - वो सोच्यो ।

वो अर सुरेश आठवी सू अेम अेससी ताई भेळै पढ्या । आ भाग री अयखाई ई तो है कै सदा उणरी नकल करणियौ सुरेश आज दोय साल सू सहायक वाणिज्य कर अधिकारी लाग्योड़ी है, अर इण ओहदै माथै पक्को हुयगी है । जद के वो ओजू बेरोजगार है ।

भणाई पूरी हुवता ई सुरेश नौकरी खातर जैपुर आयग्यौ । उणरा मामोसा सचिवालय मे किणी विभाग रा सेक्शन अफसर है । वै उणनै लिख्यो हौ–अठै आयजा, की न की जुगाड़ हुय जावैला अर अेक-दोय छोटी मोटी नौकरिया पछै वर्तमान नौकरी माथै चयन ।

अठीनै अविनाश ई लगोलग कोसिस मे रैयौ, पण की सिलसिलो नी बैठाय सक्यौ ।

वठै जम्या पछै सुरेश अविनाश नै लिख्यो हो–भई, अठै आयनै म्हारै पतै पर नाम पजीकरण कराय लै । मोटो शहर है । राजधानी है । अठै अलबत्तै की ज्यास्ती मौको है ।

अविनाश रै जचगी । सुरेश री बात मे दम ही । वठै पूगिया, सुरेश आपरै स्कूटर माथै उणनै लेयनै बी रो पजीकरण कराण खातर सागै चाल्यौ ।

नियोजन अधिकारी सुरेश नै पिछाणतो हो । अविनाश रो परिचय कराइज्यौ । वठै सामीं बैठ्या ई चटपट काम हुयग्यौ । चाय री भी सरभरा हुई । —

बुलावै मे तो वगत लागैला ।

अविनाश फळौदी आयग्यौ । अठै बी री पत्नी, अध्यापिका ।

ब्याव री बात चाली जदै बी घरवाळा नै समझावणी चायी–पैला पढ़ाई खत्म करनै कीं काम धधै तो लागू । आछै परिवार री पढ़ी लिखी लड़की री धामणी ही । बहू लावण री मा री जिद सामी बी री अेक नी चाली ।–इत्ती पढ़ाई करी है, तो काई नौकरी नी लागैला ? आज पत्नी बी रो सहारो बणी है ।

नौकरी रै बुलावै री कागद आयो, तो सुरेश अविनाश नै भेज दियौ ।

अविनाश इण दफै अेकलौ ई नियोजन अधिकारी सू मिळियो । लारली पिछाणी याद दिलाया पछै ई अेक बेरोजगार सरीखौ व्यौहार ई उणनै मिळियो ।

–परिणाम आवण मे तो वगत लागैला ।

इण पछै तो अेक सिलसिलौ ई चालगो । 'कॉल-लैटर' आवणी, अर सुरेश री बी नै अविनाश नै पूगती करणी, बीरी साक्षात्कार देवणी, पछै उडीक अर उडीक। कदै-कदास कठैई सू जवाब ई मिळ जावतो ।

सुरेश री आखी दौड़ धूप पछै ई बो बेकार ई रैयौ । ऊटपटाग नौकरिया खातर 'कॉल' आवण सू अेक दफै तो बो चिफरग्यौ–आपरी दिलचस्पी खाली आ आकड़ा मे है कै साल मे किती 'काल' पूगी ।

नियोजन अधिकारी ताव खायग्यौ–आप सू बूझू, आप टाइप अर शार्टहैंड जाणो ? पडूतर मिळैला नी ' मतलब आप क्लर्क नी लाग सकौ । आप बी अेड हो नी, तो टीचर नी लाग सकौ । आप कोई धधाऊ कोरस ई नी कियौ । जाहिर है, आप किणी तकनीकी पद माथै काम नी कर सकौ । अबै मै आपनै कठै किण पोस्ट खातर भेजू ?

–पण मनै प्राइवेट स्कूला री टीचरी वास्तै क्यू बुलाऔ ? अे लोग शिक्षा री खुळौ व्यौपार करै । वेतन रै नाम माथै कैवै लिखै की है पण सामी दूजी बाता ई आवै । [illegible] । कोरी धाधळ-प्ट्टी है ।

–अे बाता सैग जाणी । पण हुवणो-जावणो की नी है । म्है काई करा ? म्हारो काम तो 'माग मुजब पूरती करणी है ।

बी रै सामी अेक चितराम मडै–

बो जिला शिक्षा अधिकारी सू भेट खातर गयौ हो । वठै यूनियन रा की आदमी ई बैठ्या हा । बाता चाल रैयी ही । बात सरकारी अनुदान [illegible]

स्कूला री आई तो की सदस्य अधिकारी जी रौ इण मुद्दे माथै ई ध्यान खीच्यौ। जदै अधिकारी जी कैयो,–गुपचुप शिकायता मिळै। पण चौड़ै धाड़ै सामीं आवण खातर कोई तैयार नी है। जाच वास्तै ई जावा, वठै कोई चुकारो ई नीं सारै। कागजी कार्यवाही पूरी मिळै। अबै बताओ, काई कर्‌यो जाय सकै है ?

–सैंग नै आप-आप रै टाबरा री फिकर है साहब ! अर वै हसण लागग्या। अधिकारी जी ई उणारो साथै कियो।

–पण म्है सरकारी नोकरीं चावू ! अविनाश लपैटगै चीख पड़्यौ।

अेक दफे गळत दिसा पासी मुड्या पछै आखी ऊमर भटकण बण जावैला– सोचनै इण तरै री नौकरिया री बजाय अविनाश पत्नी कनै रैवणो ई बेहतर समझ्यो।

नियोजन अधिकारी अेक दिन सुरेश सू बीं री शिकायत लगावता थका कैयो हो–लागै कै आपरै दोस्त नै नौकरी री अगेई दरकार नी है।

पण हकीकत तो आ ही कै वो पगापाण हुवण नै ताफड़ा तोड़ रैयौ हो। कदै-कदास उण माथै जुनून सो छाय जावतो। इणी झोक मे अेक दफे वो कलेक्टर सामै जाय पूग्यो।

अविनाश जदै आखी बात माडनै बताई तो हमदरदी दिखावती बीं जिलाधिकारी कैयौ–वो तो ठीक है। पण, नौकरी म्हारी जेब मे तो पड़ी नी है। अरजी देय दो, ध्यान राखाला। हा आगै पढ़णो चावो, पीअेच डी आद करणै रो विचार हुवै, जणा'र फेलोशिप खातर मैं सिफारिश कर देवूला।

पीअेच डी करनै ई काई हुवैला ? ओ तो निरी पलायन है। मतलब, सघर्ष नै की वरसा ताई टाळणौ। ओ कैड़ो 'सुराज' है, जठै काम मागणै रो अधिकार नी !

आज 12 तारीख है। साक्षात्कार सारू जावणी है तो आज ई निकळणौ पड़सी।

आ दिना बी मे अेक उधेड़बुन चाल रैयी है–वो जावै या नी। किता इन्टरव्यू अबार ताई देय दिया है। काई हुयो ? खाली परेशानी है। खरचौ हुवै सो अलग।

लारलै इन्टरव्यू री घटना सामी उणरौ दिमाग घूमै–अेक्सचेंज पूगिया ठा पड़ी कै फेरू सरकारी अनुदान माथै चालणियै अेक स्कूल मे छोटे मास्टर री खाली जगा खातर उणनै बुलाईज्यो है।

वो अेकरळै तो झल्लायगो। सोच्यौ, इन्टरव्यू नी, देय देवू। पछै फेर विचार आयौ–अबै बुलावौ आयग्यौ है, तो इन्टरव्यू देय ई देवू ! अेक तजरबौ भळै सही।

पण जदै वेतन री बात आई, उण साफ कैय दियो,–म्है जित्ता उठाउला, उत्ता माथै ई सही करूला, अर हस्ताक्षर तारीख सागै स्याही मे करूला।

इण माथै प्रबधक महाशय की भोत ई अपमानजनक बोल कैया। वो जज्व नी कर सक्यौ। उण उठ'र गिरेवान झाल लियौ हो।

हाकी - दड़बी सुणनै सै प्रत्याशी माय आयग्या। वठै रा कर्मचारी ई भेळा हुयग्या।

बात री ठा पड़्या कीं दूजा प्रत्याशी ई इण तरै रै शोषण रै बरखिलाफ हामळ भरी।

वठै रा कर्मचारी ई उणरी इण साहस री, दबी जुबान सू ही सही, पण सरावणा करी कै– आप चोखी करियौ।

कमेटी रा सदस्या मे सू कोई कैवै हो,–पागल लागै। दूजो–कोई नेता दीखै। तीजो–किणी अखबार सू सबद्ध हुय सकै।

पत्नी कैवै–चालो, परची काढ़ लेवा। 'जावणो जोइजै, की नी जावणो जोइजै अेड़ी परचिया डालै। वौ अेक उठावै, लिख्योड़ो है–जावणो चाहिजै।

वो जावण खातर तैयार हुवै–जावणो ई पड़ैला। नियोजन कार्यालय पूगिया ठा पड़ी कै सरकारी नौकरी है। पोस्ट, रिसर्च असिस्टैंट री। ग्यारह बज्या सू इन्टरव्यू है। जिका उम्मीदवार आया, वा मे सू 'इच्छुक' रा नाम भेज दिया जावै।

घणा ई उम्मीदवार है।

वो ऑफिस मे पूगियौ। सोचै–कित्ती शानदार विल्डिंग है। सलेक्शन हुया म्हनै ई अेक आछै ऑफिस मे अेक आछै ओहदे माथै काम करणै रो औसर मिळ सकै। वो मन मे अणूतो ई आस्थावान हुय जावै।

भात भात री बाता चाल रैयी है। अेक लड़के रै बारै मे कैइजै–सलेक्शन इणरो ई ज हुवैला, अठै रै अेक ऊचे अधिकारी रो सबधी है। अठै, सै सू इणरी जाण पिचाण है।

ओ पैला सू अठै काम करै। इणनै 'रेगुलराइज' करणै खातर ई ओ सैग ड्रामो है।

वो लड़को घणो हरखीजतो अठी-ऊठी, कदै इणरै सागै तो कदैई उणरै सागै, घूमतो फिरतो निगै आवै हो।

जदैई कहलवायो जावै–'इन्टरव्यू' अबार नी हुवैला, सै चार बज्या आवो।

वो नै घणी निराशा हुवै। सोचै–अबै इत्तो बगत कठै गुजारू ? जठै ठैरियोड़ो हो बा जगै घोळी आतरै ही।

इत्ती दूर जायनै पाछो आवण मे तो की तुक नी।

खाणी बो दिनूगैई खायनै वहीर हुयी ही । चाय री तलब हुयगी । वो अेक सस्तै से चायघर मे वड़ै ।

वठै सू निकळ नै सड़का माथै अकैकारो फिरतो रैवै । सोचै-की हुवणो तो आय कोनी । बावड़ जाऊ ? पण पाछी बुवी नी जावै ।

पाछौ वठै पूगै जणै साढ़ै चार रै लगैटगै हुय रैयी ही । ठा पड़ै-इन्टरव्यू सरू हुवण वाळो है । की बतावै हा-मायनै फला-फला है ।

पैले प्रत्याशी री नाम बोलीजै । पाछौ आया भीत सा लड़का ओला-दौळा हुयनै पूछण लागै -कैड़ो रैयी ? काई-काई बूझी है ?

वो लड़की बतावै-म्हनै तो की खास नी बूझ्यी । तीन जणा है । अेक नाम वगैरह बूझै । दूजो, प्रमाणपत्र देखै । अे जिको लावो-दुवळो सो है, वो ई विषय रै बाबत बूझै है ।

हा, हा, वै खन्ना साहब है-अेक जणी आपरी जाणकारी री ओळखाण देवै ।

अेक-अेक करनै उम्मीदवार मायनै जावै अर लगैटजै पाच-सात मिनटा पछै बारै आय जावै ।

बी रो भी नम्बर आवै । वो आ सोचनै मायनै जावै-सलेक्शन तो आपणो हुवणो नी । पछै घवरीजू क्यू ? खूब खुल नै, तबीयत सू जवाब देवणा है ।

की ताळ पैली बी रै दिल मे जिकी अेक घबराहट सी ही, वी री ठौड़ अेक नैचापणै लेयली ।

बी बड़ता ई सै नै 'गुड मार्निंग' करी ।

–आओ ।

–बैठ जाओ ।

–'थैंक यू' कैयनै बो कुरसी खीचै ।

सामी बैठ्यो अधिकारी बी रौ नाम बूझै दूजोड़ी प्रमाणपत्र चैक करै ।

पछै लावी-दुवळी अधिकारी बूझै–

–थै अठै रा ई ज हौ ।

–नी सा, म्हैं जोधपुर सू हू ।

–अबार आप काई करो ?

–की नी सा ।

–आ तो नी हुय सकै ? आप पढ्या लिख्या नौजवान हो !

–पण साच बात आई ज है ।

–पछै गुजारो कींकर चालै !

–म्हारी पत्नी अध्यापिका है सा।

–कठै ?

–फळौदी मे।

–ठीक है आपरी पोस्टिंग जोधपुर ई हुय सकै है।

पछै अविनाश सू वो जिंक अर कॉपर रै धातु विज्ञान री बात पूछी। अविनाश नै जिको की थोड़ो-घणो याद हो, वो बतावतो गयो। पछै वो बोल्यौ–सर! साच तो या है कै म्है अेक अरसे सू बिल्कुल 'आउट ऑफ टच' हू।

पछै वो अविनाश सू छुटपुट बाता अर की मूळाधारी मुद्दा बुझती रैयी। अविनाश बेखटकै धड़ाधड़ जवाब देवती गयौ।

वी रै इन्टरव्यू मे दस पन्द्रह मिनट लागी–जिको कै अवार ताई रो सै सू बेसी वगत हो।

बो बारै आयो तो सै अचूभै सू जोय रैया हा। की फुसफुसाटा हुवण लागी कै इण रो चयन हुय जावैला।

वीनै ई लखावै हो कै चयन म्हारौ ई हुवैला।

दोय महिना पछै सुरेश री चिट्ठी आई। लिख्यौ हो था रो नाम मेरिट मे पैलै नम्बर माथै है। दूजो नाम वी लड़कै रो है जिको कै पैला अठै काम करतो हो। ऑर्डर्स इस्यू हुवण वाळा है। थू अठै आयनै बैठ ई जा, जिणसू किणी भात गड़बड़ी री गुजाइश-आशका ई नी रैवै। वो लड़को माय रै माय मिळनै स्यात खुद रो नाम 'फर्स्ट प्रायोरिटी' माथै करवाणै री बणती कोसिस मैं है–मनै अेक पुखताउ बात मालूम पड़ी है। बीया मै पूरी निजर राख्या हू। पछै ई थारो आवणो ठीक रैवैला। थनै अठै वेगी ई 'जॉयन' करणी पड़ैला भाभी नै म्हारी नमस्ते अर याद करणा वाचजो।

वधाई अर सैंग शुभ कामनावा सागै–

थारो भायलौ
सुरेश

वो वठै पूगनै उण ऑफिस मे सुभै दस सू सिझया रा पाच ताई लगोलग बैठण लाग्यौ। पतो करनै, आर्डर्स खातर ताकीद करण लाग्यौ। छेवट चौथे दिन जावता सिझया रा पाच वज्या पछै ई बी नै आदेश मिळियौ।

वी रो 'सलेक्शन' हुयग्यौ हो। दूजै ई दिन वो नौकरी माथै चढ़ग्यौ।

❑

औलाद

करणीदान बारहठ

सीरू नै जाणै आज सुरग री राज मिलग्यी होवै। गोपी तो कठैई नावड़ै ही कोनी हो। बीरै छोरै बलदेव रो टीको होयौ हौ। आज पूरा इकत्तीस हजार रिपिया बीनै टीकै मे मिल्या, अेक सोनै री नारैळ, भाया नै अेक अेक कामळो, अर इक्कावन इक्कावन रिपिया। अेड़ी टीको तो आज ताई बीरी बिरादरी मे कीनै ही कोनी मिल्यौ। छोरै नै पढ़ावणै री मजो आग्यो। वण आपरै छोटियै छोरै राजियै नै कैयो - अरै डफोळ, तू जे पढ़ लेवतो तो इत्तो ही टिको तेरै आवतो।

बलदेव अबार जे ई अेन री नौकरी लागोड़ी हो। टीकै रै पाछै बो तो आपरी नौकरी पर चल्यौ गयौ, पण जावता जावता वो मा-बाप नै आपरी फैसलो देग्यौ–आ पीसा नै फालतू कोनी खोवणा। अेक तो बैठक बणा लीज्यो बारै, अर अेक माळियौ ऊपर।

बलदेव री बात ठीक ही। आज ताई हो काई घर मे। कच्चा दूढ़िया हा-बोदा, जूना, पुराणा, दादै रा बणायोड़ा। गोपी तो कर ही काई सकै हो। छोरा री पढ़ाई रो खरचौ बीनै आडो गैर लियौ। ऊचीनै उकसण ही कोनी दियो। दूढा काई घालतौ, जमीन भी अडाणै मेलणी पड़ी। दुकाना रौ करजौ भी मोकळौ चढ़ग्यौ। आवै जकै नै आ ही कैवै–अरै भाया, छोरौ पढ़ै है रै। छोरौ नौकरी तो लागसी ही। तेरी पाई पाई ब्याज समेत चुका देसूँ, तू फिकर मत कर।

पण आज तो इकत्तीस हजार रिपिया नगदा नगदी पड्या है।

मोट्यार लुगाई दोनू मिलनै रिपिया री योजना बणार्‌या है–अेक माळियो ऊपर घालणो है। बीनणी है भणीथकी है। पूरी चौदह क्लास। आछै घराणै री है। बीनणी रै पीरै मे तो सातरी कोठी है। आपणै दूढ़िये नै देखर काई कैसी व्या। छोरी छोरै नै दी है। आपानै कुण पूछै हो। गोपी तो पीसा देखनै परणीज्यौ हो।

टीको तो आपणै बाप दादा सुण्यो ही कोनी।

'फेर अेक वैठक भी वणावणी पड़सी । आया-गया कठै वैठै । मायनै तो आपानै ही वैठण री जगा कोनी', गोपी केयौ ।

जद वलदेव री मा सीरू वोली–वैठक तो पैली वणावणी पड़सी । कित्ताक पीसा लाग जासी । पक्की ही वणास्या, कच्चा रो तो ठोक ही विगड़ेड़ौ होवै, वलदेव रा वापू । इतै मे तो सर जासी ।

–इकत्तीस हजार रिपिया भोत होवै है, वलदेव री माँ, नैचैपाण वोली ।

–हाँ, हाँ, पूरी अटैची भरी पड़ी है, मोटैड़ै सन्दूक मे मेल राखी है, मोटोड़ी ताळो लगा राख्यौ है ।

–कूची तो सभाळ राखी है ?

–म्हारै नाड़ियै रै वाध राखी है । सीरू कूची दिखाई ।

–तो वस,

पूरो अेक दिन आ सपना मे वीतग्यो । दूजो दिन मसा उग्यौ ही हो कै गाव रो नामी सेठ हुकमचद घरै आ धमक्यौ । सेठ नै देखता ही गोपी री चाय री प्यालो हाथ मे ही रैग्यौ, वो दूजी घूट कोनी ले सक्यौ । वो हक्कौ-वक्कौ रैग्यौ ।

सेठ हाथ मे कागज रो टुकड़ो ले राख्यौ हो । सरू वीनै देखनै मन मे सोची –मरज्याणो अेक दिन मसा निसरण दियो ।

सेठ वोल्यो–गोपी, पाच हजार अेक सौ वत्तीस रिपिया वणै है रै, भाया ।

गोपी काई कैवै ? तीन साल आज तड़कै करता काढ़ दिया–छोरा नौकरी लागसी रै सेठ । पाई पाई देस्यूँ व्याज समेत । आही तो कैंवतो गोपी । आज तो पीसा तैयार है । आखै गाव में हाको फूटग्यो । सेठ इण मौकै क्यू चूकै ? पूरा इकत्तीस हजार घर मे तैयार पड्या है । गोपी नै लुकण नै जगा कोनी ही ।

गोपी की अैरी वैरो होयनै वोल्यी–म्है तो की और सुवाज कर राख्यो हो रै, सेठ ।

सेठ नै तो अड़णी हो । वो मोकै नै चूकणी आपरी वेवकूफी मानै । वो ग्राहक नै इणी तरिया तोलै ।

सेठ केयौ–तू तो सुवाज वदळ राख्यौ है । पण सुवाज म्है भी वदळ राख्यौ है । म्हूँ कित्ता दिन काढ्या है तनै वैरो है ? म्हूँ तैरै छोरै री पढ़ाई कानी देख्यौ । टीको नी आवतो तो ।

सेठ की जोर चढ्यो अर गोपी रै चरड़को लाग्यौ । विना पीसा मिजाज और होवै अर धका पीसा मिजाज और । गोपी फटाक सू पूरा रिपिया सेठ रै सामी नाख दिया । सेठ पीसा गिण्या अर गोपी कानी पीठ करली । वणा वावड़ती राम रमी भी कोनी करी । गोपी री लुगाई लारै सू घणी गाळ काढ़ी । वारै सुवाज में की फीकास आग्यौ ।

पत्तो नी किया खबर लागी कै दूजौ सेठ रामसरुप जिको गोपी नै कपड़ा दिया करतौ, गोपी रै बारणै आ धमक्यौ ।

–औ गोपी ! वधाई है रै भाई, आज तो धन बारणै ताई पसरग्यो । धन है रे गोपी तनै । लखदाद है तेरै मात पिता नै । अेड़ो मान तान तो तेरी बिरादरी मे कीनै मिल्यौ ही कोनी ।

सेठ हुकमचद करड़ो होयनै बोल्यौ तो सेठ रामसरुप खाड जेड़ौ मीठो रयौ, मकसद दोना रो अेक हो । रामसरूप पूरा पीसा भी लेग्यौ अर बधाई रा दो लाडू भी खाग्यौ ।

गोपी अर गोपी री वहू जका काल सपना रा मीठा गुटका लेवै हा बा आज विरायोड़ा सा भुवळी खावता फिरै हा, पण ओजूँ तो थोळी कसर ही ।

दिन छिपता ही मालौ चौधरी आ पूग्यौ । सीरू गोपी रै सुवाज मे मालू और मिचौक घालग्यो । गोपी री जमीन मालू रै अडाणै ही ।

बो बाल्यो–गोपी, जमीन तो तनै छुडावणी पड़सी । जे बेचणै रो सुवाज है तो बा बोल । म्हनै तो जमीन मोल लेवणी है । देख, गोपी, बो समझावण लागग्यौ–बावळिया, की सुवाज करनै चाल, तू की काचा, पाका दग्गड़ गिरावैलो, चेजो चलावैली । ओ सुवाज तो जद होवै जद पीसा बाफर होवै । भोळा, जमीन अडाणै पड़ी है अर तू पक्का घालै है । बटाऊ तो पड़ीस रै कमरै मे ही उतर जासी । छोरै रै ब्याव पाछै किसा पक्का किसा कच्चा । छोरी तो ब्याव पाछै छोरै साथै जासी, माळियै मे चिड़कल्या बोलैली, की अक्कल सू काम ले ।

मालू धोळा आयेड़ो उस्ताद खिलाड़ी हो । आपरा बीस हजार रिपिया लेयनै जमीन छोड़ दी ।

लारली रात तो जाणै चाद रै जळेरी ही पण आज तो कोझौ कुडाळो आग्यौ । आ रात तो मौत री सी रात लागै ही । लिछमी री ताकत रो अया अदाजो लागै । सन्तोष तो किया न किया करणौ ही पड़ै । दोनू अपणै मन नै समझायी–आछौ रैयौ, लैणो उतरग्यौ, नी तो मागणिया घर रै आगणै रो सगळो लेच ले लियो हो ।

दोना नै नीद तो आई पण उचटती रैयी । इणरौ नाम ही ससार है । अेक दिन तो औड़ौ आवै जाणै सुरगा रा झोला आवै है । दूजो दिन जाणै नरक रो कुड ।

दोना मिलनै बलदेव नै कागद लिख्यौ कै बेटा, फिकर नी करणी, जमीन आपणै पगा तळै आगी अर मागतड़ा रो मूडौ काळौ कर दियो ।

पण सीरू बरड़ावती रैंवती, जाणै बीरो काळजो निकळग्यौ होवै । पण गोपी आखर आदमी हो । बण दुनिया तो कोनी देखी, गाम तो देख्यौ हो । बो सीरू नै समझावण लाग्यौ– क्यूँ फिकर करै है, बावळी ! तू मास्टर रामबक्स नै जाणै है ?

–म्हूँ बीरो घर देख्यौ है ।

–सगळी पक्को वणा दियौ वीरो छोरै । वींनै दो साल होया है नौकरी लाग्या नै ।

–बात तो ठीक है ।

–तू गोविन्द री घर देख्यौ है ! कोठी वणा दी वींरै छोरै । हो काई वठै ? वावण नै जमीन ही कोनी ही ।

अै वाता सुणनै सू सीरू रो जी जम्यौ । वै दोनू जीव फेरू सपना सजोवण लागग्या ।

अेक दिन वलदेव री व्याव होयौ । वीनणी घरै आई । मोकळो धन आयौ । दायजै सू घर भरीजग्यौ । मोट्यार लुगाया जकी चीज देखी काई सुणी कोनी ही, वा वारै आगणै मे आई । वीनणी रै सोनै री पाजेव, जकी कदेई रजवाड़ा मे घलीजती । वीनणी तो हजारा मे अेक । जाणै पोथी मे कोरेड़ी । गोपी अर सीरू री मूड़ो ओजू ऊँची नै होग्यौ ।

वण आपरै छोटियै वेटै ने ओजूँ केयौ–अरे, मूसळ, तू भणीजतो तो अेड़ी वीनणी आवती अर अेड़ौ ही धन-दायजौ ।

वलदेव अर वलदेव री वीनणी दो दिन घरै रैया । दो दिन तो घणी रैण गैण रैयी ।

घर मे विजळी कोनी ही । पड़ौस सू तार लियौ । टी.वी. चलाई । रगीन फोटुआ नै देखनै घर आळा तो गदगद होया ही, अड़ौस पड़ौस रा लोग भी इण घर नै सरावण लागग्या ।

पण वीन-वीनणी जावता ही घर मे ओजूँ सूनवाड़ होगी । टी.वी. भी वारै ही साथै चल्यौ गयौ । सामान री अड़ाभीड़ घर मे रैगी ।

अबै तो वलदेव रै कागद री अडीक रैवण लागगी । वो आसी तो नोटा रा थव्वा रा थव्वा ल्यासी ।

अेक दिन वलदेव री कागद आयौ कै वीरी वदळी जोधपुर होगी, जठै वीरो सासरौ है ।

कई दिना पाछै फेर अेक कागद आयौ कै वींरै सुसरै वीनै अेक प्लाट दे दियौ है । वो वठै मकान वणासी ।

फेर अेक दिन कागद आयौ । वलदेव आपरै मा वाप नै वुलायौ । वो मकान री नागळ करसी ।

मोट्यार लुगाई कठै सू ई भाड़ो कवाड़्यौ । व्याव आळा कपड़ा काढ्या अर चाल पड़्या ।

दोना कोठी देखी । भोत जी सोरो होयौ । कोठी अेड़ी जाणै मूडै वोलै । वेटै म्हारै आपरी कोठी जोधपुर मे घालली ।

अेक दिन दोना बेटै कनै बैठ्या, दुख सुख री बात करी । दोनू बोल्या– बेटा, घर मे तो चूसा थड़ी करण लागग्या ।

बेटै उथळी दियौ–काको सा, मा सा, काई बताऊ ? इण कोठी पर दो लाख लाग लिया । ओजूँ रग रोगन बाकी है । अळमारूया रै जोड़ी कोनी चढी । पचास हजार सुसरै सू लिया । की सरकार रो करजौ है । प्लॉट सुसरै दे दियो, मोफत में आग्यौ । अठै रैवण नै मकान मिलै ही कोनी । आपणै रैवण नै मकान बणग्यौ ।

बेटै बाप नै सौ रिपिया दे दिया अर सासू नै बीनणी पगा लागणी दे दी । बेटै बाप नै सगळा कपड़ा करा दिया अर बीनणी सासू नै अेक तीवळ ।

दोनू सिसकारी मारता मारता घरै पूग्या । बै लोगा रै सामै आपरै बेटै री कोठी री चरचा करता तो लोग अेक ही बात कैंवता–गोपी, अबै तू बेटै री आस मत कर, छोरो तौ डाकणा ले लियौ ।

पण सीरू ओजूँ ही काग उडावती–उडज्या रे कागला, मेरो बेटो बलदेवौ घरै आवै तो ।

कागलो बैठ्यो रैवतो, काव काव करतो । जद वा कैंवती–अरै मरज्याणा, कदी तो आवणै रो सदेसो दिया कर । जाणै कागलै कनै कोई वायरलैस होवै ।

गोपी रा बै कपड़ा भी फाटग्या । बीरी जूत्या ओजूँ खूसड़ा बणगी । लोग बीनै ओजूँ गोपियो कैवण लागग्या ।

पण गोपी अबै राजियै नै राजू कैवण लागग्यौ । मोट्यार लुगाई अबै काग उडावणो छोड दियौ । वा नई राग सरू कर दी–अबै तो राजू री ब्याव करस्या । राजू री बीनणी आसी । वाही आपणी सेवा करसी ।

❑

कूख लजाड़ी

भोगीलाल पाटीदार

सूरज डूबवानी तैयारी मे अतो । आकाश लाल लाल थई ग्यूं अतु । मोटर सापोटावन साली रई अती । रूखड़ दौड़ते दौड़ते वाहे जात अत । अटला मे एक वावू जेवौ आदमी बुल्यौ "काका हीदा वेहौ ।" हीदो वेही नै जुयु तो सदीप जेवोस लागतौ अती । मन मे करूद आवी ग्यौ । मूँडू फिरवी लीदु ।

हार लइ निकर्यो तो नाथू बुल्यौ, 'मकना, आखी ऊमर काम कर्यु है, अवे तो सुइ । अजी धन नी हाय लागी है ? एक तो वेटौ है । इयौ अफसर है केम कठ्ठाई वेठे ? खेती करवी ओय तो मजदूर राखी ने कराव । मारै तो सव खेती माते है तोय सव वैवार राखु हूँ । मारै तो कुणी नौकरी करवु नथी । तोय अमारै नानियौ केहै, "वापा अवै तमे आराम करी । गणी मैनत करी । राम नु नाम लो ।"

मकनो बुल्यौ– "भाई काम तो नौकर (अरी) करै है, मुतौ देख-रेख राखु हूँ । तमे जाणो तो हौ, धणी वगर धोड हुनू । नौकर नै भरूसै तो बुडी वे पानै थई जाय । वेटो शेर (शहर) मे नौकरी करहै ई कटला रुपिया आलै है । मुस जाणु हूँ वेगरै हास डूँगरा रूपारा देखयँ । आणी मोंगवारी मे शेर मे रेवू कटलु काठू है । जेटलु कमाय अटलु खरसौ थई जाय । शेर नी तनखा तो तवा मातै पाणिनु टपकु है ।" नाथू खरा जीवनो अतो । खरी वात करी देतो । एणै क्यु– "गेडपण मे मा-वापनी सेवा करै, इस सुरो हमजदार केवाय । भणिली वेटी आणी वात ने भूली जाय, एनै भणावी लु हूँ कामनु ? तू एम नै मानतो कै मारी सुरो अफसर है अटळे खारै यँ है ।" एम कई नै जतो थ्यो ।

नाथू भाई नी वात हामरी तो जमना ने मन मे झार फूटी गई । मारै सुरो अफसर है अटले मनक खार्र-वँ है । थोडाक दन एनै कनै रई आवु, पसे मनक हूँ कहे । मगन खेतरै हो । घेरै आव्यो तो केवा लागी । मै तो आखी जिन्दगी कमावु जाण्पु है । न तो तानू पेर्यू न जातरा करी । वेटा नै भणाव्यो अटलुस देख्यु । मु तो एने कने जऊँ । आणी वात नी वै दन थकी लल पाडी अती ।

थाकी ने मकने क्यु-"अवडै सीमाहु है । खेती नै घर हुनू मेलीनै मैं जवाय । दिवारी मातै जई आवह ।" वइरा नै मुडै जे वात आवी जाय इ पासी नै पेहै । जमना बुली - "तारे तमे एखला जो, सुरा नी खवर लई आवी ।" घरवाली नी हट हामी मकना नी एक नै साली । बीजे दन हवार नी गाडी मे बैठो, मोटर मे गामनो सुरो अतो । इयौ एणा शेर मे जतो अतो । मोटर हो उतरी ने टेम्पो करी आल्यौ । टेम्पावारे ओफिस हामो उतारी दीदी । फाटक माती एक आदमी ऊवौ अतो । एने क्यु-भाई मारै सुरौ आणी ओफिस मे नौकरी करै है । मारे एने मलवु है ।" सपरासीये टरकावी नै क्यु-"जा जा डूहा ! तारौ सुरो मुटौ ओफिसर है ? मायु तो खराब नै है ?" पासा भगवन कठ मे बैही ग्या तो पुस्यु-"तमारे सुरानु हू नाम है।" मकनो वुल्यो-सदीप" । सपरासीये विश्यार कर्यो के अटला मुटा साव नो वाप आवो तो हूँ ओहे । पण मारै हूँ हादी तो लावु । एम करी ने ओफिस मे जई मुटा साव ने हादी लाव्यो ।

सदीप वापाने देखीने खमकाई ग्यो । आवी हालत मे आय केम आव्या ? कपडू तो ताजू पेरी नै आवता । विश्यार करतो वापा कनै आवी नै वुल्यौ-"वापा आय हुदी केम आव्या । कये काम अतु तो कागद लखावी देता ।" मकनौ वुल्यौ-"अरे वेटा ! तारी वा (मा) सन्ता करती अती । तारी खवर लेवा मुकल्यो । तारी वाये आवती अती पण वरसात देखीने ने आवी ।" सदीपे पाणी मगावी नै पायु। पसे क्यु-"अवड़े मारे मिटीग है अटले तमे घेरे हिडो, मु आवु हूँ ।" पाहे ऊवो सपरासी ने क्यु -"जाओ मेरे कमरे (मकान) पर रख आओ ।" एम कई नै तरत पासो ओफिस हामो जवा लागो । मोरे जते एक आदमिये पुस्यु तो केया लागो -"ये तो मेरे घर गाँव मे नौकर है । आजकल मैं घर नही गया हूँ इसलिए मेरे पिताजी ने समाचार लेने भेजा है ।"

मकनो गेपड़ो थयी ग्यो अतो पण कान तो अजीये हुरा अत्ता । मकना ने कान मे आ सवद पडी ग्या । वापने नौकर केहे । एकदम चक्कर आवी ग्या । विश्यार करवा लागो के "वेटा ने जनम आली ने मुटो कर्यो । पेटै पाटा वाँदी ने भणाव्यो, सव वेकार ग्यु । दिल माते पसीने थई ग्यो । गणो करूद आव्यो । सपरासी ने क्यु मोटर टेसन मने भारी दे । सपरासी टेसणे लई ग्यो । गाम जवावारी गाडी ऊवी, अती एणामे बेही ग्यो । गाडी मयहो उतरो तो अन्दारू पडी ग्यु अतु । उतरी ने तरत घोर हामो हिंडयो ।

वायणा मे जत मे अरी मल्यो । एनेमे असम्वो थ्यो, के काको पासा केम आवी ग्या ? काकी ने हादी ने कमाड़ खुलाव्यु । जमना, मकना ने देखीने घवरणी । पुस्यु-केम पासा आव्या ? ओफिस ने मळी ? मकनो जाणतो अतो के वइरानो (औरत) जीव पातरो ओय । मा नु दिल है एने नै दुडू एम करी झूठू बुल्यो-सदीप मजा मे है । लाडीये ठीक है । एणे तो रुकवा नु क्यु अतु पण मने तो शेर मे ने

फावे अटले आवतो यों। वै जण तने खुब खुब याद करत अत। मकना ने केवा मे उदासी देखी ने केवा लागी-"तमे झुठू बुलो हो। कक द्वार मे कारू है। हासू बुलो हूँ वात थई।

मकनानो कठ भराई आव्यो। धीरे हूँ क्यु-"तारी रकमे गिरवे मिलने बेटो भणाव्यो। मुटो ओफिसर बणाव्यो। पण ताजा सस्कार ने आव्या। आजे सदीप शेरनी विजरीना भवकारा मे सकराई ग्यो है।" मनै ओफिसनी फाटक मयहोस एने कमरै मुकली दीदो। एक आदमियी पुस्यु तो एणे क्यु-"आतो मारे गाम मे पिताजी नी नीकर है।" मु गामनो नौकर, मुटा साब नी कमरे हरते जतो। अटलै पासी आवी ग्यो।

आ सब हामरी ने जमना ने मुडै हूँ निहरी ग्यु "हे भगवान! मारू कूँख लजाडी।" पाहण बेठो नौकर बुल्यौ-"काकी! केम सन्ता करो? आ कलयुग है, जेटलु ने थाय अटलु थुडू। सदीप भाई गमे जेटला मुटा बणी जय। बापनै थेकणै तो मकनोस लखाहे। केम मन नानु करौ? तमारै कनै खेती तो है। मु जीवु तार हुदी तमनै तो दु खी ने थवा दूँ।" जमना वगर बुल्यै रसुडा मे खावानु बणाव्वा जती रई।

❑

उमंग

छगनलाल व्यास

काळी-कळूटी रंग, लाम्बौ मूडौ– माथै माताजी रा वण अर आख्या धस्योड़ी अेक पसळी रै इण शरीर रो नाव वीणा । वीणा हाळ टावर अर टावर परमहस मानीजै । उणनै काई ठा कैड़ो हुवै रंग-रूप ? इण उपरा जिकी मजूरी कर पेट पाळै वी शरीर रै फूका देवण लागै तो मानखी कैवण सू नी चूकै–पूरब री गधी अर पिच्छम री चाळ । इणनै तो कोयलै री दलाली मे मूडौ काळौ करणौ ई है । जिकै सू वा स्कूल री छुट्टी हुया माथा माथै पगल्या लिया सीधी घरा दौड़ती अर पछै मोटर रै अडै खा'नी तेतीसा ।

'भाई साहब ! काई आपरै ओ सामान उठावणौ है ? वीणा सामान वाळै जात्री नै देख'र पूछती ।

–लगै टगै वारै वरस री छोरी अर मुट्ठी भरिया हाडका सू तो या आठ-दस वरस री ई लागती, जिकै सू आगली दाता आगळी देवती पूछती–'काई ओ बेडिंग थारा सू गाधी चौराये ताई उचाइजैला !

–हा उण हुकारै साथै घाटकी हिलायी ।

–कित्ता रिपिया लेवैला ? मुसाफिर सावचेती सू पूछ्यौ ।

–दोय रिपिया । वेडिंग खा'नी देखती वीणा ऊथळौ दियौ ।

–वाजिव मजूरी सुण र सफारी सूट वाळै खेचताण नी कर'र बेडिंग उपड़ायौ अर वीणा गेलौ समाल्यौ ।

ओ धधौ उण री रोजीना रौ है । रोजीना वस रै अड्डै पूगणो । उतरण वाळी सवारिया मे सू सामान वाळी सवारिया नै सार-सार री भात समाळणी । मजूरी री पूछणी, मनावणी अर इण तरिया आठ-दस रिपिया कमाय'र घरा जावणौ ।

उणरौ घर देख्या दया आवै । बिरखा मे ठौड़ ठौड़ सू पाणी टपकै ऊनाळा रा तिंतर-छाया सू काई हुवै ! अर सियाळा रा मकान फकत ओटै

री काम करै । पण आ गत अेक उणरै घर री ई तो नीं है अेड़ा तो अलेखूं घर है, बस ओ सोच दिन निकळ जावै.......।

परभात री पौर वीणा वैगी उठ जावै.......। स्कूल रा गाभा पैर'र बस्तौ संभाळै.......। छुट्टी हुयां दौड़ भाग करती घरां आय'र गाभा बदळै अर मोटर रै अड्डै पूगै, क्यूं कै उठातांई मोटर रै आवण री वगत हुय जावै.......। मोटर माथै मजूरी री उडीक.......पछै दूजी, तीजी अर आखरी मोटर संभाळ्यां काठै अंधारै घरां आवै । रविवार रै दिन वा सुवै री दोन्यूं वसां माथै भी ऊभी मिळै, जाणै किणी नै उडीकती हुवै.......।

अवै वा आठवीं में पढ़ती.......। अेक दिन अखबार मे किणी महिला अधिकारी री इन्टरव्यू अर फोटू छप्यौ.......। वा उणनै पढण लागी अर पढ़ती रही.......अणूती राजी हुयी.......। उणरै हियै में उमंग जागी.......। वा भी उणी तरियां बदरूप है.......घराणौ गरीब है.......पढाई में ठीक-ठाक है पण हिम्मत राख्यां वा अधिकारी बण सकै तो म्हैं क्यूं नी.......? बस वा मुसीबतां सूं लोहौ लेवण री औरूं आदी हुयगी.......। दिन रात अेक करणी तो उणनै मां रै दूध सूं मिल्योड़ी जळम-घूंट.......। उणनै दीखण लागती उण महिला अधिकारी री फोटू.......उण रा अेक-अेक बोल- 'आखर मानखै रै जोर सूं तो माटी ई पाणी बण जावै तो पछै आ तो बापड़ी तरक्की.......मतैई पगां लागै, चाहिजै लगन, मैनत अर उमंग.......।'

पढ़ाई में उण रौ अणूतौ मन लाग्यौ.......। किताबां री वस्तौ उणरै साथै जीव री भांत रैवण लागी.......जठातांई मोटर नी आंवती वा किताबां रा पानां पाटती.......सोचती.......विचारती.......। सिंझ्यारा घर रै काम सूं निवट'र रोड़लाइट नीचै पढणौ, पाड़ौसी रै रेडियै सूं कान लगाय'र समाचार सुणणा । उण सूं खास-खास बिन्दुवां नै टीपणा, अखबार नै ढंग सूं बांचणौ आद-आद वां आपरी आदत बणाय ली ।

'घणी ई पढ़ी बेटी.......! अवै थारौ स्कूल जावणौ चोखौ नी । घरां ई जिकी जय ज्वार कीं ऊकळै खा अर रैय.......। नीं तर अेड़ी नी हुवै कै मिनख आपां माथै आंगळी उठावै.......।' अेक दिन वीणा रै बाप कैय दियौ ।

—या यूं बाकौ फाड़ण लागी जाणै किणी उणनै छात सूं धक्कौ दे दियौ हुवै.......। पछै संभळ'र बोली-कांई आठवीं तांई री पढाई ने आप 'खूब' मानी ! कांई स्कूल जावतां भी मानखो आपां माथै आंख्यां तरेर सकै.......! वीणा अचूंभै सूं पूछ्यौ ।

—हां.......बेटी.......! आपांणै समाज रो ओ ई रिवाज है । अठै छोरियां नै नीं बोलण रौ हक है.......नीं पूछण रौ.......अर पछै आदमी सूं होड़ा-होड करणी तो खुद रै पगां कुलाड़ी मारणी है.......।

–पण मैं तो म्हारी पोथी मे पढ्यौ कै सविधान सू आपा सगळा ने अेक सा अधिकार मिल्या है चावै वौ आदमी हुवौ चावै लुगाई । वीणा विचै बोलण री आगत सारी।

–आ ई तो थारा मे कमी है । जिकी बाता पोथी मे है वै समाज मे नी, अर जिकी समाज मे है वै पोथी मे नी । इण खाई रै कारणै ई तो असतोप उपजै । हाथा मे चूड़ी खातर काच री कठै काम ! देख ! दोय आखर पढ्या थारी जुबान भी कतरनी री भात चालण लागी । पछै कांई भला काम करसी ? सोचता ई म्हारौ तो काळजौ कापै । बाप बीड़ी लगावता कैयौ।

पण इणमे म्है आपनै कांई राणाजी नै काणाजी कैय दियौ ! साची बात इ तो कही है । वीणा गिड़गिड़ावण लागी।

तो घणी पढाय'र आपानै किसी नौकरी करावणी है ? बाप धुऔ उडावता हियै री बात होठा लायौ।

पिताजी ! पढाई री कारण फकत नौकरी ई तो नी है ज्ञान वढावणौ भी तो इणरौ मकसद हुवै है । म्हारा गुरूजी तो अेक दिन केवता कै आजकाल री पढाइ तो नाव मात्र री है दसवी ग्यारहवी तो सामान्य गिणीजै । पैली री पाचवी पास भी अैड़ा-अैड़ा सवाल करै कै अेम अे वाळा नै भी हिचकिया आवै अर आपनै इण बाबत पेट सू पाणी इ नी हिलावणौ है, लता अर रेखा भी तो पढै है । इण साथै ओ भी केवै कै नवी मे सिलाई सिखावै। जे सिलाई सीखगी तो ओ जमारौ तो टळेला ।

'थारी मरजी । बाप रै मूडै सू दोय बोल नीठ निकल्या अर वीणा रै खातर अे बोळ डूबतै री तिणकौ बण्या। वा मुळकी।

पढाई बाबत उण री मन उछळती । वा कड़ी मैनत सू पढ़ण लागी रटण लागी। सिलाई मे मन राख्या गुरुजी राजी हुय'र उणनै रिसेस मे भी सिलाई करण री छूट दीनी अर वा इण तरिया मजूरी सू कमाई कर लेवती । इण साथै वा अलेखू हुनर सीखती ज्यूकै थैलिया बणावणी, गुलदस्ता बणावणा अर स्वेटर बुणना। इण सू भी पिसी कमाय र घर गिरस्थी मे मदद देवती।

मैनत अर उमग सू वा सैकण्डरी परीक्षा मे पूरै प्रान्त मे चोथी ठौड़ बणायी तो स्कूल वाळा अणूता राजी हुया। गाव अर माइता रौ नाव चमक्यौ अबै उणरै रग रूप री कोई परवाह नही करती, गुणा रा बखाण करण सू नी चूकती । पण हीरै री परख तो झवरी इज कर सकै घरवाळा इण बाबत कांई जाँणै ? वै तो पढाई छुडावण री बात माथै ज्यू रा त्यू सोचण लागा अर' इण सू वीणा रौ काळजौ कापण लागौ। पण वा कर कांई सकती ? उणरै दिमाग मे उण महिला अधिकारी री फोटू आवती-आवती रैय जावती बोल आवण सू पैली ई जावण री कोशीश करता अर वा पाछी कापण लागती ।

इणी दिना घरवाळा बेटी रै ब्याव सू पैली सगपण खातर पगल्या घसण शुरू कर लीना । पनरै सोलै बरस रे टाबर रा पीळा हाथ कर्‌या ई गगाजी नहाया हुय सकै नीतर छाती माथै हाथ रैवै । बस इणी विचारा सू वै हैरान रेवता कै आखर सगपणियौ कठै कर्‌यौ जावै ? इण वगत मे सगपण करणौ भी हाथी नै बाधणै सू आ वखी काम नी । जद इण बात रो ज्ञान वीणा ने हुयौ तो उण खुद री बात कही क 'इतरै चोखै नम्बरा सू पास हुयी हूँ तो म्हनै औरू पढण दौ अे सगपण तो मतैई हुय जावेला इण खातर आप क्यू ताफड़ा तोड़ौ हो ?'

वाह वाह रेवण दे थारी हुसियारी आ जाणै म्हे आछै नवरा सू पास हुयगी जिको मानखौ मारै लारै फिरेला म्हारौ घर पूछैला पण ओ भी ध्यान राखजै कै मानखै आगळ थू टकै री तीन सेर सू भी सस्ती है । वै धन माळ देखै रग रूप देखै जिकै रो आपा खनै घोर टोटौ है ।

पण सगपणियौ नी हुवै उठा ताई पढण री छूट तो दिरावौ पछै री पछै देखी ज्यासी । वीणा दवता बोला सू केयो ।

अबै तो घरवाळा रै विचारा मे वळती मे पूळौ पड़्यौ क्यू कै दुर्बल री गुस्सौ भारी मानीजै अेक तरफ तो सगपणियौ हुवै नी दूजी तरफ इण री तीन लोक री मथुरा ई न्यारी ऊचै ओहदै रा सुपना देखै घर रा तो घट्टी चाटै अर पावणा नै आटौ भावै । कठै ई घणी पढ़ी तो मिनखा मे मूडौ दिखावण जोग नी राखैला । कठैई घर री नाक नी जावै इण डर सू वीणा री पढ़ाई छुडवायै लोनी । उणरा सुपना काच री भात टूटण लागा पण हिम्मत सू उण काम कर्‌यौ। प्राइवेट परीक्षा रो फॉर्म भर र चालू राखी । बारै महीना ताई सगपणियै खातर पगरख्या फाड़ी अर इण विचै वीणा पढाई रै मील रो अेक भारी औरू पार कर लियौ ।

'आज म्हू आखर सगपणियौ तैय कर ई आयौ दस तोळै सोनै माथै नीठा मनाया, पण पाणी रै घड़ै रै सुगन री इतरी फर्क पड़ै, समझी ? नीतर कठै आस व्ही ?' वीणा रा पापा घरवाळी नै खुशी खुशी कैय रह्या हा । जाणै मोटौ गढ़ जीत र आया हुवै

कांई करा काम री बात छोरी खुद नी जाणै कठै सू पल्लै पड़ी दिखती ई चोखी नी कोरी पढाई मे हुया कुण पूछै ? आजकाल तो मानखौ रग रूप पैली देखै गुण वापड़ा पड़्या रैवै अेक खुणै मे । खैर आपाणै तो गळै सू फासी टळी । वीणा री मा यू बोली, जाणै माथै सू मण भर रौ भारौ आघौ हुया गावड़ी नैहचै सू ऊची हुवै ।

मम्मी ! आ थू भूलै है । जिकौ अबै सू ई दायजै सू म्हारी मोल करै रग रूप नै मान दैवै वै काई भलौ कर सकै ? उठायै कुत्ते सू

शिकार री काई आस । जिकौ रग रूप चावै उण घरै म्हारौ जीव रोजीना अधर रेवैळा उण भूखै भेडिया सू मनै बचाय ले । वीणा धूजती धूजती बोली ।

वा तो पछै म्हा धोळा यू ई लीना है ? कुण माइत औलाद ने कुए मे धकेलै ! इण ऊपरा भी वळद अर बेटी तो वाधै उठै ई जावै । नीठ तो जोड़-तोड़ कर्‌या वात बैठायी अर वाइसा मूडै आयै कवै ने पटकावणी चावै तो पछै मीरा वाई वणण रा दिन आवैला पछै मूडी मत बोळजै । मा रीसा वळती बोली।

वीणा काई बोलै ? पण मन ई मन तेवड़ लियौ के जठा ताई पगा नी हुवू ब्याव नी करणी । अर दायजा अर रूप रग चावै उणा री तो मूडौ ई काळौ । जागती सू ताकती वतौ । वीणा आखर अेक उपाव सोच र मुळकी । उणने दीखण लागी फेरू वी महिला अधिकारी री फोटू साफ निरमळ अर उण समाजी ने पाडौसी री हैसियत सू कागज माड्यौ कै 'आप अवार जिकौ सगपणियौ तै कीनौ है, उण छोरी रौ पग घर सू वारै है आछौ रैवैला कै सगपण तोड़ दियौ जावै हाळै काचा मूगा रौ काई नी विगड्यौ है पछै पछतावीला ।

कागज पढ'र मन मे विचारा रा वादळा उपड्या काळा-काळा डरावणा । ओ ई कारण हो दायजै खातर घणी खेच-ताण नी करण रौ अर तुरत ब्याव खातर पगल्या पछाड़ण रौ ! पण म्हारी तो लाज सावरियै राख लीनी उणरै घरा देर है अधेर नी । 'जुग-जुग भलौ हुवौ अेडै नेक सलाह देवणियै रौ ' कैवता उणा सगपण तोड़ण रो कागज माडियो। वीणा कागज पढ'र अणूती राजी हुयी पण घरवाळा रै सूरजग्रहण मच्यौ ।

वीणा री वदचलणी री वात पूरै समाज मे विजळी रै करण्ट री भात फैलगी अर पछै सगपण करणौ जाणै फाट्या दूध ने आछौ करण सू भी अवखौ कारज वणग्यौ । रात रा ऊघ आवै नी अर दिन रा चैन नी पाडौसिया ने भूडा वोलै । इण विचै वीणा लगोलग पढ़ती रही अर वी अे री इम्तिहान ई पास कर लियौ । होड़ा होड़ परीक्षा मे वैठी अर अधिकारी री सुपनौ निजर हुयौ । पूरै समाज मे वात फैली अर वदचलणी री वात यू दवी जाणै पाणी रौ बुड़वुड़ियौ । वा समाज री नाक वणगी । हर कोई उण सू फेरा खावणौ चावतौ पण अवै उण रा भाव भी राई रा भाव रातै वीता री भात घणा ऊचा पूग चुक्या हा ।

आखर खुद रै साथै ई अधिकारी वणण वाळै सू वीणा ब्याव कर लियौ । वौ भी वीणा री भात दायजै रै नाव सू ई चिढती अर गुणा री पूजा करतौ । रग रूप कोई भाव नी गिणतौ । दोना री जोड़ी सातरी लागती । वीणा रा

माइत आर्शीप दवण लागा तो खुशी रा आसू ढलकर्ण सू नी चूका ओ सोच कितौ अनरथ हुय जावता जै माडाणी गिरस्थी रै गाडै म उण दिना जोत दी जावती तो। ठीक कियौ किणी उण वगत गलत वात उठाय र भी । जद ई तो केवै क भगवान करै जिका ई चाखौ ।

गलत वात उठावण वाळी मै खुद वाकी कुण म्हारै सामी आगळी कर सकता । वीणा राज री वात खोली।

–है । अचूभे सू माइता री बाकौ फाटौ रो फाटी ई रैयग्यौ ।

–वाकी काई कर सकती आखर मरती काई नी करै । वा वात तो अधिकारी वणता ई केड़ी दवी ? अवै कुण केवै।

ठाक कियौ नी तर थारी मछावा धूड़ खावती अर घर रौ पोखाळा हुया भी वो वाड़ौ अर मामूली नौकरी वाळौ ई मिलतौ अर रोजीनै टट फूटता।

वीणा सोचण लागी कित्ता माइत इण भात खुद रै टावरा नै कुए मे नी धकेलण रौ केयता भी धकेलता रेवै । दायजै रै वीज नै खुद पनपावै । सोचता सेरको नाखै अर आवण लागै याद उणनै महिला अधिकारी रा वोल ।

❐

वनवासी

फतहलाल गुर्जर "अनोखा"

तावड़ा री लाय सन सन बाजती लू । चारूँ मेर आभे मे उठता भतूळिया । साठ बरस री सूरती बीत्या बरसा री सुनहरी यादा मे खोयोड़ी आपरी फूस री झूपडी रै फळसै कनै ऊभी ही । बीरो ध्यान टूट्यो मूडा सू अचवच रा सबद निकळग्या, "मरिया रे राम ! हेग डोवा-टाला मरिग्या । देखता ही देखता वाड़ा रा वाड़ा खाली होइग्या । घर मे खावा रो दाणो नी अर कूड़ा वैरा मे पाणी रो छाटो नी । जाणै कदै ईंदर वावी पावणी वैला । बाळक्या री बाळ कोनी देखी जाय, मरता ढोरा री गत कोनी देखी जाय, अबै जीया तो किया जीया ? अबै तो हेलो साभळी द्वारका रा नाथ !"

बारै चौरा माथे बैठी करमो आपणा करमा पै पछतावौ करिर्‌यौ । वली तम्बाखू ने गुड़ गुड़ रा विश्वास पै खेचतो, आता-जाता मिनखा ने टमक-टमक देखिर्‌यो हो । आता-जाता मोट्यारा नै पूछतो रै, "तेजा ! पूछ'र आवजै रै - कमठाणा रा मेट नै, कै मजूरा री जरूरत है ?"

करमा रै घर माथे एक विना झोळी रो भगत चौकसी सारू बैठो रै । आज उण री गत देख्या ही बणै । कुत्ता मिनखा सू ज्यादा समझदार अर वफादार होया करै । मोती जद धाप्योड़ो होवै तो छूछ्या करीनै आपणी खुसी बताय दे । पण आज तो करमा री टूट्योड़ी चारपाई रै नीचै चारूँ पग ऊँचा करी पड़ीयोड़ो चुकारो पण कोनी करै ।

करमा रै घरै एक जुवान टावरी रे सिवाय कोई काम माथे जावणियो कोनी। गया दो बरस सू करमा रा टाटीया मे लखवो मार जावा साठे ठाम रो राछ वणि गयी। सूरती रा डील मे पाण पण कोनी री । नैना नैना दो टावर जिणमा एक तो साव गोदी रो गणेश हो अर दूजा री ऊमर पाँच बरस री । आख्या री तळाया भर आई । टुकुर टुकुर करमो वेर वेर आपरी घरवाळी रा मूडा आड़ी देख अर पाछौ विचारा मे ऊब डूब करै । कनै ऊभी गीगली आपरी

फाट्योड़ी लूगड़ी रा लवरका सू वेर-वेर डील ने ढाके पण वाजता वायरा री झपट अठी-उठी लाज नै उगाड़ी करदे ।

भूख सू वारा मेलती थावर्यो, सूरती री सूखी छाती सु चिप'र दूध पीवण सारू मचलै पण सूखा डील मे दूध कठै ? मायड़ री पेट पखाल वेईस्ची, दूध कठासू उतरै। उणरी एक-एक हाड गिणीज सकै । सूरती थावरिया नै नैनी चैलकी री ज्यान छाती सू चिपकृयोड़ो देखे'र, हाय री थपकी सू छानी राखण री कोसीस करै पण भूखी टावर रोय रोय'र जामण रा काळजा नै किरच किरच कर जाप । थान मे दूध नी पण आखा सू आँसू री धार टपक'र वाळक्यॉं नै मायड़ री मजबूरी री भाव महसूस करावै । मोटक्यी टावर कान्यो रमती फिरती आर करमा सू वेर-वेर पूछै- "वापा, मनै भूख लागी री है, थे रोटलो आपौ नी ।" डोकरियो वाळक्या री वाळ देख नी सकै पण करै तो काई । एक तो मादगी वरसा सू लेर लागी री अर दूजी अकाळ री मार। सीला सास री सिसकारी उणरा पोपला मूण्डा सू सटट् निकलगी । मनमा मज्दूरी री मार नै मार'र आपणी काळजा री कोर नै लाइ लड़ावती, ढाढस वधावती पण भूख रै आगै वाळहठ ठाडी कोनी वी । काठी छाती कर नै वोल्यौ-

"मारा हीरा, रोटली कठा सू ल्याऊ । आपणा सू राम रूठ्योड़ो है, सवर राख वेटा ! शहर जाऊँलौ, आइनाथि जुगाड़ जमावेलो ।" सुरती वोली, "म्हे साम्भळी के वनवासी कल्याण आश्रम रा राम जीवा ने पाळवा रो प्रण कर्त्योड़ो है । वठै अन्न रौ जुगाड़, ढोरा सारू चारी अर खूखला री सम्भाळ करे है ।" करमो वोल्यो "अरे हाँ, हेमलो केवतो हो क वठै मूड़कै दीठ कुलकी भरीनै छाछ मोकळै है ।" इतराक म उण रो ध्यान सूखी भौम, मरता ढोर अर भूखा टावरिया सू हट'र वीत्योडी ऊमर कानी गयौ । थोड़ी देर री चुप्पी टूटी तो करमो मगरा माथै ऊभा थका छड़िया विछड़िया रूखा कानी झाकनै सूरती सू वोल्यौ, "गीगली री मा, अे हेग हरियोड़ा डूगर देखता-देखता टाटल्या होइग्या । कितरा डागरा पेट भरता, कितरा मिनख पेट भरता, पण आज तो इणारी भी ककाळ सी देह ऊभी थकी है । इणारी वखी काई कम है ? कितरी पाण इणा माँही है, जो ठूठ वणी नै भी आप री ठौड़ कोनी छोड़ी ।"

कान्यो फेरू कुरळायो- "वापा रोटलो आपौ नी, भूख घणी लागी री ।" करमा रो भाटा जेड़ौ करड़ो मन पाणी-पाणी हुयनै झर झर आख्या सू वह निकळयौ।

गीगली वोली "वा, कुलकियौ लेर छाछ लेवण मै जावसू ।" वेटी थू पण ध्यान राखजै, गरीवी मे लाज ढावणी भारी पड़े । गाव कण्डी रा टावर टोली अर लुगाया साथै सोलह वरस री गीगली फाट्योड़ा गाभा सम्भाळती कुलकियौ लैर दूजै परभात वनवासी आश्रम जाय पूगी । गीगली कई देखे है क, आश्रम रा टावर अर सेवा दल रा वाटणिया हेग आयोड़ा । वनवासियो नै लेण लगार वेवाड़िया राख्या, जिणारा कुपन वणाय'र अेक अेक मगौ भरी छाछ उडेलिरिया है । टावरी वोली,

"मनैई छाछ मोकळजी सा । म्हारा वापा मनै भी छाछ लेवा मोकळी है ।" नामो लिखणियो कालू आश्रम रो पढणियो टावर जो दिन भर सेवा मे लाग्योड़ो रै है । दो दिना सू लू री लपेट मे मादी पड्ग्यो, पण सेवा सू पाछै नी हट्यी । कालू बोल्यो "थारो कूपन ?" गींगली कूपन थमा'र लेण मे ऊभी होईगी । चोपड़ी मे नाम लिख'र कालू रै हडाली अेक मगो भर छाछ घाल दीवी । छाछ मिली तो काई, घर मा अन्न रौ दाणौ पण कोनी । टावरी दिन भर ई जुगाड मा आश्रम रा मास्टर जी रे सामा गिड़गिड़ाती री । भण्डार मे आयोड़ी ज्वार खूट चुकी ही । मास्टर जी गींगली ने वेर-वेर समझा'र कह्यो पण पेट री भूख रे आगै हमझू याता री अेक नी चाली । मामेर रौ भीखो अर नीचला थळा रौ वरदो धणी वेर कह्यो क अवार देवण सारू जवार रौ भण्डार कोनी । हवेर आवजे, पण गींगली उठीज नी । वनवासी आश्रम मे आयोड़ी सेवा दळ आपणा हीज जिला रा पढावणिया सात जणा रौ हो । दौपेर री दो वाजिया गींगली नै आश्रम रा वजरग जी दो किलो जवार आश्रम खर्च सू काढीनै देई दी । टावरी रे मूण्डे हरख री लैर दौड़गी । परभात सू टस सू मस नी वेवण वाळी घीघीयाती गींगली लीर-लीर डेढ़ वेतरी लूगड़ी रै पल्ले जवार लेर वाधण लागी तो चररकर लूगडी सू हेग दाणा धरती री धूलमा विखरग्या । देखणिया करै तो काई करे । गाभारी ही ज्यान इणा वनवासिया रा भाग भी तो फाट्योड़ा हा । सिसकती वाळकी री वाळ देखी नी गी । व्यवस्था मे लाग्योड़ा मास्टर जी फेरू वुलार किलोक जवार देय'र कह्यो, "वेटी, उठ ये ले । धरती मे मिलियौड़ा दाणा आज रुलग्या तो काई, विरखा मे पाछा उगैला । भाग मे लिखियोड़ी ही मिनखा नै मिलै है । अे विखरयोड़ा ज्वार रा दाणा थोड़ा ही है, अेतो आपणा करमा रा वीज है, जो वगत री मार सू माटी मे रूळरिया है, पण गमिया कोनी ।"

गींगली छाछरी कुलकियौ माथै मेल'र फाटी लूगडी रे वरकै वध्योड़ी जवार लेर तपते तावड़ै, उभाणा पगा थान जाय री ज्यान भूख रै भगवान सारू भोग लेर भगत भाव सू भाग जावतो व्है ।

सूरती अर करमो दोन्यु रोता टावरा ने भरौसे री राव पावता गींगली री गेल देखरिया हा ।

साझ वेता गींगली जद घर आय पूगी तो छाछरा पाणी मे जवार रो आटो घोळनै सूरती पलेव वणाय टावरा ने पायौ । आख्या मे उजाळो वियो । यू उजाळा री रात री गर्मी पलेव री टडक सू सीलाती री, अर वनवासी अकाळ री आकरी मार नै हिम्मत रे पाण सुकाळ रा सुरज री अगवाणी मे जीवण री आस पाळती रैयो ।

□

छोटी माँ

हनुमान दीक्षित

दिसम्बर महीनै री दूजी अदीतवार । सवेरे रा नी वज्या है । आपरै घर आगै मेज कुरसी ढाळ्या बावू वनवारी लाल सुहावती धूप रै साथै ई समाचारा री बानगी चाख रैया है । इतरै मे ई बीरी जोड़ायत सरला चाय री कप मेज माथै धरता ई बोली, 'ल्यौ चाय आरोगी । अै सरकारी नौकर इयो ई काम री फळी कोनी फोड़ै । आनै ऊपर सू इतरी छुट्टी और दे देवै सरकार, म्हारी छाती छोलणनै । दिन उग्यौ कोनी, तीसरकै चाय चणी है ।'

'अरै चावळी, भागण लुगाई है जद थनै इतरौ सेवा करणै री मोकौ मिलै । वावू गोपी किसन अर गोरधन दास हाळी घरवाळिया कानी देख, वापड़ी आपरै गावा मे पड़ी है । एक थू है कै मुक्की सू मतीरो फोडै । मुळकतो बनवारी बोल्यौ ।

'घर घोस्या रा वळ ज्यावै पण सुख ऊन्दरा ई कोनी पावै ।' आरी जोड़ायत साथै कोनी तो अैई खाल्यो ताता-ताता चावता फलका । पड़्या ढावा रा सूगला साग अर काचा-पाका खाखरा चावै ।' हाथा री लहरको देवती सरला पडूतर दियौ ।

वावू वनवारी की बोलै वी सू पैलाई वीरै काना मे वळतै तेल दायी आवाज पड़ी –'ई मोहल्ले मे वड़नै री थारी हिम्मत किया पड़गी । तनै कित्ती वार कैयो है कै गाव छोड़ ज्या । भळै गई तो ई वास मे । तू कहणौ कोनी मानै । तेरी टाग्या तोड़नी पड़सी । और कोई धारो कोनी ।' सूरजो हलवायी आख्या काढ़नै चोल्या जावै हो, जिकै सू वीरी तूद थुल थुल करती ऊपर नीचै होवै ही । वास गळी रा नान्हा मोटा टावर लेर होयनै हसता ताळिया वजावै हा । ईं सू सूरजै नै और घणी रीस आयगी । वो झाळा भरती बोल्यौ–'हसौ कै हौ ? आ थारी मा कैनैई खा ज्यासी ।'

टावर चुप नीं रैया जद गमछै री फटकारी देवतो बोल्यो, 'साळा' वेवक्त री औलाद मरणै जोगा ई है ।' कैवतो गयो परो ।

बनवारी आपरी कुर्सी सू उठ्यौ अर वीनै गयौ जठीनै राम रोळौ मचर्यो हो। वण जा'र देख्यौ कै एक पैंसठ सत्तर साल री हाडा री ढाचौ वीरै घर रै कूणै सू लाग्यौ खड़्यौ धूजै है । वण मन मे ई सोच्यौ कै आ लुगाई पाळै सू कांपै है या डर-भी सू । वीरी आला सू पडूतर मिल्यौ कै दोना कारणा सू ई डोकरी धूजै है । बो पतो लगावण नै डोकरी कानी वहीर होयो तो दस-बारा साल री अेक छोरो बोल्यो, 'बाबूजी वींरै कनै मत ज्याजौ, डाकण है, मक लेगी ।'

अेक बार तो बाबू बनवारी लाल टावर री बात पर मुळक्यो पण जल्दी ही वींरो मन घणै पीड़ा सू भरग्यौ । वो डोकरी कनै जाय नै बोल्यौ, "माजी डर्यो ना । साची साची केवौ आप कुण हो ?"

बूढ़िया पैला सू ई घबराईज्योड़ी तो ही अर अचाणचक अणजाण मिनख नै देख उतावळी-सी क मुड़ी अर अफूटी वहीर हुगी ।

बनवारी सैंतरो बैंतरो होय नै फैरू हेलौ पाड़्यौ, 'माजी, जाओ ना । ढबौ, म्है थारै भलै री सोचू । म्है चाहूँ कै थारी विपदा दूर हो सकै, एहड़ी बन्दोवस्त करणै री कोशीश करूली । थे म्हानै आप बीती तो सुणाऔ ।'

तावड़तोड़ चालती डोकरी रा पग थमग्या, पण वी लारै मुड़नै नी देख्यौ । आपरी जग्या खड़ी रैयगी । इतैरै मे सरला भी वठै आगी । वीरा दोनू टावर भी लारै-लारै आग्या ।

बनवारी कनै जायनै देख्यौ तो सामणै दुरगत होयोड़ी नारी री भूडी तसवीर खड़ी है । मायनै बैठी आख्या सू झुरिया भरियोड़ै गाला पर बैवता आसू सूक चुक्या हा । महीना सू बिन बाया बाळा री सिर पर लटा जमगी ही । गाभा जिग्या जिग्या सू छिछरमाळ होर्‌या हा । जगत नै जलम देवण हाळी अर पालण करणै हाळी देवी सरखी नारी री इसी हालत देख वीनै घणी अणेसौ हुयौ । वीरा होठ सीमीजग्या, बोल नी फूट्या । छेवट सरला डोकरी रौ हाथ पकड़'र पूछ्यौ, 'मा सा, म्हारै साथै आऔ । काई ठा रामजी थानै आच्छा दिन फेरू दिखादै ।'

बण की पडूतर कोनी दियौ । बा सरला रै लारै-लारै टाबर जिया चाल पड़ी । जिका टाबर कई ताळ सू तमासौ देखै हा, बै भी आपस मे कुचमाद करता चल्या गया ।

घरा ले जाय नै सरला ताती पाणी सू डोकरी रौ मूडो धुवायौ अर फेर उणनै ताती ताती चाय प्याई । जिकै सू वींरै बूढ़ा हाडा मे की ज्यान सी बापरी । सरला अर बनवारी रै बार-बार पूछणै सू डोकरी आपरी व्यथा-कथा इण भात शुरू करी ।

'म्हूँ तेरा साल री हुई ही कै म्हारी दारी री जिद्द रै कारणै म्हारै बाबलियै चोखौ घर वर देख'र मनै परणा दी । म्हारै बापजी री माली हालत घणी चोखी तो

कोनी ही पण समय सारू म्हारौ ब्याव आच्छौ ई कर्‌यौ । सासू सुसरा भी भला मिल्या। म्हारौ घर हाळो भी आच्छौ कमाऊ हो । सासरै मे कोड हो तो पीहर मे म्हारौं घणो ई लाड । मा-बाप लाड करबी कैंवता तो सास सुसरा लाडेसर बीनणी । पण रामजी नैं म्हारौ सुख नी सुहायौ । दस साला मे ई मा-बा, सासू-सुसरा सुरग सिधारग्या । लारै रहग्या भाई भावज अर जेठ जिठाणी । बापड़ी भावज तो इसै गये। बीतै घर घराणै री आई कै म्हानै कदे वार रै घररी देहळी भी नी दिखाई । जेठाणी इसी कठखाणी कै म्हारी सास लेवणी दूभर कर दियौ । पण दोनू भाया मे सम्पत ही, दिन दोरा सोरा कटता रैया । तीन साल और चल्या गया । अचाणचक एक दिन म्हारै मोट्यार री जोर सू पेट दूख्यौ । देखता देखता दो तीन दिना मे वीरा प्राण-पखेरू उड़ग्या । डाकटरा कह्यौ कै आत पर आत चढ़ जाणै सू मौत होयी है । पण म्हारी जेठाणी वैठण आवण हाळी लुगाया मे झूठ मूठ चलती करदी कै मैं वींनै खायगी । बापड़ी वो तो जीम जूठ नै आच्छी तरिया सोयी हो, पण इयै लुगाई कै कामण कर्‌या कै वो मर्‌यौ ई नीसर्‌यौ । आ लुगाई कोनी, डाकण, स्यारी है । म्हारी नणदा भी जेठाणी री भीड़ चढ़ती । पण जेठ भलौ हो । म्हारी जेठाणी री एक नी चाली । मैं कई वार घर स्यू वारै निकाळी गई पण जेठ आ कैयनै रोक लेवतो, 'म्हारै कानी देखौ । घर री शान रैवै इस्यौ काम करौ । जेठाणी घणी कळै करती जद वै कैंवता-म्हारै जींवता तो वहू अठै ई रैसी । जेठाणी रीसा वळती आ उडाई कै म्हे कामणगारी हूँ । जिकी वी रै खसम नै मुट्‌ठी मे बन्द कर राख्यौ है ।'

पण म्हारी तकदीर मे सुख री लकीर तो जाणै काढ़ी कोनी वेमाता । अेक दिन म्हारै जेठ री वस एक्सीडेन्ट मे इन्तकाल हुग्यौ, अर मनै धक्का खावण नै सड़क मिलगी ।

'काई थारै टावर टीकर कोनी हुया ?' सरला पूछ्यौ ।

'हुया हा । दो छोरिया होयी । दोनू ई माता-ओरी मे मरगी । वारी कुण देखभाल करतो ? मरगी तो सुख पायी ।' आख्या सू आसू पूछता डोकरी बोली ।

सरला नै लाग्यौ ओ सवाल पूछ नै वण ठीक कोनी करियौ ।

रमेश अर पिंकी दोनू टावर भी सरला रै कनै खड़्या देखै हा । रमेश बोल्यो -'मा, ईं बूढ़ी नै आपणै कनै राखलै । दादी मा नै परिधा दो म्हीना होग्या। म्हानै आवडै कोनी ।' सरला आपरै आख रै इसारै सू वींनै चुप करियों । पण वींनै भी सासू मा री कमी अखरी । सासू मा री कितरी सायरी हो । वै दोनू नचीता हा । टावर भी दादी मा सू राजी रैवता । घर री चिन्ता भी कोनी रैवती। वापू दफतर चल्यौ जावतो अर वा स्कूल । दोनू टावर स्कूल चल्या जावता तो भी घर खुली रैवतो । पण अवै तो अै वाता दादी मा रै सागै ई गई । टावर भी घणा उदास रैवै ।

डोकरी नै चुप वैठी देख नैं बनवारी पूछ्यौ, 'माजी, घर स्यू काढ्या पीछै इतरा दिन कठै काट्या ?'

डोकरी बोली, 'बेटा, लुगाई जद दु खी हुवै तद वा पीहर कानी देखै । म्हैं भी भाई भावज कनै गई । घणो ई खोरसो करियौ । सगळा हाड बिलै लागग्या । भावज रा मैणा-सीठणा सुणता कई साल काढ्या । छेकड़ पीहर छोडणो पड्यौ ।'

म्हारै साथै खेली बड़ी हुई सेठ हुकमचन्द री बेटी भी म्हारै तरिया दुखियारी होगी । पण उणनै रोटी रौ रोवणौ नी हो । आच्छी बैठण नै घर । खावन नै रोटी । बीरै कैणै सू बीरै साथै ई अठै आगी । कई साल ईया कटग्या । बीरी सेवा कर देवती अर म्हानै दो टक रोटी अर गाबा मिल जावता । लारलै साल वा भी मरगी । दूर रा रिस्तेदार घरधणी बणग्या । अबै मारौ कोई ठोर ठिकाणौ कोनी । लोग झूठी कूड़ी बाता म्हारै साथै जोड़ै । म्हूँ किणी गऊ नै ही नी सताऊ । आसमान म्हाखी धरती झाली कोनी । आ कैयन डोकरी झारझार रोवण लागगी ।

'मा, थू डाकण कोनी । अै सगळी मोता-मादग्या अर दुरघटनावा कारणै होयी है । थू म्हारै कनै रैवैली । म्हारै मा नी है । मनै मा मिलज्यासी । टाबरा नै दादी । थनै भी बेटा बहू, पोता पोती मिल ज्यासी । भरयो पूरो कड़ूमौ । जिकै री थनै दरकार है ।' ढाढ़स देवतो बनवारी बोल्यो ।

नहीं रै बेटा ! म्हारी दुरभाग म्हारै सू पेला पूगै । थार सोरै सुखी जीवण नै म्है दु खी क्यू बणाऊँ । बेटी, ठण्डी बासी रोटी है तो देदे खायनै जाऊँ ।' डोकरी गहरी सास छोडती बोली ।

नी, मा अबै अठैई रैवणौ पड़सी । भाग दुरभाग पर म्हानै भरोसौ कोनी । फेर भाग नाव री चीज हुवै ही है तो म्हारै सगळा रौ भी भाग है । म्हा सगळा रै बिचाळै दुरभाग रौ कीड़ौ आपी आप मर ज्यासी ।'

बनवारी अर सरला रै कैवणै सू डोकरी बा कनै ई रैयगी । नुवी बात नौ दिन खाचीताणी तैरह दिन । ई घटना री भी आ ही गत होयी । तीन च्यार म्हीना मे बनवारी री बदळी भी दूजै जिलै मे होगी । डोकरी नै भी पुराणी बाता भूलणै री बखत मिलग्यौ । वा भी परिवार म घुळ मिलगी । वै दोनू जणा छोटी मा कैवता अर टाबर दादी मा । छोटी मा झाझरकै ई उठ ज्यावती । सगळै घर मे बुहारी काढ़ लेती। जद सरला उठ'र टोकती तो पडूतर देवती-'ना बेटी, थू सगळौ ई घर रौ काम करै अर स्कूल भी जावै । फेर म्हारा हाड गोडा चालै इतरै करू । टूटज्याणा जद थू ई करैली ।

सरला रै तीसरौ टाबर होग्यो जद तो छोटी मा सगळौ ई घर साभ लियो । टाबर भी दादी मा सू खासा राजी रैवता । बूढ़ली रा दिन भी सावळ कटणै लागग्या।

अेकर बनवारी रै बुखार चढ़ी फेर भाव बणग्यो । पन्दरा दिन ताई छोटी मा सोई कोनी । रात दिन भगवान सू आ ही बीनती करती कै ठाकुर जी महाराज म्हारी

ऊमर म्हारे बेटे ने दे दै । म्हूँ जीयनै कांई करस्यू ? बेटा, म्हानै सुपनो आयो झं
कै री टेम कै थूं स्कूटर मैं बैठ ने दफ्तर जा रयो है । जिकै दिन बनवारी द
गयो वीं दिन छोटी मां री खुशी रै पार बार नीं हो । वण आखै मोहल्लै में पर
बांट्यौ ।

आपरी पोती सुमन रै ब्याव में विदा री वेळां वा इतरी रोयी कै चुप कर
ओखी होग्यी हो । वी रै जी में पोते रै ब्याव अर पड़पौतै रो मूंढो देखण री रैय
अठारा साल साथै बिता छोटी मां अनन्त जात्रा रै खातर वहीर होगी । वा
भारतीय नारी ही । नारी जीवन रा सुख-दुःख भोग सदा खातर चली ग
सोचतां-सोचतां बनवारी री आख्यां सूं टप-टप करता आंसू झरण लागग्या ।

'ओ. ए. साब ! रोवणो धोवणो छोड़ो । मां रा जावणै रा दिन हा । मां-
किणरा अखी रैया है ? मां तो बड़भागण ही जिकी आपरै बेटा पोतां रै हाथां में
है । उठो, आखरी कारज सारौ मां रा ।' बनवारी री हाथ पकड़ उठावतो बड़ो
भंवरीलाल बोल्यो ।

बनवारी उठ्यो । डबडबाई आंख्यां सू पंडित रै कहै मुजब उण छोटी मां
कारज- किरिया सांतरी भांत सारी ।

❒

टूटती-आस्था

रामनिवास शर्मा

"वीनणी"

"कै है" लाठी मारती सी वीनणी वोली–"खासी कै मनै ! हू मरज्यासू पण आ कोनी मरै" कनै जावती बोली ।

"म्हारा होठ सूखै । आ माथै थोड़ो चिकणास लगाय लै ।"

अठै तो टावर लूखी खावै । खावण नै घर माय चिकणास कोनी अर तनै होठा माथै लगावण खातर चिकणास चाहिजै । आड़ीसी पाड़ीसी कनै सू माग नै चिकणास लगाय देस्यू तो आखी रात कीड़्या खासी । जणा तू सगळै गाव नै भेळौ करसी अर म्हारी हेठी करासी । पाछी बावड़ती वड़वड़ायगी– मरै न माचो छोड़ै ।

डोकरी री जीभ ताळवै सू चिपगी । चिकणास धरियौ रैयग्यो । लारलै छव महीना सू डोकरी माचौ झाल राख्यौ है । उठण-बैठण री सरधा कोनी । गरमी रो महीनो हो । दोफारा ढळवा लागगी ही । वीनणी सासूनै वाखळ माय सुआण राखी ही। दिनूगै सू सझ्या ताई भीत री छिया रै सागै सागै माचौ जग्या फैरतो जावै । छिया फिरै पण डोकरी रा दिन नी फिरै । दिन माड़ै सू माड़ा आवै । आज रौ दिन काल नै आछौ दरसावै । हथणी सो डील सूख नै हाड़का रो टाचौ हूयग्यौ । आख्या गीड सू भरी रैवै। वोली होठा सू मुस्कल सू ही वारै नीसरै । कान कनै तो पूगै ही नी ।

वीनणी खाथौ खाथौ घर री काम सळटायनै टावरा नै रोटी खुवाय नै पाट- ला भेज अर रोटी खायनै पाणी माय रोटी घोळ नै डोकरी रै मून्डै माय नाखै । *डोकरी आधी पड़ती घोळ पीवै । डोकरी नै घोळ पाय नै पाणी पावै । मून्डो पूछ नै* सभान लैवण खातर वाजार जावै ।

डोकरी पड़ी पड़ी टसकती रैवै । पाड़ौस री लुगाया वगत कटावण सारू आवै। पाणी पावै पून करै । साता पूछै । डोकरी रौ पसवाड़ौ फैरै । पूठ माथै हाथ फेरै । होठा माथै चिकणास लगावै । डोकरी केवै– मरियौ तो जावै नी अर जीवणौ मुस्कल है ।

वीनणी दोफारा पछे पाछी घरै आवै । लुगाया री भीड़ देखनै मन माय रीसा बळै पण होठा सू मुळकती बोलै–"मा'सा खातर फळ ल्यावण नै बाजार गई ही । अबै आ नै रस देस्यूँ । की लेवै ही कोनी । आ री जीभ ही वैरण हुयगी ।" आ कैवती लुगाया कनै बैठ जावै अर हताई करवा लागै । थोड़ी ताळ पछै वेगी सी उठती केवै–"अबार चाय बणाऊ । पीव नै जाज्यौ ।"

वीनणी उठनै चाय बणावण री त्यारी करै । गैस जगावै । पाणी चढावै । कप धोवै । चाय पत्ती दूध चीनी डाल नै चाय वणावै । चाय छाणनै सगळी लुगाया नै अेक अेक कप देवै । डोकरी खातर चाय ठडी करै । अेक लुगाई बोलै वीनणी ! थे चाय पैली लेल्यौ । ठर जायसी । "ना ! भाभीसा ! पैली मासा नै देस्यू" –वीनणी केवै ।

लुगाया एक दूजै कानी देखनै मुळकै । आख री सैन माय बोले कै सेवाभावी है।

वीनणी सारी देयनै डोकरी नै बैठी करने फूक मार मार नै चाय पावै ।

मुळकती लुगाया आप आपरै घरा पाछी बावड़ जावै । घर खाली हुवता ही वीनणी नै पाछो वीर चढै । बड़बड़ावा लाग जावै "खावण खातर मरै । गोगो ऊकळै। आखे दिन खावती काढ़सी । हू कत्ताक काळा चाव्या है । आखै दिन नरक नाखू । म्हारै हाथा री वास नी जावैली । मनै चावै कित्ती ही भूडो । थारी माया । अे सेवा नी करै ।"

"वीनणी हूँ की कोनी केयौ ।"

म्हू जाणू हू तनै । म्हारै सू कै छिप्योड़ी है । तू की कोनी कैव तो थारी माया म्हारै बारै गया पछै क्यू आवै ? म्हारै सामै कोई मून्डो तो खोलै । हू सगळा रा पलमा खोल देस्यू ।

डरती डोकरी रौ पेसाब निसरग्यो । रिणियाती डोकरी बोली–हू थारी गाय हू । हू गीली हुयगी ।

"पैली क्यू नी बोली । अबै बोली है ।" बड़बड़ावती वीनणी टूटी के पाइप लगायनै टून्टी खोली । पाइप सू डोकरी नै धोई ।

"वीनणी ! ओ कै करै ।"

"गरमी है । काई मरै है कै । थोड़ी ताळ माय सूख ज्यासी ।"

डोकरी आख मीच नै चुप हुयगी ।

वीनणी टून्टी बन्द कर'र आपरै काम माय लागगी ।

सिझ्या पडवा लागगी । पाठसाला सू टाबरा रै आवण री वगत हुवण लागग्यौ। वीनणी रसोई बणावण री त्यारी माय लागगी ।

गीली हुयोड़ी सूती सूती डोकरी सोचवा लागगी कै "म्हारा भाग कित्ता माड़ा है। म्हू आ नी सोची ही कै म्हारै सागै इसी हुसी । थोड़ी स्याणप वरतती तो आज

आ दसा नी हुवती । आ बीनणी मीठी बात नै म्हार काळज माय बड़गी । म्हारी काळजो काढ लियौ । म्हू की बोलण जोगी नी री । म्हू स्याणप मू काम लेवती। होणहार नै निमस्कार । आज मनै छोटी-मोटी चीज खातर बीनणी री मूडो ताकणो पड़ै । चीज मिले पण माजनी मार नै ।"

सिझ्या री वेळा । बीनणी रसोई माय ही । टावरा री भाग दोड़ मू घर गूजवा लागग्यो । टाबर नै चाय पाय नै खेलण खातर बारे खिनाय दिया ।

डोकरी ने रसोई माय मू सीजतै साग री सुगन्ध आवा लागी । वा सिकतै दळियै री सुगन्ध भी लेवा लागगी । पण साग दळियो डोकरी नै अवार कुण परोससी। सुगन्ध सू भूख वधती जावै । आता टूटवा लागगी । थोडी देर डोकरी दळियै नै अडीकती री पण हार नै हेलो पाड़ियो बीनणी भूख लागगी । दळियो सीज्यौ कोनी कै ?"

"भूखा मरती मरै कै ? खाणे रो तो ठा पड़े कोनी । आखी रात गावा भरसी। नी आप सोसी अ'र नी मनै सोवण देसी । भूखा मरती ही जनमी ही कै ।"

बीनणी रा कड़वा बोला सू डोकरी री छाती मे घोवा चालण लागग्या । दुख घणौ हुवै जणा आख्या रै मारग आसू बारे आवा लाग जावै । अन्धारै माय कोई देखण आळौ तो हो नी । डोकरी आपरै मगळै दुखनै अन्धार माय वैवाय दियो । राम रूठै बीरो कुण धणी । रीस माय भरनै डोकरी दळियो नी खावण री सोची । आटी पाटी लैयनै डोकरी सोयगी ।

रोत रौ अन्धारौ डोकरी रै गुमसुम वरतमान जिया वधतौ जावै हो ।

डोकरी रा पोता पोती गुवाड माय खेलनै घरा आया । जीमनै पढ़ण लागग्या । बीनणी खाणौ खायनै चौका वरतण साफ करिया । दळियौ लेयनै डोकरी कनै आई अर बोली "ल्यो बैठा हुवौ । दळियो खाल्यो" डोकरी बोली कोनी । थोडी ताळ पैली तो दळियो खातर मरै ही । रीस खाय नै अपूठी सूती है । कटोरौ माचै नीचै राखती बीनणी बोली भूख लागै जणा खाय ली ज्यौ । गरज तो म्हारै बाप रो खल्लो ही नी करै । घणी हीड़ी चाकरी चाहिजै तो थारै जायोड़ै नै बुलाय ल्यौ ।

दळियै सू उठती सुगन्ध सू डोकरी रो धीरज टूटतो जावै हो । सागै सागै भूख वधती जावै ही । कणा ही मन करै हो कै ई रीस माय काई पड़ियो है ? मिलै जको खाय लै पण अहम् चोट खायड़ै नाग जिया फूकारा मारै हो । मरणू तो एक दिन जरूर है । खाय मरू चावै भूखा मरू ।

पण भूख मिनख री सगळा सू वधनै कमजोरी हुवै । पसवाड़ी फैरती डोकरी बोली -काश ! छोरै री जग्या छोरी हुवती तो आज आ दसा नी हुवती ।

❑

विज्जू

जानकी नारायण श्रीमाली

कालै सिझ्या टी.वी. माथै 'मझली दीदी' फिलम देखी । फिलम मे किसन नाव रै अनाथ छोरै री अन्तहीन कष्ट कथा अर मझली दीदी री सरवस त्याग'र वीरै दुःखा नै मिटावण री सखरी चितराम हो । फिलम देखता थका कित्ती बार आख्या गीली हुई अर पूछीजी, की ठा नी । फिलम री मानवीय पख म्हारै माथै छायोड़ी हो कै इत्तेक मे छोरा छोरी, घर मे हुड़दग मचावता थका, छाती माथै आय धमक्या । चालो जीमौ । म्हूँ जीमण नै टुर वइर हुयौ ।

पीळौ केशर आमरस देख'र जी हुळस्यौ । म्हूँ वेगौ जीमण खातर नहावण नै वड़ग्यौ । न्हार नीसरयौ तो घर धिरियाणी केयौ– "अेक छोरो थानै आगलै कमरै मे उडीकै है । नाम है विजय ।" मैं नी ओळख्यौ । ओ विजय भळै किसी आयग्यौ । खैर म्हूँ मिलण नै गयो । आगै देखू तो विज्जू । विज्जू नै देखर जी मे घणौ हरख हुयौ। पण वीरो उदास चेहरौ देख हियै मे हूळ सी उठी । इसो स्याणौ, सोवणौ अर पढ़ाई मे सदा अव्वल रेण आळौ विज्जू आज उदास किया ? विज्जू री आख्या री कोरा मे आसूड़ा चिलकै हा ।

हूँ वीनै धावस दी अर वतळायौ तो वो वोल्यौ–'गुरूजी ! म्हूँ फेल हुग्यौ । आखै जगरी निजरा रा शूळ मनै वीध रैया है । हर निजर पराई होयगी अर जणै-जणै री तानेवाजी सू म्हारौ मन घणौ अणमणौ है । म्हू काई करू ? मैं विज्जू रै खाधै हाथ धर्यो अर म्हारा मानस पटल माथै फेरू अेक साची अनुभूत फिलम चालण लागगी । दसवी क्लास मे विज्जू शाला री प्रधानमत्री हो अर सास्कृतिक, शारीरिक सू लेय'र शालारी हरेक हळगळ रौ हीरो हो विज्जू । वीरो अधर-अधर वोलणौ । वींरो वेजोड़ अनुशासन । सगळा छोरा अर मास्टरा रै हिवड़ै रौ हार हो विज्जू । पढ़ाई रो तो कैवणो ई काई । राजरी स्कूल मे होवता थका, नितरा पाठा-फोरा नै झेलता थका विज्जू पढ़ाई मे घणौ हुशियार हो । मनै याद आयी कै दसवी री बोर्ड-परीक्षा मे विज्जू पैलै स्थान सू पास हुयौ अर अग्रेजी, गणित अर विज्ञान मे उणनै 'विशेष योग्यता' मिली ही । म्हारै हिरदो री बोझ वढ़तौ गयौ ।

विज्ञू री मूरत रा देख्या भाल्या सैकड़ू चितराम याद आवण लाग्या । 'समाज सेवा अर समाजोपयोगी उत्पादन कार्य शिविर' मे अवखा कामा नै वो सवका वणावतो । विज्ञू म्हारै मानस मे हो । आज वो ही हाल्यो थक्यो म्हारै सामी वैठ्यो धरती कुचरतौ, म्हारी परतख दीठ मे हो ।

जिया किया हू सभळ्यौ अर विज्ञू खानी देख्यौ तो विज्ञू नैं म्हारै मूडै सामी ताकतौ देख्यौ । मैं की ध्यान मगन होयर वी सू वी री रामकथा पूछी । दसवीं सू लेयर वारवी ताई रा दोय साला मे काई सू काई होयग्यौ । विज्ञू आपरै सुरगवासी पिता रा डाक्टरी रा सुपना रौ विचार करता थका आकळ वाकळ हुयौ । उण री आख्या डवडवाईजगी । वी वतायौ कै ग्यारवीं क्लास मे विज्ञान रा मास्टरा खानी सू सकेत री लाल वत्या चेती । म्हारै सागै आळा छोरा मनैई ट्यूशन खातर घणौ समझायौ, पण गरमी री छुट्टिया म गाव-गाव घूम'र मलेरिया री दवा छिडक'र फीस रा पीसा री जुगाड़ करणियो वीज्ञू टूसन काकर करतो ? अठीनै स्कूल में कोर्स पूरो हुयो कोयनी । वो फैल होयग्यौ ।

विज्ञू रुक रुक'र वोल्यौ- गुरूजी ! म्हारै फैल री खवर सुण'र वड़ा भाई मनै की कोनी कैयौ । वै रोवण लागग्या । पण हू, काई करू गुरूजी । किसी कुऔ खाड़ करू । मैं पूछ्यौ रै भाई थारो तो हैडमास्टर ई विज्ञान रो अधिकारी विद्वान है, वी छोरा री मदद को करीनी ? पळ भर रुक'र विज्ञू वोल्यौ-हैडमास्टर जी री पीरियड तो स्कूल मे सदाई खाली जावतो । वै राज-काज मे घणा अळूझियोड़ा रैवता पण वै आपरै घर आळी क्लास कदै खाली को छोड़ीनी । वै जिले रा चोखा अफसर गिणीजै। ऊचा अफसर उणानै ऊचौ खींचण री भरजोर कोशिस कर रह्या है । सुणा हा, वै वडोड़ै दफ्तर मे जार अवै एक स्कूल री ठौड़ आखै राजस्थान रा अफसर होय गया है । एक विदरूप हसी छोरै रै सूखै होठा माथै थोड़ी देर खातर आयर गमगी। म्हारी जी करयो कै हू म्हारी माथौ भीत सू भचीड़ देय फोड़ लू ।

पण ओ तो कोई समाधान नी है । भारत री आशा अर आस्था रै परतख प्रतीक विज्ञू नै आगै री मारग वताणो पड़सी । मारग मनै सूझै नी पण विज्ञू ने ठा है। म्हनै गैरी उळझण मे देख'र वी मारग सुझायो । विज्ञू कैयौ-गुरूजी मैं स्कूल वदळ लू ? मैं कैयौ 'भोळा राजरी स्कूला तो सगळी एक सिरसी हुवै ।' वो वोल्यो- नई अवार हू जिकी स्कूल मे पढू वी मे दो दुख है । छोरा नै स्कूल मे वड्या पछै छुट्टी पैली वार को जाण दै नी अर स्कूल मे पढ़ावै नी । म्हनैं इसी स्कूल री ठा है जिकै मे आवण-जावण री कोई रोक नी है । ई खातर हाजरी लगाय पाछौ घरै आर तो छोरौ पढ़ सकै नी । ई मे छोरा रै वधण री वखेड़ौ नी है ।

विज्ञू रै सुझाव आगै म्हारी पिडताई अर म्हारी गुरूपणौ ढीलौ पड़ग्यौ । अै इयाकळा गैला मनै क्यू नी सूझ्या ? म्हारै असमजस नै प्रतिभाशाली विज्ञू लखग्यौ । फेरू आवण रो कैर विज्ञू विदा हुयो । विज्ञू री समस्या, विज्ञू रो विखो म्हारै काळजे

मुळक

रामपालसिंह पुरोहित

उणनै आभै छिटकाई तो धरती झेलली । वा कुण ही अर राती रात वा अठै कठासू अर कीकर आई, आ कोई नी जाण पायौ पण हजार घरा री वस्ती मे आ वात जेठ री लाय ज्यू फैलगी कै फळा वाळा खेजड़ा नीचै कोई अेक गैली-गूगी लुगाई नै छिटकायग्यौ है । जिण खेजड़ा नीचै उणनै कोई डाळग्यौ हौ उठै मिनखा अर ट्रैक्टर रा ताजा खोज मडिया हा । पसवाड़ला सगळा गावा मै मतूळिया ज्यू घर-घर समाचार पूगग्या । ढोर डागर'ई टाणासर खूटै नी आवै तो धणी नै चैन नी पड़ै, पण जाण'र जिकौ सोवै उणनै कीकर जगाइजै ? भावी पीढी री उण सिरजणहार रौ नी तो कोई वारू जागौ अर नी जागणो हो ।

सैंपूर जवानी मे, फूटरी फर्री पण दुखा री रज सू दपटीज्यौड़ी उण नार देही नै विधना जाणै निकमी वैठ'र फुरसत मे घड़ी ही । तीखी आख्या जाणै साखियात मद रा प्याला, पण दयावणा । भरपूर छाती री उभार । केळ ज्यू कवळी । कमर मीचली जांगड़ जाणै मतवाळौ-मकनै हाथी री ढाळ उतार सूड । भँवर केस पण जाणै राखोड़िया जोगी री भभूत लपटी, उळझी-उळझी लटूरियां । ठौड़-कुठौड़ डाभीयोड़ी रस्सी झरता घावा माथै माख्या गणवि । विधाता घडियै उण रमतियै नै देखणनै सगळी वस्ती उभाणा पगा उलट पड़ी, जाणै उण रा दरसणासू जलम-जलम रा पाप छूट जावैला ।

घाव माथै लागा ढोरू माखी रा चटका साथै उणरौ हाथ काची ठौड़ माथै पड़ग्यौ, *उण साथै उणरो नाड़ौ छूट (पेशाव) ग्यौ । रेला मे रातोड़ देख'र अेक लुगाई* भीड़ मे मदरैसीक गुणमुणाई- "वापड़ी धरम मे आयगी ।' आ वात सुण'र सगळा पागवधा पूठ फेर'र झूपा वाळी होटल सामा टुरग्या । वा आडतणी व्हैगी । झीरझीर घाघरा मे वा मा-जाई ज्यू नागी दीखण लागी । झूलरा मे ऊभी अेक परणी-पाती वाई अठी-उठी लमणी दियौ अर आपरौ पेटीकोट उतार'र उण माथै फैकतां अेक लुगाई नै वकारी-"काकी ! औ इणनै पैराय दी ।"

होटल सू पाणी री डब्बी लेय'र आयै मिनख उणनै पैरणी पहरावता देख'र अपूठै ऊभै डब्बी आगै पकड़ाय दियी । मूडा-आख्या माथै पाणी रा छाटा देय'र लुगाया उणनै छछेडी अर उण धीरै धीरै होठ-आख्या फुरकाई । डब्बी देख'र वा हळफळियोड़ी उठी अर डब्बी झड़प'र डूजाडूज बूचियै पाणी पीवण लागी । उणरी कटनाळ सूखी होवण सू व्हा अैड़ी उळझी जाणै उणरा डीया छिटक जावैला । उणनै उळझी जाण'र अेक लुगाई डब्बी खाचती बोली–"हत्यारण ! अबै उळझनै क्यू मरै है ?"

"पीवण दी पीवण दी । काळजै हड़ाक उठियोड़ी है । कुण जाणै कद री तिरसी है । अर जे मर जावैला तो काई जग सूनी हुय जावैला । आप मुआ जुग पूरी ।" दूजी लुगाई डब्बी खाचण वाळी सू बोली ।

पाणी पीर उण लाम्बा सास साथै डील ढीलौ छोड़ दियी अर चौफेर ऊमा मेळा माथै निजर फैंकी । आख्या सू टपकता आसूड़ा साथै घावा माथै बैठी माख्या उडावण लागी ।

उणरी आपी ओळखावण सारू लुगाया उणनै भात भात सू कुचरी । वा कुण ही अर कठा सू आई ? उण अेकर 'सिणगारी' बोल र जवान झेलली । उणरै कठ सू निकळियी औ छेलो-पैलो बोल हौ । उण गाव म पगलिया करण सू लेय'र उणरी माटी उठी जटा ताई नी तो वा कदै'ई पाछी बोली अर नी किणई उणरो कोई सुर सुणियौ ।

'सिणगारी" गाव गळी मे जागती जोत बणगी । गाव रा टीगर तो उणनै देखता-देखता ब्याव्रू ई विसर जावता । वा उणनै रमावती अर वै उणनै । सरीखी याजी ही । गाव वाळा उणनै चिड़ावता तो वा मुळकती अर सीरी-साबू जिमावता तो मुळकती । उण नीं तो कदै'ई गैलाया विखैरी अर नी भाटै हाथ घाल्यौ । उणरै होठा वसी बारै-मासी मुळक उणनै चौखळै चावी कर दी । असवाड़ै पसवाड़ै कथ कथीजगी "काई सिणगारी ज्यू मुळकै है ।" पण उणरी अजाण अर ऊडी मुळक मे नी जाणै किता किता अणमाख्या ओलमा दटण हा, सिणगारी री मन काया'ईज जाणती । उणरै काळजै सुळता-पागरता जमाना रा घावा नै पपोळणियौ ना रौ हाथ, बाप री निजर अर परण्या रौ परसेवौ मिळियौ हुवतौ तो वा घर घर, गळी गळी आप री पूछ हिलावती कावर्डी कुत्ती ज्यू क्यू रूळती फिरती । वा दिन भर फिर भटक'र डूबतै सूरज उण मागण'ई खेजड़ा रै नीचै पड रैती, जठै उणरा दुसी उणनै छोड़ग्या हा । वा नीचौ जितै नीं तो उणरी पोथी खुली अर नीं बाचीजी, इणकाई मे नुवा-नुवा आखर उणम खुदताग्या ।

सिणगारी री काया रा घाय तो उणरै चढतै लोही सू ढकीजताग्या पण उणरै अनस लाग्या घाया उणनै मुआ सुगति दी ।

पाछी ही ज्यू किवाड़ ओढाळता उणरो मन गुचळका खावण लाग्यौ–"अेडा कुकर्मी रा तो पोत उघाड़णा चोखा । गणगौर रूठै तो सुहाग लै, भाग तो नी ले सकै।" पण शील रै अवतार पाछी ऊंडी विचारी–"घर री सायळ उघाड़'र म्हैं पाप री भागण क्यू बणू ?" करसी जिकौ भरसी । लोग म्हारी जरणारी खातरैला–'गोरी मे गुण हुवता तो ढोलौ पर घर क्यू जावतौ ?' वा गतागम मे कळातरा ज्यू उळझी विचार करण लागी–' नर, बाड़ मे मूतती आयौ है पण सिध अखज अरोगनै जगळ रौ भोमियौ नी गिर्णीजै । वा-अे-जसूड़ी थारा भाग, थारै जीवता जीवता थारी परणियौ कुठौड़ मू मारतौ फिरै ।" सुरजण नै वैसाखिया गधा सू फोरौ तोल'र वा सागण पथारी मुआ लोथड़ा ज्यू पसरगी, जाणे उणरी आख्या पाटी बध्यौ ही ।

जश रा जवलिया रै कोटी माय सुळौ लाग जावै अर पाप रा पगल्या भतूळिया माय ई प्रगट जावै । घर-घर जीभा चटकारा लेवण लागी अे माइकी ! कईवेळा आई, धापिया धूपिया ई धूड़ मे मूडौ घालण लागग्या । खेत बाड़ खावण लागगी । रूखाळा लाज लूटण लागग्या तो किणरी ओटी लेवणी ।" पण हराड़ा हाथी री छाती कुण चढै ? गाव रा अबोध छोरा छोरी सुण'र पाटक हुयग्या कै वा बैठी सूती डोकरी घर मे घोड़ौ क्यू घालै ? लोगा जवान काटी कारली– 'सादा री गाय नै चीतरै मारी अर चीतरा नै राम मारसी । '

पसवाड़ा जाड़ीजता-जाड़ीजता सिणगारी पूरै पेट आयगी । सैणा समझणा माथौ धूणता तो टीगर उणनै सैन करता समझावता कै वा गीगला री मा वणण वाळी है । सगळा सारू सिणगारी कनै एक उत्तर हौ मुळक । उणरा पेट मे फळण वाळा पाप री सोच उणनै उतरा नी हौ जितरौ उण पाप नै पोखण वाळी भूख री हौ । बेटी री साध तो राडीराड मा ई पुरायदै, पण उण निरभागण अर नमायती री साध कुण पुरावै। उणनै खाटौ भावै कै मिठौ । व्हा वेळा-कुवेळा 2 2 3 3 वेळा सागण पेढी चढण लागी । भारत रा गाव शहरा मे मिनख व्यायोड़ी कुत्ती नै ई सुआवड़ दै है तो वा तो साखियात नर-नारायण री देह ही । कीड़ी नै कण हाथी नै मण देवण नै दाता हाय रै हजूर खड़ीखम्भ ऊभौ है, खोट है तो करमा री । वा तो वापड़ी दुखा सू पीड़िज्योड़ी ही ।

धरती बिछाया अर सकळ आभौ ओढिया सिणगारी छाती आगै पुटाखड़ौ लिया काठा दात भीच र अेक सियाळा नै लारै टेल दियौ अर रुत प्रवाण फागण फरवरियौ । बसत रा वायरा सागै फूलण वाळा फूला अर फागण रा गीता साथै गाव री लुगाया नै सिणगारी री चेती आयी । दिशा पाणी आवती-जावती लुगाया सरधा मुजब सिणगारी री टैल वदगी करण लागी । ज्यू-ज्यू दिन पूरीजता ग्या सिणगारी आलसू हुवती गई पण सार सभाळ करण वाळा आगै मुळक लुटावण मे रत्ती भर आळस नी करियौ ।

अेकर कई झाझरकै पावू भुआ लोठी ढोळ'र चळता सिणगारी री झूपड़ी मे गळी काढियौ । पूरै दिना व्हैता'ई सिणगारी हवेली कनली टूटी छिटकाय'र सागण खेजड़ै निचलै वासै वास करण लागगी ही । आपरी चूंधी आख्या माथै जोर देय'र पावू भुआ सिणगारी नै बकारी- "सिणगारी" । पडुत्तर तो नीं आयौ पण सिणगारी री टागा बिचाळै गोळ-मटोळ, भूरौ मट्ट भाथड़ा व्है जैड़ी नाळ जुड़ियौ टाबर देख'र सिसकारी नाखता पावू भुआ गुणगुणाई-"छेवट पाप फूटी !" सिणगारी री आख्या फुरकी अर उण साथै दो मोती वेकळू मे आपरा ठमा छोड़ता दव ग्या । पावू भुआ आई ज्यू पाछी वेळी अर अेक झपाटै घरा पूगी । कोठी पड़ियै दातड़ै हाथ घालता आपरी बीनणी नै चेताई-"लाडू ! दो खुण्य्या आटी अर दो'अेक टीपरी घी नाख'र रवि वणाय दै । सिणगारी गीगली जायी है ।"

बीनणी माखण रौ लूदो चाडा मे पधरावती सासू सामा आख्या आडा कान करता बोली-"गैली विधना नै औ कांई दाय आयौ, औ लोयौ मनै देता ता लाज आई अर अकूरड़ी आवी निपजायौ । वाह रै सावरा ! थारी कुदरत अर म्हारा भाग।"

पावू भुआ नाळी मोर'र आवळ धूड़ मे दाव र आपरा हाथ झटक्या अर अेक पिणियारण भरी चरी आगै करता बोली -"लौ भुआजी ! भेळ-म भेळ गीगला नै सपाड़ौ कराय दौ ।"

सिणगारी रवि सबोड़ नाखी । आतरै भार पड़ताई उणनै चेतौ आयौ । चौफेर सगळा नै ओळख'र आपरा जाया नै निरखण लागी । उण अेक लावी सिस्कारी ताण्यौ अर पावू भुआ गीगला नै आगै करता बोली-"लै इणनै चुघाय दै ।" व्है सिणगारी रै बोवा री बीटणी आपरै पल्ला सू पूछ र गीगला रै मूडा मे दावण लागा अर पूठ मे ऊभी लुगाया पावू भुआ नै चेतावणी दी -"अे, मा ! थै धौळा कटै लिया है, पहला धरती धार तो दी ।" दो धार दिया पछै गीगलौ वचड़ वचड़ धावण लागौ । सिणगारी री दूजी बीटणी तिरपण लागी । पावू भुआ आगोठा सू वीटणी दावी राखी अर सिणगारी रा खोळा मे गीगला नै पसवाड़ौ फोराय दीनौ । सिणगारी आपरी आख्या रा खजाना सू गीगला माथै ममता रा मोती निछरावळ करण लागी अर उणनै धड़धड़ी छूटगी ।

उठ'र घाघरी खखैरती पावू भुआ गुणकौ दियौ-"ठालाभूला री आख तो जाणै उठीनै सू अठीनै चेप दी ।" भीड़ सू ऊथलौ आयौ-"अरस-परस वापरै उणियारै हुवैला ।" आपरी मा रौ घाघरी मुट्ठी मे काठी पकड़िया अबोध पूनियौ माथौ ऊचौ करनै आपरी मा नै पूछियौ -अे, बाई ! गीगला रा जीसा कुण है ?" भीड़ उणनै पडुत्तर दीनौ-"गीगळा नै पूछ !" पूनिये नै सिणगारी री मुळक मे गीगला रै जीसा री पिछाण नी पड़ी पण भीड़ उणनै समझाय दियौ कै-"वो !"

दिन दसे'क सिणगारी आपरी धुरी नी छोडी । दसवै दिन कोई वार-वरतोलिया रै दिन गाव री की अबोध अर बावळी वाया सिणगारी नै नव्हायनै काजळ टीकी

अर मेहदी देदी । दसवौ न्हाया लुगाई कुदरती फूटरी लागै । अेकली हुवता ई उण पुटाखड़ै माथै अर गीगला नै खादै कर'र वा गाव सामी टुरगी । आज की वेसी ज भीड़ उणरै लारै व्हैगी ।

हवेली आगा आवता'र जाणै किण ई सिणगारी रा पग पकड़ लिया । भीड़ मे अेक सरीखी गुणभुणाट सुणीजै 'सु सु सु आपरी खिड़की आगै मेळी देख'र जशकवर आज पहली वेळा आपरी पेढ़ी लाघ'र बारै आयगी । सिणगारी नै देख'र वा च्यार पावडा उतावळा भरण लागी तो भीड़ उणनै मारग दे दीनी । जशकवर आपरौ पल्लौ सिणगारी सामा पाथर दियौ । सिणगारी अेकर गीगला नै अर अेक'र जशकवर सामा देखती । दोन्यू री आख्या सू जाणै सावण भादवा री बिना गाज झड़ी लागगी । सिणगारी आपरै चूक्या सू आख्या पूछ'र गीगला नै जशकवर रै पल्लै ढाळ दियौ । अेक मगती आपरै काळजा री बीट दूजी मगती नै सूप र अमर दातार बणगी ।

अपूठी धिरता जशकवर सिणगारी नै आवकारौ देता बोली-' माय आ जा ।' जशकवर री अेक पग तो पेढ़ी माय अर दूजौ बारै । जशकवर हरख्योड़ी बुच करता गीगला नै व्हालौ कीन्हौ अर छाती चेप लीनौ । जशकवर रौ बुचकारौ हवेली मे होवण वाळा भड़ाका नीचै दब'र रैय ग्यौ । भड़ाका साथै भीड़ दड़ी-छट भाग छूटी जाणै चिडिया मे ढळ पड़ियौ । उण भड़ाका रै साथै सिणगारी रै कठ सू अेक लाबी चीवळी निकळी अर उणरी पाप वाळी आगळी सुरजण री ढिगली सामा तणगी । चीवळी री गूज मिटी अर पेढ़ी बारै सिणगारी री ढिगली हुयगी ।

नीचै पड़ता'ई थळगट रै कूठै सिणगारी री कपाळ क्रिया कर दी । जशकवर पाप पुन रा भवरीया मे उळझी अेकर मायला चौक मे अर अेकर पेढ़ी बारै पड़ी सिणगारी री ढिगली नै ताकती बगनी हुयगी । वा उण पाप पुन रा फळ नै हिया आगै लिया गतागम म पजगी कै वा पेला पाप नै धरम डाड दै कै पुन नै । सिणगारी नै भोडी किचरिया काळा ज्यू लटपट-लटपट करता देख'र उणरै सिराथियै बैठ'र उणरा कपाळ सू बैवण वाळा सुहाग सिंदूर नै रोकण री अणूथी चेष्टा करण लागगी। उण समचै सिणगारी री आख खुली अर गीगला रै हाथ नै व्हाली दीनौ । मुळकती, झरती आख्या सू जशकवर सामा देख'र सिणगारी गावड़ ढाळ दी ।

सिणगारी री मुळक पाच तत्वा री देह नै निरलेपी जोगी ज्यू त्याग'र निरवळी हुयगी । आज उण भड़ाकावाळी हवैली मे भूता अर कबूतरा रौ सुखवासौ है, पण कठै ई अणसैंधी भोम मे गीगली जशकवर री जश वधावतौ अळगी-नैड़ी फळै-फूलै है। सिणगारी ज्यू आई त्यू जाती रैयी ।

❒

वड़ो आदमी

राम सुगम

"बापू ! ओ वापू ! भैरू काका वोत वड़ा आदमी वणग्या ! देखो उणरी फोटू अर खवर छापै माय छपी है !"दोड़तो मोहने रो वेटो मोहन कनै पूग्यो अर हरखतो वो छापो मोहन रे मूण्डे सामी मेल्यो, जिके माय भैरू रो फोटू अर खवर छप्योड़ी ही।

छापे माय भैरू रो फोटू देख'र मोहनो घणो राजी हुयो अर उणरी आख्या रै सामनै लारली जमानी याद आयग्यी । वो सोचण ढूक्यौ'क वै दिन कितरा सोवणा हा जद म्हैं दोनू सागै उठता-वैठता, गप्पाँ हाकता अर खेलणे-कूदता रै. अलावा म्हानै की चोखो नीं लागतो पण भैरू हो किताव्यौं रो कीड़ो । उण वेळा मोहनो भैरू नै खूब कैया करतो-"यार भैरूड़ा, तू वी खूब है, अे दिन तो मजा और मौज लूटण रा है । अेक तू है जको दिन रात किताव्या सू माथो लगावै।"

भैरू रौ छापै माय फोटू देख'र मोहनो वोत ही राजी हुयो अर सोचणो सुरू कर दियो-जै कदास भैरू म्हारी फाक्या माय आय जावतो तो वापड़ो भैरू आज इत्तो वड़ो आदमी नी वण सकतो।

आखै गाव भैरू रे वड़ै आदमी वणनै री खवर फैलगी ही । मोहनो सोचणो चालू हुयो- आज जमानो वड़े आदम्यौं रौ है । आज वड़ा आदमी जिकै माथै हाथ राखदे जाणे उण माथै भगवान री मेहरवानी हुयग्यी हुवै । सगळी वात्याँ खुरसी लारै हुया करै । जिकै कनै खुरसी, उण रै लारै क्या लखपती अर क्या किरोड़पती, सगळा लूण उतारता निजर आवे । आज हरेक छोटी-मोटी सिफारसा वड़े आदमी कनै सू करावता दीसै ।

आज म्हारो भायलो जको खास-खास लगोटियो यार है वो वडो आदमी वणग्यो है फेर मनै भी ई मौके रो फायदो तो उणावणो ही चाईजे । ओ भैरू जै चावै तो म्हारै टींगरिया रो जीवण सुधार सकै । ऊची सू ऊची नौकरी अर रुजगार

दिराय सके। म्हारे टीगरिया रो जीवन सुधर जावै फेर मने काई चाईजे ? माइता रो ध्येय तो टाबरियाँ ने आछो जीवन देवणो हुवै।

आ तेवड़'र मोहनो वी पगाइज भैरू नै वधाई देवण सारू पैली मोटर सू वहीर हुयग्यो।

गाँव आळो मोहनो मैले गाभाँ माय भैरू री कोठी कनै पूग्यो। कोठी रै वारे खड़ो डोढ़ीदार उणनै देख'र बड़बड़ायो अर मूण्डो फेर लियो।

मोहनो डोढ़ीदार कनै पूग्यो अर केवण लाग्यो-"वीरा ! मनै भैरू साव सू मिलणो है।"

मोहने री वात सुण'र पैली तो उणने घूरियो अर वोल्यो-"जा-जा। कोई काम ना धधो। साव सू मिलणो है, जाणै साव इणरा काकाजी लागै। दौड़जा नी तो लात्या सू भगाऊला।"

"अरे वीरा ! इणमे ताव खावण री काई जरूरत हुई। आ साची बात है'क भैरू म्हारो लगोटियो यार है, इण खातर म्है वी सू मिलण आयो हूँ। उणने खाली इतरोई कैदै'क थारो गैलसफो लगोटियौ भायलौ मोहनो था सू मिलणै आयो है। आ सुणते इज नाठतो इज ई उण आवेला जाणै सुदामा कनै किसन।" मोहनो गीरवै सू डोढीदार ने कैयो।

"थारे जेड़ा घणाई साव रे जाण पिछाण आळा आवे। अवार साव थोत वड़ी मीटिंग लै रैया है, इण वास्तै साव ने टैम कोनी। जा तू थारी रस्तो ले।" डोढ़ीदार कैयो।

मोहनो आपरी वात माथै अड़ियोड़ो हो वो पूठो वोल्यो- लाडी, मैं भैरू साव'रे गाँव सू इज आयो हू। ई खातर तू अेकर थैने कैय दे। फेर तू देख वो कसो'क नाठतो आवे ?

डोढीदार रो वी मनड़ो पसीजग्यो अर बोल्यो-ठैरो। म्हे पैला साव ने पूछ'र आऊ।

डोढ़ीदार भैरू रे कमरे माय घुस'र वोलियो-"साव ! आपरे !" डोढ़ीदार री वात पूरी हुयी कोनी उण सू पैलाइज भैरू रीस खाय'र वोल्यो-"जद थनै कै दियो'क अवार जरूरी मीटिंग चाल रैयी है, फेर कैने ई मेलण री जरूरत कौनी। कैय दै जाय'र साब जरूरी काम माई लाग्योड़ा है।"

"साव ! आपरे !" डोढ़ीदार फेर भी आपरी वात केवणी चाई, पण भैरू अेकदम ताव माई आयग्यो। वोल्यो-जद थने समझाय दियो अर कैय दियो'क जरूरी मीटिंग चाल रैयी है, फेर थने कद अकल आवेली ? जा कैदे अवार टैम कौनी।

मुसळीजतो अर माथे हात फैरतो डोढ़ीदार पूठो मोहने पासी पूग्यो अर लूण-मिरच लगायर मोहने सूं बोल्यो-म्हें थारै खातर साहब कनै गयौ पण मनै मिली कांई - लताड़ । वे बोल्या'क म्हूँ किसैई-मोहने-वोहने ने नीं जाणूं । जाय'र कैदे'क बोत जरूरी मीटिंग चाल रैयी है । साब ने अबार टैम कौनी । अब बता म्हारो कांई कसूर ? म्हें थनै पैलाइज कैयो'क रस्तो नाप ले पण तूं नीं मान्यो । अबे बी थनै कैय रैयो हूं'क साब नीं मिलेला, ई वास्तै टैम रैंवतै घर री रस्तौ नाप लै ।

मोहनो जिको भैरू ने बधाई देवण सारूं आपरै घरां सूं हरखतो-मुळकतो आयो हो बी मोहने री हालत अबार देखण जेड़ी ही डोढ़ीदार कनै सूं अे वार्त्यां सुण'र मोहने रे नीचे सूं जाणे धरती खिसकगी हुवै ।

मोहनो पूठो आपरै घरै जावण सारू बयीर हुयो हो पण इण तरियां लाग रैयो हो जाणै वो घणा बरसा सूं बीमार हुवै । मोहने रै मनड़े मांय जिकी हूंस ही वा कपूर री तरियाँ कठेई उडगी । भैरू रे बड़ै आदमी होवण रे लारै जिका सुपना मोहने संजोया हा वे सिगळा टूटग्या अर वो टुरतौ-टुरतौ सोच रैयो हो'क इण सूं आछो तो ओ हो'क भैरू बड़ो आदमी नी बणतो तो ठीक हो, कारण उण सूं 'जै रामजी' तो होवती रैंवती अर जिको उणरे वास्तै बणियोड़ो भरम हो - वो तो नीं टूटतौ ।

□

म्हारा बै..

निशान्त

रामू री घरआळी सारी रात जाड़ री पीड़ स्यू दुख पावती रैयी । ई खातर वै दोनू जी झाझरकै ही स्हैर जाड़ कढ़ाण नै चाल पड़्या । गाव स्यू धूड़ासर रो बस अड्डो अेक कोस दूर हो । ऊचै धोरा रो अेक कोस रो पेण्डो कोई कम नी हुवै । वै ऊठ माथै बैठ नै चाल्या । सूरज री टीकी ओज्यू ताई निकळी कोनी ही । ई वास्तै वाय ओज्यू ताई तपी कोनी ही । भैत कदै होळै चाल्यो कदै ढाण । रस्तै मे आध पूण घण्टो लाग्यो । अड्डै माथै दो च्यार ढाबा हा । वा आगै पड़ी बेचा पर आसलै पासलै गाव री सवारिया बैठी ही । बैठण रो सुभीतो देवण रो लिहाज मान नै सवारिया चाय पी रैयी ही । घरआळी जाडी चाय पीवण आळी ईं पतळी चायरै अेक दो घूटा सू के होवै हो । रामू वी वेच माथै बैठ नै अेक चाय रो आडर दियो । वी री घरआळी रै चाय पीवण रो तो सवाल ही कौनी उठै हो । वा तो ठण्डो या गर्म की मुह मे नी न्हाख सकै ही ।

रामू रै चा पीवण तक स्हैर जावण आळी बस आई पण बा ऊपर सू नीचै ताई भरियोड़ी ही रुकी कौनी । ७क घण्टै बाद दूजी बस आई । वा रुक तो गई पर भरियोड़ी वा भी पूरी ही । की तरा ही रामू अर वी री घरआळी दोनू चढ्या । रामू सीट माथै बैठ्या लोगा स्यू जनानी खातर सीट मागी । बूढी अर बीमार हुवण री दुहाई दी । पण कोई सीट छोड़ण नै तैयार नी होयी । हार मान अर वा गैलै मे ही बैठगी । वीं औरत आपणी जिदगी मे मोटर री सवारी कम ही करी ही । पीहर तो वा सदा ऊठ माथै जावती । वा री घणकरी रिस्तेदारिया वी अेड़नैड़ रै गावा म ही जठै मजउ ऊठ माथै जाईज जावतो । मुस्कल सू एक दो रिश्तेदारिया ही ही जठै जावण वास्तै मोटर रो सायरो लैवणो पड़तो । वी रै स्हैर जावण रो तो सवाल ही पैदा कोनी हो । सारी लेण देण अर खरीद फरोगत मर्द रै जिम्मै ही ।

गाव सू एक कोस दूर लागणै आळै माताजी रै मेळै मे भी वा पाळी ई जाय आवती । तीर्थ जात्रा रो जोग कदै बैठयो कोनी हो । ई वास्तै वी रो जी

बस सू डाढ़ी घबरावतो । आज तो की ज्यादा ही घबरावै हो । वा रातभर रै ओड़ीदै सू बेदमाल होयड़ी ही । मोटर ओज्यू ताई थोड़ी दूर चाली क बीनै उल्टी आवण लागी । बी रो उवाको सुणनै लोग घबराईजग्या कै लत्ता खराब करैगी कै ?

"मैरे कै बस की बात है ?"

जद अेक जणै कैयो–"अरे ! इनै खिड़की कनै विठाओ उल्टी वारै कर लैसी। वीं री वात सुण नै खिड़की कनली एक मिनख ऊभो होग्यो । रामू री लुगाई वी सीट माथै जा बैठी । सीसो उपर चढ़ैड़ी हो । वी मूडो बारै कर्‌यो अर गळ ग ळ गळ उल्टी कर दी ।

कण्डक्टर ने मोसी मारण रो ओसर हाथ आग्यो–अबै सारी बस भर जाती ।

कै होणै स्यू कीं जी हल्को होग्यो । पण जाड़ री पीड़ तो ही ही । जनानी खिड़की री टेक लगा नै जपगी। खैर पूघण मे कोई घण्टो भर लाग्यो । दाता रै डाक्टर री दुकान दूर कोनी ही । अड्डै कै नेड़ै ही ही । वै बठै ग्या अर जाड़ कढ़ा ली । जाड़ कढ़ता ही अराम हुयो ।

वी दिन बानै बाजार सू कोई ज्यादा लेवा-देवी कोनी करणी ही । सारली दुकान सू बा थोड़ो कपड़ो खरीद लियो अर अड्डै माथै बा सामी पावडौ ही दोनू पाछा आग्या । मोटर तैयार उभी ही । मोटर मे भीड़ ही पण ढूढण पर लुगाई खातर एक सीट मिलगी । लुगाई नै सीट माथै बिठा नै वो टावरा वास्तै कोई चीज खरीदण नै उतरग्यौ । घरा सू चालतै वखत छोटकी छोरी चीज ल्यावण री फरमैस करी ही । "टावर रो मन राखणो चाहिजै" सोचनै वो हेठै उतर्‌यो ।

वीं एक रेहड़ी आळै स्यू भाव पूछ्यो । मुहगो लाग्यो । ईं वास्तै दूजै कनै गयो। दूजो पैलै आळै स्यू सस्तो हो पण फेर भी वी रो मन कोनी धाप्यो । वो तीजै कनै ग्यो । तीजो सारा रो बाप निकळ्यो । वो पाछो दूजै माथै आग्यो वी, आधा किलो आम तुलवाया अर बस कनै आग्यो ।

बस ऊपर ताई भरीजगी ही अर सुवारिया छत माथै चढै ही । वी सोच्यो–माय लोगा री भड़ास रैसी । ऊपर चढणो ही ठीक रैसी ।

जद बस चालण लागी तो माय वैठी लुगाई रोळो मचायो–"म्हारा वै कोनीं आया ।"

कण्डक्टर गुसै सू बोल्यो–'वै कौन ?"

"नाम म्हू किया ल्यू ? म्हारा टावरा रा बाप ।"

"नाम नहीं लेती तो उतर नीचे । दूसरी वस मे चली आना ।"

वा सीदी-सादी गाव री लुगाई । कण्डक्टर रे कैयां कैयां उतरगी ।

वींकै उतरतां ही कण्डक्टर सीटी दी अर बस चाल पड़ी । घूड़ासर आवतां ही रामू हेटी उतर्‌यौ अर आपरी लुगाई नै आवाज लगाई । पण लुगाई तो होंवती तो आती । वो ऊपर चढ्‌यो । जीं सीट माथै बीनै बिठाई ही वठै जाय नै पूछ्यौ-अठै म्हारी बीनै बिठाई ही नी ? वा कठीनै मरगी ?

वी सीट माथै बैठी सवारी बोली-वह तो शहर में ही नीचे उतर गयी । कह रही थी कि 'हमारे वह नहीं आए' ।

रामू आपरो माथो टोक्यो । पण कै करतो ? की कसूर वी रो भी तो हो ।

□

भाई री भावना

आर आर नामा

बखत बखत री बात । सुख-दुख दोनूं धूप-छाँव ज्यूं आता-जाता रैवे । कैणगत है "मत मरजी नैनकियां रा मांय र बाप" । सुजान छोटौ ही पण उणनै याद है, जद उण रा मांय र बाप ने बारी-बारी सूं छप्पनी काळ रामजी रै घरै ले गयो ही । सुजान समझतौ कौनी ही कै मौत मरणौ कांई होया करै । दिन दिनां रै लारै ढळता गया । बड़ौ भाई बादळ बिरखा री बादळ हौ, बादळ ज्यूं बड़ो होग्यौ ।

मामो मोती उण जमाने मांय आपरी दुनिया मांय एकलौ हीज हो । भाणजा रो इण सूनै पण में सहारौ । मामो मोती मोकळी गायां राखतौ । म्है सगळा गायां रा गुवाळ टोगड़िया चरांवता । पशुओं री पाळपोश मांय म्हारी ऊमर बधी । समाजोग सखरी आयी । मामे री ब्यांव आयौ । म्हारी खुशी री कोई पार कौनी हो । माँ बाप रै बाद मामो ही म्हारी भगवान हौ । मामी आयी । खुशियाँ लायी । म्है मामी रो लाड करता । हंसता, बोलता जिंदगाणी मांय रमक-झमक आगी ही ।

म्है दोनों भाई बड़ा हा पर गिणीजता टाबर ही । मामो गायां री ग्वाळ । रात रा मोड़ो आंवती । प्रभातै वैगो जांवती । मामी ने आ बात पसंद कौनी ही । कैवती– "थारा मामो सा म्हारै सूं ज्यादा गायां नै चावे है । गंवार री गंवार है ।" मामी सा रै जोवन रो मद चढ़तो जाय रयौ हो, म्है बीच मांय अड़खंजो लागता । मामी सा म्हा सूं नाराजगी राखती । एक दिन मामी मामै सूं केवण लागी, "थां आ कांई हाडकी गळै बांध राखी है । अवै अै छोरा मोटा होग्या है । आंनै आपरै आसरै करणा चोखा है । आप घर सूं बारै रेवौ, म्हारै सूं अे मसकरियां करता रेवे।"

राजा काना रा काचा । मामे रे मन री विश्वास दिनों दिन म्हां पर उठतो गयो। एक दिन टोगड़िया चूंग गया । मामी साची कूड़ी राम जाणे कांई-कांई कैई ? मामे आव देखियौ ने ताव, दो दो जूत म्हारै दे मारिया । म्है रात रौतां काढी । दुःख रा दिन फेर पाछा याद आवण लागा । बादळ प्रभात री पीली पौर होतां ही म्हनै जगायो अर राम भरोसै भूलियोड़ी मार्ग ढूंढता म्है चालण लागा । आपरै गांव आय

पुराणी ढाणी री जग्या जोय बैठग्या। अेकर छाती भर आई। पण सुणै तो कुण। विधना रा लेख कुण बदळ सकै। म्हे दोनू भाई एक खाडी खोदियो। रात रा उण माय सोवता। दिन माय गाव रा टोगड़िया चराता। राबड़ी पीवता अर जीवता।

दुख रा पडू दिन होया करै है। भाई बादळ भादवे री बादल बणग्यो बीजळ सी बींदणी लावण री तैयारी होवण लागी। अेकर फैर म्हारी छाती धड़कण लागी। पर सुजान करतो ही काई ? खुशी आधी होवे।

भाई रो ब्याव करियौ। भावज पूनम री चाद। सावण री तीजणी। बादळ री बीजळी। दोनू री जोड़ी गवर ईसर नै लारे राखती। हसी खुशी री रुत चाल री ही। थोड़ा साल में भतीज अर थोड़ा आतरा सू भतीजी जामी। म्हे तीन सू अबै पाच होयग्या। हा तुळसी नैनकिये मूडै सू काको केवती जद म्हानै घणी आणद आवती। भाई रैवाणा करती। भावज घर री लिछमी। पण नारी री नाड़ नी जाणे कद बदळ जावै।

बरखा रा दिन हा। खेत म्हे ही ज खडती हो। भावज भाती लावती। पण आजै भाती कोनी लायी। साझै भावज ने भातो नी लावण रो ओळमो दियी। भावज बोली "म्हे काई थारी बींदणी हू जो म्हारे पर हुक्म चलावौ। जावौ थारी जोड़ायत आवे जद हुक्म हलाइजी।" म्हारी शरीर दिन भर रो थाकी मादो भूखी प्यासी, ऊपर सू भावज रो औ बैवार ! मन माय मौटो अणैसौ आयौ।

भाई रात रा मौड़ो आयो। भावज रौ मन मोळी देख पूछण लागी "बिना ही बात हो कई ग्यो भागवान ?"

भावज आपरै बचाव सारू, रोग री जड़ काटण सारू केवण लागी, "ओ थारी भाई है या दुसमण" ?

भाई बोल्यो-बात कई है, साची-साची कैवो नी ?

"साची कैवू तो अनरथ हौसी। ओ थारी भाई सुजान चौखो कोनी। इण रा आचार विचार खराब हो गया है। जै था घर री शान्ति चावो तो सुजान नै या मनै अेक जणैनै राखणी पड़सी'।

भाई भावज री बाता पर चाल म्हनै चार कामड़ी मारनै न्यारी कर दीनी। म्है रामजी नै केवतो-*जलमता ही दुख लिखियोड़ा, जीवता सुख किया होसी' म्है किण* रा काळा तिल चोरिया, जो पग पग ठोकरा री भागी होय रयौ हू।

जमानो चौखो हौ। म्हैने रात री नींद कौनी आवती। भाई पच हो। पचायती करतौ। म्है सोचतो- इण बरस इण रै बाजरी कम हौसी। म्हू रात रा धान रौ रोटळी भाई रै खळै माय न्हाख आवती। बादळ सोचतो- सुजान छोटो है, उण रौ ब्याव करणौ है। जो दाणा घणा होवे तो सोरी काम रैसी। बादळ दो पोटळा खळै

मांय आप रै न्हाख जांवती । भाई भाई ने मन मांय चांवती हो । मूंडे भलां ही नी बोलती पण मायड़-जाया सुपनै ही न्यारा नी होय सकै ।

सियाले रा दिन हा । मै भाई री भावना री कूंत लैवण रौ विचार कियो । भाई भाई रौ है या भावज री । झोपड़े मांय धूड़ री मोटी ढिगली वणायी । दरवाजौ जोर सूं वंद कर दीनौ । उण ढिगली माथै म्है जोर सूं थपैड़ा मारतौ अर जोर सूं कूक मचाई – मारे मारे । लगातार कूक होवती देख बादळ आय धमकियौ । किवांड़ वंद हो । खोलण री कोशिश कीनी । पण नी खुलियो । इण पर भाई किवांड़ सू दूर जाय जोर सूं माथी दे मारियौ । दरवाजो टूट्‌यौ, बादळ मांय आयौ तो माथै सूं खून टपक रियौ हो । म्हनै सरम आयगी । पण भाई म्हनै राजी खुशी दैख गळै सूं लगाय लीनो । कैवण लागो– कुण मारे म्हारे जामण जाये नै ? उण रौ काळजो खायनै खून नी पी जाऊं ?

म्हां दौनू री आंख्यां गंगा जमना बरसण लागी । म्है पाछा सागै रेवण लागा । भावज नै अबै अकल आयगी ही । जामण- जाया जीवता न्यारा नी हौय सकै, कितरा ही जुग क्यूं नी बीत जावै ।

भावज री नुवौ मिनखपणी वणग्यौ हो । सूनी घर-बाड़ी पाछी फूलां मांय फूटरी लागण लागी । म्हारा दुख रा दिन दूर-दूर जाता रिया ।

□

उजास री उडीक

माधव नागदा

आज दीवाळी है । च्यारूमेर झिलमिल झिलमिल – दीवा ई दीवा तेल रा, मैणवत्ती रा, विजळी रा । नैना नैना टावरिया फूलझड़िया छोड़ै । वाँरै मूडा सू मोतीड़ा झरै । पण मधु रे हिवड़े मे तो इण चानणै रै विचाळै आज ई काळी घोर अमावस री रात है । 'कोई मनख रै जीवण मे अमावस री अधारौ पच वरस जितरी लवी होय सकै ?' मधु रै मन मे घड़ी घड़ी आ वात उठै अर अधारौ ओजू गेहरौ हो जावै । उजास री उडीक कठैई जीवण भर री तपस्या नी वण जावै । ना रे ना । यू नी होय सकै । जे वीरौ प्रेम साचौ है तो जरूर जीवण मे पाछौ उजास आसी, पाछी फूलझड़िया छूटसी । वी री आख्या मे ई एक दिन दीवाळी रा दीवा जगमग करसी।

मधु री गळती ई काई ही ? फगत इतरी कै उण आपरै हियै री वोझौ उतार नै धणी सुमीत रै चरणा मे धर दियौ । कदास जीवण भर रै वास्तै फोरी होय सकै । वा चावती तो चालाकी कर सकै ही । वोझै ने मन रै अेक खूणै मे सदीव रै वास्तै गाड सकै ही । पण मधु रै भोळै मन नै आ चालाकी जची कोनी। घरधणी सू भला काई छानौ राखणौ ? भेद राख्या पछै प्रेम किस्यौ ? पछै यो तो एक प्रकार री ढोग है, अर मधु नै ढोग कत्तई पसद कोनी । वा मन री निरमळ अर प्रेम री पाकी ही ।

उण पति रै सामी आपरी जिंदगाणी री पोथी रा सगळा पाना खोल दीधा । भोळी मधु ने काई ठा हो कै जीवण पोथी रा अनेकू रग रगीला पाना नै छोड'र वी री धणी लाली माली एक दागळ पानै नै ही महताऊ मानसी । आ जाणती तो वा दागळ पानौ उथेलती ई क्यूँ ? तिण उपरात वौ पानौ मधु री जिंदगाणी मे अणचायौ आयौ हौ । मधु वापड़ी वी नै कोनी लिख्यौ । वो तो विधाता री क्रूर कलम सू मतैई मड्यौ ।

मधु कॉलेज मे पढ़ती जद री वात ही । उण दिना मधु रै कोई अळगै रिश्तै मे भुआ री वेटौ निर्मल वा रै घरा आवण-जावण लाग्यौ हो । सकल सूरत सू तो फूटरौ

पण सुभाव री खोटी । मधु कानी देख'र आख्या टमकायवी करती अर होठ सिकोड़'र तुरियौ मूडो वणावती । मधु नै निर्मल री अे हरकता घणी अणखावणी लागती । वा आपणी मा नै कैया करती, "मम्मी, यू इणनै इतरौ मूंडे क्यू लगावै ? निकमी छोरो है । बिना अक्कल रौ !" पण मम्मी उल्टी थी नै डाट'र चुप कर देवती।

निर्मल रै घर मे आवणी-जावणी जारी रह्यी । दिन दिन उण री गैलाया वढ़ती गई । मधु नै उणरी वैवार कई वेळा इतरौ भूडो लागतो कै उणनै चप्पला सू कूटण री मन होवती । कदै ई आखै डील मे झुरझुरी दौड़ जावती । कदैई आखी रात ऊघ नी आवती । वा एक कानी निर्मल सू जूझती ती दूजा कानीं खुद सूं । छेवट कठाताई दोवड़ी लड़ाई लड़ती ! वा ई मिनखा शरीर ही, कोई देव प्रतिमा तो ही कोनी ।

अेकर मम्मी पापा नै भीलवाड़े जावणी हो । उणा निर्मल ने कह्यौ, "निर्मल वेटा ! मधु घरा अैकली है । यू अठैई सूय जाइजै । म्है परसू ताई पाछा आय जासा।"

निर्मल रै होठा माथै कपट मुळक विखरगी । आंधी काई चावै ? दो आख्या । उण रै तो मनचीती हुई । मधु बोली, "ना पापा, म्है अेकली रैय जासू । निर्मल ने अठै सुवायण री कोई जरूरत कोनी ।"

पण उण री वात मानीजी कोनी अर उणारा मम्मी पापा भीलवाड़ै रवानै होयग्या । लारै रैयग्या मधु अर निर्मल । निर्मल अर मधु । मधु रौ काळजौ धवक धवक करै । अेकर तो इछा हुई कै वा आपरी सहेली मीना रै अठै नाठ जावै।

पण निर्मल पापा आगै ना जाणै काई काई साची झूठी भिड़ासी - आ सोच'र वा ढवगी । पछै रात मे वोई हुयौ जिणरी अदेसौ हो । वा नी तो निर्मल नै जीत सकी अर नी खुद नै । जिण भात नशै री गोळिया खुवाय-खुवाय'र कोई किणी नै कियाई कमजोर कर नाखै, उणी ज भात निर्मल घाघ शिकारी री दाई पैली तो उणरी निजू भरोसौ डिगायौ अर पछै वी री कमजोरी री फायदौ उठायौ । रात वीत्या सूरज उगी तो कमरै मे दिन रौ उजास कोनी । छळ, फरेव, आत्मग्लानि अर पीड़ा री अधारौ सो हो । निर्मल गायव हो । नुवी नकोर अर कोरीकट जिंदगाणी री किताव रौ अेक पानौ दागल वणग्यौ हो ।

पछै जिदगी मे आयौ सुमीत । जाणै हजारी गल री फूल । मधु रै च्यारूमेर जाणै सौरम रा मेळा मडग्या । जाणै कणाई खुशवू री अलेखू शीशिया च्यारूमेर ऊधाय दीवी । वा रातदिन भगवान सू आ ई अरदास करती कै पति मिळै तो सात जनम इस्यौ ई । सुमीत वी नै घणै हेत प्रेम सू राखतौ । वा ई आपरा पति रै चरणा मे न्यौछावर ही । सुमीत वी सू की छानै नी राख्यौ । नैनी सू नैनी वात लेय'र आपरी जिंदगाणी रा गहरा सू गहरा रहस सगळा वी नै वताय दिया अर एक दिन वीं

आपरी कुवारी जिंदगाणी री अेक खास भेद जिकौ घणकरा मरद आपरी लुगाई सू ई छिपाय नै राखै, मधु रै सामी खोलनै मेल दीधौ ।

"मधुं डार्लिंग, आज मैं म्हारी लाईफ री अेक जोरदार किस्सौ थनै सुणावूला । पैली थू दिल थाम लीजै ।" सुमीत मधु रै रेशमी बाळा मे आगळिया री कघी करतौ वोल्यौ । मधु वी रै धड़कतै हिवड़ै माथै आपरौ कवळौ हाथ राख दियौ ।

"अरे ! म्हारी दिल नी गैली, थारी दिल थाम ।"

"वाहजी ! घटना तो आपरै जीवण री अर दिल म्हारौ क्यू थामू ?"

मधु नै लखायौ के सुमीत रौ दिल जोर-जोर सूं धड़क रह्यौ है । "आछी वावा सुण ! म्हैं एम एससी मे पढ़ती उण वखत री वात है । प्रभा म्हारै कनै परीक्षा री त्यारी रै सिलसिलै मे आयवौ करती ।"

"कुण प्रभा ? इण दुनिया मे तो सैंकडू प्रभा फ्रभा है ।" मधु वोली ।

"वताय देसू कोई दिन । उणरी व्याव जोधपुर मे ई हुयौ है । जिण मकान मे किरायेदार वण र रैवती, उणरी पैली मजिल माथै वा रैंवती अर तीजी मजिल माथै मैं । म्है दोनूं सागैई पढ़ता । सार टीपता । वहस करता । आधी-आधी रात ताईं वा म्हारै कनै पढ़वी करती । अेक दूजै सू आगै वढ़ण री होड ही । युनिवर्सिटी मे टॉप करण री तमन्ना ही । कठैई की दूजी वात कोनी ही । नी तो वी रै मन मे, नी म्हारै मन मे ।"

मधु सतोष री सास लेवती वोली, "तो पछे इण मे सुणावणजोग काई है ?"

"सुण तो सरी । अेक दिन री वात । म्हैं म्हारै भायला सागै अेक फालतू सिनेमा देखनै आयौ । आखरी दरसाव । प्रभा म्हारै कमरै मे ई वैठी पढ़ै ही ..।" मधु री नूर पाछौ उतर्‌यौ । वी री सवालिया निजर सुमीत रै चेहरै माथै टिकगी ।

"उण रात मधु, काई कैवू थनै, म्हारै माथै जाणै किसौ भूत सवार हुयौ कै म्हनै की ठा कोनी पड़ी । भूत उतरिया आत्मग्लानि रै समदर मे डूवण-उतरण लाग्यौ। प्रभा सू म्है माफी मागता कह्‌यौ, "आई एम वेरी सॉरी . वेरी सॉरी प्रभा ! प्लीज फोरगिव मी ।"

प्रभा थोड़ी ताळ तो सूनी सूनी आख्या सू म्हनै देखती रही । पछै काई जवाब दीधौ, जाणै मधु ? प्रभा वोली, 'डाट वरी, इट इज वट नेचुरल । डू योर प्रिपेरेशन ।'

पछै वा कदैई म्हारै कमरै मे नी आई । वी मकान ईज छोड़ दियौ । पण आज ई वा घटना म्हारै हिवड़ै मे काटै ज्यू चुभ री है ।

मधु रै मन नै भूकप री झटकौ सो लाग्यौ । वी री मूडौ उतरग्यौ । काई सुमीत जिसौं देवता मिनख ई इसी हरकत कर सकै ? मधु री आख्या रै सामी निर्मल रौ उणियारौ आयग्यौ । हसतौ ठहाका लगावतौ थकौ । निर्मल अर सुमीत । सुमीत अर

निर्मल । दोनू चेहरा अेक दूजै मे मिळता निगै आया । कुण निर्मल है अर कुण सुमीत ? ओळखणी अवखी होयग्यौ । धरती धूजती अर कमरौ घूमतौ सो लखायौ । जद होश आयौ तो देख्यौ सुमीत वी नै लाड करै हो, "मधु, थू नाराज मत होईजै, वा तो अबै गयै जमानै री बात होयगी है । एक सुपनौ । गधा पच्चीसी री आ उमर ईसी । थोड़ी सो ताप लागै कै मन पिघळ जावै । मन अेक'र पिघळ्यो कै गयौ हाथ सू । पण भरौसौ राखजै अबै म्हारै मनरूपी सिंघासण माथै थारै सिवाय कोई विराजमान नी है ।"

मधु रै मन मे महाभारत मचग्यौ । वा सोचण लागी - वा ई आपरै मन री बोझौ पति रै चरणा मे अर्पित करनै हळकी करै कै नी करै ? उणरी काई नतीजौ निकळसी ? यू मिनख रै हिवड़ै मे कृष्ण अर कंस दोनू मौजूद है । चेतना री दीवौ सजोवौ तो कृष्ण अर बुझायदी तो कंस त्यार है । पछै अधारै खाड़ै में जाय पड़ौ धड़ाम करता । मधु मन मे तय कर लियौ कै मौको आया वा आपरै मन री भेद सुमीत आगळ उजागर कर देसी । नतीजौ भलाई की निकळौ । उणरी मन तौ हळकी फूल होय जासी ।

अेक दिन सुमीत पूछ ई लियौ, "मधु, म्है तो म्हारै जीवण रा सगळा भेद थारै सामी चौड़े कर दिया । पण थू तो कदैई मूडो ई नी खोलै । थारै जीवण मे ई कदैई कोई न कोई तो आयौ होसी ?"

वा घड़ी आय पूगी । मधु नै आपरा रोम ऊभा होवता लखाया । वा आपरै मूडै सू आ बात किया कैवै । पण नी कैवे तो उणरै जिसी कपटण औरू कुण होसी ? जद वीरै धणी उणमाथै पतियारौ करनै आपरै मन री भेद बतायौ है तो वी री ई फरज है के वा ई कोई बात छिपाय नै नी राखै । मन रा मैल नै पतियारै रै गगाजळ मे धोवण री इसी मौकौ फेरू कद आसी ? सुमीत बोल्यौ, ' मधु मून किया धार ली ? म्हारै सू काई छानै राखै बावळी ? आपा तो दो तन अर अेक मन हा।"

"आप नाराज तो नी होवौला ?" मधु लाजा मरती सुमीत री छाती मे मूडौ छिपावती बोली । वी री आवाज कापै ही ।

"नारे ना ! मधु जिसी घरवाळी सू नाराज होवै वो मिनख नी जिनावर है ।"

मधु चकमे मे आयगी । वी थापड़ी ने काई ठा ही के आदमी रै दो चेहरा हुया करै ? वो चेहरा बदळण मे घणौ हुसियार होवै ।

"थू समझौ के मधु रै रूप मे म्है ई प्रभा हू ।' मधु होळै होळै शकीजती थकी बोली ।

"अर सुमीत कुण ? प्रभा नै वी रै मारग सू चुकावणियौ ?"

"निर्मल !" मधु अटकती-अटकती अर कापती आवाज मे निर्मल आळी सगळी दुरघटना बयान कर दी । की नी छिपायौ ।

सुणता सुणता ई सुमीत रै चेहरै री रग बदळग्यौ । उणरी आख्या रातीचुट्ट होयगी । मधु नै अेक झटकै सागै अळगी करतौ बोल्यौ, "दुष्टा, इसी है थू ? म्है तो थनै आज ताई सती सावित्री मानती आयौ । कळकणी निकळजा म्हारै घर सू ।"

मधु लाख समझावण री चेष्टा करी कै इण मे म्हारौ दोस कोनी । सगळी निर्मल री नीचता ही । पण की गरज नी सजी । छेवट बी नै आपरा गाभा ची'थरा लेयनै घर छोड़णी पड्यौ । उणनै रैय रैय ने अचूभौ आवण लाग्यौ । मिनख रौ सुभाव कजर री कुत्ती दाई, न जाणै किसै खेत मे जायनै ब्यावै । पैली तो कितरै हेत प्रेम सू उणनै भरोसे मे लीवी । 'मधु जिसी घरवाळी माथै नाराज होवै वो मिनख नी पण जिनावर है ।' तो फेरू काई हुयौ ? किरकाटिया रै ज्यू रग क्यू बदळ दियौ ?

आज कड़ीकट पाच बरस होयग्या है उण बात नै । हर दीवाळी री रात मधु नै काळै साप री दाई डसै । घर मे अेक दीवौ ई नी । बस, मधु है, विस्तर है अर आख्या सू झर झरता मोतीड़ा है ।

बरस भर तो मधु एक प्राइवेट स्कूल मे नौकरी करी । पण आ नौकरी बी नै रास कोनी आई । मधु रौ स्वाभिमानी सुभाव अर सोचण विचारण री मौलिक तरीकौ सस्था प्रधान नै दाय नी आयौ । मधु मन मे तेवड़ली कै वा खुद अेक शिक्षण सस्था सरू करसी ।

टाबरा सू मन ई लागसी अर वखत ई सोरौ निकळसी । सै सू मोटी बात टाबरिया नै सस्कारित करण री है । जे वा की टाबरा नै ई आछा सस्कार देय सकी तो मैणत सफल होय जासी । पण साधन ? जठै सकळप उठै साधन । अेक दो सहेल्या सू बात हुई अर योजना बणी के आपरी सस्था मे टाबरा नै शिक्षा मायड़ भाषा राजस्थानी रै माध्यम सू दिरीजसी । हिंदी-अग्रेजी सहायक भाषावा रैसी । इणसू राजस्थानी नै बळ मिळसी अर शिक्षण ई असरकारी बणसी । जनता इणनै जरूर पसद करसी ।

मधु तन-मन सू काम मे जुटगी । रात दिन ओई विचार, ओ ई सोच अर ओ ई काम । पैलड़े बरस तो कोई खास सफलता नी मिळी । पण होळै होळै खुशबू फैलण लागी । सस्था री नाम ठावौ होवण लाग्यौ । नाम राख्यौ – सुमीत बाळ विद्या मदिर ।"

दीवाळी री छुट्टिया पछै स्कूल खुल्या अर मधु आपरै काम में लागगी । उणरै च्यारूमेर रग रग,रा सुहावणा फूल खिल्योड़ा हा । मीठी-मीठी तोतळी वाणी भवरा री गुजार ज्यू कानों मे गूजण लागी । मधु रौ अेकलपणौ मिटग्यौ ।

वा कक्षावा मे फेरी लेय र आपरै कमरै मे आयने बैठी' ज ही के किणी दरवाजै री चिक उठाई अर केयो "मे आई कम इन मेडम ?"

"यस, कम इन ।"

मधु अभ्यागत रै मूंडै कानी देख्यो तो देखती ई रैयगी । अरे, ओ तो सुमीत है। इण पाच बरसा मे कितरो थाकग्यो है । सागै अेक टावर है, ग्यारेक बरस रो । तो काई सुमीत दूजो ब्याव कर लियो ? वाह रे आदमी ! अर वाह थारी इनसानियत ! मधु रो माथो चकरीजण लाग्यो । भूकप रो दूजो झटको – सात रेक्टर स्केल रो । वा किया सभाळै इण काया री नगरी नै ? पण सभाळणी पड़सी । मधु यू इण सस्था री प्रधान है । थावस राख । सामी ऊभो आदमी थारै की नी लागै । यो इण टावर रो अभिभावक है बस ।

"विराजो !" मधु आपो सभाळता कैयो ।

'धन्यवाद !' सुमीत बैठग्यो अर मधु नै अचूभै सू देखण लाग्यो । आ भोळी डावड़ी इतरो ऊचै पगोथियै किया चढगी ? 'सुमीत बाळ विद्या मदिर' जिसी प्रतिष्ठित सस्था री प्राचार्य ?

"फरमावो, किया तकलीफ करी ?" मधु रो हिवड़ो हबोळा खावै हो । पण आपरी तकलीफ नै जबरदस्ती दबाय'र वा सुमीत री तकलीफ पूछी । सुमीत अर्थात् एक अभिभावक ।

'इण टावर नै भरती करावणो है ।"

'अबै तो सभव कोनी । सैशन रै बिचाळै भरती करण रो नेम कोनी ।" मधु रुखाई सू बोली ।

"म्हनै इण बात री जाण है, तो ई अठै आयो हूँ । इणरा पापा बीकानेर सू ट्रासफर माथै अबार ई अठै आया है । स्पेशल केस जाण'र इणनै भरती करणो पड़सी !" सुमीत जोर देय नै कयो ।

मधु रै डील म फूलझड़िया सी छूटण लागी । तो ओ टावर सुमीत रो कोनी । सुमीत दूजो ब्याव कोनी कियो ? तो पछै ओ टावर किणरो है ?

"इण रा पापा ? वै नी आय सकै काई ?" मधु होळैसीक पूछ्यो ।

"वै म्हारा बॉस है । आवताई वानै अेक काम सू बारै जावणो पड़्यो । दसेक दिन रो टूर है । टावर नै स्कूल म भरती करण री जिम्मेवारी म्हारै माथै नाख नै गया है । अेक तो सस्था री पैठ अर दूजो म्हारै नाम सू इण रो मेळ । बस चाल्यो आयो अठै । पण अबै देखू के सही मजिल पूग्यो हू ।" इतरो कैय'र सुमीत जोर सू हस्यो। आ हसी मधु री ओळखी सी, आछी तरिया जाणी पैचाणी ही । मधु रै काना मे मीठी-मीठी घटिया सी बाजण लागी, जाणै प्रभात रै पीर मदिर मे आरती होय री है।

□

वदजात

सत्यनारायण सोनी

''भोमलै री मा, सुणै है काई, कवरकी गाय आज दिनूगै सू भूखी है। नीरा चारी करी क नी।'' वदळू आपरी जोड़ायत तीजा नै हेलो मारियौ। वदळू री आवाज सुण र वा नेड़ै आ'र वोली-- ''कवरकी रै तो पत्ती ई नी आज काई होयग्यो, चरणै रौ नाव इज नी लेवै। उदास-उदास सी खड़ी.है अर जुगाळी ई नी करै।'' सुण'र वदळू रै चैरै रो पाणी उतरग्यो। लारलै दिना ई रामेश्वर महाजन सू दो हजार रुपिया री करज़ौ लेर आ कवरकी खरीद'र लायौ हौ। घर माय जद कवरकी आई तो टावरा री खुशी रौ ठिकाणौ इज नी रैयौ। दोनू वखत मिलार दस किलो दूध देवण आळी कवरकी री डील हाथी ज्यू लखावती।

वदळू घणी ई दवा-दारू करी। उणरी जोड़ायत तीजा ई इणसू पीछै नी ही। मावड़ियाजी री मनोती मनाई। पित्तरजी रै थान माय घी रौ दीवौ चसायौ। भोमियाजी रौ भोग वोल्यौ। पण ओ काई! दोपहर ढळता-ढळता कवरकी पड़ाछ खार जमी पर पड़गी। देख'र तीजा रौ तो जाणै जीव ई नीसरग्यौ। वदळू भाज'र आयौ, पण अव भाज'र आवणै सू काई असर होवै। कवरकी री देह माटी ज्यू जमी पर पसरी पड़ी ही। सास आवणौ वन्द हौ। तीजा माथौ कूट-कूट रोवण लागी। हाकौ सुण'र वास गळी री लुगाया भेळी होयगी। तीजा जोर-जोर सू वाकौ फाड़ै ही ''पती नी किण निरभागी री निजर लागगी। काल तक तो सागीपाग ही। आज झाझरकै ई पाँच सेर दूध काढ्यौ हो , हे म्हारी कवरकी! थूं म्हारै सू किण जळम रो वदळौ चूकियौ!''

'वावळी होयगी कै वीनणी। रोवणै-कूकणै सू कवरकी माय ज्यान वापरण सू तो रही! फालतू रै रोळै सू काई असर होवै है। भगवान माड़ा दिन दिखाया है तो आनै छाती ठोक'र झेलणा पड़सी। धीरज छोड्या पार नी पड़ै। भूळियै री दादी समझावण दी। पतौरी भुआ ई लाम्वौ सिसकारौ मार र वोली भाभी थू मैरै कानी देख। जीवण माय अवखाया रै सिवाय और की नी मिळ्यौ पण जीवण री आस अवा र ई वाकी है। जूण तो पूरी करणी ई पड़ै। कोई हस खेल र विताय देवै तो

कोई चिता माय डूब'र, अबखाया री मुकावली करण री हिम्मत राखणी चाइजे ।" पतौरी मुआ री बात तीजा रै काळजै ढूकगी सो रोवणी-कूकणी बन्द कर दियौ ।

राम राम करता पडित प्रेमसुखजी आयग्या । "बदळू भाई, किया हाकौ मचाय राख्यौ है ?" पिडतजी पूछ्यौ ।

"काई बताऊँ दादा ! कवरकी गाय दिनूगै चोखी भली ही, अबार देखौ विचारी खूटै बन्धी-बन्धी अचाणचकै ज्यान दे दी ।"

"काई केयौ ! खूटै बन्धी बन्धी ज्यान दे दी ?"

"हाँ पिण्डतजी ।"

"राम राम ! ओ तो बौत माड़ी होयग्यौ । काई थनै पती नी गाय खूटै बन्धी मरज्या तो कितरौ पाप लागै ? बेटी रा बाप, कम सू कम मरती-मरती रै गळै सू जेवड़ी तो काढ़ देवतौ । देख अबार ई गळै माय जेवड़ी बन्धी पड़ी है ! नरक भोगणौ पड़सी नरक !" पिडतजी री बाता बदळू रै काळजै माय गहरौ घाव करै ही। बदळू नै लखायौ जाणै पिण्डतजी उणरै बळीड़ै डील पर लूण छिड़कणै रो काम कर रैया है ।

नरक रो नाव सुण'र तीजा थर-थर कापण लागगी । डरती डरती वण पूछ्यौ ' पिडतजी, इण पाप सू बचण री कोई उपाव तो हुसी ? म्है तो भोळा भाळा मिनख हा, आपरै ई बतायोड़ै मारग पर चालस्या ।"

पिंडतजी री आँख्या लाल होयगी । तीजा नै डर लाग्यौ, पिण्डतजी कोई शराप न दे नाखै । पिडतजी राम - राम री उच्चार करता बोल्या -"शास्त्रा माय लिख्यो है कै गऊ जे खूटै बन्धी मरज्या तो बीरी पाप गऊ हत्या सू ई घणी होवै । इण वास्तै आपनै बारह दिना तक सात बामणा नै भोजन कराणी पड़सी । बदळू नै गाय री जेवडी ले'र गगा जी जावणी पडसी, जद जार ओ पाप उतर सकै है ।" आ बात कँवता थका पिंडतजी आपरै घर कानी चाल पड्या । तीजा हाकी-बाकी सी पिंडतजी नै जावता देख री ही ।

बदळू रै जीवड़ै जक नी हो । सामनै गाय री निरजीव शरीर पड्यौ हो । बदळू मन मे आपरै बीत्या दिना रै बाबत सोचण लाग्यौ । आपणै समाज माय अधविश्वास री कमी नी है । भात भात रा अफड बणा'र पिडत टर्गी मचावै । बापूजी रामसरण होया जद ई आ लोगा कित्ती हाकौ मचायौ । घर भाय उदरा इग्यारस करै हा अर आ लोगा नै देसी घी री हलवी जिमावणी पड्यौ । सेवट तीन बीघा धरती अडाणै मेल'र बापूजी री औसर कर्यौ । ब्याज पर ब्याज चढ़ती गयौ । सात बीघा धरती सू गिरस्थी री गाडी ई नी चाली । करजी उतारणौ तो दूर री बात ही । लारली साल तीन बीघा धरती रामेश्वर महाजन रै नाव कर'र करजै सू निजात पाई । दूध दही री कमी दौरी जद दो हजार रो अणचायौ करजी करणी पड्यौ पण जीवड़ै नै जक भळै ई कानी । अेक नुवी आफ्त और आ खड़ी होयी ।

'गाय अठै ई पड़ी रैवैली कै मेहतर नै बुलावौ भेज'र उठवाओगा ।'' तीजा रो बोल सुण'र वदळू ऊभौ होयौ । उमर घणी कोनी ही, पण गरीबी सू दव्यौड़े बदळू रा गोडा जवाब देवण लागग्या । कवरकी रै गळै री जेवड़ी काढ'र वो मेहतर कानी जावण ई लाग्यो हौ तदै ई सामणै सू आवता पिण्डतजी साथै पॉच छ मिनखा नै देख'र वीरी माथी ठणक्यौ, पग वठै ई थमग्या । पिडत आखै गाम मे ढिंढोरो पीट दियी हो ।

''काई होयी रै वदळू ?'' मनसै काकै पूछ्यौ ।

''होवणी काई हो काको सा, कवरकी गाय जिकी म्है लारली साल दो हजार रिपिया म ल्यायौ हौ वा आज मरगी ।'

''मरी जिकी तो कोई वात नी ही, इण अधरमी मरणै सू पैली वीरै गळै री जेवड़ी ई नी काढ़ी ।'' पिडतजी आपरी वात कैयी ।

''तो वीरा किरिया करम तो करणा ई पड़सी ।'' रामधन बोल पड़्या । वदळू वारी वात सुण'र सोच्यौ– ऐ मिनख पार तो नी पड़ण देवै । कोई ढग सू जीवणी चावै वीनै वखत नी टिपावण देवै ।

' अर जे किरिया-करम नी करै तो ?'' वण पूछ्यो ।

''किया नी करसी थू किरिया करम ? समाज मे रेवणी है तो समाज रै ढग सू चालणौ पड़सी । गऊ आपणी माता है, ओ अधरम नी होवण देसू ।'' पिण्डतजी जोस मे आयग्या ।

''म्है आ अधविश्वासा मे नी पड़ूलौ ।'' वदळू बोल्यौ ।

''तो थनै नरक माय जावणौ पड़सी ।'' पिण्डतजी कैया ।

' इव किस्या सुरग भोग रैया हा ।'' वदळू ऊथळी/दियौ । वदळू री वात सुण'र वूढ़ा-वडेरा रीसाणा होयग्या । भात भात रा छीटा कसीजण लाग्या ।

''नालायक समाज रो विरोध करै ।''

' ओ अधरमी है, पापी है, कीड़ा री कूड म पड़सी ।''

' ओ वदजात है ।'

' ई नै समाज माय नी वैठण द्यौ ।'

आज सू गाम मे इण री होकौ पाणी वन्द ।'' कैवता लोग न्याग आप-आपरै घरा कानी वहीर होया । आखै गाम मे आ खवर हवा ज्यू फैलगी ।

वदळू कैई ताळ गोडा माय दिया वैठ्यौ रैयौ । हिम्मत कर'र वो काळू मेहतर कानी टुरियौ । काळू देखता ई टकौ मो दवाव दे दियौ ''थू वदजात है, आज सू थारै घर माय म्हारौ काम काज वन्द ।'' सुण'र वदळू रो चेरौ सफाचट्ट होयग्यौ ।

रात्ट वदळू आप ई गाय नै घीस र हाडा रोड़ी माय नाखी ।

चौवीसू घण्टो दूध दही माय रम्यै रैवण आळै वदळू रै परिवार माय चाय रो इज टोटो पड़ग्यो । दूध खात'र विलविलावता टावरा रा मूडा अर खूटै वध्योड़ी कवरकी री वाछड़ी देख'र वदळू री आँख्या गीली होयगी । सोच्यौ – करज़ै सू आगै ई दव्यौड़ो हो अर अवार कगाली माय आटौ गीलौ भळै होयग्यौ । लूण मिरच रै चरकै पाणी सागै लूखी रोटी सरकणै रो नाव इज नी लेवै । वदळू तो दोरी सोरी धाकौ धिकाय देवै, पण टावरा कानी देख्या मन मे दुख री अेक टीस सी उठै । भगवान इस्यै जीवण सू तो मरणौ ई चोखो, पण भळै सोचै– कै मरणौ तो कायरता है। अवखाया सू जूझती रैवणौ ई जीवण है ।

दिन गुजरता रैया । वरखा री रुत आई । अवकाळै सागीपाग पाणी वरस्यौ । गाँव रौ तळाव पाणी सू हळाडोल होयग्यो । तळाव रै किनारै टावर टीकरा री टोळी कागज री नाव तिराणै रो आणद लेवै ही । पत्तो नी कैया पिण्डतजी रै छौरै रो पग आतळ्यो, वो तळाव माय डूवण लाग्यो । देख'र छोरा हाको कर्यो । रोळौ सुण'र वदळू तळाव कानी भाग्यौ । कैई और लोग इज आयग्या । वदळू अव्वल दरजै रो तैराक हो । वी आव देख्यौ न ताव सीधी पाणी माय उतरग्यौ । थोड़ी ताळ मे पिण्डतजी रै छौरै नै काढ लियौ । सगळा रा चेरा कमल रै फूल दाई खिलग्या । पिण्डतजी आगै आर वदळू रै वाथ घाल ली । वदळू बोल्यो - "पिंडतजी काई कर रैया हो ? म्है वदजात हूँ, म्हनै छूवणै सू आप अपवित्र हो जावोला ।"

'अव मनै और शर्मिन्दा ना का वदळू । म्हनै माफ कर दे ।" पिंडतजी री आँख्या गीली होयगी ।

वादळा री ओट सू निकळतौ सूरज मुळकतो सो दीसै हो ।

□

नुंवौ जमारौ

वालूदास वैष्णव

शहरा री भीड़ भाड़ सू छेटी अेक गाँव । गाँव जठै आजादी रै उजास री अहसास आछी तरै सू होवणौ बाकी है । अज्ञान री अन्धारी गळिया मे पसरयोड़ो रेवै । झूपड़िया, हवेलियाँ, चौक चौपाल मे जूनी वाता जूनी रीता । खम्मा घणी रा हुकारा पे देवरा रा ठपकारा । तीज तिंवार ढोल बाकी नौगाड़ा री पोल ।

धीरे धीरे वखत वदळण रो अहसास । गाँव रै मझ मन्दिर । मन्दिर मे पुजारी । वो दिन मे खेती रौ काम करतो हो । भगवान रै सामै हाथ जोड़ र माथौ नवातो अर अरदास करतौ कै "ईण दीपक री तीन जोता ने उजाळी वाटण री खिमता देवतो रीजै म्हारा नाथ !"

कवीर पथी पुजारी किसनदास अेक भलौ माणस हो । गैलै आवतो गैलै जावतो । उण रै किणी सू भी तियो पाचौ नी हो । नी तो आदू रो देणौ नी लादू री लेणौ । आपण काम सू काम करतो । ठाकुर जी री सेवा करतो । खेती खड़णी अर राम राम करता आपणी घर गिरस्ती चलावणी ।

पण,

खेता मे गोवर री खाद रै लारै-लारै रासायनिक खाद भी काम आवण लागी । नुवा नुवा वीजा नै काम लेवणौ । हळ सू खेती करणो, खेती रो जूनो तरीकौ कैवावण लागग्यौ । कूड़ा रै फेर मे चारौ ऊगण लाग्यौ । अजन सू पिलाई होवण लागी । रामजी री किरपा सूँ करसाँण रै घरे लिछमी पावणी होवण लागी ।

आछी निपजवारी सू आमद होवती देख र "मुडै-मुण्डे मति र भिन्ना वाळी बाता होवण लागी । रावळो तेल वळै पण भण्डारी पेट कूटै । आछी मैणत करणियाँ, कमावणिया अर खावणिया दिन लोगा ने पचिया कोनी । अेक दो खुरापाती खुसर-फुसर कर दी दी ।

कैवत है नी क-गाँव लारे   लादूया रैवे ।

फोड़े नी तो झोझरा तो फरा करे ।

बस–

चक्कर चलायौ अर बड़ा बेटा रामकिशन नै भरमायौ। भरमाया थका तो भाटा भी भिड़ सकै। काल परसूं री परणियो रामकिशन आपणी लाडी नै लेर बोजा.......बोजा......बोजा......अेक दो बड़ा बुजुर्ग समझावण री कोसिस करी कै दूजा भाई छोटा है। उतावळ मत कर मानजा, पण सब बातां बिरथा होयगी।

अबै ?

किसनदास जी नै गहरी सदमौ लाग्यौ। उण टैम बिचलौ बेटौ दसवीं भणतौ हो। सब समझतौ पण करै तो कंई ? कीनै कैवै ? कुण सुणै ? खैर.........बीती तांई बिसार दै आगे री सुध लेय। पुजारी री मैणत मजदूरी बढगी। मोट्यार बेटा री भड़ी, भड़ो नी रयौ। घड़ौ फूट'र ठीकरी हुयग्यौ। बिचलो बेटौ बालू दसवीं पास हुवौ तो किसनदास जी री आंख्यां में आंसूं उमड़्या। वै सोचबा ला

दुःख रा आँसू, सुख रा आंसूं, भाँत-भाँत रो आकार कोनी

दुःख री सुपनो, सुख री सुपनो दोन्यू ही साकार कोनी

किसनदास जी सोचता– बड़ो तो हाथ सूँ गयो पण बालू तो पढ लिख'र हाकम बणसी। छोटू नै भी आपणी छाती रै लगा'र राखसी, नाम कमावैला, मान बढावैला।

पण–

विधाता रा आँकड़ा तो न्यारा री हुवै। रामजी करै सो खरी। छोटू री आंख्यौं दुःखी। छण पड़्यौ। जोत जाती रैयी। नीम-हकीम खतरै जान वाळी बात होयगी। भाठी-भाठी देव पूज्या। देवरा धोक्या। पण आंख्यां री रोशनी नी बावड़ी।

बिचली बेटौ बालू उणां दिनां कॉलेज में भणतौ हो, उण नै ठा पड़ी जितै तो घणी देर हुयगी। चिड़िया चुगगी खेत वाळी बात रैयगी। पुजारीजी ओ दूजी सदमौ सैण कोनी कर सक्या अर परलोक सिधारग्या।

अबै ?

जो कुछ करणो-कावणो तो बालू ही जाणै। बालू रोयौ-पछतायौ, अज्ञान अन्धकार मे भटकता गावाँ री हालातां पर उणनै घणौ तरस आयौ, पण केवण सूँ कांई हुवै। जिण में बीतै वो ही जाणै।

बालू आपणी भणाई करतो। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' री प्रार्थना नै याद करतौ। आपणां भाई री आंख्यां री जोत नै वापस लावण रा सपना देखतौ। जठै-जठै भी आंख्यां रा शिविर लागता आपणै भाई नै लैर, रोशनी री तलाश सारू पूग जातो अर लैण में लाग जांतौ।

अेक दिन डॉक्टर रामप्रसाद कैयौ–"इन आखो मे ज्योति वापस नही आ सकती। आपरेशन नही होगा। केवल एक मात्र उपाय है– नेत्रदान द्वारा दूसरी आँख का प्रत्यारोपण।"

"सर, मै अपनी एक आँख देने को तैयार हूँ पर मै चाहता हूँ कि जिस प्रकार मै देख सकता हूँ, मेरा भाई भी इस दुनिया को देख सके।'

वालू री इण वात ने सुण'र डॉक्टर कैयौ–

'ऐसा है आप नेत्रदान का सकल्प करते है तो फार्म भर देवे। जव भी कोई आँख दान करेगा। आपके भाई को प्राथमिकता दी जायेगी।

"आई केन अण्डरस्टेण्ड यूवर इमोशनल फिलिंग्स।"

आप नेत्रदान विभाग मे जाकर आवश्यक खाना पूर्तियाँ करा लेवे। ठीक सर! मे तैयार हूँ। मै आपका यह अहसान उम्र भर नही भूलूँगा, साहव।

नो नो, ऐसी कोई वात नही है।

'भगवान रै घरै देर है पण अन्धेर कोनी।'

अेक दिन किणी भलै माणस आपरै नैत्रा री दान कर्‌यौ। छोटू री आँख री प्रत्यारोपण होयग्यौ। वालू री आख्याँ मे आँसू आयग्या। उण री खुसी रौ ठिकाणौ नी रैयौ। अन्धारै मे भटकतै छोटू रौ जीवण अवै रोसणी रा दरसण कर सकै। उणनै नुवौ जमारौ मिलियौ।

अवै, जद भी उण नै टैम मिलै वालू इण जुगत मे रैवे के जरूरतमन्द लोगा नै रोसणी रा दरसण करा सकै। अज्ञान रा अन्धकार मे भटकता ने सही गैली वता सकै, क्यूँकै वो जाणै है– नेत्रदान ही महादान है।

❒

अधूरा सुपना

नृसिंह राजपुरोहित

बाबू शिवलाल री उमर साठ बरस री हुयगी। दो बरस पै'लीज वे सरकारी नौकरी सू रिटायर हुया। टाबरपण वारो आपरै गाव मे ई बीतो पण थोड़ा मोटा हुया पछै गाव छूटी तो छूट ई गयी। पै'ली पढ़ाई वास्तै वारै जावणो पड़यो अर पछै नोकरी रै चक्कर म। आज अठी तो काल उठी गूदड़ा घीसता आखी उमर बीतगी। छोरा-छावरा ई मोटा हुया। वानै पढ़ाया लिखाया, काम धधै लगाया अर परणाया पाताया, जितै तो दिन आयमण आयग्यौ। की टा ई कोनी पड़ी। फूक्यौ मारण नै ई वेळा कोनी मिळी। नावा दौड़ म ई जमारौ बीतग्यौ।

बावू शिवलाल नैं घर म अर वारै सगळा बावूजी रै नाम सू बतळावता। मरपात मे वे सरकारी दफ्तर म बाबू वण्या हा सो बावूजी आळी छाप जिदगी भर रै वास्तै वार सारै चिपगी। भगवान वानै दीसती सरूप दियौ हो। दोवड़ी हाड, गेहूँ वरणौ रग, मजबूत कद-काठी, डीगो पूजती शरीर अर मोटी-मोटी आख्या। देखती निर्ळोई प्रभावित होय जावती। विद्यार्थी जीवण सू ई वानै कसरत अर कुश्ती रौ शौक रह्यौ। वै नियमित रूप सू अखाड़ै जावता। इण कारण शरीर टेट सू निरोगी रह्यौ। याद ई नी आवै के वानै कदैई ताव-तप ई आयौ होसी। बड़ी नियमित अर सयमित जीवण हो वारो। जवानी रै दिना मे आर्य समाज रै सपर्क में आयग्या। इणसू वारी विचारधारा ई सुधारवादी होयगी। कोई प्रकार रा अध विश्वास के पाखड नैं वे स्वीकार कोनी करता। कठैई कोई अन्याव के अत्याचार होवतो देखता तो वा सू सहन कोनी होवतो। वै उणरौ यथाशक्ति विरोध करता। इण कारण वा नैं कई वार फोड़ा ई भुगतणा पड़ता। पण वे कदैई परवाह कोनी करता। आ वारी प्रकृति ही।

रिटायरमेंट पछै टेट सू वारो विचार गाव मे जायनैं रैवण रौ हो। वे अेक आदर्श सुधारवादी अर धारमिक विचारा रा आदमी हा। इण कारण भारतीय सस्कृति रै प्रति वारै मन मे अथाग श्रद्धा ही। वारी आ पक्की धारणा ही के शहर तो अबै आधूनी सभ्यता रै प्रभाव मे आयनैं की कार रा कोनीं रह्या। अठैरा लोग अर

खासकर मोट्यार छोरा-छोरिया उण अेठवाड़ी अर अधकचरी सस्कृति रा अध भगत वणनै सफा बिगड़ता जाय रह्या । असली भारतीय सस्कृति हाल गावड़ा मे कायम है। अशिक्षा अर अज्ञान रै कारण उण मे थोड़ी विकार जरूर आयी है, पण सस्कृति रा मूळ सस्कार हाल उठै मौजूद है । लोगा मे मिनखपणी सफा परवारियौ कोनी । वे सीधा, सरल अर सज्जन है । वेईमानी, लुचाई, लफगाई के रुळियारगी हाल उठै इतरी कोनी पूगी । मिनख री आख मे शरम है, सफा मरी कोनी । थोड़ी घणी जिकी कमिया -खामिया जमाना रै मुजब आयगी है, वे कोशिश किया सुधारी जाय सकै ।

वे खाधी पीधी रा धणी अर भावुक मन रा खरीका आदमी हा । छोरा छावरा सगळा आप आपरै पगा माथै ऊभा है । नौकरी सू निवृत हुया उणी'ज भात वे आपरी घर गिरस्थी कानी सू ई निवृत हा । लारली कोई प्रकार री चिंता वानै ही आथ कोनी। नौकरी मे रैवता थकाई उणा आपरी मानस बणायलियो हौ के सेवा निवृति रै पछै वानैं गाँव मे जायनैं की रचनात्मक काम करणी है । पीड़ित मानवता री सेवा करणी है अर भारतीय सस्कृति रै उत्थान मे योगदान देवणी है । सासारिकता रा तो मोकळा काम पार पड़ग्या । अबै तो लारला दिना मे की शुभ काम करता थका हरि भजन मे दिन बितावणा हा । जिण माटी मे जनम लियौ उणरौ फरज उतारणौ हो ।

पचास साठ बरसा पै ल री आपरौ टाबरपण वानै आज ई आछी तरिया याद हो । वारै उण दो-तीन सौ घर री वस्ती आळै नैनैसीक गाव मे आपसरी मे कितरौ सप हो ? सगळी कौमा रा लोग आपसरी मे भाईया ज्यू कितरा हिळ मिळ नै रैवता ? यू तो खैर मिदर होवै उठै उखरड़ा ई होवै । कोई उगणीस-बीस निकळ जावती तो लोग उणनै धुरकार नै ठायै लावता । गाव मे बूढा वडेरा री काण पाळीजती, वारौ आकस मानीजतौ । वानै याद नीं आवै के गाव आळा कदैई आपसरी मे लड़ झगड़ नै कोरट-कचैड़ी चढ्या होवै । यू भेळा पड़या ठाम ई खड़वड़ै, सो कदैई कोई इसी मौको आय जावती तो च्यार सैंणा-समझणा मिळ नै आपसरी मे ई निवेड़ लेवता । आपसी मेळ मिळाप रौ औ हाल हो के जाणै ओ कोई गाव नी होयनै अेक कुटुव होवै ।

वानै आपरै टाबरपण री अेक घटना याद आवै – गाव मे उण वखत हरिजना रा कोई तीन च्यारेक घर हा । सगळा री माली हालत माड़ी ही । या मे सू अेक घर मे नैनम पड़गी । माईत चालता रहया अर लारै नैना-नैना टावर रैयग्या । टावरा मे ई सै सू मोटी छोरी बारेक बरस री ही । गाव आळा मिळनैं इण घर री पूरी मदद राखी। च्यार - छ बरसा मे मोटीड़ी छोरी ब्याव जोगी हुई तो गाव आळा मिळ'र उणनैं फेरा देवण रौ विचार कियौ । बाबूजी नै याद है के उण वखत वारा दादीसा मौजूद हा । उणा गाव नै भेळौ करनै कह्यौ –"म्हारै कुटुव मे तीन पीढी सू कोई कन्या कोनी । जे सगळा राजी होय नैं रजा देवौ तो म्हे इण ब्याव री सगळी खरचौ अेकला उठाय नैं कन्यादान करणी चाहू ।"

कोई जिण भात आपरै सगी पोती री ब्याव रचावै, दादीसा उणी'ज उमग अर उछाव सू उण हरिजन कन्या री ब्याव रचायौ, वरातिया री आछी सरबरा करीजी अर चोखौ दत्त दायजौ ई दिरीज्यौ। सीख देवती वखत गाव री कई भावुक आख्या आली होयगी। वाने खुद नै ई यू लाग्यौ हो जाणै वारी आपरी सगी मा जाई वैन सासरै जाय री ही।

गाव मे थाका-लागा अर गरीब गुरवा रै वास्तै जठै लागा रै मन मे इतरी ममता अर अपणायत ही उठै दुष्ट अर दुर्जना रै वास्तै उतरी ई करड़ाई अर आकस पण ही।

वावूजी नैं याद आवै के उण वखत राजपूता रे वास मे अेक डोकरी रैवती। उणरै अेका-अेक मोट्यार बेटौ हो। वरसा पै ली वा बापड़ी वाळविधवा होयगी ही। पण कनै च्यार हळवा जमीन अर धीणौ धापौ होवण सू उणरी धाकौ धिकग्यौ। डोकरी री घर धणी रामचरण हुयौ तद बेटौ फगत अेक वरस रौ हो। उणै घणा फोड़ा भुगत नै टावर नै मोटौ कियौ। वा सुभाव री सफा सैणी, सीधी अर गरीवड़ी ही। अड़ीयै भड़ियै हरेक भाई सैण रै काम आवती। इण वास्तै दूजा ई उणरी मदद राखता। छोरौ मोटौ नी हुयौ जितरै वरसा लग चौमासै आया भाई सैण वखतसर उणरा खेत जोत देवता अर पूरी ऊपर सापर राखता।

बेटौ मोट्यार हूया उणै काम-काज सभाळियौ तो डोकरी रै जीव नैं नेहचौ हुयौ। लोग वाग ई सोचण लाग्या के अैवै उणरे सुख रा दिन आया। अवै वा च्यार रात आराम सू जिदगी वितासी। पण कोई री करम किणै उघाड़ नै देख्यौ है। डोकरी रै भाग मे शायद दुख ई पाती आयौ हो। उणरै वेटा मे घणा लूण लक्खण नी हा। इणरै अलावा ब्याव हुया उणरै लारै जिकी वहू आई, वाई महा ओटाळ ही। सोढा घर साखली आळी वात होयगी। थोड़ाक दिना मे वेटौ तो अगाई वहू रै घाघरै री जू वणग्यौ। वा डोकरी रै खिलाफ आपरै धणी रा कान भरण लागी अर वो होळै होळै आपरै मा री उपेक्षा करण लाग्यौ। उणरी सेवा चाकरी तो आगड़ी गई पण रोटा रा ई जादा पड़ण लाग्या। डोकरी छेवट भूखा मरती माचौ झाल लियौ। अेक दिन वहू खूव आगा पाछी करी-"डोकरी री तो डेळी चूकगी है, वा मिनखा रै उठै जायनैं टुकड़ा खावै अर आपानै भाडती फिरै।" पूत तो परवारियौड़ा ई हा। उणै लुगाई री वाता मे आय'र डोकरी नैं सागीड़ी जतरायदी।

गाव मे वात छानी रही कोनी। सुणी जिणनैं ई घणौ दुख हुयौ। सिंझ्या रा गाव आळा सगळा मिंदर री चौकी भेळा हुया अर डोकरी रा सपूत नै उठै बुलायौ। सगळा उणनै सागीड़ौ ऊचौ नीचौ लियौ अर उणरौ गाजनौ अेक टका रौ कियौ जाजम माथै उणरौ भाईपौ ई मौजूद हो। उणा सगळा अेक सुर मे कह्यौ-"जे इण नादार सू डोकरी री सेवा चाकरी नी होवै तो म्हे करणनै त्यार हा। आ इण कपूत री मा है तो म्हारी पण मा है। म्हे इणरै सेवा चाकरी री प्रवध मतै ई कर देसा

आ जीवै जितरौ ई सगळी खरची इण नालायक कर्नै सू जूता मार नैं वसूल करता रैसा ।'' बावूजी नैं आपरै टावर पण रै वखत री इसी कई घटनावा याद ही । आ वारी मजबूरी रही के नौकरी करती वखत वे वरसा लग गाव सागै इतरौ सपर्क नीं राख सक्या पण गाव कदैई वारै अतस सू अळगौ नी हुयौ । वो सदीव वारै मन मे वस्योड़ौ रह्यौ ।

गाव मे बावूजी रौ पुश्तैनी मकान अेक मामूली काचौ टापरौ हो । वरसा लग सार सभाळ नी होवण सू वो सफा खळविखळ होयग्यौ हो । रिटायरमेंट पछै उणा उणरी मरम्मत करायनैं की रैवण जोग वणायौ । की खेती री जमीन ही, वा उणारा कुटुवी भाई खड़ता अर खावता । सरकारी कागदा मे वावूजी रौ नाम जरूर चालतौ, पण वरसा सू कब्जौ भाईड़ा रौ हो । वावूजी गाव म आय नै रैवण रौ विचार कियौ तो सै सू पै'ली तो वारा भाईड़ा नै अटपटौ लागौ । वे तौ आ धार नैं वैठा हा के पाचै पनरै आ जमीन वारै कब्जै ई रैवणी है । वानै आ सुपनै मे ई उम्मीद नी ही के वावूजी वुढापै मे पाछा आय'र गाव मे रैवास करसी । जिणा सगळी उमर शहरा मे आराम सू काढ़दी वे अवै इण काळा केरा मे काई लेवण नैं आसी ? पछै लारली पीढी तो आवण रौ सवाळ ई नी हो । पण वावूजी जद गाव मे आयनै मकान री मरम्मत करावणी शुरू करी तो वानै खतरौ पैठग्यौ ।

दूजौ खतरौ पैठौ गाव रा सरपच रै मन मे । वो लारला वीस साल सू पचायत माथ कब्जौ जमाया वैठौ हो । गाव मे नैखम दो धड़ा वण्यौड़ा हा, जिणानैं वो आपसरी मे लड़ायवौ करतौ अर आपरौ पापड़ सेकवौ करतौ । जमानौ देख्योड़ौ पुराणौ पापी अर घाघ आदमी हो । पाच मे सू तीन उठावतौ अर दोय मे पाती न्यारी राखतौ । उणं गाव मे वावूजी रा पगल्या होवता देख्या तो उणरै मन मे ई खतरौ पैदा हुयौ । आ नुवी गिरै फेर गाव मे कठै सू आयगी ? पाधरा शहर मे *पड़्या हा, अठै अवै काई कादा काढ़ण नै पधारया है ? छता पण वो उपरी मन सू* वावूजी नैं घणै हेत प्रेम सू मिळयौ–''अे तो बस्ती रा भाग समझौ के आप जिसै अनुभवी अर मोटै आदमी गाव मे रैवण रौ विचार कियौ । आ ई तो गाधीजी री सीख ही । जे घणकरा वुद्धिजीवी यू करण लाग जावै तो म्हैं कैवू के गावड़ा री तो काई पण पूरै देस रौ कल्याण होय जावै ।'

वावूजी सरपच री लटा पोरिया सू घणा राजी हुया । वानै आ टा कोनी ही के डूमणी रै रोवण मे ई राग होवै । वे तौ सरलमना आदमी हा अर धवळौ जितरौ दूध समझता । वारै दिमाग मे गाँव रौ आज सू पचास साठ वरस पै ल रौ नक्शौ जम्योड़ौ हो । वानै ओ ध्यान कोनी ही के पचास वरसा मे तो लूणी नदी मे मोकळौ पाणी वैवनैं जावतौ रह्यौ । देश मे आजादी आई अर आजादी आपरै सागै कई नुवी वाता ई लेयनैं आई ही । गावा मे सत्ता री राजनीति रौ चलण होयग्यौ । जिणसू आपसी मेळ-मुलाकात अर अपणायत भूतकाळ री वाता वणनै रैयगी । गाव गाव अर घर-घर

र फूट-फजीती अर धड़ावदी पैंठगी। सार्वजनिक जीवण मे भ्रष्टाचार अेक आम बात हुयगी। उणरै प्रति कोई रै मन मे सूग ई नी रही। ऊपर सू लगाय ने नीचे ताई सै दौड़ जाणे सुळी लागग्यी। जिणरी जितरी हैसियत अर गुंजाइश ही, वो उतरी ई बाकी फाड़ण लाग्यो। पुराणा ठाकर ठैठर अर सामत खतम हुया तो वारी ठौड़ नुवा सामत पैदा होयग्या। फरक फगत इतरौ ई पड़यौ के नाम बदळग्या पण काम तो वे उणा सू ई नपावट करण लाग्या। पै'ली गाव मे अेक ठाकर होवण सू उणरी'ज दैंण रैवती। पण अवै तो कई ठाकर पैदा होयग्या जिणसू दैंण मोकळी वदगी। मूळ बात मिनख रा जीवण मूल्य खतम होवण लाग्या। बदमाशी, लुचाई, लफगाई, बेईमानी अर ल्ळयारगी गावडा म ई आडैकट चालण लागी। नी नैना-मोटा री कोई काण-कायदो रह्यो अर नी आख री लाज शरम। पुराना मिनख तो जाणै जूनी आख्या नुवो जुग देखण लाग्या।

बाबू शिवलाल जाणै इण हालात सू मफा अजाण होवै इसी बात तो नी ही। पण वारी धारणा आ ही के इसी सगळी बुराईया नगरीय जीवण मे ई आई है। गावड़ा हाल या सू अछूता है। पण असलियत तो वानै होळै होळै अठै आयनै रहया सू ठा पड़ी। दूध मे पाणी अर घी मे भेळ सेळ तो अठै आम बात ही। शहर मे मोल मुताबिक माल तो मिळ जावै। पण अठै तो धूड़ नै धान सै अेक भाव हा, गाज होवै तो मोलावौ।

बाबूजी हो काकाई भाई रामलाल जिको वांरै वट री जमीन खड़तो अर खावतो सरपच री मूछ रौ बाल बण्योड़ो हो। वो ही महा ओटाळ अर घोई आळ आदमी हो। इण लागा मिळ र गाव में आपरै माजनै रा दस-वीस लोगा री गुटबदी बणाय राखी ही। इणा म सू कईक तो वार्ड पच बण्योड़ा हा अर बाकी वारा चमचा नै चेला चाटी। आ चडाळ चौकड़ी गाव मे बरसा सू अेक छत्र राज जमायोड़ी बैठी ही। अे लोग इण बन रा आकल साड हा। वे आपरो मन धारियो करता अर निशक छूटा चरता। कोई वानै कैवण के पालण आळो नी हो। कई नस्ली साड बण्योड़ा ताडूकै हा तो कई रोड़ा खोदका बण्या फूफाड़ा करता फिरै हा। वख वैठतो उटै वे सींगड़ा भिड़ाय देवता अर कोई माथा ऊपरलौ सोटा आळो मिळ जावतो तो थच-थच पाटा करता गऊ रा जाया ई बण जावता।

सरकारी अमला रै नाम माथे इण गाव मे कुल मिळायनै च्यार आदमी हा पटवारी, मास्टर, ग्रामसेवक अर वैद्य। अे सगळा इण चडाळ-चौकड़ी रा चोटी चडिया गुलाम हा। इण मे ई उणारो हित हो। पटवारी अर ग्राम सेवक तो सरपच रा खास कारिंदा हा। वारी सहायता सू ई ओ सगळो तत्र चालतो। बाकी वैद्य अर मास्टर तो बापड़ा जी हजूरीया अर लारै-लारै पूछड़ी हिलावणिया प्राणी हा। यू वैद्य एकै पजै मावधान हो अर नोट मेळा करण म लाग्योड़ो हो। **दूजी** उणनै कोई बात सू मतळब नीं हो। अठीरा इण गावड़ा म इलाज रो दूजो **कोई साधन** नी होवण सू

उणरो धधौ जबरो चालतौ । नाम आयुर्वेद री पण काम सगळौ अेलोपैथी री गोळीया अर इन्जेक्शना माथै चालतो । सरकार री तरफ सू आयुर्वेद री दवाईया कीं आवती आय कोनीं । थोड़ी घणी जिकी बजट बच्चीड़ी हो वो ऊपर दफ्तरा मे बैठा तिलकधारी पडा अरोग जावता । अेलोपैथी री उल्टी सीधी दवाईया सू पाच दस मरीज आई साल सुरग सिधार जावता तो हरि री मरजी । भारत री जनसख्या यू निरन्तर वृद्धि माथै ही सो पाच दस मरिया सू काई फरक पड़ती ? मौत आई उण्नैं तो जावणी ई हो । दस बरसा पै'ली जद ओ वैद इण इलाकै मे आयौ तो लोग कैवे के इणरै पेट रै लारै कारिया लाग्योड़ी ही पण अबै सुणी के वो अेक जीप राखण री मतौ करै हो । रही बात मास्टर री सो वो सरपच रै घरा सुबै-साझ हाजरी देयनै अठी उठी री आगा पाछी किया पछै फगत दो बाता री ध्यान राखतौ अेक तनखा री अर दूजी छुट्टिया री । बाकी बळती-बळती जाईनी डूभा रै घरा । डेढा रा रामदेवजी आधै खोपरै ई राजी हा ।

रामलाल अमल बेचण री धधौ ई करतौ । यू गाव में दो च्यार नैना-मोटा अमल रा फुटकर वैपारी औरू हा, पण रामलाल री तो थोक वैपार चालतौ । हीराराम विश्नोई हर महीनै दूध लेयनै इणरै कनै आय जावतौ । औ उणसू अमल बणाय नैं आगै फुटकर वैपारिया अर अमलदारा नैं बेच देवतौ । लारला दस पनै बरसा उणैं टना बद अमल बेच दियौ होसी । गाव रा टेराया अर मुफ्तिया अमलदार रामलाल रै अमल रा बखाण करता– 'रामलालजी रै अमल री क्यू बात करौ ? भतीज रै लियोड़ी काकै नैं उगै ।"

अमल रा थोक बध वैपार रै अलावा ओ गाव दारू उत्पादन रै वास्तै ई मशहूर हो । यू समझौ के दारू उत्पादन तो अठारौ प्रमुख कुटीर उद्योग हो । घर-घर ऊखरड़ा अर खेता री वाड़ा में दारू रा मटका भरिया लाधता । आप मलाई मणा बद खरीदौ अर ऊभा होयनै अरोगौ । सरपच रौ भतीज अर दो तीनेक दूजा घर तो इणरा प्रमुख उत्पादक हा । बाकी कुटीर उद्योग रै रूप मे नैना मोटा सयत्र तो कई घरा मे लाग्योड़ा हा ।

इण दोनू उद्योगा रै पाण अठीरा गावटा मे अमलदारा अर दारूड़िया री सख्या मोकळी हुयगी ही अर दिन-दिन न्यात वधिया जावै ही । गई साल सू तो गाव मे दारू री अेक ठेकौई खुलग्यौ हो । जिणसू देशी अर विदेशी सगळी तरै री माल जरूरत मुजब आराम सू मिल जावतौ ।

अछेवा री बस्ती मे अमल करता दारू रौ वैवार वत्तौ हो । आजादी पै'ली अे सगळा अछेव आप आपरै परपरागत धधा मे लाग्योड़ा हा । भावी साळ वणता तो दूजौड़ा कीं औरू धधौ करता । आगै नाल'र कीं मोट्यार चिणाई रौ धधौ सीखग्या अर कारीगर वणनैं पक्का मकान बणावण लाग्या । इण धधै मे आछी मजूरी मिळती, इण कारण लारली पूरी पीढ़ी तो इण धधै मे ई लागगी ।

बाबूजी गाव मे पूगा उण वखत भाठै री काम करणिया कारीगरा री दैनगी साठ सू लगाय नैं अस्सी रुपिया रोज ही अर साधारण मजूर री बीस-तीस रुपिया रोज। इणसू कारीगर अर गजधर तो घर-घर त्यार होयग्या पण मजूर कम रैयग्या। हालत आ होयगी के काम पड़या गजधर तो आसानी सू मिळ जावता अर मजूर दोरा मिळता। अेक गजधर जठै ई काम माथै जावती, घर रा सगळा लुगाई टाबरा नैं मजूरी माथै लगाय देवती। इण भात आवक बढ़ण लागी तो खरचै रा मारग ई खुलण लाग्या। कैवत है के बकरी रै मूंडे मे काचरौ माय जावै पण मतीरौ कानी खटै। इण कारण इण बस्ती में सुरापान अेक साधारण बात होयगी। अधारौ पड़ता ई भटा भट्ट करती बोतला खुलण लागती अर ठायै ठायै मेहफला जम जावती। इणौ सागै अेक बात औरू देखण मे आई के इण लोगा मे टी बी री बिमारी खूब फैलण लागगी। वैधजी री कैवणौ हो के ओ रोग भाठै री रजी सू पैदा होवै। पण मूळ कारण भलाई की हुवौ, सुरापान इण रोग नै बढावण मे सहायक जरूर हो।

बाबूजी ओ सगळौ रासौ आपरी निजरा देख्यौ तो देखनै हैरान होयग्या। उणारौ तो अपाई मोहभग होयग्यौ। गावड़ा री जिदगी रै प्रति वारै मन मे जिकी धारणा ही, अठै तो हालत उण सू सफा उल्टी निकळी। आज सू आधी सदी पै'ल रा गाव अबै ओळखणाई नी आवै हा। गाव रा कई बूढा-वडेरा अर मौजीज मिनख वानैं याद आवण लाग्या - कितरा सरल मना अर सही मारग चालणिया लोग हा। भलाई आज झूपडा री ठौड़ पक्की हवेलिया बणगी है, धाका लागा बळदा री ठौड़ घर-घर ट्रेक्टर आयग्या है। पण वो मिनख पणौ अर अपणायत तो जाणै सफा लोप ई होयग्यी अबै तो खोअे खावणा अर नाठ जावणा। सैंणा, सरल अर ईमानदार मिनख तो अबै 'बापड़ा' गिणीजै नैं लुच्चा, लफगा अर बेईमान हुस्यार नैं बड़ा आदमी मानी जै। छतापण उणा हिम्मत नी हारी। वारै मायलै आर्यसमाजी सस्कारा जोर कियौ अर मन मे उल्टी आ भावना पैदा हुई के गावा मे आय'र काम करण री अबै उल्टी ज्यादा जरूरत है। अठै भलाई लाख बुराईया आयगी पण वे हाल थोड़ा लोगा मे ई आई है। गावा री आम जनता हाल अज्ञानी, निरक्षर, धरम भीरू नैं डरपोक है। आगळिया माथै गिणै जितरा अे चालाक लोग वारी कमजारी री फायदौ उठायनै आपरी पापड़ सेकण मे लाग्योड़ा है। प्रजातत्र मे कितरी ई कमिया -खमिया होवता थकाई इणमे आ खूबी तो जरूर है के सत्ता री असली चाबी बहुमत रै हाथ मे है। आज गावा री बहुमत अनपढ, शोषित अर डरपोक जरूर है पण इण वर्ग नैं जे सगठित कियौ जावै अर हिम्मत बधाई जावै तो दूजी भलाई ओ की मत करौ पण इण भ्रष्ट सत्ता रै नाथ तो घाल ई सकै। उथैल नैं ऊधी तो नाख ई सकै। आज गाव री आम आदमी दब्योड़ौ इण वास्तै है के उणनै सही नेतृत्व कोनी मिळै। बिना सबळ सहारै रै वो चावता थकाई इण भ्रष्ट व्यवस्था री मुकाबलौ कोनी कर सकै। इण वास्तै पै'ली इणा मे जागृति लायनैं विश्वास पैदा करण री जरूरत है।

बावूजी नैं लाग्यौ के इण काम मे धारमिक भावना रै माध्यम सू आछौ काम करीज सकै । लोगा नैं सरूपात मे धरम रै मारफत सगठित करनैं या मे जागृति पैदा करी जाय सकै । इण सू वा मे चारित्रिक सुधार आसी, जिणरी अबार सख्त जरूरत है । चारित्रिक सुधार पैदा हुया राजनैतिक चेतना अर दूजी बाता मतैई सरल होय जासी । खास बात आ के औरू कोई माध्यम सू जागृति लावण ताई सीधी कोशिश किया विरोध अर टकराव रौ खतरौ बेसी हो जासी, पण धरम ओक इसौ माध्यम हो जिणरी विरोध होवण री गुजाइश कम ही ।

गाव रै बारली कानी शिवजी रौ मिदर आयोड़ौ हो अर मिदर रै कनैं ई अेक पुराणौ मठ हो । मठ रा साधु शिवमिंदर मे सेवा-पूजा करता । कोई जमानै मे इण मठ री पूरै इलाकै मे घणी ख्याति रही । ओ मठ चोखळै चावौ हो । रियासती जमानै मे मठ नैं मोकळी खेती जोग जमीन मिळयोड़ी । इणसू मठ रौ खरचौ ठाठ-बाट सू चालतौ । मठ रा गादी पति महतजी बाजता अर समाज मे वारी आछी मानता ही । इण गादी माथै कई त्यागी-तपसी अर जोगा सत रहया, जिणारै कारण इण गादी री घणी नामवरी रही । लोग कैवे के छपनिया दुकाळ मे इण मठ मे भूखी जनता ताई नित रोज च्यार पाच मण धान रौ खीचड़ी रधीजतौ अर बाटीजतौ । जमानै मुजब अबै तो मठ रौ ठरकौ वो नी रह्यौ छता पण लोगा रै मन मे श्रद्धा ही । गुरू पूनम माथै साल मे अेक बार अठै जबरौ मैळौ भरीजतौ जिणमे कनलै गावा रा मोकळा लोग अठै भेळा होवता ।

बावूजी मठ नैं धारमिक भावना सू जन जागृति री आछी केन्द्र समझनैं चौमासै रै दिना मे अठै रामायण पाठ शुरू करायौ । सरुपात मे श्रोता कम ई आवता पण होळै होळै लोगा नै रस आवण लागौ अर मोकळा लोग आवण लाग्या । बीच-बीच मे बावूजी ई श्रोतावा नैं धरम रा दो बोल सुणाय बी करता । वॉरै प्रवचन रौ मूल विषय औ रैवतौ के 'भगवान राम रौ अवतार ससार मे अन्याव अर अत्याचार रौ मुकाबलौ करनै उणनैं मेटण ताई हुयो हो । इण काम मे वानैं कई फोड़ा भुगतणा पड़या पण उणा आपरौ धरम जीवण लग निभायौ । दुष्टा रौ दमन करनैं भगता री रक्षा करी । इणी'ज भात हरेक मिनख नैं भगवान राम रै बतायोड़ै मारग चाल'र अन्याव अर बुराई रौ तो विरोध करणौ ई चाइजै ।'

मठ रै सपर्क मे आवण सू बावूजी नै कड़वा अर मीठा दोनू तरै रा अनुभव हुया । इणसू वारौ आम जनता सागै सपर्क बढ़यौ अर कई इसा मोट्यार निजरा चढ़या जिकौ भविष्य मे गाव नैं आछौ नेतृत्व दे सकै हा । कड़वौ अर माड़ौ अनुभव ओ हुयौ के जिण मठ री व्यवस्था नै वे खरी सोनी समझता वा सफा कथीर निकळी। इसौ जूनौ अर जाणीतौ धारमिक स्थळ होवता थकाई उठै सगळा काम अधारमिक होवता । मौजूदा वखत मे मठ री गादी माथै महत रै रूप मे जिकौ साधु हो वो भैरव रै नाम माथै अेक कळक हो । इणरै गुरू रा तीन चेला हा । गुरू आपरै

हाथ सू कोई नैं चादर कोनीं ओढ़ाई। तीना मे ओ सै सू चालाक अर ओटाळ हो। गुरू रै रामचरण हुया गाव री टीकमी कमेड़िया सू साठ गाठ करनै इणैं दूजौड़ा दोनू गुरु भाईया नैं कूट मार नै काढ दिया अर खुद महत वणनैं बैठग्यो। आज मठ री आ हालत ही के वो गुडा अर अपराधिया रौ खास अड्डौ बण्यौड़ो हो। दारू खोरी, मास भक्षण सू लगाय नैं रुळियारगी तकात सगळा सत्कर्म अठै वेखटकै चालता। सरपच अर उणरा सगळा चमचा बावै रा पक्का पक्षधर हा। बाकी तो सगळी धरम भीरू जनता गाडरा री दाईं ही, जिणनैं हाकौ उठीनै ई माथौ नीचौ करनैं वुई जावै ही। इण भात इण भ्रष्ट राजनीति नैं, विकृत धरम रौ ई सहारौ मिळयोड़ो हो।

महत रा चालाक भगता आम जनता मे आ वात फैलाय राखी ही के बावौजी तो अेक पूगौड़ा सिद्ध पुरुष है। अे जाण करता गैलाया करै नी तो दुनिया बारै लारै पड़ जावै। वारै वचन सिद्धि रा कई किस्सा घड़नै त्यार कर लिया हा, जिणानै वे मौकौ आया सुणायवौ करता। इण भात भोळी जनता भरमीज जावती अर महतजी नैं अेक पूगौड़ा अर वचनसिद्ध महात्मा मानती।

हर सोमवार नैं दिनूगैं मठ मे अमल गळीजती। उण वखत सरपच समेत पूरी चडाळ चौकड़ी उठै भेळी होवती। महतजी महाराज गादी माथै विराज जावता अर दूजा सगळा जाजम माथै वैठता। इण कानूफ्रेस मे गाव री सप्ताह भर री रपट पेश होवती अर कई जरूरी फैसला ई लिरीजता। जद सू वावूजी अठै आयनै रैवण लाग्या, इण लोगा रै चरचा री मूळ विषय वे वण्योड़ा हा। कोई पण प्रसग मे वारौ आडी डोडी नाम जरूर आवतौ। सरुपात म तौ इण कानूफ्रेस मे हर सोमवार नैं वानै खुद नैं बुलावण री कोशिश रही। पण अेकाधवार जायनै जद उणा खुद जावणौं वद कर दियौ तो वारौ लारौ छूटग्यौ। पण वानै उठै री सगळी गतिविधिया री पुख्ता रपट घरै वैठा मतैई मिळ जावती।

वावूजी रै प्रयत्ना सू गाव म 'श्रीराम मडळ' रै नाम सू अेक सगठण थापित हुयौ। इणरा सदस्य घणकरा वे मोट्यार हा जिकौ सरपच रै सामलै धड़ै रा हा। वावूजी रै कारण गाव रै पीड़ित वर्ग नैं अेक लूठी नैतिक सहारौ मिळग्यौ, जिणरी गाव रै मानस माथै गेरही असर पड़यौ। अवै वानै ओ विश्वास वाधग्यौ के वे सगठित होयनै गाव री आसुरी शक्ति री मुकाबलौ कर सकै। चडाळ चौकड़ी हर सोमवार नैं सुवै मठ मे अमल गाळती तो श्रीराम मडळ कानी सू सिंझ्या रा सत्सग री आयोजन रैवतौ। मडळ रा वरिष्ठ सदस्य वींजी पड़िहार, करनौ चौधरी, नेमौ खाती, कानौ माळी अर रामौ भाभी इत्याद मोट्यार उणमे विशेष रूप सू हाजर रैवता। श्रीराम मडळ सामलै धड़ै म 'हरामी मडळ' रै नाम सू विख्यात हो। पण आ खिलाफत दवी ढकी अर छानै चुरकै ई होवती मूडै तो सै मीठा ई रैवता। कोई री विरोध करण री हिम्मत नी ही। इणरी मूळ कारण वावूजी हा। वे सरकारी नौकरी मे ऊँचै ओहदै माथै रहयोड़ा दवग प्रकृति रा आदमी हा। इण कारण राज तेज म वारी पायौ जम्योड़ो हो। गाव आळा वारै सामी की वखत

नी राखता । सरपच अर उणरा चमचा इण बात नैं मन मे आछी तरिया जाणता के इण आदमी री विरोध करनै आपा पार नी पड़ सका। इण कारण वे गतागम मे पज्यौड़ा हा। वानै तो ओई समझ मे नी आवै हो के ओ डोकरी हर तरै सू सुखी होवता थकाई अवै गाव मे आयौ काई लेवण नैं है ? अर सै सू मोटी बात आ के औ अठै आयनै करणी काई चावै है ? कई लोगा री धारणा आ ही के वे आगला चुणाव मे अेम अेल अे बणवा रा सुपना देखै, तो कई आ कैवता के खर दिमाग होवणा सू वेटा सागै यारी बणी कोनी। उणा घर बारै काढ दिया है। अवै वैठी सामी काई करै ? मढ़ी पाड़नै फैरू करै। इण वास्तै गाव मे आयनैं फालतू माथौ लड़ाय रह्या है।

खैर अे लोग मन मे भलाई की जाणौं पण इणा मे बाबूजी री खुलौ विरोध करण री हिम्मत नी हा। यारी ठौड़ कोई दूजी होवती तो अे कदेई मार-कूट नै भगाय देवता। पण ओ तो डाढ हेठलौ काकरौ हो जिकौ नी तो गिटणौ हाथ हो अर नी थूकणौ। इणरै अलावा बाबूजी आज ताई वानै विराध री कोई मौकौ ई तो नी दियौ। वे लोग यारै श्रीराम मडळ नैं हरामी मडळ तो कैय सके हा पण आ किया कैवता के थै इण छोरा नैं सगठित करनैं म्हारी जड़ा मत खोदौ, इणारी नैतिक साहस वढायनै म्हारी जमी-जमाई दुकानदारी मत विगाड़ौ, म्हारै अमल दारू रा वैपार मे भज मत पाड़ी के म्हारै अनैतिक कामा मे आडा मत आवौ।

इण भात इण गावड़ा मे सत अर असत री लड़ाई चेतगी। पण हाल कोई हळगी नी हुयौ हो। धुवौ भाय री माय गोटीजै हो। झाळौ झाळ लागण वास्तै पवन रै अेक झपीड़ा री जरूरत ही। पछै तो अगनी चेतण मे कोई देर नी ही।

अर छेवट वो झपीड़ौ लाग ई ग्यौ। आग धपळ धपळ करती बळवा लागी। उन्हाळै री मौसम हो अर दिनूगै रौ वखत। गाव माथै आळस रौ वातावरण छायौड़ौ हो। च्यारू मेर आटौ पीसती चाकिया री मधुर गरगरहाट अर विलोवणा री गेहरी धमक सुणीजै ही। घरा मे सू धुवौ निकळ नैं आभै मे जमण लाग्यौ हो। की लोग लोठा-लोटिया भरनैं वन मे जावण री त्यारी करै हा तो घण करा प्रभात रै शीतळ पवन री गेहरी खुमारी मे आख्या मीच्या आराम सू पड़या हा।

इतराक मे अेकण सागै पाच छ जीपा अरडाट करती मठ रै आगै आयनै थमी। अेकाध जीप तो खैर गाव मे आवती-जावती ई रैवती पण अेकण सागै इतरी जीपा आवणी खतरै री घटी ही। वार्ड पच गोबरियौ रवारी वन म जावतौ पाछौ वळियौ अर गाव मे की गारियौ पड़यौ री खबर देवण नैं दोड़'र सरपच रै घर कानी गयौ। पण सरपच तो घरै कोनी हा। जीपा अेक्साइज अर पुलिस विभाग री ही। दारू री भट्टिया अर अमल रौ जखीरौ पकड़ण नैं आयौड़ी ही। ऊपर सू कोई सख्त ऑर्डर आयौ हो अर इण पार्टी कनैं पुख्ता प्रमाण हा। अठा ताई के जठै जठै भट्टिया चालू ही के स्टाक भेळौ कियोड़ौ हो, उण वाड़ा अर खेता रा नक्शा त्यार कियौड़ा हा। अेक्साइज पार्टी मारग बैवता दो च्यार जणा नैं ठाया बतावण ताई

पकड़या अर जीपा फटाफट ठिकाणा माथै पूगगी । ठीड़-ठीड़ इण कुटीर उद्योग रा सयत्र अर मटका वद माल त्यार हो । रामलाल रै घरा बीस किलो अमल अर दो किलो दूध मिळयौ । वे लोग पचनामौ करनै सगळो जखीरौ सागै लेयग्या अर इण सिलसिलै मे आठ-दस गिरफ्तारिया हुई । अखबारा म खबरा छपी अर गाव री नाम री ठीड़ चावौ होयग्यौ । इण अचाणचक पड़ी धाड़ सू गाव मे तो काई पण आखे चोखलै मे खलवली मचगी । गाव गाव अमल अर दारू रा वैपारी मौजूद हा । इण इलाकै मे बरसा सू ओ धधौ आराम सू चालै हो । पुलिस अर ऐक्साइज रा अफसरा रै चौथ वधी बधाई ही, टैमसर पूग जावती । इणसू वारी छत्रछाया मे बरसा सू ओ वैपार शांति सू चालै हो । पण अबकाळै तो इण अफसरा नै ई ठा कोनी पड़ी । न जाणै किणी बराबर पुख्ता प्रमाणा सागै ठेट ऊपर शिकायत करी ही । इण कारण ऊपर सू दवाव पड़या आ जोरदार कारवाई स्पेशल पार्टी रै जरियै अचाणचक ई हुई। मामली इतरौ सगीन बण्यौ के पकड़ीज्या उणारी जमानत ई नी हुय सकी ।

इण लोगा री तो आ आम धारणा बण्योड़ी ही के हाथ पीला तो जगत गोला। इमा मामला मे हाथ थोड़ी ढीलो राख्यौ के मामलौ रफा दफा । इण धधा मे पैसा कोई पसीनी करनै तो कमाईजै कोनी । पछै देवण मे हरज काई है ? बरसा सू ओ धधौ चालै हो । अमल री दूध तो टेट माळवा-मेवाड़ सू आवतौ । पण कदैई कोई हाला हीची नीं हुयी । कोई रै पेट री पाणी ई नी हिल्यौ । पण अबकाळै तो राम जाणै काई हुयी के कठैई कोई थाग ई नी लागी । सरपच लूठी रकम लेयनै टेट जिलास्तर रा अफसरा अर नेतावा कनै जाय आयौ पण कठैई थाग नी लागी । पकड़ीज्या जितरा सगळा नै ई सजा हुयगी अर डड मूळ हुयौ सो न्यारौ ।

गाव रा ऐक दो वार्ड पच अर चौकड़ी रा खाम खास मबर तो जेळ मे हा पण सरपच अर रामलाल हाल बारै हा । हीराराम विश्नोई फरार हो । उणा विचार कियौ के अबै यू चुपचाप बैठा काम पार नी पड़ै । इण नेतावा अर अफसरिया रै भरोसै तो की होणा जाणा नी है । हरामिया कनै आखी उमर घर चूयाया पण ऐन वखत माथै कोई काम नी आयौ । वानै आ पक्की तसल्ली होयगी के ऐ सगळा कबाड़ा बावूजी अर वारै हरामी मण्डल रा है । इण वास्तै शाति सू जीवणो है तो काटो गाव सू बारै काढणा ही पड़सी । नी तो दिन दिन इण लोगा रा हौसलो वढ़सी अर पछै ऐ हरामी जीवणी ई ओखी कर देसी । रामलाल री राय आ ही कै डोकरै री नाक वाढ़ दियौ जावै । औ चमत्कार हुया डोकरौ अठै सू टैका देय नासी अर सगळी दैण इज मिटज्यासी । इण वास्तै कोई न त्यार करनै ओ कवाड़ौ कराय दियौ जावै । इण काम सारू खरची जितरी ई लागै उणरी जिम्मेदारी रामलाल ओढली अर गुडा त्यार करण री जिम्मेदारी सरपच री रही । कैवत है के गोइडै री मौत आवै तद भीला रै झूपै वड़ै । घडाळ चौकड़ी रै विनाश री जोग आयग्यौ हो । सरपच कोशिश करनै दो इसा गुडा खोज ई लिया जिकौ लोभ रै वशीभूत होयनै बावूजी री नाख वाढ़ण नै त्यार होयग्या ।

सियाळै री मौसम हो अर रात री वखत । ठड ई उण साल अणूती'ज पड़ै ही। लोग वाग आप-आपरै घरा मे ऊडा वळनै गूदड़ा ओढ'र सूता हा । चोथ री चद्रमा आयमण माथै हो । गाव मे सोपो पड़ग्यो हो । पण वावूजी रै पाडोस मे नेमा खाती री खातरौड मे हाल जाग ही । उणरै अठै मेहमान आयौड़ा हा सो वैठा तापता रह्या अर वाता करता रहया । वावूजी ई आपरै वैठक आळै कमरै मे दरवाजौ वद करनै अेकलाई सूता हा ।

धाड आळी किस्सौ वण्या पछै गाव रै वातावरण मे मोकळी तणाव आयग्यौ हो । गाव रा दोनू धड़ा मनौमन आछी तरिया तणीज्योड़ा हा । मडळ आळा मोट्यारा वावूजी नै सावचेत रैवण री कह्यौ । अेक दो जणा तो वारै कनै रात रा सूवण री पेशकश ई करी । पण उणा आपरी आदत मुजव वात नै हस'र टाळ दी । डोकरा नै आपरी हिम्मत रै पाण डर भी लागती आय कोनी ।

आज ई वे निशक होयनै सूता घोर खाचै हा । खूणै मे लालटेन मद मद वळै ही । पाडोस मे नेमौ खाती अर उणरा मेहमान ई शायद सूयग्या हा । इतराक मे किणैई आयनै वारै दरवाजै री कूटी खड़खड़ायी । वे अेकदम जाग्या अर सूता-सूता ई पूछयौ –"कुण है भाई ?"

"अे तो म्हे इज हा सा ! थोड़ौ दरवाजौ खोलजौ !" वावूजी कनै गाव रा लोग रात विरात आयवौ ई करता । उणा सोच्यौ कोई मुसीवत मे फस्यौड़ी आयी होसी । वाकी इण हाड धुजावणी ठड मे इण वखत आधी रात नै घर वारै कुण निकळै ? वे श्रीराम ! श्रीराम ! करता उठ्या, लालटेन री रोशनी थोड़ी तेज करी मफलर माथै पै लपेटयौ, लट्ठ हाथ मे लियौ अर दरवाजौ खोल दियौ सामी देखै तो दो आदमी मूडा माथै अगोछा लपेटया ऊभा । अेक रै हाथ मे छुरै जिसी की चमकीली धारदार चीज निजर आवै ही । वारै आवता ई वे दोनू हिड़किया कुत्ता री गळाई वारै कानी ताचकिया । वावूजी चेत्यौड़ा हा, वे अेक कानी दौड़ग्या अर नेमा खाती नै जोर-जोर सू हाकौ कियौ । पाडोसी नेमौ मेहमाना सागै गप्पा मारतौ सूतौ ई हो के वावूजी रौ हाकौ सुणनै अचाणचक उणरी आख खुलगी । मेहमान ई जागग्या। उठीनै दोनू गुडा वाथ्या होयनै डोकरा नै जमी माथै पटक दिया अर नाक वाढण ताई मथवा लाग्या । इतराक मे नेमौ खाती अर उणरा मोट्यार मेहमान वीचली भी त कूद नै तुरत आय पूगा । आवताई उणा दोनू गुडा नै दाव लिया । वावूजी आळी सोट कनै ई पड़यी हो सो मार मार नै वारा हाड जोजरा कर दिया । पछै नेमा रै घर सू मजवूत रस्सी लाय'र वाध नै गुड़ाय दिया ।

वाथौड़ा मे वावूजी रै तो खासी लागी'ज ही पण नेमा रै हाथ मे ई छुरी रा अेक दो सातरा घाव लागग्या । रातौरात पुलिस थाणै मे खवर कराईजी अर दिन उगौ जितरै तो पुलिस री जीप ई आयनै गाव रै चावटै त्यार हुई । गुडा नै थाणै मे लिजाय'र सागैड़ा मचकाया तो सगळी वात चवड़ै आयगी । वावूजी रौ अेक वेटौ

पुलिस रै महकमै मे ई मुलाजिम हो, फोन सू खबर मिळता ई वो तूटै काळजै दौड़नैं आयौ । बावूजी अर नेमा नैं लिजाय'र अस्पताळ मे भरती कराया । सगीन पुलिस केस वण्यौ अर सरपच नैं रामलाल दोनू लपेटा मे आयग्या । पुलिस वानै ई पकड़'र लेयगी ।

अेकर फेरू इण गाव री नाम अखवारा रै पै'लै पानै माथै आयौ । पत्रकारा इण केस नैं पूरी विगत सागै छाप्यौ । प्रदेश री विधानसभा मे इण वावत ताराकित प्रश्न पूछीज्या अर मामलै पूरौ रग पकड़ लियौ ।

वावूजी साजा सातरा होयनैं पाछा गाव जावण नैं त्यार हुया तो घर आळा सगळा वानैं भात भात सू वरजण लाग्या पण वै मान्या कोनी । वोल्या-"इण वखत गाव नैं म्हारी खास जरूरत है । इसी अवखी वेळा मे म्है मूडौ लुकायनैं नी वैठ सकू। जठा ताई गाव वावत म्हारा अधूरा सुपना पूरा नीं होय जावै, म्हैं गाव नी छोड सकू। डर नैं वैठणौ तो कायरता है । उण भात तो मौत चोखी । इण वास्तै होसी जिकौ देखी जासी, पण म्हनैं गाव तो जाणौ ई पड़सी ।" घर आळा सगळा वारी आदत अर प्रकृति नैं आछी तरिया जाणता । इण कारण की कैवणौ-कावणौ वेकार हो । कोर्ट मे वो केस च्यार-पाच महीना ताई चाल्यौ । गवाह सवूत पेश हुया । गुडा सागै सरपच अर रामलाल नैं तीन-तीन वरस री सजा होयगी ।

इण नैनै सीक गाव मे ऊपरा-ऊपरी अे दो सगीन केस वण जावण सू लोग तौ हाक-वाक होयग्या । पूरै चोखळै में तहलकौ मचग्यौ । लोगा सुपनै मे ई आ वात नी सोची ही कै यू ई होय सकै । आ तो इसी वात हुई जाणै किणीई भरियै तळाव मे भाठौ नाख दियौ अर पाणी हिलोळै चढग्यौ । गाव री आसुरी शक्ति अगाई दवगी । दारू आळो कुटीर उद्योग सफा ठप्प होयग्यौ अर अमल रो गृह उद्योग ई खासी मोळौ पड़ग्यौ । छूटा चरणिया साड सरकारी फाटका मे वद होयग्या अर लारला रोड खोदका यच-यच पोटा करता गऊ रा जाया वणनैं ढोळै वैठग्या ।

यू करता सालेक भर मे पचायता रा चुणाव आयग्या । गाव मे इणरी चरचा होवण लागी । सरपच वणावण ताई सगळा री निजर वावूजी माथै टिक्योड़ी ही । पण वे सफा नटग्या । उणा गाव रा कोई ढग रा अर जोगा मोट्यार नैं सरपच वणावण री सलाह दीवी । वे वोल्या- "म्है अठै सरपच वणवा नैं कोनी आयौ । इण उमर मे म्हनैं सत्ता री भूख अगाई कोनी । गाव म्हारी जनम भोम है अर इणरी प्रति म्हनैं लगाव है । म्हैं आयौ तो अठै शाति री खोज मे हो पण भावैई अशाति मे पजग्यौ । छतापण कोई वात नीं । आज ई गावड़ा रै वास्तै म्हारै मन मे की सुपना है। म्हैं उण अधूरा सुपना नैं या सगळा भाईया री मदद सू पूरा करणी चावू । ईश्वर री मरजी होसी जितरा पूरा होय जासी । म्हनैं तो म्हारी फरज निभावणी है ।" वारी वाता सुण'र लोग घणा प्रभावित होवता । वे उणानैं देवता रै उनमान गिणता । पण कीं लोगा नैं वारी वाता समझ मे नी आवती । वे मन मे कैवता-'डोकरा री माथौ

भमग्यी लागै । घर मे सै बाता री जोगवाई, आखी उमर साहवी भोगवी अर अवै अठै आयनैं इण मूरखा सू क्यू माथो लड़ावै अर हाडका भगावै ? की समझ मे नी आवै ।' वास्तव मे वारै समझ मे आवै जिसी आ बात ई कोनीं ही ।

गाव मे चुणाव री चलवळ चालै ही । सगळा री आ मसा होयगी के अबकाळै ग्राम पचायत रौ चुणाव निर्विरोध होवणौ चाइजै । सरपच बणवा वास्तै जे बाबूजी काई कीधाई त्यार नी होवै तो वे कैवै जिणनैई सरपच, उपसरपच अर वार्ड पच मुकर करदो । इण वातावरण रै विचाळै गाव मे अेक औरू किस्सी वणग्यौ । आ कोई जोगरी'ज बात ही के अठै अेक बात जूनी नी पड़ती जितरै दूजी नूवी पैदा होय जावती ।

मठ रा महत जी कनलै गावरी अेक रुळेट राड रै सागै फस्यौड़ा हा । वा भगतण वणी टीला टवका करनैं बाबाजी रै दरसणा ताई मठ मे आयवौ करती । कई वार बावौजी ई उणरै घरा रसोई जीमण नै जायवौ करता । लुगाई रौ घर धणी अेक गरीब अर थाकल आदमी हो । वो बापड़ौ मनौमन घणीई दुखी रैवतौ पण की जोर कोनी चालतौ । तग आयौड़ी कई वार लुगाई नैं मारतौ कूटतौ ई खरा पण वा मानती कोनी । रोजरी इण राड़ मे छेवट होवता होवता आ हुई कै लुगाई आपरा धणी नै जेहर देयनै मार नाख्यौ । पण शिकायत हुयगी जिणसू पोस्टमार्टम हुयौ अर लुगाई पकड़ीजगी । पुलिस आळा झालनै जोर सू मचकाई तो बावैजी रौ नाम ई भैळो खुल्यौ । जेहर उणा इज लायनै दियौ हो । घर मे जेहर री खाली शीशी मिळगी अर मठ री तलाशी लिरीजी तो सागण विसीज अेक औरू शीशी उठै ई मिळगी । इण माथै भगतण अर बाबाजी दोनू नै जनमटीप री सजा हुयगी ।

चुणाव पचायत रौ निर्विरोध निवड़ग्यौ । वीजो पड़िहार सरपच वण्यौ अर नेमौ खाती उप सरपच । बाकी रा वार्ड पच ई ढग रा मोट्यार बण्या । निर्विरोध चुणाव हुया ग्राम पचायत नै सरकार कानी सू इक्कीस हजार रौ इनाम मिळयौ । इनाम देवण नैं पचायत राजमत्री आया । मठ मे जबरौ जळसौ हुयौ । बाबूजी रै अधूरा सुपना मे सू अेक अर पैली सुपनौ पूरौ हुयौ ।

❐

रेखा चित्र

राजू कवाड़ी

भगवतीलाल व्यास

"कागद, कॉपी, अखवार की रद्दी, लोहा लक्कड़, टूटी चप्पल, जूता, सैण्डल, खाली वोतल, डिब्बा ।"

एक आवाज मोहल्ले रै इण छोर सू उण छोर ताई गूज जाती । कितरा ई हाथ अै चीजा घरा मे हेरवा लागता तो कितरा ई मूडा सू अचाणचूक निकळतो-"राजू कवाड़ी आ गयो ।"

राजू कवाड़ी कोई मोटी सखसियत नीं ही पण उण री वोली, उण रो नेमसर अर टेमसर आवणो-जावणो, उण रो विणज वौपार रो रग-ढग इतरो मन मोवणो हो क जन-मन मे रम गयो हो राजू कवाड़ी । राजू कवाड़ी रो फोटू कदेई अख़वार मे नी छप्यो पण उण री वोली सामळता ई उण रो उणियारो हरेक री पुतळ्या सामी नाच उठतो । उणरी वोली री केसेटा नी भरीजी ही पण उण री बोली जण-जण रै हियै मे इतरी ऊडी ओळखाण वणा चुकी ही'क दूरा सू ही उण रो हेलो सुण'र लोग जाण जाता'क राजू कवाड़ी आ गयो है ।

'राजू किसी चीज लेवेला अर किसी पाछी फेरेला ?'-यो सवाल पूछणो निरर्थक है । राजू किणी भी चीज नै आज ताई पाछी नी फेरी । दातण री खाली ट्यूबा, शीशिया रा ढकणा, काच रा टुकड़ा, अटिया, जग लागोड़ी खील्याँ, साव खज्योड़ा कनस्तर, चपला री टूटी वादिया, जो भी चीज राजू सामी गई राजू उणनै आदरी । उणरो दाम चुकायो हाथो हाथ पाच पाई सू ले'र पाच सौ रूपया ताई । राजू री जेव जाणे वैंक ही । उण मे छोटे सू छोटो सिक्को अर वड़े सू वड़ो नोट त्यार रेवतो । मोल भाव री झिकझिक मे राजू नी पड़तो । जो मोल उणरै मूडै सू कढ़ गयो सोई लोहे री लकीर । पेला पेल तो राजू री इण आदत सू लोगा नै एतराज हुयो । मोलभाव करणिया लोग राजू री इण वात रो विरोध करता, केवता-"ओ ठग है । रूपये री चीज रा पचास पईसा कह देवे अर ये ले लेओ। आ तो सरासर लूट है ।"

धीरे धीरे लोग जाण गया'क राजू बात रो पक्को अर तोल रो साचो है। अखबार री रद्दी रो भाव, लोह लक्कड़ रो भाव, रबड़ प्लास्टिक री चीजा रो भाव उण रो और कबाड़िया सू न्यारो रेवतो। दूजा कबाड़िया सू कमती भाव मे राजू लेवतो अर लोग राजी राजी देवता। दूजा कबाड़ी गिराका नै तोल मे मारता।

राजू रो तोल एक दम खरो। घर मे तराजू सू तोल'र राजू रे तराजू तुलवा लो। फरक नी पड़ सके। लोगा नै इण बात रो पतियारो हो जदेई तो वे राजू चीज-वस्त रा जितरा दाम हथेली माथे रखतो, ले'र आपरै घरा आ जावता।

राजू रै मिठबोले बेवार सू टाबर टींगर, लुगाया, मिनख बूढा-मोट्यार इतरा हिल गया'क जिण दिन राजू री आवाज सुणाई नी पड़ती, उण रो ठेलो मोहल्ला मे निजर नी आवतो लोग बेचैन व्हे जावता। पूछता 'आज राजू कबाडी नी आयो ?' आवतो हुवैला। इतरा मे राजू रो हेलो सुणाई पड़तो अर लोगा मे एक सन्तोष री ले'र वापर जाती। टाबरा री टोळी हरख सू राजू रै आवण रो एलान करती दोड़ पड़ती-"राजू आ गयो राजू आ गयो ।"

म्हैं सोचतो-बड़े गजब री चीज है यो राजू कवाड़ी। मोहल्लै री जिंदगी मे आपरी किसी ठौड़ बणा ली है क एक दिन नी आवे तो लोग परेशान व्हे जावे। यो मामूली सो आदमी लोगा रै हियै मे इतरो ऊंडो किण भात थरपीज गयो है ? राजू रै कनै शिक्षा-दीक्षा नी, पद-इधकार नी, धन-दौलत नी जमी-जायदाद नी फेर भी वो सबरो मानीतो। म्हैं सोचतो आखिर वा कुण सी चीज है जो राजू जिस्या साधारण आदमी नै असाधारण बणावे है ?

पूरो दिन निकळ गयो। राजू नी आयो। दो-तीन चार दिन निकळ गया। राजू नी आयो। लोग तरै-तरै री बाता करवा लागा। कोई केवतो-मादो पड़्‌यो होवेला कोई केवतो-धधो छोड़ दियो होवेला कोई केवतो-घणो कमा लियो अबै कठेई बैठो ऐश कर रयो हुवैला।

म्हारै गळै औ बाता नी उतरती। पण राजू री पतो कठै लगाऊ आ भी एक जबरी समस्या ही। उण रो ठिकाणो तो किणनै भी मालूम नी हो। बिया भी कबाड़िया रो काई ठिकाणो ? अर फेर राजू जिस्या मस्तमौले कबाड़ी रो ठिकाणो ढूढणो तो और भी दोरो पण म्हैं धार लियो'क पतो लगाया रेवूला।

एक दिन पतो लगा ही लियो साथ ही राजू धधो छोड़ दियो हो या यू कहणो ठीक होवेला'क उण धन्धो बदल दियो हो। अब वो उणहीज ठेले माथे/चाय री दुकान करै है। दूजी ठौड़ा एक रुपये मे मिलणे वाळी चाय सू राजू री पिचौतर पिसे री चाय म्हनै घणी चोखी लागी। म्हैं राजू ने कह्यो-"राजू इण चाय रो तो तू सवा रुपियो भी ले तो भी लोग राजी हो'र दे देवेला।"

म्हारै इण कथन माथै राजू री तळाया भरीजगी अर वो बोल्यो–"जाणू हू बावूजी, पण म्हैं बारह आने री चाप रो सवा रुपियो नीं ले सकू।"

"दूजा दूकानदार धड़ल्ले सू ले रया है अर तू धरमराज रो औतार बण्यौ बैठ्यो है। इण तरे तो तनै यो धन्धो भी बदळणो पड़ जासी।"

राजू बोल्यो–"तो बदल लेस्यू।" उण रै इण छोटे से वाक्य मे उणरी नचीताई, उण रो दृढ़ विस्वास अर गलत परिस्थितिया सू समझौतो नी करवा रो सकल्प प्रकट हुय रयो हो। म्है सुण'र दग रह गयो। पण म्हारै मन में राजू रै सम्बन्ध मे जाणणे री इच्छा जाग गई। राजू भी शायद म्हारै मन री उथल पुथल नै भाप गयो।

म्हारै कनै ही एक मुड्डी माथै बैठतो बोल्यो–' बावूजी, कवाड़ी रो धधो म्हैं म्हारी मरजी सू नी छोड्यो। कवाड़ी रो धधो करणिया केई जणा म्हनै कह्यो–"राजू, तू म्हा लोगा रो धधो चौपट कर रयो है। सेग माल तो तू समेट लावे, म्हे अब काई करा? थारी ईमानदारी सू म्हा लोगा रे पेट माथै लात पड़ रही है। जे तू ईमानदारी नी छोड़सी तो म्हानै धधो बदळणो पड़सी।"

अर म्हैं धधो बदळ दियो बावू जी! म्हारा वापू म्हनै अतीम टैम मे दो ई बाता कही ही–"बेटा, ईमानदारी मत छोड़ज्ये अर भाई बन्दा रै पेट माथै लात मत मारीजै।" जद म्हैं देखियो'क कवाड़ी रै धधे मे वापू नै दिया वचन नी निभ रया है तो म्हैं वो धधो ई छोड़ दियो।

"अब इण धधा मे भी पैला वाळी बात ईज होसी तो?" म्है पूछ लियो। राजू बोल्यो– "धन्धा री कमी नी है बावूजी शहर मे। ओ भी छोड़ देस्यू। कोई नुवो धधो खोजस्यू।"

"पण इण तरै तो तनै घाटो ई घाटो उठाणो पड़सी।" म्है राजू रै सामी म्हारै मन री सका प्रकट कादी।

"घाटै अर नफे री फिकर म्हैं आज ताई नी कीदी बावूजी। बापू नै दियोड़ा वचना सू टलणो अर मरणो म्हारै ताई एक जिस्यो ही है।" राजू दृढ़ स्वर मे उथली दियो।

अब म्हैं काई केयतो? मन ही मन कलजुग रै इण राम ने प्रणाम करतो घर रो मारग लियो।

□

त्याग मूरती

ओमदत्त जोशी

ओ जग अजूबा री खजानी है। इण ससार मे मिनखा री केई भात री बानगी देखण मे आवै। एक सू एक बढ़ता चढ़ता मिनख है। कोई मैणत-मजदूरी मे धकै है तो कोई आपरी जिनगाणी सू लड़ण मे कोई कसर नी छोड़ै। कोई माथै ऊपर आवण वाळा दुख-दरद नै हसता हसता झेल लै। कैई इसा जिका आपरौ मारग माथै चालता रेवै। उणा री केणी है-' मन रै हार्‌या हार है मन रै जीत्या जीत मन ही वैरी आपणी, मन ही अपणी मीत।" मिनख नै आपरै मन नै करड़ो राखणो चाहिजे। उणा नै कदै ही पोचापणी नी आवण देणी चाहिजै। म्हैं आपनै एक इस वजर छाती वाळी मरदानी लुगाई री जाण कराऊँ। लुगाई सवद उणा रै खातिर लेणी वाजिव नी है पण लाचारी सू ओ ही सवद मूडा माथै आवै। मैं आ वेमाता री गलती मानू कै लुगाई जात मे इणा नै जनम दियौ। एकर सी मैं पान खावण ताई गणपत री दुकान माथै उभौ हो। उणीज टेम वा मरदाना लुगाई स्कूल सू घरा जायरी ही। एक सिंधी काकै री निजर उण माथै पड़ी तो वो बोल्यौ -"माट्साव! आ टावरी कुणरी है ?"

म्हारा मूडा सू छूटतै ही बोल निकळ्यो-' तू नी जाणै ! ये तो वैनजी है नी अठा री इस्कूल रा ! दाई सू काई पेट छानी है ! ठेकेदार जी री बेटी।" मैं सगळी ओळखाण बताय दी।

मोटामल काकौ फटसू आख्या नै चढार वोल्यौ-"मैं समझग्यो'।

उणा रे पागरी वैठै करसै नै काकौ केवण लाग्यौ-' ठेकादार जी घणो दिलदार हो! दिलदार !! तुम देखता रह जावौ वात करण री एक निय़ारो ढग हो वारौ। वै घणा नेठाव सू वात करता।"

सिन्धी काकै आपरी कावरा जिसी मोटी मोटी लाल-लाल आख्या रा काळा काळा हीरा नै वारै काढ़तौ कदैही मायनै धसावतो, कदैही आख्या रा भुवारा नै ऊपर चढाय लेतौ तो कदैही आपरी धोली मूछा माथै जीवणै हाथ सू ताव

देयतो, कदैही मनै झिझोड़ती, वैन जी री ओलखाण बतावण लाग्यौ । मैं काका नै बतायौ कै वैन जी म्हारा वास रा रेवण वाळा है । मैं याकी तीन पीढ़ी नै जाणू ।

म्हारी गळी मे हीज थोड़ाक धकै ल काऊ दिसा मे चालता ही आरी घर है । घर काई पैली एक नोहरौ, जिण नै वैन जी आपरी मैणत री कमाई लगाय ओपमान घर रो दरजो दिलाय दियौ । वैन जी सू म्हारा परिवार री हेत है क्यू कै एक ही वास गुवाड़ी रा, दूजा वैन जी री दो वड़ी वैणा, म्हारी दो वड़ी वैणा री पक्की सायणिया ही अर वैनजी री दूजै नम्बर रौ भाई अर मैं एकै साथै मिन्दर रा नीमड़ा नीचे गुलाम डाली अर चाँदणी राता मे टीलो रमता हा । इण सू घरै आवणी जावणी रेती हो ।

वैनजी रो नाम - दुरगा । नाम जिस्या ही गुण । दुरगा भवानी, सगती, अम्वा रौ रूप । वैन जी काई नारी रूप मे देवी री अवतार । आपरो त्यौहार घणी आछी । मदद सारू आठू पीर तैयार । वास गुवाड़ी रा आड़ौसी पाड़ौसी वैनजी नै कोई काम औढ़ाय दियौ तो उणा नै रात दिन एक कर, मन लगाय पूरी करै नी उत्तै ताई जीव मे जीव नी आवै । छाती माथै काम चढ़ियोड़ी उणा नै नी सुहावै । घरा जावण वाळा नै खावण-पीवण मान-मनवार मे राई जितरीक भी कसर नी छोड़े । मुळकता ही वात करता । वोलण मे हाव भाव । भुवारा रा उतार चढाव । मूडा री मरोड़ । हाथा रा लटका आद इस्या गुण है क आप उणा री वाता सुणता सुणता थाकोहीज नी । वरफ री ज्यान आप उठै ही जम जास्यो । चावै आपरै कितरी ही जरूरी काम क्यूनी हुवै ।

आप री रग गौरो, सुहावणो मूडो । वाळपणा मे डावा गालड़ा माथै भाटा री चोट । निसाणी आज ताई तीन कोस सू सगळा नै निजर आवै । हसण री टेम दोन्यू गालड़ा म नाना-नानाक खाडा पड़ै । ओपती कद-काठी । नी ऊठ जिस्या लाम्वा, नी वावण भगवान जिस्या टेचरिया । आपनै सैग भात रा गाभा घणा ओपे । सेवा भाव अर काम करण मे आछा-आछा नै पाछै राखै । स्कूल मे कोई जळसी हुवौ, खेलकूद री होडा होड हुवौ, चावै नाच गाणौ सगळा वैनजी रै विना फीका लागै । टायर-टूबरिया री इसी तैयारी करावता कै पूछी मत । रात नै रात अर दिन नै दिन नी गिणता । नी रोटी रौ पतो अर नी पाणी री । आप इस्या वेजा झूझै कै लोग-लुगाया दाँता आगळी दवाव लेवै । उणा रै समझ मे नी आवै'क इतरी टेम आ वैन जी किया दे देवै ? आ वैन जी इतरी मैणत क्यू करै ? काम चोर, फोगट्या भाई तो वैन जी री इतरी लगन, मैणत नै देख'र आ कैवण लाग जावता-"अरे वैनजी इतरौ दुख क्यू देखो हो ? थाने काई सिरकार इण मैणत री नियारी तिनखा देसी । साना रूपा सू जड़ेड़ी साड़ी पहरासी ? फेर ये क्यू इण मिनखा सरीर नै फोगट म विगाड़ो हो ? हीरा नै भाटा सू मत फोड़ो ।"

इसी वाता सू वैन जी बेराजी नी होती । वा हेतहिमळास, धीरज, नैठाव सू गुवाव देती– "देखो रे माया ! ओ काम अणूतौ नी है । ओ काम आपा नै मिलै उण तिनखा रो हीज है । मिनख मिनख मे सोचण री फरक । कोई इणनै आपरौ काम समझ र सोचै तो कोई सुवारथी मिनख इण नै परायी समझ'र टाल देवै । ओ टावरा री हीज काम है अर टावर आपणा है फेर ओ काम नियारौ किया हुयो ? म्हारी समझ मे नी आवै । कामचोर, सुवारथी, मतलबी, मीठा-मसकरा मिनखा रै नगज मे ही इसी वाता ऊपजै ।"

इस्यी उथली सुण सगळा नीची नाड़ कर पगरखी सू जमी कुचरण लाग जावता। उणा सू पाछी कोई उथळो नी बणतौ, वे भीज्योड़ी मिनकी ज्यू हो जावता। गाँव री कोई मिनख होवै उण री दुख नै आप री दुख ज्याण उणा री जी जान सू सेवा करण मे वैनजी लाग जावता चावै दुनिया उणा नै काई भी केवौ । उणा नै दुनिया री वाता सुणन री फुरसत कठै ही ? वै गाँधी जी रा बाँदरा री ज्यान काना मे आगळी घाल लेता । आपरा हाल मे मस्त । दुनिया तो चढ़्या नै ही हँसै अर पाळा नै हीज हसै ।

दुरगा वैनजी आपरा परिवार मे वैणा मे चौथे नम्बर माथै अर सगळा भाई-वैणा मे छठै नम्बर । कुल नी भाई-वैण मौजूद है । जिण मे छ वैणा अर तीन भाई । सरगवासी होवण वाळा म्हारा ध्यान मे नी है । उण टेम परिवार नियोजन री इस्यी जोर नी हो । क्यू कै भगवान री दया सू इतरी महगाई नी ही । दस पन्द्रह रुपिया मे आराम सू एक जणा रै महीनै भर रौ गुजारौ हो जावतौ । उण टैम कोई आ नी समझतौ कै वैसी टावर टूवर दुख री कारण हुया करै । इतरी जरूरता नी ही। मिनख आपरी तान मान सू गिरस्थी री गाड़ी नै साव सोरी खेच लेतौ । जिणा रै ज्यासती वेटा होता उणारौ समाज मे, गाँव, जाती, बिरादरी मे घणौ आदर-सतकार हो तो । पच-पचायती मे उणा री वात मानी जाती । उण परिवार सू राड़-दगो भी करता लोग शकता । पुराणै जमानै मे आ कैणगत ही कै 'जिण रै घर मे पाँच लाठी वी पच मानै नी पचायती' । वैनजी इस्कूल मे दसवी ताई भणिया । फेर आपरी मैणत, लगन, अर धकै बढ़ण री चेस्टा सू मीठा तेल रा दीया अर घासलेट री चिमनी रा धूँआ सू आख्या लाल कर एम ए पास करी । पढ़ण मे ही हुसियारनी, दूजा काम भी जाणै सीवणौ टूपणौ, कसीदौ काढ़णौ, सूटर जरसी बणणौ, गीत गाळ गावणौ आ मे आप आछी-आछी ठाठीगर लुगाया नै पाछे राखै । गीता मे बना बनी, व्याई जी री गाळ्या, भजन भाव, ब्याव रा अर मौका मौका रा सगळा गीत गावण मे उणा री होड जठाताई म्हारी निजर जावै, कोई नी कर सकै । सुर काई निकळै जाणै कोयलड़ी कूकी हुवै । कोई भी काम हुवौ उणा मे पारगत होवण रौ चाव, एक हरख उणा मे उठै । सीखण मे कैई बाधावा, अवखाया, मुस्किला आती पण धन है इण माईरी लाली नै कै उण मे पारगत हुया पछै ही छोड़ती ।

बैनजी खाण-पाण बणावण मे भी आपरी नियारी पिछाण राखै । दाल-ढोकळा, खीचड़ी खाटी, कूलर-चाटी जिस्या खाण सू लेर मैसूर पाक, गुलाब जामुण, घेवर जिस्या तिवण बणावण मे घणा हुसियार है । सेवा, भुजिया, खीचिया, पापड़, राव रायती बणावण मे आपरी होड़ आगती पागती री लुगाया नी कर सकै । रसोई रसाण इस्यी सुवाद बणौवै कै खावण वाली आपरी आगळिया रा टोपा ई हीज दटका भरण लाग जावै । साफ सुथराई री पूरी चतरायी राखै । खावण-पीवण री चीजा, बरतन-बासण, हाँडा-कूडा नै आछी तरै सू ढकियोड़ा राखै ।

आपरी जितरी बाता बताऊँ उतरी ही थोड़ी है । आपरै परिवार रै टूटण रै सदमै सू भी आप नी हार्‌या । भाई केवण रा, नाम रा तीन है, पण सगळा आप-आपरी दुनियादारी रा गोरख धधा मे लागग्या । बापू सुरग सिधारग्या । पाछै पाटवी बेटै री फरज निभावण वाली आहीज एक बैनजी ही । बापू रै काज किर्‌यावर । छोटी बैणा री पढ़ाई लिखाई, बियाव-सादी, जापा धापा, मायरा-मुकळावा रौ खरचौ, ब्याई सगा, गिनायती, जवाई भाई री मान-मनवार, सीख-चाई काई-काई गिणाऊँ म्हारी आगळिया मे इतरा पैरवा हीज कोनी । दिल-दरियाव री ज्यान खरचौ करै । आपरी मौज-मस्ती । ऐस-आराम, राग रग, पतिपरमेसर रौ सुख । बेटा-बेटी रौ सुख । घर गिरस्थी रौ सुख । सगळा नै होम दियौ परिवार री सुख री आहुति मे । जनम भर माथा मे सिन्दूर नी भरणै अर करम माथे हिगलू री टीकी नी लगावण रौ मजदाटीक फैसलो आप घणा पेली ही कर लियौ । चढ़ती जवानी मे इस्यौ उदाहरण आगती-पागती मे बिजळी रौ हजार सू भी जियादा पावर रौ लट्टू जो'र सम्भाळू तो नी मिलै । धन है इसी नारी रूप मे देवी नै, जो आप रौ तन-मन धन हसता हसता समरपण करता नाका सळ नी घाल्यौ अर नी मूडा सू सिसकारौ काढ्यौ ।

□

चांदा भुवा

ओम प्रकाश तँवर

चांदा भुवा रै मरणै री खबर सुणता ई आखै गाव मे शोक छा'ग्यो । सगळा रा मूढा लटकग्या अर आख्या गीली हुगी । भुवा रै घर री बाखळ अर गळी मिनखा स्यू भरगी । आगणै मे लुगाया री भीड़ लागगी ।

अतिम सस्कार वास्तै बाजार स्यू घी, चन्नण, नारेळ, खोपरा अर ढेर सारी दूजी सामग्री ल्याई गई । फटाफट वैकुठी त्यार करी । नान्हा मोटा सगळा मदर होया। गाजै-वाजै स्यू भुवा री शव यात्रा निकाळी । घर स्यू मसाण ताई पूँरै गेलै टावर अर मोट्यारा मे दण्डोत करणै री होड़ लागी रै'यी । तीसरै दिन फूल चुग्गा'र गगाजी घाल्या । बारै दिना ताई रोज दिन मे लुगाया हरजस गावती । रात नै मोड़ै ताई सत्सग होवतो अर इग्यारमे दिन पूरी रात सागोपाग जागण लाग्यो । बारवे नै गगा प्रसादी बटी । सिंझया गाव रा खास-खास आदमी भेळा होयनै तै करी क भुवा आपरी पूरी उमर गाव री निस्वारथ सेवा म लगाई, ईं वास्तै इस्यो काम कर्‌यो जावै क भुवा रो नाम अमर हो ज्यावै । सुझाव तो कई आया पण आखिर सरव सम्मति स्यू तै हुई क भुवा रै नाम स्यू एक कन्या पाठशाळा वणाई जावै । मकान री तो कोई समस्या नी ही, क्यू क भुवा आपरो मकान मरणै रै थोड़ा दिन पैली गाव री पचायत रै नाम कर दियो अर दूजै खरचै रो भार पचायत आपरै ऊपर ले लियो ।

पूरो गाव भुवा रो रिणी हो । भुवा निस्वारथ भाव स्यू लगातार साठ स्यू ई बत्ती वरसा तक पूरै गाव री भाग भाग'र सेवा करी । भुवा बाळ विधवा ही । सासरो कोई दूजै गाव मे हो पण विधवा हुया पछै भुवा कदैई सासरै नी गई अर न ई कोई सासरै रो कोई आदमी भुवा स्यू मिलणै आयो । भुवा आपरै मा-बाप री ऐकली औलाद ही अर मा बाप भी आपरी जवानी मे ई आगै चल्या गया । ई वास्तै इया तो ई ससार म भुवा रो कुण ई नी हो पण भुवा रै स्वभाव अर निस्वारथ भाव सेवा रै कारण स्यू समूचो गाव भुवा नै आपरी समझतो अर भुवा रै ई आ बात कदैई

मन मे नी आई क वी'रो ईं ससार म कोई नी है । भुवा गाव रै हर आदमी नै आपरो भाई, भतीजो अर टाबर समझती अर हर लुगाई नै बैन, बेटी या भाभी-काकी री नजर स्यू देखती ।

गाव रा सगळा लोग वी'नै भुवा कह नै बतळावता । भुवा कितैक बरसा री ही आ तो मैं नी बता सकू पण जद स्यू मैं समझ पकड़ी ही जद स्यू लेर भुवा रै मरणै ताई मैं तो वी'नै इस्यी ई देख्यी ही । भुवा री चाल मे, काम करणै री फुरती मे अर बोली मे मनै तो की फरक नी लाग्यो । पूरी साढ़े पाच फुट लाम्बी, मरयोड़ै डील री, थोड़ै सावळे रग री भुवा धोळी धोती, धोळो कब्जो, धोळो लहगो अर दोनू हाथा मे चादी री धोळी दो-दो चूड़या पैरती । पगा मे कपड़ै री गोरखपुरी जूत्या राखती । दो तीन बरसा सू मोटै काच रो अर भूरै फ्रेम रो चस्मो लगावती ।

भुवा रो घर म्हारलै घर रै एकदम सामै हुणै स्यू भुवा नै नजीक स्यू देखणै रो मनै मौको मिल्यो । भुवा रोज झाझरकै उठती । पूरै घर म झाडू देवती । स्नान कर'र मिन्दर जावती । चाय पी'र घर स्यू निकळती जिकी कोई ग्यारा-बारा बजी पाछी बावड़ती । आपरै हाथ स्यू रोट्या वणावती अर खाय'र पाछी बारै चली जावती । गरमी मे कदैई सी दोपारी मे थोड़ी देर आराम करती नी तो सारै दिन काम म लागी रैवती । साझै रोज खिचड़ी कढी या दळियो बणा'र खा'र बारै चूतरी पर बैठ ज्यावती । चूतरी पर गळी री दूजी लुगाया भी आ'र बैठ ज्यावती अर मोड़ै ताई हथाई चालती । भुवा या तो कोई रामायण-महाभारत री किस्सो सुणावती या राजा हरिश्चन्द्र, भगत पेळाद, सती सावित्री री कहाणी सुणावती । भुवा स्यू कहाणी सुण'न रै वास्ते गळी रा छोटा छोटा टाबर भी मोड़ै ताई बैठ्या रैवता । भुवा न तो खुद की रीं चुगली करती अर न ई सुणती ।

गाव मे कीरै ई सगाई, ब्याह, जापो, हारी-बीमारी अर मरणै रो काम पड़तो चादा भुवा आगै त्यार मिलती । जद ताई भुवा नी आ ज्यावती लुगाया सगाई-ब्याव अर राती जोगै रा गीत शुरू नी करती ।

भुवा रौ गाव मे पूरो दबदबो हो । सासू-बहू रौ झगड़ो, देराणी-जेठाणी रौ मनमुटाव अर भाया भाया रै बटवारै रौ सलटाव भुवा चट कर देवती । कीरी भी आ हिम्मत नी ही क भुवा रै फैसलै नै पाछो फेर दै । भुवा पेटे पाप नी राखती अर दोषी रै मूढै पर खरी-खरी सुणाणै मे सकोच नी करती । ई वास्तै भुवा रो सगळा कायदो राखता ।

भुवा मे काम री इत्ती फुरती ही कै पचास आदम्या री पकी रसोई अेकली वणा देती । छोटै मोटै काम मे सीरै, दाळ, चावल अर पुड़्या रै वास्तै दूजै नै बुलाणै री जरूरत नी पड़ती ।

भुवा नै नाड़ी रो ग्यान इस्यो गैरो हो कै बीमार री नाड़ पर हाथ रखता ई बताय देती कै बुखार सी सरदी री है कै टाइफाइड या निमोनियो। भुवा रै घूटी अर घासै रा कई देसी नुस्खा इस्या काम करता कै टाबरा रै वास्तै तो गाव वाळा नै डाक्टर खनै जाणै री जरूरत ई कोनी पड़ती। ई गुण रै कारण भुवा रै घरै मिलणिया रो तातो लाग्योड़ो रैवतो।

निस्वारथ भाव स्यू सगळा री सेवा करणै रै कारण स्यू ई पूरो गाव भुवा नै आपरी समझतो अर भुवा रै भी मन मै कदैई आ बात नी आई कि बी'रै कोई सगो भाई या बेटो कोनी। ओ ही कारण है कै भुवा रै मरणै पर पूरो गाव आसू बहाया नी तो आज सागी बेटा कोनी रोवै।

❐

लघु कथा

सपनौ

मीठालाल खत्री

मैं नौकरी री फारम भर रह्यौ हूं। सगळी खाना-पूर्ति कर्‌यां पछै फारम रै लारली बाजू एक छपी-छपाई शर्त माथै म्हारी आंख्यां अटक जावै।

'म्हैं घोपणा करूं कै ऊपर लिख्योड़ी सैंग बातां सही हैं। लिख्योड़ी म्हारै टावरां री संख्या वर्तमान मे सही हैं। ऊपरवाळा टावरां री संख्या मिळाय' नै तीन सूं वत्ता टावर म्हारै नी हुवैला। तीन टावरां पछै मैं आपो-आप घर रा खर्चा सूं नसबंदी करावूंला। टावर चाहे छोरां व्है कै छोरियां। तोई म्हारै तीन सूं वत्ता टाबर होग्या तो नौकरी देवणियां नै मनै नौकरी सूं काढ़ण री पूरी हक होसी। कोई कोर्ट-कचैरी री कारी पण लागसी नहीं।'

इण शर्त रै नीचै म्हनैं दस्तखत करणा है। आ शर्त पढ़ता ई म्हारौ माथौ भन्नाट करण लागौ। पेन पकड्योड़ो हाथ टेबल माथै अठी-उठी आपी-आप सरकण लागौ। हाथ रै सरकतां ई शर्त माथै चाय ढुल जावै। कप ऊंधी हुय जावै। शायद म्हारी लुगाई फारम भरती वेळा टेबल माथै चुपचाप चाय धर नै गयी परी हुवैला। पण मनै कैय'नैं तो जांवती। कर दियो फारम रो सत्यानास! घणी आफळ कर्‌यां पछै तो फारम हाथ लागो हो। परसूं ई आखरी तारीख है। लुगाई माथै रीस आवण *लागी। मैं जोर सूं लुगाई नै हेलौ पाड्यौ- कल्पना री मां ....*

......हेलो पाड़तां ई म्हारी आंख्यां खुलगी। कठै चाय नै कठै फारम! फकत एक सपना रै सिवा कीं नीं हो!

❑

जीवण-दान

छाजूलाल जाँगिड़

एक किसान पटवार-घर जायनै पटवारी सूँ रामा स्यामा करकै बोल्यौ- "पटवारी जी ! आप तो मनै कबर माथै पूगा 'र' दफणा दियी । पण मैं जीवतो होग्यो आप सूँ मिलवा आयौ हूँ ।"

"म्ह आपरी मतलब नी समज्यौ ।"

किसान उथली दियी "लारला दौरै मे आप दारू रा नशा मे मेरी मौत दिखा'र' मेरो इन्तकाल भर दियौ । मेरी खेत पलटी कर दियो । मेरी ऊमर सूँ भी बड़ा मेरा बेटा धणा दिया । आपरी महरबानी सूँ वै मेरै खेत रा हकदार हुवैला । पण आपरी शिकायत म्हू वडौड़ा अफसरा नै करस्यू । आप सै पूरी पूछताछ हुवैली । आपनै पूरो ब्यानी देणी पड़ेली ।"

अफसर बापड़ा म्हारी काई बिगाड़ सकैला ! वै तो दसखत री मशीन है । पटवारी मनै एक बात पूछी, "आप म्हासू इयै गाँव रै माय आया पाछै कित्ती बार मिलवा आया ?" आप सू म्हू तो अेक बेर भी मिलवा नी आयौ ।

"आपरै नाम रो दूसरो मिनख मरग्यो । बी नाम री भोळ मे आपरा खेत रा लम्बर पलटी होग्या । आप रै नाम अर बी रै नाम मे एक हरफ रो भी फरक नी हो।" पटवारी बोल्यौ ।

"पटवारीजी ! यो तो विश्वास है आपरी नौकरी बचाणै सारू आप काई न काई गळी काढ लीगा । पण आप रै रिकाड मे मनै जीवतौ किया करौला ?"

"आप मनसा माता री मनीती करौ । बीरै भोग चढाऔ । बीरी सीरणी छोटा बड़ा सैनै बैंटौ । म्है अफसरा रौ मानस पलटा देसू । आपनै जीवण दान मिल ज्यासी ।"

"पटवारीजी । आपरी अकळ रौ थाह कुण ले सकै है ? इण धरती पर आप भी दूसरा भगवान हौ । आप जीवतै मिनख नै मारदयौ हो, अर मरौड़ा मीनख नै पूठौ जीवतौ करद्यौ । धन है आपरी बुद्धि रा चमत्कार नै ।" पटवारी मन मे तळसू मळसू होग्यौ ।

□

लिछमा रौ अरथ बतावां

जगराम यादव

बिना सीटी दियां ही लोकल गाड़ी चाल पड़ी। मैं भी जल्दी सी म्हारी थैली लेर सामलै डिब्बे में चढ़ग्यो। डिब्बो छोटो हो और भीड़ घणी ही। लारली सीट पर एक जग्यां खाली ही। मैं भी थैली मेलर बैठग्यो। सामनै एक बाई बैठी ही। कान में खोटा सुल्या, गळा में चीद्यां को सोवणों सो कांठळी, मूंडा पर गेहरा माता रा घण, रंग काळौ, आंख में मोटो सो फूळो, नाक में सेडा री लूम लटकती, गळा में पसीने रा सींवाल देखर विचार आयो, आजादी रा पैंतालीस बरस गुजर गया, म्हांकै टावरां रो ओ हाल किता क दिन और इयां रैसी। गाड़ी धीमै-धीमै चाल री ही पण म्हारै मन री भावना इसूं ही तेज भाग री ही। म्हारी मन डट्यो कोनी, मैं बाई नै पूछ ही बैठ्यो, बाई थारो नांव कांई है ? बाई आपरा पीळा दांत दिखांवती, तड़ाक सूं जवाब दियो, 'लिछमा रामूड़ा की।' मन मैं सोच्यो ओ रूप अर ओ नांव। मन में विचार आयो, आ गळती बी ब्राह्मण री है जको ईंरी नाम लिछमा राख्यौ या बीं भगवान की जको इण नै ओ रूप दियो। पाछौ सोचकर म्हारौ मन बोल्यौ – न तो आ गळती भगवान की है, न ब्राह्मण की। आ गळती तो रामूड़ा की है जको, लिछमा को अर्थ ही कोनी जाणै। आओ सगळा लिछमा न लिछमा बणावां। ईंनै भणावां अर देश में नंवो सूरज उगावां। रामूड़ा नै लिछमा को अर्थ बतावां। आपां सगळा जागांला, जद ही लिछमा-लिछमा बणैली। आजादी रौ सपनो साचो हुवैला। देश में नंवो हुलास छावैली।

□

वखत रौ मोल

भरतसिंह ओळा

मुखविर नै आ'र थाणेदार सूं कह्यो -"साव बैंक लुटीज रैयी है । चार मिनख है ।"

थाणेदार सिपायां नैं वीं वखत ई हुकम दियौ- "वर्दी लगा'र सैंग तैयार हो जाओ ।"

थोड़ी ताळ मांय सिपाही तैयार होयग्या ।

"सा'ब सैंग तैयार है ।" सिपाही आ'र बोल्यौ ।

"कांई खाक तैयार हौ । ओ टोपी लगाण रो तरीकौ है ? जार पैली टोपी ठीक कर'र आओ ।"

दूसरै सिपाही कानी देख'र -"ऊभा-ऊभा म्हारी मूंडी कांई देख रैया हौ ? आप रै जूतां कानी देखौ । बुरश मार' र झटाझट आऔ ।"

"अर थे कांई रोणी सूरत बणा राखी है । मूंडौ धो'र आओ ।"

इतणै मांय दूजै मुखविर आ'र कैयो- "सा'ब उग्रवादी बैंक लूट'र भाजगा ।"

थाणेदार जीप रवाना कर'र दाको फाड्यौ- "तुरंत जीप मांय वैठो । वखत रौ मोल पिछाणौ ।"

जीप सिपाहियाँ सूं भर्योड़ी बैंक रै कानी भाजी जाय रैयी ही ।

❐

एक हीज विरादरी रा...

पृथ्वीराज गुप्ता

"घरा हो के फूला भाई ?" मास्टरजी आवाज दीवी ।

"आ जाऔ, माय आ जाओ नी मास्टर जी !" फूलो धोवी बोल्यौ अर घणै मान सू मास्टर जी री आव भगत करी ।

"काईं पीवोला गुरु जी ? आज तो म्हारी पोळ पवित्तर हुगी आपरै चरणा सू।"

"आज काईं हुई'ज लादयो आपनै ठ्ठा करण सारू ? काईं शिक्षक दिवस पर इतरो मान कर रया हो ?" मास्टर जी बोल्या ।

"आप सू ठ्ठा कर सका हा काई माई-बाप, आप तो टावरा रा गुरु हो, पूजीता हो सगळा रा । म्हारी विरादरी रा हो ।" फूलो बोल्यो ।

"म्हारी विरादरी रा हो" सुण र मास्टर जी चौंक पड़िया अर बूझयौ-

"फूला ! औ काईं कैवौ, थारी म्हारी विरादरी एकै किया हुई ?"

"हू निपट इग्यानी हूँ गुरूजी, पण आप तो ग्यानी हो । सुणी है केवट राम जी सू सरयू पार करवाण रा पइसा नी लिया हा अर कैयो हो – काईं केवट, केवट सू पइसा लेवै है ?"

"पण कठै राम जी अर कठै हूँ । कठै केवट अर कठै आपारी विरादरी एकै कैया हुवी ? आ वात खुलास करनै समझा ।"

"हू इग्यानी सू ठ्ठा नी करो गुरुजी । इतरी वात जदै म्हारी समझ माय आ जावै अर आपरी समझ मे नी आवै हूँ, आ नी मान सकू ।" फूलो वोल्यो ।

मास्टर जी चाय पीवता रैया अर सोचता रैया । "अच्छा भाई फूला, अवै वता कपड़ै रा कतरा पईसा देऊँ ।" वे वोल्या ।

"हू आपनै हणा ई ज अरज करी है मास्टरजी, एक धोवी सू काईं पईसा लेवै ?" फूलो आपरी वात पर अडिग हो । मास्टरजी नै घणो गभीर देख'र फूलो वोल्यो–"गुरु जी आपा दोनू मैल धोवा । फरक फगत इतरी ई ज है हू तन रो मैल धोऊँ अर आप मन रौ ।" फूलै री वात सुण'र मास्टर जी हासण लाग्या अर कपड़ा लेयनै चल्या गया ।

माँ

अरुणा पटेल

हांसली री चोट स्यू बाजती थाळी री टकोर सगळै गाम मैं सुणीजी "अमरी रै गीगली हुयी है", गुड़'र बाकळी सगळै घरा मैं बाटीजी। डूमण्या गीत गाया। बिरादरी मै मनवारा चाली। दादी थुयको नाख्यो। माथै काळो टीको लगायो।

अमरी गीगलै नै योयो प्यावता इसी मुळकै जाणै इन्दरासण ईनैइ मिलग्यो हुवै। *कान'र, आख्या गीगलै कानी चौबीसू घन्टा। थोड़ो सो अणमणी देख'र देवी देवता* मनावै।

गीगलै नै अमरी काण्या, गीत, बाता सी सुणावै, सगळा सू मोटी देखण सारू बरत करै नजरिया घालै। खुद गीलै सीलै मैं ई सही पण गीगलो चैन री सीवै।

घरआळा स्यू गीगलै री बात्या करती कोनी थाकै। एक एक बात नै सुणावै कदी पा-पा चलावै, कदी गोद् मे राखै, दूधो प्यावै, गीगलो चालै, रागोळ्या करै, नाचै, अमरी ताळ्या बजावै। गीगली, गाया बकर्‌या घेरै, मा सागै भातो ले'र खेत जावै, पूठी आवै। पोसाळ जावै - "अ" "आ" बाचै। मा फूली कोनी समावै।

गीगलो खैले। घर रो काम कोनी करै। किन्ना उडावै, घरै बाप हाका करै, पोसाळ मे गुरुजी कूटै। कठै जावै, दो-दो च्यार च्यार दिन बारै रैवै। मा फिकर करै। पण आता इ खाण-पीण नै चोखौ दे देवै। बाप जे की कैवै तौ गीगळै रौ पख लेवै।

बाप देखै बेटी हाया स्यू निसरग्यौ, मा सोचै टाबर है - खेलणै खाणै रा दिन है। पण ओ के - अैइ धीरज कोनी राखै - आजकाल का टाबर छिनैक मे ई सामै मड ज्यावै।

की न की तो करा। काल रो गीगलो आज ब्याईजग्यो, बीनणी आयगी। दो दिन उच्छव रहयौ। देखता देखता घर मैं कळै माचण लागगी। बटवारो हूग्यो। मा फै'र ई बेटै री भीड़ लैवै।

बूढियो बीतग्यो। मा पोता पोतिया री सेवा टैल मै रैवै। घर बुहारै। कपड़ा धौवै। बहू रा मैणा सुणै। एकलै मे रोवै, पोता नै असीसा देवै।

□

व्यंग्य

मांचै रा मजनूं

त्रिलोक गोयल

हर आतमा में परमातमा रा दरसण करणहाळा अर जीवी जीवाद्यौ हाळी 'थ्योरी' नै मानण हाळा आपां तत्व ग्यानी लोग खटमलां रै सारू जकी सैं सूं सोवणी सरूप कॉलोनी बणा मेली है उणरी नाँव है 'खाट'। 'क' तो खाट में रैवा री वजै सूं औरो नाँव खटमल पड्यौ है कै खटमलां रो रैवास होवा सूं इणरो नांव खाट है। जीयां आप आप री सामरथ गैल मजूरां री झूंपड़ी, आम आदमी सारू घर-मकान, मंत्र्यां-अफसरां रा बंगला-कोठी, सेठ-साहुकारी की हेल्यां अर जमींदारां रा गढ़ हुवै है वीयांई खटमल ही भाँत भाँतरा हुवै है। राजनीतिक खटमल, सामाजिक खटमल, धार्मिक खटमल, शैक्षिक खटमल औरै तांई खिड़क्यां, किवाड़, भींतां में कोचरा, संसद सूं सिनेमा हाल री कुरस्यां रै माजना सारू रैवास है। आप आपरो धरम है अर आप आपरो करम। खटमलां रौ परम धरम है लोगां रौ खून चूसणौ। आपणौ परम करतव है आपांरो रगत वा नै चूसाणी। तो रामजी भला दिन दै, हूं जिकर करवौ चावँ हो खाट रौ, अर सीमा रो अतिक्रमण कर र बीच में ही बडगी खटमल। औ राममार्‍या आपरी बाण सूं बाज थोड़े ही आवै है। ठौड़ कुटौड़ कठेई जा बैठै। तो भायां! म्हारै बाळपणै में आ धींपाई, चैपाटी अर खाट पनरा बीस रिपट्टी में मजा सूं आ जाती ही, जो ऊमर को राछ होती ही। आज वाही खाट 'ब्यूटी पार्लर' में जार आपरौ रूप सजा-संवार, कवियां ज्यूं उपनांव 'पलंग' राख र, बढ़तौड़ी मुंहगाई मुजब आपरौ मोल बढार पाँच-सात हजार बिना अड़या ही नी देवै। बाई रै ब्याव में चावै और क्यूं दूयो र ना दूयौ पण तन-मन रै मिलाप खातर (मन तो चावै मिलो र मत मिलौ पण तन तो आपै आप ही मिल जावै है) कै जीयां आंच रै नेड़ै होणे सूं घी पिघळै, चुम्बक सूं लोहो खिंचै, ई ने कहवै है गळै पड्यौ ढोल बजाणो। पलंग देणो तो सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक सगळी ही दीठ सूं कम्पलसरी है, 'ऑपसनल' कोनी। ई नै देतां बेटी रै बाप नै ईयां पसीनौ आवै जाणै पब्लिक स्कूल में टाबर नै भर्ती करातां।

आजकाल एक नुवादी बात औरू सरू हुई है कै लोगा ने डयल-बैड देवो-लेवो ही दाय आवै है। म्हारै मूढ मगज मे आज ताई आ समझ मे नी बैठी है कै जणा ब्याव री मतलब ही दो जणा नै एक करणै री सामाजिक मानता है तो पछै अै दो पलग देर वानै अळगा-अळगा क्यू राखयौ चावे है ? शायद दिन दूणी बढतोड़ी जनसख्या सू डरपरा र ओ षडयत्र, ओ आविस्कार जरूर ही परिवार कल्याण हाळा कर्यौ है। कहीजै है नी कै "आवश्यकता ही आविस्कार री जननी है।" जे म्हारा सुसरा जी ही दायजा मे डवल-बैड देणै री भूल कर बैठता तो रामजी री किरपा सू अै जिका नीठ पाँच टावर आख्या दीख्या है, थै कीकर दीखता ? डवल-बैड रै चलण री एक और भी कारण दीखे है बो ओ है कै पैला एक बार धणी लुगाई हुया पछै सात भौ ही आ गुळगाठ नी खुलती। पण आजकाल तो जीया मैला गाभा र फाटी पगरखी बदळै है ज्यू तलाक दे-लेर परी पिण्ड छुडावै। नवादै पण रो सवाद ही न्यारी हुवै है। न्यारा होती बखत आप आपरौ एक एक पलग ले पधारौ, मिनख नै सोवा रौ सतूनो तो चायजै ही।

आखा मुलक मे ई महताळू चीज 'खाट री चलण होणै सू खटिया, खाटला, खटोला ई रा कैई रूपान्तर है। बीया खाट पै मरवो चोखौ नी मान्यौ जावै है पण जीआ नेता आखरी सास ताई कुरसी नी छोड़णी चावे बीया ही कैई मरवा वाळा मरतै दम ताई खाट नी छोड़े। इव नी छोडै तो नी छोडै आगला री मरजी, मरवाळा रौ कोई विगाड़ै भी काई। जीते जी जीनै खाट सू नी उतार सक्या उण री आखरी इच्छा रौ ध्यान नै राखता थका आखिर घर हाळा उणनै खाट सू उतार'र ही मानै।

सरम री बात है क खाट री महिमा बखाण मे हाल हिन्दी साहित्य घणो पाछै है, पण उर्दू सायर बाळ री खाल काढ़ी है-

कल खबर आयी थी वो, खटिया से उठ सकते नही।

आज दुनिया से चले जाने की ताकत आ गयी।

खाट देखै सुणै तो है ही पण राता री सुन्याड़ मे बोलै भी है। एक राजस्थानी लोकगीत मे ही ई री सरस बखाण याद आगो

ढोल्यो म्हारा बाप रो, लाँबी चौड़ी ईस।
आगा सरको बालमा, थाँपै आवे रीस॥

फलाणो खाटला मे पड्यो पड्यो सिड़े है। म्हारे सू ची चप्पड़ करी तो हाथ पग तोड़ नै खाटले मे पटक देस्यू। रात रे दावण खीचणे सू छोरया जलमणै री खतरौ है। ऊपर पगाथै अर नीचे सिराथै करर खाट ऊभी करणो अपसगुण है। छोड़ो ईस र बैठो बीस। इसी पचासू वाता है ज्याने जाणनो बौत जरूरी है।

हाल तो लाई भगवान रै खुद रै ही रैवास रा साँसा पड़र्या है। म्हारी छोटी सो कमरौ खाणै सोणै पढ़णै लिखणै मिलणै-जुलणै रै सगले ही काम आवै है, मकाना रा

तोड़ा, बढ़तोड़ी भीड़ अर आकास मींटता माड़ां सू बहुसख्यका री म्हारै जेड़ी हीज दसा है। कैया नै तो मैं ही नजीक सू जाणू हूँ, पण कोई रा पड़दा-उघाड़णै सूं आपा नै कै मतलव। दिल्ली, मुबई, कलकत्ता मे तो मिनख माखी माछर ज्यू भर्‌या पड्‌या है। वाँनै तो चाळ, सराय जस्या मकान माथी लुकावा नै मिळ जावै, आही वीत है। वापड़ा नै बगला कोठी कठै पड्‌या है। तो म्हारै उण दड़वे मे एक खाट है। खाट काँई है मोटै मिनखा ज्यू अकड़र अमचूर हुयौड़ी है। अठीनै जोर देर नीची करौ तो बठी नै ऊपर पण करलै, बठीनै बैठो तो अठीनै ऊचा हाथ करलै। जदा ती म्हू उणरै माथै पसर्‌यो रैवू उत्ते तक तो ठीक, पण ऊठता ही पाछी वा की वा तीर कमाण, टावरा री डोलर हीडौ। आजकाल सहरा मे तो "काम खाती को' गळी गळी आवाज देवणिया आवै नी। सगळा 'फर्नीचर हाउस' खोल खोलर छोडा छोलै। जे लाँबी काम हुवै तो भलाई घौ आवै। वै भी साठ सत्तर रिप्या नितका। ऐडवान्स चा पाणी लच ऊपर से न्यारा। तो इस्या अै खाती भला एक खाट सुधारणै रै छोटै से काम सारू कद आवै ? पण वास्को डी गामा रै जिया म्हारी छोरो एकार हेर सोध र एक जाण पिछाण रा खाती नै पकड़ ल्यायौ। वो की काट पीट, ठोका पींदी करी र आपकी कारीगरी लगाई। पनरा रिप्या लेर गवाड़ी रै बारै ही नी पूग्यो कै कूतरा री पूछ ज्यू पाछी ज्यू की त्यू। खाट ओछी हुगी जो वत्ताई मे। इस्या नकटा निसरड़ा लोगा नै सूध राखणै रौ तो बस एक ही उपाय है क वा नै काठा दाव नै राखौ।

तो म्है ठौड़ का ठाकर, माचारा मजनू खाट विराज्या थका ही आखी दुनिया भर री पचायत्या कर्‌या करा। म्हा की रात ही नी, घणकरी दिन ही माचा मे पड्‌या पड्‌या कटै। वासी मूडै चाय री भोग लागै माचा मे। गुटका तमाखू फाकर प्रेशर वणावा माचा मे। अखवार वाँचा माँचा मे। बसा रै अड्डै पै जिया खाट माथै पटियौ लगार डिराइवर कण्डक्टर जीमै जिंयाई म्है भी भोजन करा माचै मे। जे कोई करमारी मार्‌यो बारी, वारणा सू चालतो फिरतो दीख जावै तो कूकड़े री ज्यू उकडू मुकडू हुया बठै सू ही हेलौ मारा "आओ जैन साव। आओ बिराजौ तो सरी, अैड़ी कै जल्दी हो री है ? अै तो जीवणा जदा तीं सीवणा ईया ही चालसी।"

ईया पींडी नी छूटै तो सभ्यता रा नाँव पै लाई जैन साव ने विना मन कै ही हँसता मुळकता आर टूटै मूडै पै बैठणौ ही पड़े।

अवै म्हाँ भूत भविस रा जाणकार माचारा मजनुआ री फ्रण्टीयर मेल स्पीड पकड़ लै। साँच तो आ है जैन साव क आजादी पछै ई रै पछै जगत भर री बाता चालबा लागती।

अतरा मे अग्रवाल साव भी अखवार माँगवा नै आ फँस्या। ईयान की केई फालतू चीजा वै माँग ताँग र ही काम चलाता हा। आँधो काँई चावै, दो आँख्या। हूँ वा नै भी माचै रै एकै कानी विठा लियौ। आँनै थोड़ो समाज सुधारक वणनै रौ चसकौ हो। बोल्यौ "जैन साव जितै तैंई समाज नी सुधरै तद ताई देस कींकर सुधरै ? न्यारा-न्यारा समाज मिलर ही तो देस वणै है। आज ही ई वापखाणा दहेज

राकस रा चक्कर मे दस-पाच बहू बेटया रोज बळै है । ब्याव शादया मे जुवान जुवान छोरा-छोरी दारू पीपीर सड़का पै मूड़ा नाच नाचै । लाख, डोढ लाख तो डेकोरेसन में पूरा होवा लागगा । होटला में बराता ठहरवा लागगी । काजू किसमिस, मलाई-पनीर रा साग बणबा लागगा । बापड़ै गरीब को तो पूरी तरिया मरणहीज है । कोई ऑनै बूझणै हाळो नी है क था कनै नोट छापणै री मसीन है कई ?''

मनै हॉसी आयगी । अबार आखा तीज पै ही तो अग्रवाल साब रै लाडेसर रै ब्याव व्हियो हो । पिचेत्तर हजार रोकड़ । पूरो पाच तोळो सोनो टीका मे ही लियौ ही । बैस-बागा, मीठी चूठी, देणी-लेणी न्यारी । हॉ जाजम पै थाळी मे खाली इग्यारा सौ रिप्या ही दिखाया गया हा । बापड़ौ कबीर बार घालतो घालतो ही मरगो क

कथनी थोथी जगत मे, करणी उत्तम सार ।
कहै कबीर करणी करै, उतरै भव जल पार ।।

मैं बोल्यौ– अग्रवाल साब जे पगत्या पगत्या ही चढ़ा तो समाज सू पैला मिनखा नै सुधरणै री जरूरत है । मिनखा ही सू तो समाज बणै है । मिनखा रै 'मोरल' तो आज इस्यौ गिर्‌यौ है कै हाय हाय नै खा रियौ है । डाकू साधुआरा भेष मे घूणा तपै है ।

माथुर साब बोल्या– गरीबी री राग अलापवी तो विरथा है । भाई साब, मनै तो गरीबी कठैई दीखै ही नी । डीजल पैट्रोल रै लाय लागगी तो ही पैला सू चौगणा मोटर स्कूटर फर-फर उड़ै है । घर घर मे टी वी होता सता भी सिनैमा घरा पै ब्लैक चालै । माथा फूटै । दारूआरी दुकाना पै दसगुणी बिक्री बढ़गी है । रेला-बसा रा भाड़ा बढ़्या । पण बाकी बा पिच्छी पड़री है । होटल सस्कति पनपरी है । 'फॉरिन' रा गाभा, तेल-साबण काम मे लिया जारिया है । पीसी तो जाणै पानी ज्यू बहरयौ है, फेर ही आप कहौ क गरीबी है ?

तो भाया ! रामजी री माया, कठै ही धूप कठैई छाया । ईया म्हारै जेड़ा लाखा निकरमा अैदीराम टोळ खाटलै मे पड्या पड्या सगळी समस्यावा सुलझाबो करे है । कह्यो है

भला जण्या ये पद्‌मणी नदी मेरा टोळ ।
हाल्योड़ा हाले नही बैठा करे किलोळ ।।

ऑसू भरी माखी तो ऊडै नी । माचा मे मचका करै र बाता रा घसड़का मारै । म्हारी एक मुक्री कविता है ''मास्टर सू मिनिस्टर ताइ, कण्डेक्टर सू कलेक्टर ताई, अै जतरा भी 'टर' है, अै लारला चालीस बरसा सू खाटलै मे पड्या-पड्या टर्र-टर्र कर रिया है । जे अै 'कर' 'कर' को पाठ पढ लेता तो जाणै आज मुलक कठै को कठैई पूग जातो ।'' जे कदैई क्रान्ति आई, की बदळाव आयो तो नुयी पीढी रा अै घटाऊ गरीब बेसहारा लोगही [illegible] ।

खीर रौ सबड़कौ

श्रीमाली श्रीवल्लभ घोष

आ वात तो सगळाई जाणै कै भांत भांत री चीजां ई दुनिया म्हें खावण सारू बणाय राखी है। न्यारी न्यारी चीजां रा न्यारा-न्यारा सवाद नै खावण रा तरीका ई जुदा जुदा हुवै नीं तो चीज रै खावण रौ आणंद ई नी आवै। दाळ-रोटा, खीच-खाटौ, मालपुआ-खीर-घेवर, रायती नै एड़ा घणकरा जोड़ा है जिका जीमण रौ आणंद सवायौ बधावै। उणा में एक भोग- खीर। अबै यूं तो खीर खाजां रौ मेळ ठावकौ वणै। पण एकली खीर ई कीं कम कोयनी।

भांत भांत री खीरां वणिया करै। चावळां री खीर, केळां री खीर, मींजिया री खीर, कोळां री खीर, खाखरां री खीर, दाखां री खीर, मेवां री खीर नै आटा री खीर आद कठा तांई गिणाऊं! लोग दूध ऊबाल नै खीर वणाया करै। पण उण म्हें ई न्यारी-न्यारी खीरां। खूणियां खीर, पूणछियां खीर, पोरवां खीर, टीकीयां खीर नै डूबकियां खीर ई हुया करै। फेरूं खीर खावण रा तरीका ई जुदा जुदा। पण असली आणंद खीर खावण री सबड़कै बिना आवै ई कोनी। आ वात इतिहास चावी है। आप ई सुणौ।

एकर जोधाणो रै मेहराणगढ़ किले मांय दरबार जसवंतसिंह जी सगळा अमीर उमराव, ठाकरां नै रजवाड़ा रा सगला मोटा मिनखां नै नूंत नै फरमायौ कै आज म्हे सगलां नै खीर खवावणी चावूं। सगळा ई राजी व्हीया। नांमी टाळवां रसोईदार तेवडीज्या। गिरदीकोट सूं भांत भांत रा मेवा मंगाइज्या।

आछी नै टाळवी भैस्यां रौ दूध मंगायौ गयौ। दरबार रै घरै किण वात री कमी? हुकम देंवता चीज हाजर। असली बढ़िया जूंना चावळ आयग्या। कड़ाव चढ़ियौ नै खीर बणन लागी। अैड़ी कै तो राजा भोज आपरी राणी लीलावती रा प्राण बचावण सारूं बणायी ही, कै भगवान शंकर री बारात सारू पारवती रै पिता हैमालै में बणी ही। अबै ज्यूं ज्यूं खीर में मेवा नै दूजी चीजां न्हाकण लागी खीर री सौरम किलै सूं बारै आवण लागी। ठेठ फतै पोळ तक खीर री सौरम आय पूगी।

राज रा व्यास जी, पिरोहित जी, वेदिया जी, पुजारी जी, नै भळै कैई जणा बठै नूंतिया थका पूगण लागा।

चांनणी रात री वेळा ही। किलै रै म्हैलां री छात माथै बैठक राखीजी। सोना रूपा रै जडाऊ प्यालां मांय खीर पुरसीजणी सुरू हुई। बिदाम, पिस्ता, केसर, कस्तूरी रौ तो पार ई नी। इतर, फुलैल, केवड़ा नै गुलाब जल रौ छिड़काव चारूं कानी होयौ। खीर रा जीमाकिया धौलाधट जामा, सेरवाणी नै ऊजला गाभा पैहरियौड़ा वठै आप आप री ठौड़ विराजग्या। कैइयां रै राठौड़ी पेच रा साफां नै केइयां रै पेचा पचरंगा वी चांदणी में पळा पळ करै हा। महाराज पधारिया नै सगळा जै जैकार करियो जाणै अबै खीर खावण री आग्या मिलण वाळी है।

राजाजी म्यांन सूं तलवार बारै काढ़ली। एक पळकौ हुयौ नै पळपळाट करती नागी तलवार सोने री मूंठ वाळी वै आपरै हाथ सूं हिलावण लागा। सगळा जीमणियां रा काळजा आप आप री जगै छोड़ दी। आ कांई रचना खीर रै बिचाळै ओ कांई कोतक हुयौ। दरबार फरमायौ आप आणंद सूं खीर अरोग सकौ। किणी भांत री कोई कमी रैयगी हुवै तो विना डर भी आप मनै कैय सकौ हो। पण एक वात रौ ध्यान राखजो जे खीर खांवतै थकै सवड़को ले लियौ तो म्हूं वी री घांटकी बाढ़ देस्यू।

कैई चाखण लागा। कैई चाटण लागा। कैई डरता देखण ई लागा। कीं ठावकां, चमचां री मांग कर न्हाखी। पण एक जणैं तो वाटकौ लेय थोड़ो अळगो बैठ नै खीर सबोड़णी सरू करी। अन्नदाता फरमायौ 'थे सुणियो कोयनी हूं कै कैयौ हो ?' वो पडूतर देवतौ थकौ खीर सबोड़तौ बोल्यौ, "बावजी गुनां माफ हुवै, सुण तौ सगळौ ई लियौ मूं कोई गूंगो नै बोळौ कोयणी पण अैड़ी खीर रौ मजौ तो फटाफट सवड़का लेवण में ईज है। आप मनै आ खीर घांटी नीचै सबोड़-सबोड़ नै उतारण दौ पछै आप भलै ई घांटी वाढ़ न्हाखजौ।"

राजाजी उण नै सबासी दीवी। पछै फरमायौ, असली खीर रौ पारखी नै खावणियौ तो एक औईज है लारला तो सगला चाखणियां नै चाटणियां ईज है। बो मरद मुंछाळौ खीर रा सबड़का लेवण वाळौ हो- राज जोसी।

इण खीर री इतरी मैमा लारै ईज भगवान विष्णु इण खीर सागर मांय लिछमी जी रै सागै विराजमांन है। खीर नै खीर रा सबड़का तो भाग्यसाळियां नै ईज मिलया करै।

□

किम् आश्चर्यम्

श्यामसुन्दर भारती

ढम ढमा ढम ढम । सुणी, सुणी, सुणी । नगर वासियो सुणी, सुणी, सुणी । आप रै नगर मे विदेशी जादूगर । इण धाती माथै पैली चळा इण दुनिया री सब सू टणकैल, सब सू लूठौ जादूगर । अजब रा करतब, गजब रा कारनामा पेश करसी । अेक अेक सू वत्ता । अेक अेक सू आलीशान । अचरज करै जैड़ा आइटम, अर खास बात आ के 'आ आइटमा नै देख नै जिका नै अचरज नी होसी वा नै टिकट रा पइसा पाछा देवण री गारटी ।' तो भाया, नै लोग लुगाया ! इण न्यारै निरवाळै विदेशी जादूगर री अनोखी जादू देखण नै अवस आवौ । अड़ौसिया पड़ौसिया नै, टाबर-टीगरा नै साथै लावौ । विदेशी जादूगर रा करतब देखण रौ ओ मौकौ मत चुकावौ । वगत बीतिया पछतावौला । भाया नै लोग लुगाया सुणौ, सुणौ, सुणौ । ढम ढमा ढम ढम ।

अर आज पैली दिन । पैली शो । सगळा टिकट अेडवास मे ई विकग्या । भाई रै भाई जनता उलटी पण उलटी । पूरौ हाल खचाखच भरियौ । पग धरण री जगा नी । लोग अड़वड़ै तौ थमै नीं । भीड़ पण भीड़ । लोग आखता पड़ै पण पड़ै पण जादूगर हालताई आयौ नी है । सगळा री निजरा स्टेज माथै टिकी थकी । सगळा मे अचरज देखण री अजव गजव चावना । नवादी वात देखण री जवरी हूस । सगळा ठौड़ माथै वैठा-वैठा उचक रैया । जादूगर स्टेज माथै आयौ । आवता पाण पैली तौतक दिखायौ घड़िया री । जादूगर अेक घटै जेज सू आयौ अर आवता पाण बोल्यौ–''साहवान, महरवान, कदरदान, आप लोग आप आप री घड़िया सामी जोवौ। मत सोचौ के म्है घटै भर जेज सू आयौ हू । आप आप री घड़िया देखौ, टाइम देखौ।'' अर जादूगर आप री वात पूरी करै उण सू पैला ई भीड़ माय सू कोई ऊचे सुर मे वोल्यौ '' अबै देखियोड़ा ई है टाइम वाइम । थू तौ थारी, वो कैवै जिकौ, वो जादू-वादू सरू कर । का नुवौ, अचरज का जैड़ी आइटम वता ।'' जादूगर वोल्यौ–''आ किसी कम अचरज री वात है साहवान, के इण हाल मे जितरा दर्शक वैठा है, वा सगळा री घड़िया रा सूया अेक अेक घटा लारै खिसकग्या है ।

आ किसी कम अचरज री बात है । आप लोग देखो तौ सरी ।" जादूगर री बात सुण नै दर्शका माय सू ओक भळै बोल्यौ –"अरे बावळा, अठै सगळा रा हाथा रै किसी घड़िया बधी थकी है । अर जिका रै है, वे ई चाय पीवण वाळी घड़िया है, जिकौ ओक दो घटा आगै-लारै ई चालै । ओ इण्डियन टाइम है अठै घड़ी दो घड़ी रौ अथेळौ हुवै जितरै तौ म्हा नै की टा ई नी पड़ै । आ तौ म्हाणी राष्ट्रीय आदत है । म्हाणा नेता तौ आज रौ बगत देवै अर कठै ई जावता काल ताई आवै । अर आवै तौ आवै नी तौ नी ई आवै । यू अठै आ नै आ किसी नवादी बात बताई । बतावणा ई है तौ की नुवा आइटम बता । चाल, फुरती कर ।"

"अच्छा तौ कदरदाना, म्है म्हारौ नुवौ आइटम पेश करू । आप लोग ध्यान सू देखौ । ओ करतब देख्या आप नै अचरज अवस होसी । आप पूतळी री गळाई देखता ई रैय जासी ।" कैय नै जादूगर आप रौ नुवौ आइटम पेश करियौ । अर सगळा री निजरा देखता-देखता वो जादूगर लोहे रा मोटा-मोटा इक्यावन गोळा शक्कर री मीठी गोळिया री गळाई गटागट गिटग्यौ । सगळा रै देखता सगळा री आख्या सामी । अर गोळा गिट नै पछै वो दर्शका सामी इण उमीद सू जोयौ के जाणै उण नै शाबासी मिळैला, के लोग वाह-वाह करैला के तालिया बजा-बजा नै पूरौ हाल गुजा देवैला । आ सोच वो दर्शका सामी जोयौ । पण वो काई देखै के सगळा सुट्ट । कोई चू ई नी करै । जादूगर गतागम मे पड़ग्यौ । वो बोल्यौ–"साहबान, कदरदान, महरबान, म्है आप लोगा रै देखता-देखता, आप सगळा री निजरा सामी लोहे रा ओ मोटा-मोटा इक्यावन गोळा गिटग्यौ । वा नै पेट मे उतार नै हजम कर लिया । अर ओ देखनै ई आप नै की अजरज नी होयौ, हद है ।"

"इण मे अचरज री किसी बात है ।" लोग बोल्या–"इण मे अजरज री भळै किसी बात है ? इणगत रा कारनामा तौ म्हाणै अठै रा छोटा-मोटा ओलकार ई करता रैवै ।" जादूगर बोल्यौ –"हैं ?" लोग बोल्या–"हा, थू तौ डोफा इक्यावन गोळा गिटण री बात करै, थोड़ा दिना पैला थू अखबार मे पढियौ कोनी के म्हाणै भारत रौ ओक शख्स पूरौ ट्रक खा रैयौ है । वो कैवै के म्है ट्रक खाया पछै इजन खावण रौ विचार करस्यू ।" जादूगर अचरज सू बोल्यौ–"अच्छा ।" लोग बोल्या–"और नी तो काई । अठै तौ ओक ओक सू टणका खाऊ पीर हो गया है । खायकी तौ म्हा नै विरासत मे मिली है । सुण, भगवान महादेव जी री बरात मे शुक्र शनीचर नाव रा दो बाळक ई गया हा । वा नै आकरी भूख लागी तौ माडिया साथै वा नै बरात सू पैली जीमावण नै भेज दिया । होई आ के शुक्र शनीचर नाव रा बे दोनू बाळक ब्याव रौ बणियोड़ौ सगळौ जीमण अर जिनावरा घरावा रौ दाणौ खायौ सो खायौ, भडार री तीन तीन हाथ जमीन तक कुचर नै खायग्या ।" इतै मे दूजै कानी सू कोई बोल्यौ– "वा तौ सतजुग री बात ही, अठै आज ई किसी कमी आयगी है । अरे आ तौ सभवामि युगे युगे वाळी धरती है । अठै तौ भूत मरै नै

पळीत जागै । नै सब अेक दूजै सू आगै । यू डोफा गोळा गिटण री बात करै । अठै तौ लोग सड़का री सड़का खा जावै । मोटा-मोटा बाघ गिट जावै । पेट माथै हाथ फैर नै ओम हजम । पाछी डकार ई नी लेवै तू है किण होश मे गैल सफ्फी टाट । बतावणा ई है तौ की धासू आइटम बता । अर नी तौ   ।" वात पूरी होवण सू पैली बिजळी गई परी । हाल मे अधार गुप्प होयग्यौ । चौफेर खळबळी मचगी । की लोग इणी मौकै री ताक मे हा । वे स्टेज माथै चढग्या नै विदेशी जादूगर अर उण री पारटी सू भिड़ग्या । जादूगर घबरायग्यौ । वो कूकियौ –"पुलिस, पुलिस, पुलिस।" उण रा मूडा सू पुलिस री नाव सुण नै लोग भळै बत्ता भीभरग्या । बोल्या–"घसड़ीरौ पुलिस, पुलिस कूकै है । अठै कठै पुलिस । पुलिस नै आज रिपोट लिखावौ तौ कठै ई जावती काल तक आवै, नै अठै पैली रिपोट करणियौ भाय जावै।"

अर देखता-देखता हाल हळदीघाटी बणग्यौ । मारौ, भागौ, पकड़ौ रै अलावा की नी सुणीजै हौ । जिण रै हाथ जकी चीज लागी, वो वा ई ले नै छू होयौ । लफगा नै मजी आयग्यौ । गुड़ा रै गोठ होयगी ।

दूजै दिन विदेशी जादूगर सफाखाने मे पड़ियौ पड़ियौ आपरौ स्टेटमेट दियौ–"भारत मे जित्ता अचरज है, उत्ता दुनिया मे भळै कठैई नी है ।"

❑

जद होळी री चरचा चाले

गोपाल कृष्ण निर्झर

आज भी जद होळी रौ त्यौहार आवै तो मैं और म्हारी घरवाळी आज सू दो वरस पैला री वात याद आताइ अणी जोर सू हसवा लागा कै म्हाके पेट मे वळ पड़ जावै ।

वात अणी तरू है कि मैं चित्तौड़ कॉलेज मे एम ए के पैलै साल मे हो और चित्तौड़ मे ही जयपुर सू वदली वैई ने आया एक सरकारी अफसर री इकलड़ी वेटी रेणुका सू म्हारी सगाई वै चुकी ही । होळी सू पैला वणारी वुलावौ आयौ कै मै होळी रै दन वणा रै घरै म्हारी तशरीफ रौ टोकरौ लेर जाऊ और वणा नै धिन धिन करू। मै जाणतो हो कै म्हारी हौवावारी घरवाळी चित्रकला मे स्नातक वेवा वारी ही (पण वै नी सकी) । पती नी म्हनै कार्टून कोना ढव्वूजी री कसो कार्टून वणा नै छोड़ेला । पण "हारियै न हिम्मत विसारियै न राम नाम" रटतौ थकौ मू होळी री इन्तजार अणी तरू करवा लाग्यौ जाणै कोई नेता परदेश जावा री वखत करै ।

ज्यू-ज्यू होळी रो दन कनै आतौ जाइर्‌यौ हो म्हारै हिवड़ा मे न जाणै कसी कसी हलचल वढ़ती जाइ री ही । कदी-कदी तो यू मालूम पड़तौ जाणै कै पोकरण मे परमाणु वम रै विस्फोट सू पैदा वी धरती रै गरभ री हलचल म्हारे हिवड़ा मे उतरगी है ।

इन्तजार री लम्वी वेळा रे वाद होळी रौ दन भी आयो । वाजार सू तीन चार तरै रो गेरौ पक्को रग मगा नै आपणै घर सू निकर्‌यौ । गेला मे शिव शकर भाग भण्डार री सेवा लेर्णी भी नी भूल्यौ । रेणुका रै घर तक जाता जाता रगा री वोछारा सू मैं म्हारै पूरवजा री शकल धारण कर चुक्यौ हौ । वठै जाईने मैं किंवाड़ रा छेकला मे सू देख्यौ तो घर रै माईने लोग घणी जोर सू होळी खेलरिया हा । म्हारौ मन घवरावा लाग्यौ । मन नै गाढौ करनै मैं घण्टी वजाई तो वण री आवाज सू मैं उछल पड़्यौ । किंवाड़ खुल्या तो रगा सू पुती थकी म्हारी सासूजी एव वणा री सत्यापित प्रति रै रूप मे रेणुका नजर आई । भारतीय सस्कृति रो हेमायती वैवा रै

नातै मैं सासूजी रा पगां मांई धोक दी। आसीरवाद री जगां वणांरी हंसी रा फव्वारा छुटीग्या। सीधौ वैताई मैं आव देख्यौ न ताव वणा रे पां ऊबी रेणुंका के पैलाऊं पुत्यै मूंडा पै हरौ रंग लगा दीयौ। म्हारै सूं छूटतां ही दोनूं जण्यां घर में भागगी। म्हारा ससुरा जी मनै बैठक में बैठा कर अन्तर्ध्यान वैईग्या।

थोड़ी देर बाद रेणुका हायां में गिलास लेर आई। मनै नी मालूम सुसराल में पेली बखत ऐकली जावां सूं या भांग रा नशा सूं म्हारो गळो सुखवा लाग्यो हो। मैं पाणी पीवा ने ज्यूं ही गिलास रै आगै हाय कीधा कै रेणुंका रै पाणी री जगां रंग सूं भरी दोई गिलासां म्हारे उपर ऊंधी करदी। रेणुका हंसती थकी बोली, कै वणां दोई रो मूंडी रंग में वैवा सूं भूल करिग्यी अर सासूजी री जगां रेणुंका रै धोग देई दी और रेणुका रै भरम में सासूजी रा गाल लाल कर दीया। वठीनै घर रे माईनै सूं हंसवा री आवाज आई री ही और अठै म्हारे शंकर भगवान रै प्रसाद री नशो गधेड़ा रै माथा रा सींग सूं छूमन्तर वेईग्यौ।

म्हारी जो गत वर्णी वणपै दया खाई नै रेणुका बोली, आप हाथ-पग धोई नै कुल्ला करिलौ मूं आपरै वठै रसोई लगा दूं। वठै तो या रोट्यां लावा रसोई घर में गी और मैं मोको देखतांई वठां सूं नी दो ग्यारह वैइग्यौ।

आज भी जद होळी री चरचा वै तो मैं अर म्हारी घरवाली रेणुका हंसता-हंसता लोटपोट वैई जावां हां।

❑

सफरनामौ चंडीगढ़ रौ

रामकुमार ओझा

दो प्रदेसा री राजधानी, राज पण दिल्ली रौ । छोरिया पैन्ट पैरै गळै मे पण दुप्पटौ डाळणौ नी भूलै । रात नै विलायत अर दिन मै हिन्दुस्तानी सहर चडीगढ़ । चडीगढ़ रै मुशायरा री रौनक । शायर बशीर बद्र इयै सहर रौ मिजाज बतावै है–

"कोई हाथ भी न मिलायेगा जो गले मिलोगे तपाक से ।
ये नये मिजाज का शहर है यहा फासले से मिला करो ।'

थोड़े-थोड़े फासले माथै चौखूटा सैक्टर अर इण सैक्टरा माय सगळौ हिन्दुस्तान भेळौ । अेक फ्लेट मे पजाबी, दूजै मे केरलवासी। केरल री लुगाई तदूरी पराठा तळै अर पजाबी तिमी (लुगाई) डोसा, इडली बणावै । अेकै कानी पजाबी गिद्दे रौ नाच तौ दूजै कानी बगाली रवीन्द्रनाथ रा गीत ।

चडीगढ़ न पजाबी न हरियाणवी । सतरह नम्बर सैक्टर माय अेक इज इमारत रै अेक कमरे मे पजाब सरकार रो दफ्तर अर दूजै मे हरियाणा री साहित-अकादमी, तौ तीजै मे केन्द्र रो कोई आई सी एस अफसर विराज रैयौ ।

शिवालिक पहाड़िया री छीया मे आबाद चडीगढ़ नाव सू चडी देवी रौ मुकाम, चालचलण सू पण पेरिस रौ डुप्लीकेट भारत री धरती माथै पण उपज्यो पिच्छमी सोच लैयनै । लाम्बी चौवड़ी सड़का, कचनार, अमलतास, गुलमोहर री पाता । इमारता.जाणै नवै चलण री छौरिया रौ सिणगार-केश ।

फ्रास रै वास्तुकार ल कार्बूजीए री कल्पना रौ चौवड़ै ऊभो सरूप । नेकचन्द रो रॉक-गार्डन । पाखाण रा फूल खिला दिया । कपड़ा रा लीरा रा पौधा उगा दिया। पजाब विश्वविद्यालय रै कैम्पस मे ऊभौ कमल-आकरती भवन । इण सहर री खरी पहचान आही । आई समझ मे ! मिनख नीं अठै रा । पाखाण रा फूल । देखण रा कमल, पाखाण ज्यू गूगा चैहरा । पजाबी रै किन्ही कवि ठीक कैयौ है–

' मैं तुम्हे क्या बताऊ, तुम क्या समझोगे।
इस शहर के पत्थरो मे कुछ ऐसा जादू है
कि जो यहा आता है
अपने इर्द-गिर्द एक कैद सहेजता है।"

मिनख इण सैक्टरा माय फसनै अेक अेड़ी तहजीव री कैदी बण जावै है, जिकी कै खुद कोई तहजीव नी बण पाई। लखनऊ री अेक तहजीव। बीकानेर री अेक सस्कृति। पटियाला रो इतिहास। चडीगढ़ री पण कैड़ी तवारीख। कैयी जूनै गावा नै उजाड़ परी अेक नगरी खड़ी करी गई अर नाव थरपीज्यौ चडीगढ़। जठै कै गढ़ रो नाव कोयनी। निरा नवीं शिल्प रा ओडाळै उणमान ढूढ़ाड़ ऊभा।

म्हैं चडीगढ़ नै बणतै वखत इज देख्यौ, बणगूयी जद इज ओलख्यौ। बणते वखत जावण री मकसद हो, जै कोई मलेरो प्लाट मिल जावै तौ म्हा लोग इज मोलाय ला। सागै म्हारा मोटा भाई सा। पूजी उणा रै पल्लै। म्हैं सागै सलाहकार। पण स्यात सैक्टर नम्बर 24 वैजवाड़ै री इलाको। पाणी री ठैर माय दोयेक प्लाट खाली। माट्टी भरावतै रकम घूड़ मे दव जावै। खरीद पछै काई करता। पण आपा तौ कीं देख र जावणौ। चौड़ी चौड़ी सड़का काटीजगी ही। हायीड़ूब दाड़, ड्रैनेज सारू खणीज्या हा। पंजाब री राजधानी रो निर्माण। कोई मामूली बात ? नवैं हीर राझै री नीपज करणी ही। सोहणी-महीवाल री याद ताजा बणावणी ही। वालेशा रा गीत भरणा हा। सैंगाऊ वत्ती बात आ कै ल कार्बूजीए री कल्पना री मिनख आकरती अेक सहर रै रूप मैं परतख ऊभी करणी ही। मूढै बोलती मिनख री आकरती रौ सहर बणगूयौ। पण काळजै री जगूया भाठो मेलीजगूयौ। दिलजळा अर दिलचल्या तो चडीगढ़ मे घणा पण दिल कोयनी। आकाशी हूरा री रमझोळ पण हाथ सू छुवै तो धवर रै फूल ज्यू कळी कळी खिड़ विखर जावै। हा, पण मिनख मूडै लागता। दिल री बात दिल जाणै।

पाच बीघे मे पमरियो टपके आम री पेड़। बारामासी फन दै। डाळी मायै फल पाकै अर मिसरी री डळी बण जावै। चडीगढ़ री नींव बटवारै-फटियारै सू घायल धाती मायै धरीजी। भारत रौ बटवारौ हुयौ तो पैली पजाब री सिर धड़ वाटीज्यौ।

चडीगढ़ अेड़ी सहर जिकौ मे सैं सू पैली विश्व विद्यालय, हाई कोर्ट अर जैलखानो तामीर कीज्यौ। मकसद, पढ़ो भणो।

तद अठै और क्यू ई देखण जोगतो नं वग्यौ हौतो म्हैं पैली कालका रै रस्तै सिमलौ अर आवतै वर्णाजतै भाकरा-नागल 'डेम' नै देख परी ओटा आवगूया। 'डेम' सू तो अेड़ी सरसावती जळ नीसरयौ के राजस्थान री तिरसी धाती तकात सरसाइजगी।

डेम रै दरसना सारू लारलै साल औरू जावणी पड़ियी । इणमे म्हने कोयी भी कष्ट नही हुयो । हा, आपसी भाईचारे रे माय कीं कमी जरूर अखरी । मिनख मिनख रो नातो जरूर की कम होवतो निगे आयो ।

मिनख पण क्यू लड़ै ? आम आदमी आप मतै तो लड़ै नी, मारै नीं । सवारथ लागृया की मिनख उण रै माथै भूत चढ़ावै । धरम नै आप री रोट्या नीपजावण सारू फरेबी लड़ावै अर कागद कोरा दिलहाळा भौला भाई लड़, मर जावैं । मरणिया मर जावैला । पण कदै तो साच चौवड़ै आवैला । फसाद मुक जावैला । दिल मिल जावैला । पण अैड़ी जगृया फेरू इज काजळ रा कोट वण रैय जावैला ।

दिनूगै चडीगढ़ सारू व्हीर हौवते वखत म्हारी वेटी सरोज री भायली प्रेमी सरोज नै अेक कागद मांड दीधी "हरियाणा साहित-अकादमी रा सचिव मदहौश सा है । म्हारै परवार रा नजीकी है, कोई काम होवै तौ उण सू मदद लैवण मे सकोच नी करोला ।"

10 30 वजी रो इन्टरव्यू हो । नव वजी चडीगढ़ पूग परा नाश्तो-पाणी कियो अर हरियाणा सीविल सर्विस वोर्ड रै भवन सामी जा ऊभा । साक्षात्कारिया री भीड़, अधिकारी छोड़ चपरासी तकात साढ़ी दस वजी तक आया कोनी । पूणी ग्यारै बजी चपरासी आयौ । ग्यारै वजी वावू लोग ।

बीजळी वोर्ड सू आगली सड़क माथै हरियाणा साहित-अकादमी रौ दफ्तर । मदहौश सा सू मिलण मे काई हरज ? अेक साहित्यकार रै नाते अकादमी मे जावणो इज चाहिजे । मदहोश सा,व मिटिंग लैय रैया हा । थोड़ी ताळ मे मदहौश सा आया। अेक टाग सू खौड़ा । काळा धै । मूडै काथै चैचक विरविया माडणा। पैन्ट ढीली । कुल मिलायने मिनख रौ अेक ढाचौ । आवते पाण हड़वड़ीजता सीक पूछण लागृया । "कुण प्रेमी जी" ? म्है उण रै धणी रौ नाव वतायौ ।

अवार म्हैं म्हारो आप रौ अेक लेखक रै नातै परिचय दियौ ।

आया तो क्यू इज देखते जावण री तैवड़ी । नवी जगृया दैखणौ, उण वावत विश्लेषण करणी म्हारी आदत माय सुमार । जाट धरमशाळा माय अेक कमरौ लियौ। अर सहर देखण सारू निसरृया । "फेडिड ब्लू जीस" पैर्‌या घूमता, पजावी, हरियाणवी छोरा । गावा सू मक्की री रोटी खावते आयनै चडीगढ़ मे "चायनीज नूडलस कैक" खावण लागृया । चडीगढ़ मे कविता कोय नी, कवि पण गह चालता मिल जावै । राहगीर नै रौक ठैरावै अर पेशकश राखै । "अैक कविता सुणो अर अेक रुपियौ लेवता जावौ ।" कविता सुणावै । दाद पावै अर रूपयो उधार मे राख व्हीर होय जावै । सचिवालय रौ हरेक तीसरौ अफ़सर आप नै कवि वतळावै । पोथी छपवावै अर विमोचन कराय लैवै ।

चडीगढ़ मे चलता फिरता मिनख देखौ। नखरौ टपकावती छौरिया री सुभाव परखौ। चडीगढ़ रो चाळौ देख र म्हानै लाहौर री अनारकली सड़क माथै देखी फैशनपरस्ती री याद आई। ओ कोई जूनो सहर कोनी कै कोई इतिहासिकता अठै मिलै। अठै री तौ मौज मस्ती अर फैशनपरस्ती इज अठै री इतिहासिकता। घणखरी आबादी पजाबिया री। पजाबिया नै पिच्छमी तहजीब सू परहेज कोनी। बाजार मे "नीलायन" बतिया, घूमती परिया।"

सड़क माय सू सड़क निकलतो सहर। गळी सू सड़क, सड़क सू चौराहो, चौराहे सू सैक्टर अर सैक्टर सू स्कायर, सर्किल। सर्किल रै चौफेरू हरियळ लान। च्यारू कानी सू आवती च्यार च्यार सड़का पण सहर री पैहचाण सड़का सू नी मिनखा सू होवै। मिनखणै रो पण चडीगढ़ में तोटो कोय-नी। देसी, पण मुडै माथै ओपरीपण जरूर लखावसी।

तौ मिनख मौकळा देख्या। दूजै दिन देखण ढाळ चीज्या देखण री कार्य-कर्म बणायौ। रॉक गार्डन रौ जिकरौ तौ ऊपर कियो, अवार गुलाब बाग, म्यूजियम अर आर्टगेलरी रा नाव गिणतो जावू। फकत नावा री गिणत रौ कारण कै दूजी जगया देखी अैड़ी चीज्या सू नुवै चडीगढ़ रौ स्तर काफी नीचौ। पण पी जी आई हास्पिटल रौ थौड़ो जिकरौ जरूर करतौ जाऊ। सुणी, पढ़ी ही कै इण अस्पताल मे अनुसधान रै नाव जानवरा माथै क्रूरता बरती जावै। अस्पत ा मे म्हारो अेक रिस्तेदार डाक्टर। उण सू मिलियौ अर प्रयोगशाळा देखण री तलब प्रकट करी।

उण रौ दूजा डाक्टरा साथै गहरौ रसूक हौ। माइक्रो बायौलाजी, बायौफिजिक्स फारमौकौलाजी आदि विभागा मे उण री जाणकारी आप हार्ट स्पैसियलिस्ट। बादर, खरगोश, चूसा, गिनीपिग इत्याद माथै प्रयोग किया जाय रैया हा। कठै ई टीका लगाया जाय रैया हा तौ कठै इज चीर फाड़ रो प्रशिक्षण दियौ जा रैयौ हौ। म्हा सू घणौ देख्यो नी गयो। रिस्तेदार सू पूछी- "अठै कै साचाणी जिनावरा रै टी वी, इत्याद बीमारया पैदा कराणिया टीका लगाया जावै है। काई आ क्रूरता नी है?"

डाक्टर साब गम्भीरता सू पडुत्तर दियौ-'प्रयोगधामी औषध विज्ञान री इतरौ विकास हौ चुक्यौ कै अवार असी प्रतिशत क्रूरता कमती हौ चुकी है, पण मानवीय भलाई रै वास्तै प्रयोग तौ चालता इज रैवैला।"

मानवीय भलाई री औट माय नै जाणै काई काई नी हुय रैयौ? आ सोचते म्है अस्पताल सू विदा ली। डाक्टरा री सवेदनहीनता खुमार बण'र म्हारै माथै भरीजगी ही। अठै आय नै तौ भलो चगौ मिनख इज आपनै बीमार महसूस करवा लागै। उण दिन और कीं नी देख्यौ गियो। आगले दिन पिंजोर गयौ। जठै चडीगढ़ नवौ नकोर ओडाळौ वठै इज इण तथाकथित "गढ़' सू 22 कि मी औळालौ

पिंजौर आप रा मुगलकालीन बगीचा चावा ठावा । नवाब फिदाई खा सन् 17 मे अे बगीचा लगवायो । पचास अेकड़ रौ फैलाव । दूर दूर ताई इस्या बगीचा री जोड़ नी। कैई बगीचा विशेषज्ञा री तौ मत है कै उत्तर भारत रा अे सै सू खुशगवार बगीचा है । आज भी आ बगीचा री ताजगी मन माय हुळस पैदा करै है । मन हुयौ पत्ती पत्ती नै औळखतो रैवू ।

बगीचा मै विगतवार कतार मे शीशमहल, रग महल, गुलिस्ता महल अर जगमहल । इण इमारता री शिल्प मुगलकालीन राजस्थानी वास्तु शैली री है । बगीचा मे फलदार दरखता री बौतायत । इण री भीत चिपती चिड़िया घर । आ बगीचा मे वैशाखी री मैळो भरीजै । अबार बगीचा रै बरौबर कळ-कारखाना इज बणीजण लागया है ।

सूरजपुर अर मोरनी पहाड़िया री नैसर्गिक छटा मन मे स्फूर्ति री सचार कियौ ।

तीजै दिन म्हे उचाना पूगा । उचाना नै अबार पर्यटक-स्थल रै रूप मै विकसित कियौ जाय रैयौ है । अमृतसर, शिमला, चडीगढ़ रै तिराहै पड़तै इण रै विकास री खासी सम्भावना है । अठै री वीरेन्द्रनारायण झील री लीली जळ देख'र तौ मन सीतळ हुयगयौ । रूखा विचाळै रूपा फाटती झील कैवै मेरे जळ माय आप री पड़छाया देख । खौटाई छौड़ अर साची मिनख बण । मन मे पवित्र भावना लिये झील री काठी छोड़ियो पण अठै ठैरण री कोई आच्छी ठौड़ नी मिळी । तो सिनझ्या पड़ी पिंजौर लौट आया अर आगलै दिन मरू भौम री राह ली ।

पण राही नै कदै छोड़ी मजिल इज याद आवै । शायर ठीक ही तौ कैयी है—

"कभी छोड़ी हुई मन्जिल भी याद आती है राही को ।
खटक सी है जो सीनै मे, गमै मन्जिल न बन जायै ।।"

पण गम गलत करण सारू इज तौ मिनख सफर करै । म्है तौ दुहरी करम करू । पैली फिरू अर पछै सफरनामो लिख र सफर री चितारणी ताजी राखू । फेरू किण बात रो गम ?

❑

जीवनी

अमर शहीद श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल'

चन्द्रदान चारण

क्या ही लज्जत है कि रग रग से यह आती सदा,
दम न ले तलवार जब तक जान बिस्मिल में रहे ।

श्री रामप्रसाद बिस्मिल रै आल चरित रै सरू में लिख्योड़ी इयां पंक्तियां सूं मालम पड़ै कै आपरी जलमभोम भारत रै वास्तै उणां आपरी ज्यान हथेळी में राख'र काम करयो अर बड़ै सूं बड़ै अत्याचार रै सामै भी हार नीं मानी । उणां नै पूरो भरोसो हो कै भारत माता री आजादी खातर क्रान्तिकारियां री बलिदान आपरौ रंग ल्यासी अर अंगरेजां री गुलामी अर अत्याचार मिटावण खातर सैंकड़ूं दूजा क्रान्तिकारी त्यार होसी :-

मरते 'बिस्मिल' 'रोशन' 'लहरी' 'अशफाक' अत्याचार से,
होंगे पैदा सैंकड़ों इनके रूधिर की धार से ।

ग्वालियर राज में तोमरधार में चम्बल नदी रै किनारै एक गांव में बिस्मिल रै वडेरां रो वासो रो । उणां रा दादा श्री नारायण लाल अठै ही जलम्या । पण हालात विगड़नै सूं श्री नारायण लाल ओ गाँव छोड़ दियो अर आपरी बहू अर दो बेटां-मुरलीधर अर कल्याणमल नै साथै ले'र यू. पी. रै शाहजहांपुर में बसाया । श्री मुरलीधर श्री बिस्मिल रा पिता हा । अै पैली म्युनिसिपैल्टी मे नौकरी करी । पछै नौकरी छोड़'र कचहरी में सरकारी स्टाम्प वेचण रो काम करण लाग्या ।

श्री बिस्मिल रो जलम जेठ सुदी 11 संवत् 1954 विक्रमी नै हुयो । उणां रै बाद पाँच बैनां अर तीन भायां रो जलम होयो । बिस्मिल रा पिताजी बाळपणै सूं ही उणां रै पढ़ाई रो भोत ध्यान राखता । छोटै थकां ही बिस्मिल भोत उदण्ड हा । पिताजी खूब मारता । सायद इयै कारण सूं ही बिस्मिल रो सरीर भोत कठोर अर सहणसीळ बणग्यो ।

बिस्मिल पैली उर्दू पढ़ी । पछै अगरेजी स्कूल गया । उपन्यास पढ़णै रो उणा नै खास चस्को हो । इयै उमर में ही उणा नै सिगरेट अर भाग पीणै री कुटेव पड़ी पण अै बुरी आदता जल्दी ही छूटगी अर वै मन्दर जाण लाग्या । पूजा पाठ भी सीख्यो । जद बिस्मिल सत्यार्थ प्रकाश पढ्यौ तो उणा रो जीवण ही बदळग्यो । वै कट्टर आर्य समाजी बणग्या । कीं नौजवाना नै साथै ले'र वै 'आर्यकुमार सभा' खोली। अठै ही वै भाषण देणै रो चोखो अभ्यास कर्‌यो । बाद मे आर्य-समाजिया रै विरोध रै कारण 'आर्यकुमार सभा' टूटगी ।

जद लखनऊ मे अखिल भारतवर्षीय काग्रेस रो जलसो होयो तो लोकमान्य तिलक भी पधार्‌या । उणा रो जोरदार स्वागत होयो । उण मौकै बिस्मिल भी बठै हा । लखनऊ मे बिस्मिल नै मालूम होयो कै एक गुपत समिति है जकी रो खास मनसूबो क्रान्तिकारी आन्दोलण मे काम करणो है । बिस्मिल भी उण मे सामल होग्या। थोड़ा दिना पछै उणा नै कार्यकारिणी रा मेम्बर बणा लिया ।

अब बिस्मिल नै देस री हालत रो कीं अदाज होणै लाग्यो अर वै सोच्यो कै भारत रै लोगा रै दु ख अर दुरदसा री जिम्मेदार अगरेज सरकार है । इयै वास्तै सरकार नै बदळनै री कोसीस करणी चाइजै । गुपत समिति कनै हथियार खरीदण खातर धन कोनी हो । बिस्मिल 'अमेरिका को स्वाधीनता केसे मिली' नाव री पोथी छपा'र वेची । पण खास बचत कोनी होयी । पछै आ पोथी अर 'देशवासियो के नाम सदेश' नाव रो परचो अै दोन्यू यू पी सरकार जबत कर लिया ।

बिस्मिल पर हथियारबन्द क्रान्ति री धुन सवार होगी । बा थोड़ा घणा हथियार खरीद्‌या । पुलिस नै शक होयो । पकड़ सू बचण खातर वै कैई जाग्या लुकता फिर्‌या । उणा रा कुछ साथी उणा नै धोखै सू मारणै री कोसीस करी पण सफळ कोनी होया । बिस्मिल रो मन फाटग्यो । एक बार तो सन्यास लेणै री सोची पण जळमभोम रै सकट नै याद कर फेरू क्रान्तिकारी आन्दोलण मे आग्या । मैनपुरी षड्यन्त्र केस मे लोगा रो छल-कपट अर दगाबाजी देख'र वै फेरू आपरो काम करण लाग्या ।

बिस्मिल अब फेरू लिखणो सरू कर्‌यो । 'कैथेराइन' अर 'स्वदेशीरग' छपी । भायला बड़ा राजी होया । बड़ी मेहनत कर बिस्मिल 'क्रान्तिकारी जीवन' नाव री पोथी लिखी पण कोई भी प्रकासक इयै नै छापण वास्तै त्यार कोनी होयो । अरविन्द घोष री पुस्तक 'योगिक साधन' रो बिस्मिल बगला सू हिन्दी मे अनुवाद कर्‌यो बड़ी मुश्किल सू बनारस रो एक प्रकासक इयै अनुवाद नै छापण री हामी भरी पण थोड़ा दिना पछै ही बो आपरै साहित्य मन्दिर रै ताळो मार'र कठैई घल्यो गयो । बीं पोथी रो भी खुड़ खोज कोनी लाध्यौ । बिस्मिल आपरी छप्योड़ी पोथ्या बेचण खातर कलकत्तै रै एक व्यापारी नै दी । बो भी पुस्तका हड़पग्यो अर गायब होग्यौ । लोगा

रै इयै व्यवहार सूं बिस्मिल नै मोत दुःख होयौ। वै आपरो व्यवसाय समेट्यो अर एक बार फेरूं क्रान्तिकारी आन्दोलण मे कूदग्या।

बिस्मिल क्रान्तिकारी कार्यकर्तावां री दुरदसा देखी। नीं खाण नै पूरो भोजन, नीं पैरण नै पूरा कपड़ा। इयै हालत में क्रान्ति खातर हथियारां री खरीद तो एक सपनो हो। पण बिस्मिल हिम्मत कोनी हारी। वै योजना बणायी। वै रेल्वे रो खजानो लूट्यौ। ओ काकोरी 'रेल डकैती' नांव सूं जाणी जै। पुलिस सचेत होयी। बिस्मिल अर उणां रा केई साथी पकड़्या गया। जिला कलक्टर बिस्मिल नै कैयो-'फाँसी हो ज्यासी। बचणो चावो तो बयान देद्यो।' बिस्मिल कोई जवाब कोनी दियो। खुफिया पुलिस रो कप्तान जेळ में आयो। घणी बातां करी। आपरी इच्छा बतायी-बंगाल रो सम्बन्ध बता'र बोलसेविक सम्बन्ध रै विषय में बयान देद्यो तो सजा कम, पन्द्रह हजार रूपियां रो सरकारी इनाम अर पछै इग्लैंड भेज देस्यां। पण बिस्मिल आपरी जेळ कोटड़ी सूं बारै ही कोनी आया।

काकोरी रेल डकैती रो मुकदमो चाल्यो बिस्मिल रा एक दो साथी डरग्या अर पुलिस नै सारो भेद बता दियो पण बिस्मिल रो तो जीवण भर ओ ही सिद्धान्त रैयो :-

सताये तुझको जो कोई बेवफा 'बिस्मिल'।
तो मुँह से कुछ न कहना आह ! कर लेना ॥

हम शहीदाने वफा का दीनों ईमां और है।
सिजदे करते हैं हमेशा पाँव पर जल्लाद के ॥

बिस्मिल नै फाँसी री सजा सुणायी गयी। पण वै जरा भी घबराया कोनी। उणां रो जलम सन् 1897 मैं होयो अर सन् 1927 मे वै शहीद होग्या। कुळ तीस बरस री उमर मिली जकै मै सूं ग्यारह बरस क्रान्तिकारी जीवण मे बिताया।

बिस्मिल रै जीवण रा न्यारा न्यारा दरसाव एक सूं एक बढ'र रोमाचकारी है अर काळजै पर आपरी अमिट छाप छोड़ै। उणां री निडरता, दृढ़ता, लगन अर मिनखपणो सरावण जोग है। उणां मौत रै सामै भी सदा आगीवाण रैया अर कदेई हिम्मत कोनी हारी। वै आपरा साथियां सूं, आन्दोलण सूं अर देस सूं कदेई विश्वासघात कोनी कर्‌यो।

आपरी माँ रै विषय में लिखतां तो बिस्मिल री कलम कमाल ही कर दियो-"माँ मनै भरोसो है कै तूं आ समझ'र धीरज राखसी कै तेरो बेटो मातावां री माँ - भारत माँ - री सेवा में आपरै जीवण रो बळिदान कर दियो अर बो थारै दूध नै कोनी लजायो। आपरै प्रण में पक्को रैयो। जद आजाद भारत रो इतिहास लिख्यो ज्यासी तो उणरै किणी पानै माथै ऊजळा आखरां में थारो भी नाम लिख्यो
बिस्मिल आगै लिख्यो-"हे जलम री देवाळ ! वरदान दे कै आखरी

काळजी कोई तरह सू कमजोर नी पड़े अर थारै चरण-कमला नै प्रणाम करतो मैं भगवान रो ध्यान कर शरीर छोड़ू।"

उगणीस दिसम्बर सन् 1927 नै दिनुगै उणा नै गोरखपुर जेळ मे फाँसी पर लटकाया गया। 'वन्देमातरम्' अर 'भारत माता की जय' बोलता वै फाँसी रै तख्तै कनै गया। चालता चालता वै कह रया हा–

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान, रगो मे लहू रहे,
तेरी ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।
फेर वै बोल्या–
' I wish the downfall of the British Empire '
[मैं अगरेजी राज रो नास चावू हू]

फेर वै तख्तै पर चढ्या अर 'विश्वानिदेव सविर्दुरितानि' मतर जपता फाँसी रै फन्दै सू झूलग्या। इसी शानदार मौत सायद लाखा मे दो च्यार नै ही मिळ सकै है। जलमभोम खातर रामप्रसाद बिस्मिल जिसै शहीदा रै बळिदान सू ही आज आपा आजादी री सास ले रया हाँ।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जकी बात एक बोत बड़ै साहित्यकार री मौत रै टेम कैई वा बिस्मिल खातर भी कैई जा सकै है–

"जाहार अमर स्थान प्रेमेर आसने
क्षति तार क्षति नय मृत्यु'र शासने
देशेर माटिर थेके मिलो जारे हरि
देशेर हृदय तारे राखिया छे वरि"

प्रेम रै आसण पर जका रो अमर स्थान है, मौत रै राज मै उणा नै खोणो कोई खोणो कोनी। जका नै देस री माटी सू उठा लिया, देस रा काळजा उणा नै आपरै माय आदर सू बैठा राख्या है।

❏

काव्य

हिवड़े रा देवळ

बुलाकी दास बावरा

ओ म्हारे हिवड़े रा देवळ !
तू ही झांको घाल तू ही कंई कै ?
आपस रा जाणै कोनी
जाणै तो पिछाणै कोनी
भायां में भेद चालै
रिंध रोई में रेत चालै
निवळाई करड़ी हुइगी
मेंहगाई ऊंची चढ़गी
देणैरा रा भाव खोटा
लेवण नै थाली-लोटा
लंगोटी खुलणै लागी
सद्याई कीनै भागी ?
हकीकतां नै कै बखाणां
ऊन्दर स्यूं बिल्ली डरपै
सावण स्यूं बादळियां कांपै
पूंजी री पूजा होवै
देव सै भूखा सोवै
जीवण री कै मतलब है
अयळी जद घुम्मर घालै
रसोई में मकड़ी घालै
खांव खांव हल्ला होवै
लोंठोड़ा गजब ढावै

बीच मे ऊकारया मारै
सीधा ने ऊधा कर देवै
नीचा ने ऊचा कर देवै
ओ म्हारै हिवड़े रा देवळ,
तू ही झाको घाल तू ही कई कै ?

नदिया मे पाणी नी
कूआ मे आणी नी
जमी पयराइज्योड़ी
हवाआ वीधीज्योड़ी
नीव री घास वळगी
दरखतड़ा ठूठ लागै
आदमी अखवार हुइग्या
ऐ चमन खार हुइग्या
सूरता पीळी पड़गी
घरा मे न्यार घुसग्या
पोखरा मे रेत भरगी
खेता ने गोधा चरग्या
गिंडकड़ा घूरी करग्या
सूरज परदूषित लागै
चाद री हीर वळग्यो
सन्नाटौ आख्या फाड़ै
दोगळी छाह लागै
पचायती हाडी कड़कै
निवळा री अटको होवै
मिनखाई फूस हुइगी
उगरड़ी छाती चढ़गी
रोज री मीता सुण'र
काळी पीळी भीता सुण'र
मनै तो इया लागै
राज नै दीवळ चाटै ।

□

उळझवेड़

रामेश्वर दयाल श्रीमाली

म्हारै काई होयग्यौ है, मा !
कै काई होयग्यौ है
इण आरसी रै
क्यू उळझ जावा हा म्है
आपसरी मे इण भात
एक इज ठौड़ ।

काई ठा कितरी कितरी ताळ
उळझ्योड़ा ऊमा रैवा हा म्है
अर वखत
किणी अजाण पखी ज्यू
उड़ जावै
चुपचाप ।

खुद री आख्या
खुद सू ई क्यू उळझ जावै है मा
अर दरपण
क्यू गावण लागै कोई अजाण्यौ गीत
बोला रौ की ठा ई को पड़ै नीं
पण धुन किसी सोवणी लागै
जाणै सावण री झड़ी ।

दरपण मे ई झळमळै सरवर-पाळ
दरपण मे ई ऊगै वेल अजाण
इतरा इतरा फूला सू लद-फद

वै'तै वायरै लैराती
दरपण सूं ई फूटै नेह-सुवास ।

इणी फागण में
गालां माथै मसळ दीनी है
किण इतरी गुलाल
कै मसळ-मसळ हारी
पण रंग है
कै चै'रा सूं ऊतरै ई कोनी ।

म्हारै कांई व्हैग्यो है मां ।
कै कांई होयग्यो है इण फूलां रै
जकी इण भांत हंसै
- इण दूब रै, जकौ इसी लीली छम है
- इण अचपळी हवा रै
जको उड़ा नाखै ओढ़णी
- इण पांणी रै; कै जिणमें
मनै घड़ी-घड़ी दीसै
म्हारै पोता रौ चेहरौ
- इण नासपीटी अलकां रै
जकी घड़ी-घड़ी यूं उड़ै
- अर इण पलकां रै
ज्कौ विना काजळ घाल्यां ई
होयगी है इतरी काळी ।
अर एक वार ऊठै
तौ पड़ै ई कोनी ।

कांई होयग्यो है, मां !
इण गैली सहेल्यां रै
जकी म्हनै इण भांत देखै
कै [illegible] ...ल पड़ जावूं ।"

मिनख सूं ऊँचौ कुण

शिशुपाल सिंह

कुण जाणै उगैली कालै सूरज किसोक ?

आओ ! बाधा आपणी पाळ
जीवन नै बणावा आपा
सूरज सो सैचनण ।

आओ ! भाग्य बणावा आपा आपणौ
भगावा अज्ञान रो अंधेरो
हाथा मे आपणै भगवान
फेरू क्यो आपा हताश ।

आओ ! भगावा निराशा नै
थरपा मिनख को राज
साचो मिनख वो ही होवै
बणावै जको आपको भाग्य आप ।

आदमी ही होवै भगवान
पीछाणौ मिनख री जात नै
आकाश मे फैल्यो च्यानणो

आओ, मनावा
आत्मज्ञान री पर्व
सीखौ जीवन री मर्म
वो ही साचो धर्म
मिनख सू ऊँचौ कुण ?

□

जग्यां खाली है

ओम पुरोहित कागद

म्हारी नथियौ
जवरी होस्यार है
बोलणौ सीखता'ई
हाथ आगै करण लागग्यौ
म्हनै लखायौ
म्हे उण री बात समझण लागग्यौ
इणी खातर
म्हू उण रै हाथा माय
म्हारी बोदकी पाटी अर बरतन्नौ धर
स्कूल टोर दियौ ।

पै'लै ई दिन नथियै
"र" अर "ट"
माड'र दिखा दिया
म्हे कै'ई रै
ककै कोडकै स्यू
क्यू नी करी सरू
वो बोल्यौ बापू !
अजकाळै
आ दो आखरा ऊपर ई
सारी दुनिया तळीज रै'यी है
मै काई करू ?

म्हे उण री भोळपणौ समझ'र
बात आई गई कर दी

पण दूजै ई दिन वीं
"ओ" अर "ई" री
लगमातां झला दी
म्हनै फेरूं अचरज होयौ-
म्है कै'ई रै वावळा-
वारखड़ी नै सरू स्यूं सीख
अधकचरौ ज्ञान ठीक नी हुवै ।

बो बोल्यौ
बापू, काल रा आखर
अर आज री लगमातां भेळी करौ
थां नै पूरी चौपड़ी दीख सी
अर इणी मांय
आखी दुनिया रौ
दीन
ईमान अर ज्ञान दीख सी

म्हारी आख्यां थमगी
अर अचाणचकौ ई हाथ
पेट माथै गयौ
म्हनै लखायौ
कै म्हारै पेट मांय
इण सबद सारू
जग्यां खाली है ।

□

वात, वगत अर सवद

सुशील व्यास

म्हैं, म्हारी वात की औरयू भात ई केय सकू,
सुण सकू थारी वात औरयू तरीके सू,
पण थे, यदळ दी म्हारी वात रौ मतलव,
वणाय दी वात रौ वतगड़ वात नै उड़ाय दी वतूळ ज्यू,
पण म्हारी वात मे, अणघड़ सवद नी है,
अर नी ई है कूड़ी रुवद जाळ,
पण थे ऐड़ी चाल चाली'क वात री ओळखाण ई वदळ जा
जग आ जाणैं क सवदा री हाट लगाय
कौण राखण री थारी आदत थानै फायदौ देवै,
सवदा सू मसकरी करण रौ मिळै मोकळौ मोल,
अर, साचा सवदा सू खेलण मे मिळै कूड़ौ मान ।
वगत मुजव सवदा नै ढाळ'र दें पायली ऐड़ी रूतवो'क
जद चावौ ज्या चावौ सवदा नै ढाळल्यौ चादी मे,
ठाकुर भाती कैय'र ज्यू चावौ जितरा चावौ पसारली पग,
सवदा री ओट, थै थारी गोट, जिया चावौ जमावौ
वण जावौ कदै'ई किरकाटिया तौ कदै'ई चमचेड़ ।
वगत देखता थारी वगतमुजय वदळणी वेजानी,
पण भायला
सवद कोरा सवद नी, साधना है,
कोरा सवदा सू खेल'र ऊची उडाण री उमाव कद फळियौ ?
जे, फळती ई है थारी निजरा मे, तौ ओ छळ
थे ई पाळौ थे ई रूखाळौ ।

आखर बेल

म्हैं ओ वैम नी पाळूं, इण छळ नै नीं रूखाळूं,
म्हैं, म्हारी वात रौ अरथ वगत में नीं, सवदां में देखूं,
पण थें - सवदां नै वगत पाँण नुंवा अरथ देय'र-
अरथ वणाय रया हो।
सवदां री सेवा रै नाम, खुद री नाव खैयरया हो।
कसूर थांरौ नीं, वगत रौ है,
वगत वदळ्यां वदळजा-सवदां रा अरथ,
वात रौ मतलव अर वणजावे वात रौ वतंगड़।

□

अेक दिन
गैती - सब्बळ
फावड़ा - तगारी
कुदाळी - कुल्हाडी
सगळा औजार मिलग्या
अर बात करण लाग्या
बाता ही बाता मे
आपणी-आपणी ढपली
आपणी-आपणी राग पै आग्या ।

गैती बोली–
मै नुँवा तीरथ-धाम कारखानां री
सुरूआत करू
जिण पै निरमाण सू
नक्शौ साकार हुवै
विकास री आधार बणै
खुसहाळी री रोसणी री सनेसौ
घर-घर पूग जावै ।

उण पळ - बोल उठी सब्बळ
जद - गैती री चाल रूक जावै
तो सगळा नै सब्बळ याद आवै
मै विकास री राह रा रोड़ा नै हटावू हू
काम री धीमी चाल नै तेज बणावू हू ।
अचाचूक फावड़ी केवण लाग्यी–

ठीक है ! ठीक है !
तुम छोटी नहीं हो
परन्तु मैं भी तो बड़ा हूं
यदि तुम मटकियां हो तो मैं घड़ा हूँ
जद गैंती अर सब्बळ ढेर लगावै है
तो उण ढेर नै फावड़ौ इज हटावै है
नहरां री पाणी धोरां धोरां में पुगावै है ।

जद आयी तगारी री वारी तो वा वोली–
तगारी ने भी आपणी भूमिका पे नाज है
श्रम देवता रा हाथां रा गहणां हो सके–
गैंती अर सब्बळ
तो तगारी भी सिर रो ताज है
मैं रेती - सीमेंट रै मिलण री साक्षी हूँ
पत्थर ने भी आपणी मंजिल पै पूगावूं हूं
नींव सूं ले'र शिखर तक साथ निभावूं हूं
खेत तक खाद लै जावूं
उपज रै सागै - सागै
हाट - वाजार- मंडी री सैर कर आवूं ।

तगारी री वात सुण्यां पछै वोली कुदाळी–
खेत खोदणी म्हारी काम है
वैसी उपज म्हारै करतब री
परिणाम है ।

हाँ तो कुल्हाड़ी थनै कंई कैवणी है ?
तू तो आपणां ही पगां नै जख्मी बणावै है
हरिया-भरिया रूंखा पै तलक चाल जावै है
निरमाण री उम्मीद करणी तो
थारा सूं बेकार है
तूं तो वस
टुकड़ा - टुकड़ा करण नै सदीव त्यार है ।

औजारां ने वात करता देख'र
आय ग्यो हथोड़ौ
अर केवण लाग्यो–
सूत, सावळ, करणी म्हारा साथी है,

मैं सदीव मैणत री खाऊ हूं
श्रमेव जयते रा गीत गाऊ हूं
इण खातर
आप सगळा औजारा नै अेक इज वात कैवणी चावू हूं-
आप सगळा ही आदर जोग
पण
मत पाळो ' मैं'' ''मैं'' री रोग
सगळा मिळ'र चाला ला
ता आपारो मान वधेला,
खुसहाली निजरे आवैला
मैंणत रग लावैला।

□

परछाई

दीपचन्द सुथार

लकड़ियां फाड़णी
उण री खास धंधौ है
इण वास्तै दिन ऊगतांई
कांधै माथै कुंवाड़ी मेल'र
भूखौ - तिरसौ घर सूं निकळ ज्यावै
गळी - कूचै मांय घूमतै रेणी सूं
कठी न कठी काम - धंधौ मिल ज्यावै ।
हैं हो, है हो, हैं हो री -
आवाजां लगांवतौ
बिना आराम कीयां
लूंठा लकड़ां नै फाड़तौ -
सिझ्यातांई ढिगली लगाय देवै
कमजोर तनड़ै सूं पसीनौ
कोरै मटके री भांत टपकतौ रेवै ।
उणी मांय टाबरां री भविस
लुगाई री इंछावां
घर- गिरस्थी री समस्यावां
अर आपरै सपनां री परछांई
रात मांय उठतौ - बैठतौ
करवटां बदळतौ
बीड़ियां फूंकतौ देखतौ रेवै ।
अेक अेक दिन
आंगळ्यां रै पैरवां माथै निकळतौ रेवै ।

❑

मैं भली भांत जाणूं

—जयसिंह चौहान

थें अणजाणी सूझ-बूझ सूँ जीवण ने धूड़धाणी करद्यो
यूँ लाग्यी जाणे जोजरा घड़ा में जळ भरद्यो
आंख्यां ने देख'र काजळ आँज्यौ जावे, इणी तरै थारा चित्राम नै देख'र,
थारी चरित्तर आंक्यी जावे।--

हँसवा-रोवा री थनै गत नीं, चलवा-फिरवा री थने हूँस नीं।
मैं भलीभांत जाणूं, मारी सीख नै थूँ लौड़ी अर नान्ही बातां समझ'र
टाल देला। हठीली जिनावर ठोकर लाग्यां पछै संभळै, अचेत्यौ,
ठाण में ठोकर खाई जावे।

डूब्योड़ी धरती पै लोग पाळ-पाळ चाले, काँटा अर भाटा नै सगळाई टाळै
पण इण भरमीली मति ने किण तरै मोड़ी जावै जिण सूँ
या भटकण री वेळां, यो अँधारा री अपजस थांसू दूर हो जासी
साँच्योड़ी सरम पाळवा खातर लोग तीखा तावड़ा नै भी सै लेवै
पर-पीड़ा मिटावण री हरख राख्यौड़ा मिनख
आपरा लाखीणा जीवण री हाण कर देवै
पण इस्यो अचेत्यो जीवण
किण काम रो जो उग्योड़ा-आँथ्योड़ा री फरक भूलग्यी
विगत रा विवेक सूँ आगत री उजळास पिछाण्यी जावै
आपरी डेळी ढाब'र आजूणा आलोक में चिंतण करणी चाहिजे
जाण्यां री अरथ हुया करै अणजाण्यां नै कंई अरथावणी
सावचेत रा धोळा झाग सूँ हीज हाथ धोया जावै
अचेती काळख सूँ नीं।

□

जाग सकै तो जाग

मो. सदीक

थारै सिर पर पैणा नाग,
मिनख रै मूण्डै आया झाग,
पळकतै माथै पर क्यू दाग,
लगादी घर घर मे कुण आग,
लाडला, जाग सकै तो जाग।

कुण से मिनख थारी जीभ डाम दी,
कुण सै मिनख थारा कुतर्‌या कान।
कुण से मिनख थारै पचिया नै पीच्या,
कुण सै मिनख थारौ मार्‌यौ मान ।।
कुण सै मिनख थारी लाज लूटली,
कुण सै मिनख थारी राखी काण,
कुण सै मिनख थारै बचियां नै वेच्या,
कुण सै मिनख थारौ खायौ धान ।।

अब सोच समझ कर चाल,
बद कर रोज बजाणा गाल,
चटोरा चाट रया है माल,
लाडला, पाल सकै तो पाल।

थारै सिर पर बैठ्या काग,
हंसला गावै रोणी राग,
दरद री लैणी पड़सी थाग,
जलम सूं थारै लागी लाग,
लगादी घर घर मे कुण आग,

*आवर बेत

चमकतै चैरां पर क्यूं दाग,
लाडला, जाग सकै तो जाग ॥

कुण सी लगावै थारै घर में चूंचकी,
कुण सी उजाड़ै थांरा हाट बजार,
कुण सी उछाळै थारै सिर री पागड़ी,
कुण सी उगावै थारै पीड़ हजार,
कुण सी लगावै थारै लार कूकरा,
कुण सी भगावै थानै बीच बजार,
कुण सी नचावै थारै मनरा मोरिया,
कुण सी बणावै थांरी बात हजार ।

आ, बैठ, बता कर बात,
अणूती लोगां कर ली घात,
खेलणी पड़सी देवण मात,
ऊगसी सोनलियौ परभात,

थारै घर में लागी आग,
बुझाणी पड़सी वैगो भाग,
लोग तो खेल रया है फाग,
पटकसी थारै सिर की पाग,
मुळकतै मूडै पर क्यूं दाग,
लगादी घर घर में कुण आग,
लाडला, जाग सकै तो जाग ।

❐

ओळूं

अखिलेश्वर

ठेला-ठेल मची सड़कों पर, सुस्तावण नै कठै न ठाँव ।
इण माया नगरी मे आई, ओळूँ थांरी म्हारा गाँव ।।
मिनखपणै रो काळ अठै है
पड़्यो प्रीत री टोटो ।
ऊपर सूँ है घणों फूटरो
मन रो माणस खोटो ।।

अठै तीख रो तपै तावड़ो, अठै कठै वा बड़ री छाँव ।
इण मायानगरी में आई, ओळूँ थांरी म्हारा गाँव ।।
अब झूरां वां धरकोटां पर
झिरमिर पड़तो पाणी ।
लारै रहगी सुख री घड़ियाँ
करती गाणी-माणी ।।

अठै बजारां सुपनां विकग्या, भरी भीड़ मे हार्‌या दाँव ।
इण मायानगरी में आई, ओळूँ थांरी म्हारा गाँव ।।
अठै भीड़ मे फिरै भटकता
बण्या लोग विणज्यारा ।
अठै कठै 'कासम' री का'णी
'हुणतै' रा हुंकारा ।।

अठै है गीत कठै पिणघट रा, अठै सुणी कागां री कांव ।
इण माया नगरी मे आई, ओळूं थांरी म्हारा गाँव ।।

बोवण वाळा बावळा

शिव मृदुल

रूँख लगाया राख्या कोनी ।
मीठा फळ भी चाख्या कोनी ।।
स्वारथ री ले हाथ कुराड़ी, काटण हुया उतावळा ।
बोवण वाळा बावळा आया करग्या रावळा ।।

ज्यूँ-ज्यूँ रूँख कट्या मँगरा सूँ,
मिनखपणा की जड़ कटगी ।
पैली मन मे चणी दीवारां,
धरती टुकड़ाँ मे बँटगी ।।
हेत रेत रै पींदे दबग्यो,
खेत बदळग्या बस्ती मे ।
वन री ठौड मिलां री चिमन्यां,
धुँओं उगळ री मस्ती मे ।।
कट्या नीम, बड़, पीपळ, चदण, केर टीमरू आँवळा ।
बोवण वाळा बावळा, आवा करग्या रावळा ।।

चौफेरा है हवा धुँवाड़ी,
जहर घुळ्यो जिनगाणी मे ।
गजब गदगी घुळ्या लागी,
पाँच नधा का पाणी मे ।।
सुख को सागर सूखो निकळ्यो,
सपना विक्या उधारी मे ।
खुशबू री आशा मे ऊगी,
बदबू केसर-क्यारी मे ।।
मानसरोवर पूग्या बुगला, तन उजळा मन साँवळा ।
बोवणा वाळा बावळा, आवा करग्या रावळा ।।

हेत

रामजीवन सारस्वत

हेत केवै हूं हुय जाऊं दुगणी
इतिहास ढूंढली म्हारी
राम-रहीम री राख राड़
क्यूं हेत रौ नांव विगाड़ी।
हेत कैवै हूं घणों हेतूळी
जोड़ूं हेत री तान घणी।
वै मूरख जो हेत नीं जाणै
अैड़ो नीं जीणों अेक घड़ी।
हेत नै हेत घणी जोड़ै
क्यूं प्रीत री टूट रैई लड़ी ?
हेत रै क्यूं अवै भेत आयोड़ी
हेज री कठै गई झड़ी।
हेत कैवै म्हारो मोल नीं कोई
हेत राख तो कोई देखै
मिळै हेत नीं हाट-बाजारां
हेत-हेज हिवड़ै खेलै।
हेत चावै भाठै सूं राखौ
हेत राखौ चावै मूरत सूं
हेत-हेत तो हेत हुवै
हुणो हेत चाईजै जीवण सूं।
हेत.............
.............म्हारो
राम-रहीम री.............
.............नां विगाड़ौ।

□

बगुला री एकठ है तगड़ी,
हस गिणत मे थोड़ा है।
मानसरोवर गुदळ्यो होग्यौ,
यौं हसा मे फोड़ा है ॥
जळकु भी कौ जोर घणौ है,
जळ मे कमल खिळै कोनी।
चुगवा खातर यौं हसा नै,
मोती आज मिलै कोनी ॥
बुगला कै घर माडा मौंई, रेवै हस कन्यावळा।
बोवण वाळा बावळा, आवा करग्या रावळा ॥

डोर धनुष की टूटी-टूटी,
तीर पड़्या सब तरकस मे।
पड़ी गुफावा सगळी सूनी,
शेर घुस्या सब सरकस मे ॥
पिंजरा में वनराज पीठ पै,
चावूका नत झेलै है।
जगल मौंही, चौड़ै धाड़ै,
हरण कबड्डी खेलै है ॥
लोमड़िया रा जमघट मौंही, गोठ करै है कौंवळा।
बोवण वाळा बावळा, आवा करग्या रावळा ॥

❑

हेत

रामजीवन सारस्वत

हेत केवै हूं हुय जाऊं दुगणी
इतिहास ढूंढली म्हारी
राम-रहीम री राख राड़
क्यूं हेत री नांव विगाड़ी ।
हेत कैवै हूं घणो हेतूळी
जोड़ूं हेत री तान घणी
वै मूरख जो हेत नी जाणै
अैड़ो नीं जीणों अेक घड़ी ।
हेत नै हेत घणी जोड़ै
क्यूं प्रीत री टूट रैई लड़ी ?
हेत रै क्यूं अवै भेत आयोड़ी
हेज री कठै गई झड़ी ।
हेत कैवै म्हारो मोल नी कोई
हेत राख तो कोई देखै
मिळै हेत नी हाट-बाजारां
हेत-हेज हिवड़ै खेलै ।
हेत चावै भाठै सूं राखी
हेत राखी चावै मूरत सूं
हेत-हेत तो हेत हुवै
हुणो हेत चाईजै जीवण सूं ।
हेत..............
..............म्हारो
राम-रहीम री........... ..
..............नां विगाड़ी ।

□

दारू रा दोष

महेश कुमार शर्मा

आ कुण कहसी वा क्यू कहसी, साच्योड़ी बात छिपा लेसी ।
घरियौ बाळ सियाळै मे अपणा ही हाथ तपा लेसी ॥

मद पीगे राता नैण कर्‌या, मन मे तू मोटो हो ज्यासी
अपणा माड़ा औ धन्धा स्यू, लोगा री निजरा गिर ज्यासी ।
पागल बण होश गमा देसी, कुत्ता जद मुह चाट्या करसी
गळी-मोहल्ला मे तेरी नित, हसी खूब उड्या करसी ।
नशौ उतरता ही मूरख, तू मन ही मन पछता लेसी ।
घरियौ बाळ सियाळै मे, अपणा ही हाथ तपा लेसी ॥

मा-बाप, भाई अर भैणा नै, गाळा स्यू गन्दा कर देसी
मिनख कोई समझावै तौ, बी रै ही सामी हो लेसी ।
चीजा तोड़ै, घड़िया फोड़ै, तू घरवाळी स्यू राड़ करै ।
ई राखस स्यू कद गैल छुटै, दुखस्यू नारी रा नैण झरै ॥
दिन उगता री टाबर-टोळी, रोटी री राग सुणा देसी ।
घरियौ बाळ सियाळै मे, अपणा ही हाथ तपा लेसी ॥

घर नरक तेरौ ओ बण ज्यासी, अक्कल सारी खो देवली
दर दर नित ठोकर खाकै, लोगा रै सामी रोवेलौ ।
उधार मागती फिरसी तू, अपणै सिर करज करावैलौ
टूम टेकरी. खेत कमाई. मद रै प्यालै मे खोवेलौ ।
कई रोग लगैला तेरै तन, आ सास नळी भी बळ ज्यासी ।
घरियौ बाळ सियाळै मे, अपणा ही हाथ तपा लेसी ॥

घट पणिहारी हासैली, गण्डक गाव गळ्या मे झगड़ै ।
वाळी जद शबद सुणै, छाती मे सेला सा उपड़ै ॥

नैण झरै घूघट भीतर, टावर म्हारा अब दुख पासी ।
नेफै मे दावै दस रिपिया, कदै फीस छोरा री पी ज्यासी ॥
चोरी, जूआ, माड़ा धन्धा, आखिर तू अपणा लेसी ।
घरियी वाळ सियाळै मे, अपणा ही हाथ तपा लेसी ॥

वड़ै भाग स्यू मिनख वण्यो, तू राखस क्यू कहलावै है
मा-बाप री जायदाद क्यू, माटी माय मिलावै है ?
पी दारूड़ी, गा मारूड़ी तू, माड़ौ क्यू कहलावै है ?
ईं खारै पाणी रै खातर, क्यू घर मे आग लगावै है ?
मद पीणौ तू छोड़ मिनख, नी तौ आ थानै पी ज्यासी ।
घरियौ वाळ सियाळै मे, अपणा ही हाथ तपा लेसी ॥

सुण स्याणा री सीख फेर, आत्मविश्वास जगालै तू
गई जकी नै छोड़ और, आगै स्यू नेम निभाले तू
ईं विषधर काळी नाग फणी स्यू, मुड़ ना हेत लगाई तू
ईं जहर भर्योड़ी बोतल नैं, घर स्यू ही दूर भगाई तू
ठोकर खाकै चेतै, वो ही मिनख देवता कहलासी ।

घरियी वाळ सियाळै मे, अपणा ही हाथ तपा लेसी ।
आ कुण कहसी वा क्यू कहसी, साद्योड़ी दात [illegible] लेसी ॥

ट्यूशन रासो

ओमप्रकाश व्यास

शिक्षक शिक्षा-भक्षक बणनै ट्यूशन कर रिया है।
टाबरियां ने डरपा-डरपा जेवां भर रिया है।

शाळा में कक्षा नीं लेवै,
'घरै भणौ' यूं चौड़े केवै।
'प्रिंसीपल' रो कयौ न मानै।
घर में ट्यूशन खुल्ली लेवै॥
चतर कागला हर शाळा नै मेली कर रिया है।

घरै दुकानां सुबह लगावै,
शाम लगावै, रात लगावै।
जो टाबर भणबां नीं आवै,
हाका कर-कर रोज बुलावै॥
धरम करम नै छोड़ पाप का भांडा भर रिया है।

अंग्रेजी में 'कोचिंग' चाले,
प्रेक्टिकल की डरपणी घाले।
साइंस गणित नै कोमर्स वाळा,
घर वाळां की छाती याळै॥
हाकम हुकम मेल खूंटी पै लिछमी-चाकर बण रिया है।

मोटी-मोटी डींगां हांकै,
ट्यूशन मे कोई पाछ न राखै।
मरी आत्मा, मनड़ी मरग्यी,
सगळां नै धोखा में राखै॥
पास फेल का चक्कर दे दे, सांग झूठरा कर रिया है।

कीनै केवे कूण बतावै,
कुण सुणै अर कुण सुणावै ।
ईं छेड़ै सू उण छेड़ै तक,
सगळा मिलनै मजा उडावै ।।
गाव गळी-नुक्कड़ में सगळा स्वार्थ पूरो कर रिया है ।

डाइरेक्टर सू लैटर आवै,
शाळा मे सब भर्णै भणावै ।
करे घोषणा ट्यूशन कोनी,
अणगिणती रा धरा बुलावै
झूठा साचा भरै आकड़ा, सतवादी सब बण रिया है ।

टाबरिया नै राजी राखे
माल मिठाया लारै चाखे ।
भलो बुरो अफसर रौं सुण ले,
सगळा नै भेळा अे राखै ।।
बाट चूट नै खावै सारा माल तरातर चर रिया है ।

अफसर 'फ्लाइज' रोज लगावै,
पण कीनै ही पकड़ न पावै ।
छोरा-छोर्या का मूडा सू,
ट्यूशन सारू आप नटावै ।।
हथकडा कर खोटा खोटा बरबाद भणाई कर रिया है ।

लाज शरम यानै नी आवै,
नैतिकता सू दूरा जावै ।
होशियारा नै फेल करै अै,
ठोठ्या नै 'मेरिट' मे लावै ।।
शिक्षक री छवि मेट, बजारा भवता फिर रिया है ।

गणती मे दो चार जणा अे,
गावै खोटा, राग भुडावै ।
सगला नै बदनाम कर दिया,
विद्या नै व्यापार बणावै ।।
ट्यूशण रासी 'ओम' बखाणे, धरा भार अे बण रिया है ।
टाबरिया ने डरपा डरपा जेबा भर रिया है ।

तीन रुबायां

अरविन्द चूरूवी

गुण असुदर नै भी सुदर वणावै छै,
दुरगुण सुदर ने असुदर बणावै छै,
पावू आगळ्या वा री घी मे आजकाल-
घी रौ तड़को दे'र माल तर वणावै छै ।

खूणै माय वैठ'र रोऊ छू कोई देख ना लै,
खरोड़ै विछा'र सोऊ छू कोई देख ना लै,
वीनणी आपरै पीयर व्याव म गई छै-
रोटी वळी-जळी पोऊ छू कोई देख ना लै ।

छान कै छै, 'म्हनै छाकर देखौ',
वेटी कै छै, 'म्हनै व्याकर देखौ',
और भी जे की देखणी चावै 'अरविद'
तो चेजो कैछै, 'म्हनै चलाकर देखो ।'

◻

पंचामृत

अमृतसिंह पँवार

थासूं मिल'र दुखड़ो, थोड़ो हल्को है जावे है,
घड़ी दो घड़ी ही सही मन सावण बण जावे है,
पण हिरदे में छिप्योड़ो दरद गैरीजै जदै,
काळ री पीड़ा सूं मन फेरूं घबरा जावै है ।

बरखा आवै रिमझिम री बात करी थै,
रूठ भी जावौ तो कीं बात कोनी, सरगम री बात करो थै
कुण जाणै काल कंई अ'र कैड़ी बात होसी,
घड़ी दो घड़ी प्रीत री बात करो थै ।

सांस री पिंजरौ किणी दिन टूट जासी,
हर एक मुसाफिर मारग में छूट जासी,
हर किन्नेई प्यार कर, प्यार ले सगळा रो,
कुण जाणै किण बगत, प्रेम रो घट फूट जासी ।

आज फेरूं बा घड़ी मनै याद आई है,
बा झूमती सावण री झड़ी याद आई है,
बैठ'र गुणगुणाया हा, जका गीत थां अर म्हां
आज उण गीत री भूलियौड़ी कड़ी याद आई है ।

जितरी भुलायी है थनै, उतरी ही याद आई है,
जितरी जळायी है खुद नै, उतरी ही आग पाई है,
कुण जाणै कुण बणाई है आ रीत न्यारी,
कै हिवड़ौ तौ खुद रौ है, पण प्रीत पराई है ।

☐

चौखट

ओउम् प्रकाश सारस्वत

दिसावर रह्या करती, म्हारी दीपी काकी,
टाबरां ने कूट्या करती, ठोली उण'री हो पाकी ।
रेवतियै रै लारै भाज्यौ
पण वो आगी नै नाठ्यो
ठोकर खा'र पड्यो'र फोड़ाय लियो चाको ॥

बेगौ उठणौ चोखौ हुवै, केया करै है काकी,
एक दिन म्हूँ बेगौ उठ'र मिटायौ बारी हाकौ ।
लोटी लेर भाज्यौ
...धयै री हुयौ सागौ
गंडकड़ी सू टाँग फड़ा'र, पकड़ लियौ माचौ ॥

दो ही बिनणक्यां, हुयो एक रे जापौ,
एक ईसी ठाली - भूली, छोड़ैइ कोनी माचौ ।
केयी तीजोड़ै नै परनावण री
नूंई बिनणी लावण री
माँ बोली तीजोड़ी नै लार काँई घालणौ है स्यापौ ॥

छोटो'ड़ी भतीजौ म्हारौ घणौ लाड रौ लचकौ,
फाक्यां, बिस्कुटां री कमी नही, नी किणी बात रौ भचकौ ।
अेक दिन बाखळ मे
म्हैं देख्यौ उंतावळ मे
बा'को खोल'र देख्यौ तो भरोड़ो हो उणमे रेतौ ॥

□

म्हारलो गाँव

महावीर जोशी

च्यारू ओड़ा छान थी, नीमड़िया री छाव ।
कोसा लैरा छूटगी, आज म्हारलो गाँव ॥

एकौ थो जित जोरको, भाई को सो भाव ।
कदै न कोई राखती, आपस माय दुराव ॥

सुख दुख लेकर मौकळा, आता दिन अर रात ।
मौसम बुगचो खोलती, सी, गरमी, बरसात ॥

इत तो छान'र झूपड़ा, उत ठाकर को कोट ।
सूरज उगतो रोज ही, लेकर बै की ओट ॥

शहर जाण कौ हीवड़ै, रैंती गैरी चाव ।
सेरा ल्याता रामरस, तेल मिरच बस पाव ॥

सावण झूला झूलता, फागण रचता फाग ।
गाँव गळी की गोरड़ी, गाती जीवण राग ॥

साझी इज्जत राखता, साझी सै को मान ।
साझा सुख दुख झेलता, साझा छापर छान ॥

मरज्याणू मजूर थो, राखण खातर बात ।
बिन भाई की भाण के, धाड़ी भरता भात ॥

वचन दियोड़ो पाळता, देकर अपणू माय ।
जुध मे जाता छोड़कर, हथळैवै कौ हाथ ॥

गाढ़ी गाढ़ी रावड़ी, पतळी पतळी
पी कर सोता लोगड़ा, लेता सुख री

तीज तिवारा हीवड़ै, चढतो गैरो
कठै गया वै लोगड़ा, कठै गया वै

नी पणघट नी देवरा, नी पींपल कै
लोग बच्या नी पैलड़ा, रह्यो न साग

फागण मे चग बाजतौ, मन मे भरतं
गैरो आवै याद बो, आज म्हारलो

भूरी भूरी टीबड़ी खेजड़िया रा
दिन तो बीत्या मो कळा, गयौ न मन

के माडू के छोड़द्यू, बाता तो उ
सुरगयळी सै गाच नै, झुक झुक करू

□

अब हँसां रा दिन गया

कुन्दन सिंघ सजल

भाईचारा, दोसती, चुक्या प्रेम रा भाव ।
पंचायत रा गांव में, जद सूँ हुया चुणाव ॥

चायै फेरां री टलै, लगन महूरत जोग ।
बारातां में नाचता, दारू पीकर लोग ॥

महलां तेली गांगलो, प्रहरी राज भोज ।
अह हँसां रा दिन गया, काग उड़ावै मौज ॥

अंध आस्था, कुरीतियां, जात-पात री छांव ।
कुँडली मार्‌यां सांप सो, बैठ्यो म्हारो गाँव ॥

बैठ पिलंग पर बाप नैं, रोज करै उपदेस ।
पढ़कर आयो शहर सूँ, सेडू री सरवेस ॥

कम्मो छांरी रै गई, पाछी फिरी बरात ।
फिर दहेज रा दांव पर, गई गांव री बात ॥

बीमारी सूँ तंग व्है, कुअै पड़्यो खुरसीद ।
थाणै, आलां के हुई, बिना ईद कै ईद ॥

नहीं चैक री हैसियत, नहीं जैक री मार ।
शिक्षक घुन्नीलाल रो, पुत्र फिरै बेकार ॥

डोरा डंडा बेचकर, करै विघन री नास ।
भूत भगावै गांव में, मंतर पढ़ रैदास ॥

नुवीं सदी रै, घाव सूँ, पूँच्यो देस करीब ।
शहरां रै ढिग आज भी, फेरूँ गांव गरीब ॥

❑

महरिया रा सोरठा

दयाराम महरिया

अंतस घोर अँधार, आखर औखद एकला
भणिया उतरै भार, मातभोम री महरिया ।

रगत पियोड़ी रेत, पाणी ज नी पताइजै
मात मुलक रै हेत, माथौ माँगै महरिया ।

परहित तजै पिराण दुजा रै दुख दूबळा
मिनख अहरा महान, माथ नवाऊ महरिया ।

सागरिया री साग, फोगलियै री रायतो
भैंस दही बड़ भाग, माडै साथै महरिया ।

जगती लीना जोय, गरजी फरजी घुण घणा
दाय आइया होय, मजूर करसा महरिया ।

चपळ घणौ चित्त चोर, नदी नीर चँचल सदा
लूमै सावण लोर, माया छाया महरिया ।

भली बुरी ग्या भूल, माया लारै मानवी
फकत याद फळ-फूल, भूळ भूलग्या महरिया ।

दादू, नानकदेव, कबीर, तुलसी काय का
सूरो सुरसत सेव, माणिक माड्या महरिया ।

जद औसर मिल जाय, चुगल खोर कोनी चुकै
सूत्या भूत सदाय, मटका पटका महरिया ।

□

मैं डरतोड़ै हां भर दी

चमेली मिश्र

जाट बोल्यो–सेठ तेरी सेठाणी तो काणी,
तू तो धन्नी सेठ है, ल्यातौ कोई राणी ।
सेठ बोल्यौ–अरे मै नट्यो थो,
काणी नै देखता ही पीछे हट्यो थो ।
मा नै कह दियो–ब्या कोनी करूँ,
दादा स्यू, बाप स्यू, किया ना डरूँ ।
मा मानगी, बाप नै माननी पड़ी,
मै सोच्यो–टळगी सकट की घड़ी ।
पर, पासौ पलटता देर कोनी लागी,
बाप की कोनी चाली, दादा के आगे ।
दादौ बोल्यौ–'ब्या करणो पड़सी,
नही तो मेरी नाक कटसी ।
मैं छोरी के बाप ने जुबान दे बैठ्यौ,
मेरी नाक कट सी, जे तू पाछौ हट्यो ।
नाक कटण की बात पै, बाप घबरायौ,
हाफतो हाफतो मेरी मा कनै आयौ ।
मा मनै बुलायौ, फेर मनै समझायौ,
नाक कटण की बात को, किस्सो बतायौ ।
मा बोली–आपणौ खेल है पीसा को,
पीसा स्यू, पीसा आवै ।
काणी है तो के है ? दायजौ घणौ ल्यावै
बीस लाख तो नकद मिलैगा
सागै
मोटरकार ।

एक हवेली यणी - वणाई,
चोखी चालेगौ व्यापार ।
काणी है, आई तो खोट है ।
जे तू नाट ग्यो तो
तो लाखा की चोट है ।
काणी नै कोई ताकै ना,
वार का, ना घर का ।
मागै पीसा वचैगा-
काजल, क्रीम और पौडर का ।
ताकण हाली बात पै,
मै गौर कर्‌यी
तो मोत डर्‌यो,
मै 'डरतो ई हाँ मर दी' ।

❐

मतलब रा माचा

शारदा शर्मा

ए, माचा मतलब रा
वे मतलब भारी हूग्या
डोकरी सिराणे, डोकरी पगाणे
पगाणे पूरी दावण कोनी
बाटकै में घाप पीवै
ऊंची सुणीजै दीखै पूरी कोनी
आवणिया जावणियां नै टौके
नसल री रुखाळी करै बिना एड्यां री पगरखी
फाट्योड़ी लुंकारी
डोवटी रा गाभा
डील स्यूं लुक मीचणी रमै
मौसम री कुघरणी
दम घोटै, खांसी अर, खंखार छोडै
डोकरी माची छोड़गी - सदी खातर
डोकरौ - हेला मारै
'माचौ छियां करो रे'
सुणर रमता पोता पोती आवै -
जोर लगावै-'हैस्या'
ए, मतलब रा माचा–टहलै कोनी
सिड़या, आप मतैई छियां आवै सांसा री मूंज - जगां जगां सूं
देह री दावण कसीजै कोनी
हाडां री घूलां हालै
मतलब रा माचां ज्यूं भारी हुग्या
मां बाप।

❑

रूंख संवारो

सुशीला भंडारी

पेड़ा नै काटौ मत भाई
पेड़ करै है घणी उगाई ।

मीठा-मीठा फळ निपजावै
ठंडी-ठंडी देवै बायरियौ ।

तपती लू सू झुलस्योड़ा नै
ठंडक अै देवे है खुलनै ।

गैणा है धरती माता रा
रंग रंगीला पुस्प निराळा ।

उण नै ओढ़ावै चून्दड़ी
खेत दूब नै रूखड़ा ।

धरम बणियो है पिणियारिया रौ
पैड़ा नै पाणी देवण रौ ।

रिसि मुनी इण नै पणपाया
ज्ञान्या ध्यान्या रा अै प्यारा ।

वैदिक मन्तर भी आकौ
घणौ बखाण करियौ तरूवाको ।

भूकम्प, बाढ़ अकाळ ने थामै
धरती रा सगळा दुख मेटै ।

पछी इण पर गीत सुणावे
सगळा रा साथी है तरवर ।

ऊँच नीच री भेद नसावै
समता रा अै पाठ पढ़ावै ।

भूखा री अै भूख भगावै
तिरसा री अै तिरस मिटावै ।

सखरा चौखा कारज आका
बड़ा भाग साचा मिनखा का ।

मत सहारी रूख सवारी
धरती मा री करज उतारी ।

□

अलख जगाओ !

कमला जैन

सूख्या थांरा सगळा अंग
उड़यौ उड़यौ मुखडा री रंग,
हिंगळू में पड़िया है जाळा
धूळ पड्या है काजळ काळा,
भूल्या सै सौळा सिणगार
टूट्या रे मोतीड़ा हार
जीव जीव में है अबखाई
झूरै मिनखां ! जामण जाई ।

टाबर जाम्या कैई करोड़,
दीधौ तन नै साच झंझोड़
बधतौ जावै कुटम कबीलौ
सूझै कोनी कोई गेलौ
अन-पाणी तौ होरया मूंगा
मिनखां जाया जावक सूंगा
हिवड़ै ऊँडी पीड़ समाई
झूरै मिनखां............

चीर चीर सै लीला चीर,
नद निरझर रा सूख्या नीर,
उजड्या जावै अपणा गांव
रूखां औटी अपणी छांव
कौम कोम, में मच्यौ कळैस
सिसकारी नाखै है देस
भाई सरखौ कुण सौ भाई ?

सव मिल हिल मिल अलख जगाऔ
हरिया हरिया रूख लगाऔ
खेत सभाळौ विणज वधाऔ
उजड्या आखा गाव वसाऔ
राखौनी सीमित परिवार
जे चावौ सुखमय ससार
नीतर होसी लोग हसाई
झूरै मिनखा ।

❑

अलख जगाऔ !

कमला जैन

सूख्या थांरा सगळा अग
उड़यौ उड़यौ मुखड़ा री रंग,
हिगळू मे पड़िया है जाळा
धूळ पड्या है काजळ काळा,
भूल्या सै सीळा सिणगार
टूट्या रे मोतीड़ा हार
जीव जीव मे है अवखाई
झूरै मिनखां ! जामण जाई ।

टावर जाम्या कैई करोड़,
दीधौ तन नै साव झंझोड़
वधतौ जावै कुटम कवीलौ
सूझै कोनी कोई गेलौ
अन-पाणी तौ होरया मूंगा
मिनखां जाया जावक सूंगा
हिवड़ै ऊंडी पीड़ समाई
झूरै मिनखां............

चीर चीर सै लीला चीर,
नद निरझर रा सूख्या नीर,
उजड्या जावै अपणा गांव
रूखां औटी अपणी छांव
कौम कोम, मे मच्यौ कळैस
सिसकारौ नाखै है देस
भाई सरखौ कुण सौ भाई ?

सब मिल हिल-मिल अलख जगाऔ
हरिया हरिया रूंख लगाऔ
खेत संभाळौ बिणज बधाऔ
उजड्या आखा गांव बसाऔ
राखौनी सीमित परिवार
जे चावौ सुखमय संसार
नीतर होसी लोग हंसाई
झूरै मिनखां !................

□

यादां का पंछी

कृष्णा कुमारी

बीता दिना का बखरया तिनका सू बुणकर,
मन का बागा मे घोसलो वणायो प्यारो ।
यादा का पछी न धीरा सू आण,
हौळे हौळे सू इण दुलरायो ॥

दूर रहो हरदम ता भासे तो काई
जळता हिरद्या ई इण न धीरज वधायो ।
रो रो कर रात रात मूँ जागी,
लौरी गा गा'र ईनै मयि सुलायो ॥

विरह आगण म तण-तण जल छ,
सावण भी सदा अगारा बरसावै ।
यो पछी तण को ताप हरण कर
जीवा-मरवा को रहस्य समझावै ॥

तातो जाणी कसी दुनियाँ म खोग्या,
अब तो यादा ही म्हारी छ साथी ।
या ही पौंछै छ म्हारा वहता आसूँ,
जब न आव ताकी कोई पाती ॥

☐

थारी कलम रै पाण

लालाराम जे. प्रजापत

ओ साहितकार !
तूं एकता री
भागीरथी वेगवान कर
थांरी कलम रै पाण
कै जिण सूं,
मिनख री आशंकावां
भरम अर भेद-
मन्दिर, मसीत, गिरजाघर रा,
अखी रैवै तो-
मानखै रो देवरो !
रूं-रूं मिनख रै हरखै
सगळां री-
आतमावां मिल ज्यावै-
दुइ जावै
भाषा/धरम/जात/रंग भेद री भींता ....

□

मनै लागे है

छीतरलाल सांखला

पाणी जीवन है
पाणी
इज्जत है
अर
पाणी
मिनख पणा री नाम है
मिल जावै है पाणी
पाणी मॉंय
हो जावै है एकमेक
नहीं है मनखपणौ
जिण मॉंय कोनी मिल सकै यो
कोनी गा सकै गीत जिंदादिली री
क्यूँकि नहीं है पाणी
उण मॉंय
मनै लागे है कोरौ
घासलेट है वो
कोनी घुळ सकै पाणी मॉंय
हाँ, मिनख जमारा रै माथै
लगा सकै है लाय ।

□

गुरूजी री चोट

गोगराज जोशी

गुरूजी जद् थे बोली हो-थारी बोली कविता सी लागै
डण्डो जद थे सिर पर मारो हो
मायड़ सुरसती अगै जागै ।
"अब तो आई चेला तनै अकल ?
मत पुचाया कर तू मेरी हर बात माय दखल"

सुणी बात जद् गुरूजी री-चेलै !
वो खेलण लाग्यो गुली डण्डो
गुरूजी आपकै हाथ हाळो डण्डो चेलै कानी फैक्यो ।

गुरूजी री चोट, विद्या री पोट स्यू चेलै नै
उपज्यो ग्यान,
निहाल होग्यो मैं गुरूजी ! धर लीनो थारली बात रो
पूरो पूरो ध्यान ।

❐

कफन री मांग

चंचल कोठारी

बापू म्हनै परणावौ तो–
दायजै रै लारै
कफन भी बाध, दिराजौ
क्यूंकै
जे घर मिल्यौ
पइसा री लोभी
तो यो आपरौ दियोड़ौ
कफन रौ कपड़ो
घणौ काम आवैला
नीतर अे आततायी
म्हनै बिना कफन जळावैला ।

❑

बसंत पाँ'च

वी. मोहन

ऊँखड़ाँ का माथा'न प ताळया वागी,
तावड़ो घणो हांस-हांस अर सरग सूँ झाँक्यो
जदी कोइ न खुसी को झण्डो ले'अर
खसवू को फूल फाँक्यो, तो लोग घण्याँ न खी,
क' बसंत पाँ'चू को थ्वार आग्यो–

फूलाँ की डील अर वाळ की असवारी
काँकड़ सूँ ही बरबूल्यो, आग'-आग' भाग्यो,
माळ मं ऊभी पौध, खड़खड़ाती, असी हाँसी,
क' हाँसता-हाँसता, लोटपोट होगी
जदी हाळी न हाँको पाड्यो क' बसंत पाँ'चू को थ्वार आग्यो-

वागाँ मं आँवा न गीत गावा न
कोयळाँ क कोको दे द्यो
फूळाँ स सदां सज-सजा अर
समझोतो, करल्यो
मोगरा-मोगरी न महकाँ बखेर दी
गुलाब न फिर की सावळी ओढ ली
ब'ण बेट्याँ न आँगणा मं फूँदी दे'र,
अळसी अर तुळसी का माथा प बासण मँगाल्या,
तो खाँखरा जी न, टेसती धजा बँधा उस डूँडी पटा दी,
सावो सधग्यो, बसंत पाँ'चूं को थ्वार आग्यो–

❑

आ जिनगाणी

मुरलीधर शर्मा

खाडै मे खळकता
जीवण मूल्या नै
आये दिन होवता
अपहरणा नै
ठड पीवता
लूठा कदमा नै
सूनी निजरा सू निरखती

आ, जिन्दगाणी
सकळपा रा झासा झेलती
नागाई नै नमन करती
सुरक्षा री वैम पाळती
अहिल्या दाई
पथराईजगी है
किणी राम नै उडीकती ।

□

जगियो मास्टर लागग्यौ

दीनदयाल शर्मा

जगियै री मां वोली
सुणौ के स्यार्णौ
जगियो मनै लागै घणौ अणखाणौ
दसवीं मांय बडगर
रै'ग्यो च्यार वार
थे कद तांई खींचोगा
अेक गाडी परवार
के ठा इनै कद अक्कल आ'सी
मनै तो लागै छोरो हायां स्यूं जा'सी
या तो इण रै नाक मांय
नकेल घाल दैयौ चटकै
फेर आपणै भलांई
चायै ठोड़-ठौड़ भटकै
अर दसुवैं'ईं दिन
बीनणी
घर मांय आ'गी
उठतां-जागतां जगियै रा
वा कान खींचण लागगी
मी'नी ई नीं होयौ घर रौ भाग जागग्यौ
अेक पराईवेट इस्कूल मांय
जगियौ मास्टर लागग्यौ !

—

किण दिस टुरग्यौ

सुरेशचंद्र उदय

अंधमोचण सगती सू बुद्धि लेय,
मायड़ री कोख सू जळम्यौ ।
जग री वाय लागता ही
थारौ मिनख मायलौ किण दिस टुरग्यौ ?

छापा टीला-टोटका मे त्यार,
मिन्दर सेवट नी सेवै ।
टोळा रै टोळी में
जळमट जमरी वण किया झलकग्यो ?
थारौ मिनख मायलो किण दिस टुरग्यौ ?

भेप वणाया सदा सावटौ
कद काई अर कद काई ?
देस प्रेम री वाता सू मन थारौ किंया विचळ ग्यो
थारौ मिनख मायलौ किण दिस टुरग्यौ ?

चाहै जिण री माळा फेरो
चाहै जिणनै कर सुमरण ।
साच नाम मरजादा सू,
थू किया उचटग्यौ ?
थारौ मिनख मायलौ किणदिस टुरग्यो?

मिन्दर थारौ ओ है सरीर,
मसजिद मीनारा दोय हाथ
मन सगती नै विसर थारणै किया उळजग्यौ ?
थारौ मिनख मायलौ किण दिस टुरग्यौ ?

लिछमी दीसी

लिछमी दीमी नी गळे हार, जेवर गाटा नी वेसुमार ।
गावा हा उणरा तार तार, मुड़ा पे झुर्री वेसुमार ॥

उल्लू दिस्यो हो ऊभो निसक लिछमी आभे काळो मयक ।
नेतावा मो हो निप्कळक पगल्या म दीम्यो अेक डक ॥

पूछ्यो म्हारी लिछमी मात, क्यू दसा वणी वाडा है हाथ ।
वोली भोळा है 'उदय' तात, मेल विदेस मूको है गात ॥

धोळे हाथी रे वाथा हूँ, कोरे-कागज री वाता हूँ ।
परिस्थितिया रे हाथा हूँ, हूँ वणी भिखारण दाता हूँ ॥

उड़ी नीद म्हूँ घवरायो, इस्यो काई सुपनो आयो ।
आवे परवाती व्है साचो, साचो होवे पण क्यू आयो ?

❑

म्हारी अरदास

मगरचन्द्र दवे

पीस-पीस अ'र,
ठाँकणी मे उवारण मे,
काँई वताई ?
थे ई' ज केवौ ??
मैं मानूँ हूँ, थे म्हारा शुभ चिन्तक हो
हेतालु हो ।
थे मनै खून वढ़ावण री नुस्खौ बताऔ
पण काँई करणौ,
खून वढा'र ?
खून वढ़ैला, तो,
चारूँमेर रा खटमल, अ'र,
माँछराँ रै, जास्ती मजो होसी
दावत भई दावत ! पाँचू आँगळियाँ घी मे,
इण वास्ते, आपनै म्हारी अरदास है
थे मनै खून वढ़ावण री,
सला सू पैला,
आ सला देवौ, वतावौ, कै
इण माँछराँ, खटमलाँ री वढ़ती फौज सू,
किण भाँत, निजात पा सकाँ ।

❒

अेकलौ ही सही

राधेश्याम अटल

जद चेत ज्या वै है
मिनख रो मायळो मिनख
मत्तै'ई सरक ज्यावै हैं डूगर
आँधी थम ज्यावै है
माखी रै डक स्यू डरपणिया
कदे'ई नी चाख सकैला
सै'द रो सुवाद ।

सुतुरमुर्ग रै गर्दन लुकाया
अर कबूतरा रै आँख्या मूद्या
वदळ नी ज्यावै
विलाव रो मनसूवौ,

इण वास्तै
म्है अैकलो' ई सही
पण मिनखा रै मायी
उतरतो अधारौ, करळाती मायत
अर धरती नैं धूजती अबै
और ज्यादा सहन नी करूँला ।

नी सही मेरै सागे भायला री भीड़
अेकलौ' ई सही
म्हैं जळती रैऊँला माटी रै दीया दाई
पण सूत्यौड़ा मिनखा नै अेक वार
ओज्यू जगा कै रैऊँला ।

□

आम आदमी कनै कीं नहीं

किशोर करूण

म्हैं जाण्यी कै अबै
ढळगी हुवैला मावस री काळी राता
गिगन में खिल्योड़ै विणजारै चाद
हिवड़ै रा सूना म्हैला
काजळिया नैणा अर
काची-काची कूपळा माय
भरी हुवैला प्रीत री किरण्या ।
बोया हुवैला हेत रा
हरिया हरिया रूख
मुळकी हुवैला रातड़ली
झर झर झर्‌यौ हुवैला चाद
तरूणा री तरूणाई अर
गजवण रो मनड़ौ हरख्यौ हुवैला ।
पण कल्पनावा कित्ती थोथी निकळै
हिवड़ै रो हेत, मुळकती राता
विणजारो चाद
कठै गया सगळा सुपना ?
कोठिया अर बगला माय कैद
ऐ सपना ! ऐ सुखसाज
आम आदमी कनै कई नी !
बुझती चूली भूखौ पेट
कल्पनावा रा गीत
और की ना । और की ना

धुंध

घनश्याम राकावत

आज, घोर अधारी
डाफर सू टूटीजियोड़ी
आगळिया
रगा मे ठरती-जमती लोही
पण, इण हाथ रौ निवास
जाणे रूई रो फोयो है
लिलाड़ रे पसवाड़े
धुध'र कोहरौ निरभै सोयौ है
अठे ही क्यू आखा देस मे फेल्यो है
मिनख नै मिनख कद गिणै
गहरी नींदा लोग सोय रिया है
(कोई जाण बूझ सुलाय रियौ है !)
तो कोई जलमभोम माथै
अमर होय रिया है
किणी चिमक जाग सू
अेक आध चेत्या है
अलख जगाय, जगा रिया है
कदै मायड़ रौ मोह
मोभा पूता मे बावड़ जाय !
बिखेरड़ी दिसावा
सायद मिळ जुलनै
कदास अेक हुय जाय ।

❐

हवा री प्रताप

आर. एस. व्यास

आकाश मे सूरज तपतौ
भरी दोपहरी मे
धरती री हिवड़ौ जळती
मानखौ तड़फतौ-तरसतौ
पाणी ने

पूरब दिशा सू
झोकौ आयौ हवा री तेज
धूप मे मिळणी री सोच
अर तेज उठर भगवान री
मशा सू

हवा आपरौ बदळर रुख
पाणी सू भरीयोड़ा बादळ
सूरज नै दियो ढक,
ज्यू गौरी काढ्यौ हुवै घूघटौ
धरती री प्यास बुझावण नै
आयई बादळ

हवा रो रुख बदळयौ
पाणी बरस्यौ घटाटोप
छीलरिया, तळाव भर गया
आछौ प्रताप हवा री
हुयी है
सकळ जियाजूण एकूकार ।

अणजाणी

वासुदेव चतुर्वेदी

अणजाणी
थूं सबदां तीर चला अर,
समय री सिला पै
नुवां आलेख लिख्यां करै है ।
मन-पराण
घायल कर अर
गैरा घाव कियां करै है ।
रातां सबदां री आक्रति
प्रतीक रक्तिम आभा री
लावण्यमयी
सरीर गठियौड़ी
भान करावै
दान रै बदळै
प्रतिदान रो ग्यान करावै ।
चाँद जस्यौ मुखड़ौ
गोरो रूप
सुनैण
लागै नवयौवना
यो भमकौ
यो रूप रौ अनुमान
मनड़ा नै झकझोरे
बंद आंख्यां में तैरे
एक सुनहरी सपनौ
मोती ज्यूं दमकै

थारी दतावळी
वाळ थारा काळा काळा
नागण ज्यू लेरावै
भृकुटियाँ नचावै,
ख्याला मे आवै
थारो हौळे हौळे मुस्कराणी
रूप सरूपी
कस्योक व्हैवे
इनै पड्यो समझाणी।
थारो मुखड़ौ
मौन - मूक आमत्रण देवै
मनड़ौ म्हारौ
वार वार उथालौ देवे,
सबद, अरथ भाव
देवै एक सनेसौ
यू लागै जाणै
जिनगाणी ठेरगी व्हैवे
अणजाणी
सबदा सू खेलवा री,
सबदा ने भेदवा आळा
बाण चळावा रो
ओ खेल बन्द कर,
अस्यो नी व्हैवे कै,
ओ सबदा रौ वैपार
थनै जळा न दै
आपणै निसचय से डिगा न दे,
विस्वास जद टूट जावै
आपणै आप सू
उळझती सुळझती
हार जाओळी
उण बगत फेर थू
आपणी मजळ पै
पौंच जावेळी

□

अध्यापक - एक बोध

व्र. ना. कौशिक

अध्यापक / तू / स्रोत हो'अर श्रमिक बणग्यौ
तू विधान दृष्टा अ'र दर्सन/ साहसी उत्साही
ऊगतै सूरजी री आभा ज्यू जाज्वल्यमान / थारौ ग्यान
पथराया पथा नै / चेतन कर देवै पाळै पोसै
तू / तुमुल विमल घोष / दूरी/ ध्वनि/ प्रचण्ड शक्ति
भभूळिया ज्यू / गिगन रा वारा नै / थपथपावै
भाफ रा घोड़ा । घडर सरजीवण कर्‌या दुड़ाया
'भू' सू 'द्यू' ताई नाप आया/ जग अग
काळ स्यू रुकै कोनी / प्रकाश री गति स्यू चालै
तू / नचिकेता / थारो तराजू / तोल चुक्यो
अण्ड - ब्रहमाण्ड/ आकाश गगा मे / दड़ी रमै
पदार्थ रै रूप स्यू / लुक-मीचणी रमै
आखरा नै विसलेसित कर / अलख जगावै
त्रिकाल री थाह थारै आगै नीवै ढुकै
थारी पिरोळ / चुचकारै
तू अणथाक / अणमाप्या / अणजाण्या/ अणपहचाण्या
धोरा रै धर्म नै जाण / जठै / अेक अकेलो
अक्षय वट (खेजड़ा) ऊभौ है / आच्छन्न-प्रच्छन्न
इण बीज मे । सोऽह / मैं हूँ
तू निज नै/ निरी हॉड मॉस रौ पुतळी
मान'र विसरग्यौ/ मारतण्ड रौ प्रकाण्ड तेज
तू / तू अजन्मे युग रौ- सन्देस
देवो याति भुवनानि पश्यन् ।

□

ओ भारत देश !

पुरुषोत्तम पल्लव

ओ भारत देश
म्हारै काळजै री कोर है।

लोग केवै कै
आ आपणी जळम भोम है,
ईं रै खोळा मे
आपा खेल्या कूद्या नै
मोटा हुया नै
नी जाणै ईं रै मान मे
कई-कई करतब किया,
म्हू तो ओ जाणू कै
ईं देश सू म्हारो गेरो लगाव है,
मन मे ऊँचा भाव है,
म्हारा और ईं रा सम्बन्ध
वी चालरा है
जाणै ओ बादळ नै
म्हारौ मन मोर।
ओ भारत

ढळती पड़ती छाया
जीवण री धरम है,
धरम रो पालण करणोहीज
आपणो करम है,
करम नै धरम रा ए दो पैड़ा है
जी सू आ जीवनगाड़ी
गुड़री है,

नै मुड़ावा जठीनै
मुड़री है,
ईं मे जद
खोट आ जावै
तो पच्छै घोर अधारो
छा जावै ।
ओ भारत

ईं रै खातर ही
जीवणो नै जैर पीवणो
मिनखाचारौ है
दुखिया नै गळै लगा सकै
वो इज मिनख है
यू तो मिनखा रा वेष मे
कई दईत फिरै है
पण मिनख
मिनख रौ जोड़ीदार है
म्हारो ई देश सू सातरौ सरोकार है
लगाव यू है
जाणै पतग लारै डोर ।

कुण कठै ?

(1) तारा दीक्षित/रा.बा.ऊ.मा.वि./जगदीश चौक/उदयपुर
(2) जेठनाथ गोस्वामी/उपप्रधानाचार्य/रा.हा.से. स्कूल/बालोतरा (बाड़मेर)
(3) मूळदान देपावत/3, सब्जीमंडी/कोटगेट/बीकानेर
(4) रूपसिंघ राठौड़/विनयकुटीर/खारिया/झूंझुनू
(5) रामनिवास सोनी/राम निकेतन/झंवर गली/पो. डीडवाना (नागौर-राज.)
(6) नानू राम संस्कर्ता/पो. कालू (बीकानेर)
(7) दशरथ कुमार शर्मा/656-27/तेल वाली गली/रामगंज/अजमेर
(8) जयंत निर्वाण/कुमकुम पब्लिशिंग हाऊस/सरदार शहर (चूरू)
(9) राजकुमारी/रा.सी.ऊ.मा.फोर्ट विद्यालय/बीकानेर
(10) जगदीश चन्द नागर/रा.ऊ.प्रा.वि /सान्दोलिया (अजमेर)
(11) रामस्वरूप परेश/पीरामल सी.हा.से. स्कूल/बगड़–झूझुनू
(12) जितेन्द्र शंकर बजाड़/भीचोर–312022/चित्तौड़
(13) पुष्पलता कश्यप/पुष्पांजली भवन/जूनै जे.सी.ओ. मैस लारै/लक्ष्मीनगर/जोधपुर
(14) करणीदान बारहठ/पो. फेफाना (श्री गंगानगर)
(15) भोगी लाल पाटीदार/रा.ऊ.मा.वि./सीमलवाड़ा/डूँगरपुर–314401
(16) छगनलाल व्यास/रा.मा.वि /पो. भूती/जालोर–307030
(17) फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'/जाट गली/पो कांकरोली
(18) हनुमान दीक्षित/दीक्षित निवास/रानीबाजार/नोहर
(19) रामनिवास शर्मा/भारतीय विद्या मन्दिर/बीकानेर
(20) जानकी नारायण श्रीमाली/ब्रह्मपुरी चौक/बीकानेर
(21) रामपाल सिंह पुरोहित/पो. नोरवा/वाया आहोर/जालोर–307029

(22) राम सुगम/द्वारा-प परसराम कुटीर/एफ 194 जवाहर नगर/एम एम ग्राउण्ड के पीछे/बीकानेर
(23) निशान्त/वार्ड 19/वन विभाग निकट/पो पीलीवगा-335803 (श्री गगानगर)
(24) आर आर नाभा/रा ऊ प्रा वि./पो दूढा (बाड़मेर)
(25) माधव नागदा/रा सी ऊ मा वि./पो राजसमन्द-313326
(26) सत्यनारायण सोनी/पो परलीका (नोहर - श्री गगानगर) 335504
(27) बालूदास वैष्णव/रा मा वि /पो नगरी/(चित्तौड़गढ़)
(28) नृसिंह राजपुरोहित/पोस्ट खाडप, जिला बाड़मेर
(29) भगवती लाल व्यास/35, खारोल कोलोनी/फतहपुरा/उदयपुर
(30) ओमदत्त जोशी/रा प्रा वि /औंडान चौक/ब्यावर (अजमेर)
(31) ओमप्रकाश तवर/रा सी ऊ मा वि./तारानगर-331304 (चूरू)
(32) मीठालाल खत्री/रा मा वि./रायपुरिया/वाया सिवाणा (जालोर)
(33) छाजूलाल जांगिड़/रा सी ऊ मा वि /पो झाझड़ (झूझुनू)
(34) जगराम यादव/रा मा वि./पो रताऊ/नागौर
(35) भरतसिंह ओला/राज वि /पो परलीका/त नोहर (श्री गगानगर)
(36) पृथ्वीराज गुप्ता/दधिमति सी सैं स्कूल/श्री गगानगर-335001
(37) अरुणा पटेल/रा प्रा वि /पो मटीली राठान/श्री गगानगर
(38) त्रिलोक गोयल/अग्रवाल सी ऊ मा वि /अजमेर
(39) श्रीमाती श्री वल्लभ घोष/सुगन्ध गली/ब्रह्मपुरी/जोधपुर
(40) श्याम सुन्दर भारती/फतहसागर/जोधपुर
(41) गोपाल कृष्ण 'निर्झर'/रा मा वि /पो कुणी/त प्रतापगढ़ (चितौड़)
(42) रामकुमार ओझा/बुद्ध विहार/पो नोहर /श्री गगानगर-335523
(43) चन्द्रदान चारण/से नि प्राचार्य/कोटगेट (भीतर) बीकानेर-334001
(44) बुलाकीदास बावरा/धोबी धोरा/सूरसागर निकट/बीकानेर
(45) रामेश्वर दयाल श्रीमाली/व्या /जिलाशिक्षा प्रशिक्षण सस्थान/जालोर
(46) शिशुपाल सिंह/व सहा परि अधिकारी/प्रौढशिक्षा/सीकर-332001
(47) ओम पुरोहित कागद/24, दुर्गा कॉलोनी/हनुमानगढ़ सगम-335512
(48) सुशील व्यास/नवचौकिया/जोधपुर

(49) रमेश 'मयंक'/रा.मा.वि./नगरी/चित्तौड़गढ़
(50) दीपचंद सुथार/रा.मा.वि./मेड़ता शहर/नागौर
(51) जयसिंह एस. चौहान/जौहरी सदन/काव्य वीथिका/कानोड़–313604 (उदयपुर
(52) जगदीशचंद्र शर्मा/रा.सी.ऊ.मा.वि./पो. गिलून्ड/राजसमंद–313207
(53) मो. सदीक/शंकर भवन के पास/रानी बाजार/बीकानेर
(54) अखिलेश्वर/30, मंडी ब्लॉक/श्री करणपुर–335070
(55) शिव मृदुल/बी - 8 मीरानगर/चित्तौड़गढ़
(56) रामजीवण सारस्वत/सार्दूल स्पोर्ट्स स्कूल/बीकानेर
(57) महेश कुमार शर्मा/रा.मा.वि./पो. ललाना/नोहर (श्री गंगानगर)
(58) ओमप्रकाश व्यास/हरिकृष्ण सदन/व्यास मौहल्ला/पो. कपासन /चित्तौड़
(59) अरविन्द चुरूवी/रा.सी.ऊ.मा.वि./पो. रतननगर/चूरू (राज.)
(60) अमृत सिंह पंवार/रा.मा.वि./बासनी तम्बोलिया/जोधपुर
(61) ओमप्रकाश सारस्वत/शिक्षा निदेशालय/बीकानेर
(62) महावीर जोशी/पो. भैंसावता-खुर्द/झुंझुनूं–332516
(63) कुन्दन सिंह सजल/उदय निवास/रायपुर (पाटन) सीकर
(64) दयाराम महरिया/उप जिला शिक्षाधिकारी/प्रा.शि./सीकर
(65) चमेली मिश्र/उपाचार्य/रा.बा.सी.ऊ.मा.वि./सुमेरपुर/पाली–306902
(66) शारदा शर्मा/1116/पुरानी आबादी/श्री गंगानगर
(67) सुशीला भंडारी/श्री महावीर उ.प्रा.बा.वि./सुमेर मार्केट के सामने/जोधपुर
(68) कमला जैन/सहा.नि./रा.रा.शै.अनु.प्र.सं./उदयपुर
(69) कृष्णा कुमारी/सी-368/तलवंडी/कोटा–324005
(70) लालाराम जे. प्रजापत/रा.प्रा.वि./पो. बिंगरला/पं.स. रानी/पाली
(71) छीतरमल सांखला/ग्रा. पो. शकरवाड़ा/तह. दीगोद (कोटा)
(72) भोगराज जोशी /रा.मा.वि./फतहपुर-शेखावाटी/सीकर
(73) चंचल कोठारी/रा.ऊ.मा.वि./राजसमन्द
(74) बी. मोहन/आरोग्य सदन क्लिनिक/27-379/रेतवाली/कोटा
(75) मुरलीधर शर्मा/देशनोक/बीकानेर
(76) दीनदयाल शर्मा/7-101 आर.एच.बी/हनुमानगढ़ संगम–335572

(77) सुरेशचंद्र उदय/3-20/गुलावेश्वर मार्ग/उदयपुर–313001

(78) मगरचंद दवे/रा.मा.वि./पो.दुजाना/पाली–306708

(79) राधेश्याम अटल/81 बालमन्दिर कॉलोनी/मान टाऊन/सवाई माधोपुर–3220

(80) किशोर करुण/कार्या. जिलाशिक्षाधिकारी/प्रा.शि./बाड़मेर–344001

(81) घनश्याम रांकावत/कृष्ण कुटीर/बोराबड़/नागौर

(82) आर.एस.व्यास/कीकाणी व्यासों का चौक/बीकानेर

(83) वासुदेव चतुर्वेदी/एस.आई.ई.आर.टी/उदयपुर

(84) ब्र.ना.कौशिक/86 बी. श्री गंगानगर।

(85) पुरुषोत्तम पल्लव/रा.मा.वि./गुड़ली जि. उदयपुर